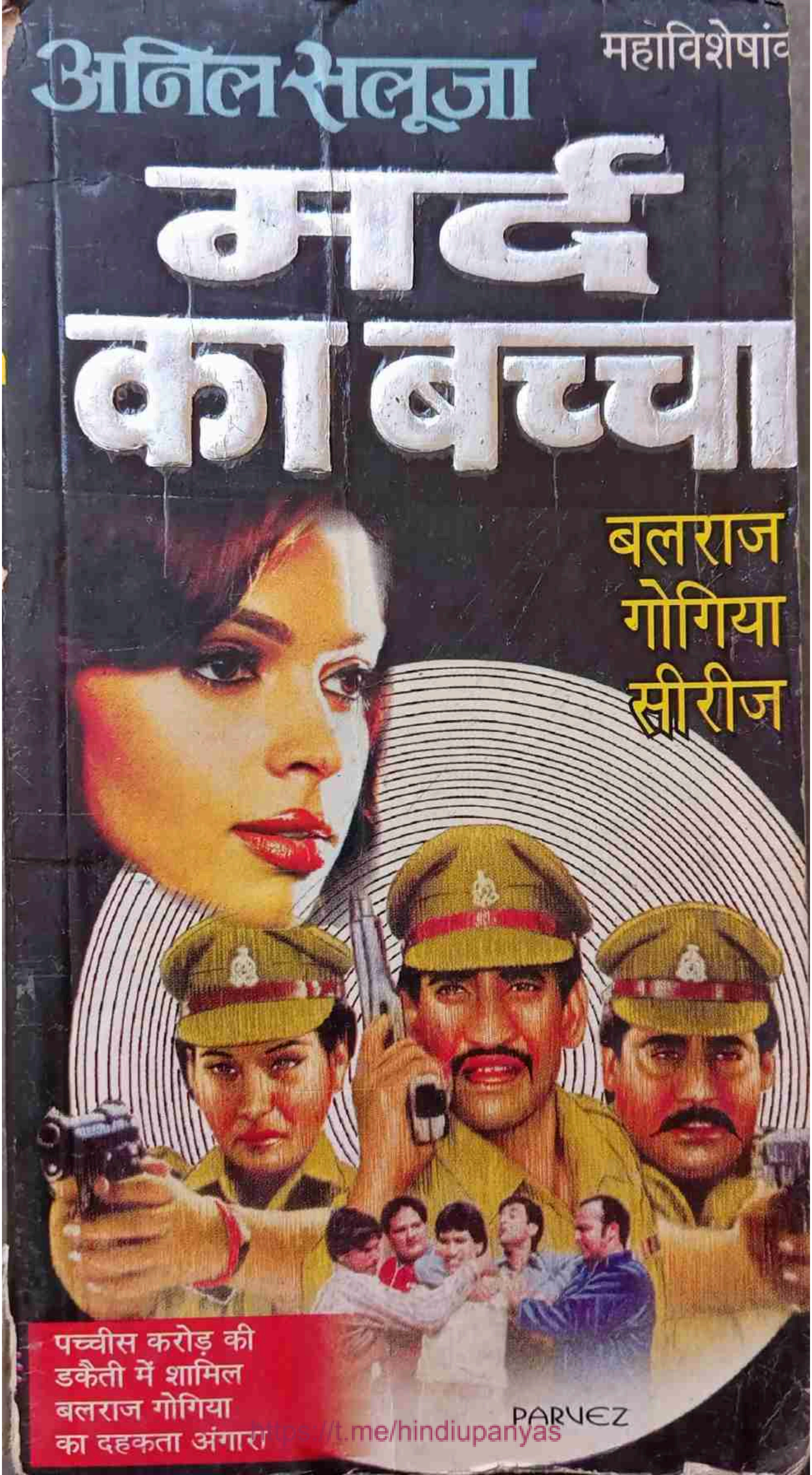

अनिल सलूजा
महाविशेषांक
मर्द का बच्चा
बलराज गोगिया सीरीज
पच्चीस करोड़ की डकैती में शामिल बलराज गोगिया का दहकता अंगारा
PARVEZ

"गुड...।" बोले कमिश्नर फिर वहां मौजूद अफसरों की तरफ देखते हुए कहने लगे—"बलराज गोगिया एक बहुत ही चालाक और मास्टर माइंड अपराधी है—जिस ढंग से उसने चण्डीगढ़ में करोड़ों की मूर्ति चुराई उससे उसके दिमाग की ताकत का पता चलता है—आनन-फानन में ही स्कीम बना लेने में माहिर है वह। जुर्म के पन्नों पर उसने अपने सिर्फ एक ही कारनामे से अपना नाम सबसे पहले पन्ने पर लिखवा लिया है। बेशक इंस्पेक्टर रावत ने बलराज गोगिया को गिरफ्तार करने के लिए सीमा सुरक्षाबल को सूचित कर दिया है, पूरे जिले में मुखबिरों का जाल फैला दिया है—लेकिन वह मास्टर माइंड अपराधी बलराज गोगिया भी अच्छी तरह से जानता होगा कि भाटिया से उसके चालाकीपन का पता लगते ही पुलिस उसके पीछे पड़ जायेगी—और ऐसे अपराधी यह भी जानते हैं कि पुलिस अपराधी तक किन-किन तरीकों से पहुंचने के रास्ते बनाती है—उन रास्तों के बारे में वह मास्टर माइंड बलराज गोगिया भी जानता होगा।

इसलिए इन तरीकों के अलावा ऐसा कोई तरीका भी खोजा जाना चाहिये जिसे बलराज गोगिया भी न समझ पाये और जब तक वह समझे पुलिस के हाथ उसकी गर्दन को पकड़ चुके हों।

□□□

धीरज पॉकेट बुक्स में

अनिल सलूजा

के कुल प्रकाशित उपन्यास

बारूद	(बलराज गोगिया सीरीज)
खूंखार	(बलराज गोगिया सीरीज)
शूटर	(बलराज गोगिया सीरीज)
आदमखोर	(भेड़िया सीरीज)
सूरमा	(बलराज गोगिया सीरीज)
गिद्ध	(भेड़िया सीरीज)
नेकी कर गोली खा	(भेड़िया सीरीज)
दौलत मेरी मां	(भेड़िया सीरीज)
मैं आया मौत लाया	(भेड़िया सीरीज)
कर बुरा हो भला	(भेड़िया सीरीज)
शिकंजा	(रीमा राठौर सीरीज)
भेड़िये की वापसी	(भेड़िया सीरीज)
कब्जा	(भेड़िया सीरीज)
उड़ान	(भेड़िया सीरीज)
मर्द का बच्चा	(बलराज गोगिया सीरीज)

फैन्टेसी का एक और नया कारनामा, कल्पनाओं से भी आगे की उड़ान, अविश्वसनीय, रोमांचक, दिल में खून के थक्के जमा देने वाला

भेड़िया सीरीज का

अनिल सलूजा

का आगामी नवीनतम उपन्यास

गर्जना

मर्द का बच्चा

अनिल सलूजा

बलराज गोगिया सीरीज का एक
हाहाकारी उपन्यास

उपन्यास : मर्द का बच्चा
लेखक : अनिल सलूजा

लेखक के दो पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'फन्दा' व 'मर्द का बच्चा' का सम्पूर्ण संस्करण

प्रकाशक : धीरज पॉकेट बुक्स
355, गाँधी मार्ग,
निकट ओडियन सिनेमा,
मेरठ-250 002 (उ० प्र०)
✆ (0121) 3257035, 2400092

लेज़र टाइप सैटिंग : सैन्ट्रो ग्राफिक्स, मेरठ।

मुद्रक : न्यू रिषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।

मर्द का बच्चा : उपन्यास : अनिल सलूजा

मूल्य : चालीस रुपये केवल

इस उपन्यास के पात्रों के नाम, स्थान आदि सर्वथा काल्पनिक हैं।

मर्द का बच्चा

अनिल सलूजा

"क...कौन हो तुम...?" बड़ी मुश्किल से बोल फूट पाया कुलकर्णी साहब के होठों से।

रंगत एकदम से स्याह पड़ी हुई थी कुलकर्णी साहब की—आंखों में खौफ के साये मंडराने लगे थे...। फटी-फटी आंखों से वे अपने सामने खड़े उन पांच नकाबपोशों को देख रहे थे जो कि उनके आठ साल के बेटे बबलू की खोपड़ी से स्टेनगन लगाये खड़े थे।

काले कपड़े में झांकते पांचों नकाबपोशों के होठों पर जहरीली मुस्कान रेंग गई।

एक नकाबपोश आगे बढ़ा—स्टेनगन अपने कंधे पर रखी और मुस्कान को और तेज करते हुए बोला—"जाहिर है हम अच्छे लोग नहीं हैं वर्ना काले कपड़ों में अपने मुंह छुपाकर तुम्हारे पास क्यों आते।"

"क्या...क्या चाहते हो?"

"हां...यह सवाल तुमने अच्छा किया।" नकाबपोश अपनी स्टेनगन को कुलकर्णी साहब के सीने के सटाते हुए बोला—"बलराज गोगिया को फांसी का हुक्म तुमने ही सुनाया था न कुलकर्णी?"

बुरी तरह से चौंके कुलकर्णी साहब...। बलराज गोगिया को अच्छी तरह से जानते थे वे। छः हत्याओं का आरोप था उस पर और हत्यायें भी साबित हो चुकी थीं, सो कुलकर्णी साहब ने अपना फैसला सनाते हुए उसे फांसी की सजा सुनाई थी और कल सुबह साढ़े दस बजे उसे फांसी पर चढ़ाया जाना था।

"कहां खो गये कुलकर्णी...?" नकाबपोश उनकी आंखों में झांकते हुए बोला—"याद करने की कोशिश कर रहे हो?"

"मुझे याद है कल उसे फांसी भी दी जाने वाली है।"

"लेकिन उसे फांसी नहीं मिलनी चाहिए।"

"क...या?" उछल पड़े कुलकर्णी साहब—"ए...ऐसा कैसे हो सकता है?"

"ऐसा ही होना चाहिए, बलराज गोगिया को फांसी नहीं मिलनी चाहिए। उसे जेल से आजाद करवाना है तुम्हें।"

"म...मुझे...लेकिन मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं?" खौफ के साथ-साथ आश्चर्य मंडरा रहा था उनके चेहरे पर।

"यह हम बतायेंगे तुम्हें...। तुम्हें बस वही करना होगा जो हम कहेंगे।"

"ले...लेकिन ए...ऐसा नहीं हो सकता...म...मैं अपने फर्ज से गद्दारी नहीं कर सकता।"

"अगर तुम यह काम नहीं करोगे तो कोई और काम कर देगा लेकिन तब तुम रूमाल को नीचे गिराकर जल्लाद को इशारा करने के लिए जिन्दा नहीं रहोगे। अभी जब हम बाहर निकलेंगे तो अपने पीछे दो लाशें छोड़ जायेंगे, एक तेरे इस पिल्ले की तथा दूसरी तुम्हारी और इसे"—उसने एक तरह बेहोश पड़ी कुलकुर्णी साहब की खूबसूरत पत्नी की तरफ इशारा किया—"इसे हम अपने साथ ले जायेंगे और तब तक इसके साथ बलात्कार करते रहेंगे जब तक कि यह मर नहीं जाती।"

"नहीं...।" बुरी तरफ से कांप उठे कुलकर्णी साहब—"त...तुम ऐसा नहीं कर सकते...।"

कह तो दिया था उन्होंने...लेकिन इतना कहने भर के लिए उन्हें कितनी मेहनत करनी पड़ी थी यह वही जानते थे—पसीने से उनके कपड़े तक गीले हो गये थे।

"बिल्कुल भी नहीं करेंगे"—मुस्कराया नकाबपोश—"बशर्ते कि तुम वो करो जो हम चाहते हैं।"

कुलकर्णी के सामने अपनी लाश और बेटे की लाश का नजारा घूमने लगा—दृश्य बदला और उनकी पत्नी से बलात्कार का दृश्य उभरने लगा—नकाबपोशों की लम्बी लाईन लगी हुई और लाईन में सबसे आगे वाला नकाबपोश उनकी पत्नी की इज्जत लूट रहा है—उनकी पत्नी चीख रही है—स्वयं को छोड़ देने के लिए गिड़गिड़ा रही है लेकिन उसकी गिड़गिड़ाहट को कोई भी नहीं सुन रहा है।

दृश्य पुनः बदला—उनकी पत्नी की लाश उनकी आंखों के सामने तैरने लगी—खून से लथपथ उसके चेहरे पर ऐसे भाव हैं जैसे मरने से पहले उसे अत्यधिक पीड़ा सहनी पड़ी हो और आखिर पीड़ा को सहते हुए उसने दम तोड़ दिया हो।

'न...हीं।'' खौफ से एकदम से चीख उठे, कुलकर्णी साहब—''म...मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है—म...मैं वो सब कुछ करूंगा जो तुम चाहते हो...ल...लेकिन मेरी पत्नी व बेटे को छोड़ दो।''

बेशक कुलकर्णी साहब एक मजिस्ट्रेट थे—मगर मजिस्ट्रेट भी तो एक इंसान होता है...और दुनिया का कोई भी ऐसा इंसान नहीं जिसकी कोई कमजोरी न हो।

कुलकर्णी साहब की कमजोरी उनकी पत्नी व एकमात्र बच्चा था जिसे वे अपनी जान से ज्यादा प्यार करते थे।

विजयी मुस्कान खिंच उठी नकाबपोश के होठों पर—''हमें तुमसे ऐसी ही समझदारी की आशा थी कुलकर्णी...।''

''म...मुझे करना क्या होगा?''

''तुम्हें कुछ नहीं करना होगा, जो करेंगे हम ही करेंगे—तुम्हें तो बस हमारे लिए रास्ते खोलने होंगे।''

कहकर वह नकाबपोश कुलकर्णी साहब को बताने लगा कि उन्हें क्या करना है?

❑❑❑

'खट...खट...खट।'

भारी बूटों की आवाज सुनकर बलराज गोगिया ने अपना झुका हुआ सिर उठाया।

मजिस्ट्रेट के साथ एक इंस्पेक्टर और तीन सिपाही उसकी तरफ आ रहे थे। उन पांचों के पीछे हाथों में एक थाली पकड़े एक पण्डित भी आ रहा था...। थाली में पूजा वगैरह का सामान था।

बलराज गोगिया जानता था कि पण्डित पूजा की थाली लिए उसके पास क्यों आ रहा है?

क्योंकि आज उसकी जिन्दगी का आखिरी दिन था।

ठीक डेढ़ घण्टे बाद उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाना था और मरने से पहले उसे धार्मिक संस्कारों से नवाजा जाना था। मरने से पहले ही उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की जानी थी।

मौत की सफेदी तो बलराज गोगिया के चेहरे पर उसी दिन ही पुत गई थी जिस दिन उसे फांसी की सजा का हुक्म सुनाया गया था—और उसके पश्चात् तो सफेदी का रंग हर दिन गाढ़ा ही होता चला गया। बलराज स्वयं को सम्भालने की कोशिश भी करता, मगर मौत का खौफ उसे सम्भलने ही नहीं देता था। पिछले दिन से तो उसकी भूख ही मर गई थी।

कुल मिलाकर नब्बे परसेंट तो वह वक्त से पहले ही मर चुका

था—अब तो बस उसकी मौत की रस्म पूरी करनी रह गई थी वरन् उसमें बचा ही क्या था।

सिपाही ने लोहे की मोटी सीखचों वाले दरवाजे का ताला खोला और अदब से एक तरफ खड़ा हो गया।

मजिस्ट्रेट, पण्डित और इंसपेक्टर के प्रविष्ट होने के उपरान्त चारों सिपाही भी अन्दर प्रवेश कर गये।

"बलराज गोगिया उर्फ बल्लू!" मजिस्ट्रेट उसकी तरफ देखते हुए गम्भीर स्वर में बोले—"ठीक डेढ़ घण्टे बाद, दस बजकर तीस मिनट पर तुम्हें फांसी दे दी जायेगी—अगर तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा हो तो बताओ कानून उसे पूरी करने की भरसक कोशिश करेगा।"

बलराज ने सूनी-सूनी आंखों से मजिस्ट्रेट की तरफ देखा—लेकिन मुंह से एक शब्द नहीं फूटा उसके, जैसे मौत ने वक्त से पहले ही उसकी आवाज छीन ली हो।

"क्या तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा है बलराज गोगिया उर्फ बल्लू...?"

बलराज ने बोलना चाहा—मगर बोल नहीं पाया वह, सो इन्कार में सिर हिला दिया।

मजिस्ट्रेट ने पण्डित की तरफ देखा—"आप अपनी रस्में पूरी कीजिए पण्डितजी।"

पण्डित आगे बढ़ा और मन्त्र पढ़ने के साथ-साथ उस पर फूल फेंकने लगा, जैसे भैंसे को बलि के लिए तैयार किया जा रहा हो...। तत्पश्चात् पण्डित ने उसके माथे पर तिलक लगाया और एक लम्बी सांस छोड़कर मजिस्ट्रेट की तरफ देखने लगा।

मजिस्ट्रेट समझ गये कि पण्डित अपना काम पूरा कर चुका है...। एक बार अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली उन्होंने फिर वापिस मुड़ गये।

❑❑❑

मारुति कार की विण्ड स्क्रीन के बायें कोने पर लगे रेडक्रॉस के कारण दूर से ही पता चल रहा था कि वह किसी डॉक्टर की कार है...। कार की ड्राइविंग सीट पर डॉक्टर बतरा बैठा हुआ कार को ड्राइव कर रहा था।

थोड़ी दूरी पर ही बाईं तरफ एक मोड़ था...। जैसे ही बतरा की कार मोड़ काटने को हुई, तेज गति से आती हुई एक मोटरसाइकिल भड़ाक से उसकी कार से आ टकरायी।

एक तेज चीख के साथ मोटरसाइकिल सवार उछला और विण्ड

स्क्रीन से टकराकर उसे तोड़ता हुआ कार के अन्दर आ गिरा। खुद बतरा का सिर स्टेयरिंग से आ टकराया था।

कार तो पहले ही रोक चुका था बतरा...। सो डॉक्टर होने के नाते अपनी कार के हुए नुकसान को देखने से पहले कार के अन्दर पड़े एक व्यक्ति को देखा जो आधा पिछली सीट की तरफ लटका हुआ था—जबकि उसकी टांगें अगली सीट पर लटक रही थीं।

और जैसे ही उसने उसे देखने के लिए सीधा किया!

एक अप्रत्याशित हरकत की उस व्यक्ति ने जिसके सिर पर हेलमेट था तथा चेहरे पर काला शीशा चढ़ा हुआ था। जादू के जोर से जैसे रिवॉल्वर प्रकट हुई उसके हाथ में और सीधी डॉक्टर बतरा की कमर से जा टकराई।

"खबरदार! अगर जरा भी चीखा तो गोली सीधी पसलियों में जा घुसेगी।"

ऐसी किसी हरकत की तो सपने में भी उम्मीद नहीं थी बतरा को। सकते की सी दशा में बैठा वह आंखें फाड़े उसी हेलमेट पहने व्यक्ति को देखने लगा।

रिवॉल्वर बतरा की कमर से लगाये हुए उस व्यक्ति ने अपने दायें-बायें गर्दन घुमाई, यह देखने के लिए कि एक्सीडेण्ड ने किसी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित तो नहीं किया।

लेकिन वहां दूर-दूर तक उसे कोई नजर नहीं आया। आश्वस्त हो उसने बतरा की तरफ देखा।

"चल...।" सांप की तरफ फुंफकारा वह हेलमेट वाला—"नीचे उतर...।" साथ ही रिवॉल्वर का दबाव बढ़ाया उसने, रिवॉल्वर के दबाव ने बतरा को सकते की सी स्थिति से उभारा...।

"क...कौन हो तुम?" बुरी तरह से डर गया था बतरा।

"तेरा बाप...।" गुर्राया हेलमेट वाला—"कुछ और ज्यादा सवाल नहीं पूछना, नीचे उतर।"

बेबसी और खौफ से बतरा ने अपने सूखे होठों पर जुबान फेरी और अपनी तरफ का दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया।

पीछे-पीछे हेलमेट वाला भी बाहर आ गया...। रिवॉल्वर को उसने अपनी पेंट की जेब में डाल लिया था और साथ ही हाथ को भी अन्दर ही पड़ा रहने दिया।

"कोई चालाकी मत दिखाना।" डॉक्टर से चेतावनीभरे स्वर में बोला वह—"मेरी पैंट में तो सिर्फ छोटा-सा सुराख होगा जिसे मैं

बाद में रफू करवा लूंगा—लेकिन तेरे सीने में जो सुराख होगा उसे कोई रफू नहीं कर पायेगा।"

"लेकिन...त...तुम लोग चाहते क्या हो? कौन हो तुम...?"

"सब पता चल जायेगा—फिलहाल तो उस कार की तरफ चल और उसमें बैठ जा।" हेलमेट वाले ने कुछ दूरी पर खड़ी सफेद एम्बेसडर की तरफ इशारा करते हुए कहा।

बतरा ने अपनी थूक सटकी और कांपते कदमों से एम्बेसडर की तरफ बढ़ने लगा।

इस वक्त अगर कोई उसके कलेजे पर हाथ रखता तो अपनी धड़कन से बतरा का कलेजा उसके हाथ को ही पीछे धकेल देता।

उसके कार के करीब पहुंचते ही कार की पिछली सीट वाला दरवाजा खुल गया। बतरा समझ गया कि कार में पहले से ही कोई मौजूद है।

जैसे ही बतरा ने कार के अन्दर झांका—घुटी-घुटी चीख निकल गई उसके होंठों से। आश्चर्य से उसकी आंखें फटने लगीं—हैरत से उसका मुंह खुल गया।

अन्दर एक और डॉक्टर बतरा बैठा हुआ था—बिल्कुल उसकी फोटो स्टेट था वह। उन्नीस-बीस का भी फर्क नहीं था।

"अन्दर आ जा डॉक्टर...।" अन्दर बैठे डॉक्टर बतरा ने मुस्कराते हुए कहा।

आश्चर्य का एक और झटका लगा बतरा को...। उसे ऐसा लगा जैसे उसकी आवाज अन्दर बैठे बतरा ने छीन ली हो।

"क...कौन हो तुम...?" बतरा बोला।

"डॉक्टर बसंत कुमार बतरा...।" अन्दर बैठे बतरा की मुस्कान और भी तेज हो गई।

"न...हीं!" हौले से चीख उठा बतरा—"बसंत कुमार बतरा तो मैं हूं...।"

"पहले थे...अब मैं हूं...।"

"लेकिन...।"

शब्द अधूरे ही रह गये बतरा के और मुंह से हल्की-सी चीख निकल गई।

पीछे खड़े हेलमेट वाले ने उसके कूल्हे पर लात जमा दी थी और वह चीखता हुआ अन्दर बैठे बतरा की गोद में आ गिरा।

जब तक वह सीधा होता—हेलमेट वाला भी अन्दर आ चुका था।

अब पिछली सीट पर दो डॉक्टर बतरा बैठे थे तथा एक हेलमेट वाला।

"चलो...।" कार का दरवाजा बन्द करते हुए हेलमेट वाला ड्राईविंग सीट पर बैठे व्यक्ति से बोला। इसी के साथ ही एम्बेसडर स्टार्ट हुई और हल्के-से झटके के साथ आगे रेंग गई।

"य...यह तुम मुझे कहां ले जा रहे हो? क...कौन हो तुम?" बारी-बारी से दोनों को देखते हुए डॉक्टर बतरा बोला।

"घबरा नहीं डॉक्टर—ठीक ग्यारह बजे तुझे आजाद कर देंगे हम...।" हेलमेट वाला बोला।

"ल...लेकिन साढ़े दस बजे मुझे कहीं पर जरूरी पहुंचना है।"

"तुम जरूर पहुंचोगे वहां।" हेलमेट वाला पुनः बोला—"साढ़े दस बजे जहां पर तुझे पहुंचना है वहां यह डॉक्टर बतरा पहुंचेगा।"

"क...क्या...?" उछल पड़ा बतरा और साथ ही उसकी आंखों में हैरत के भाव गोते लगाने लगे।

"अब हैरान मत हो डॉक्टर—जल्दी से अपना आई० कार्ड निकाल...।"

"लेकिन...।"

"इन्कार करेगा तो भी हमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा—तुझे मारकर हम तेरी लाश से वो सब कुछ बरामद कर लेंगे...।" अगला पल भी नहीं लगाया बतरा ने और जेब से आई० कार्ड निकाल लिया, जिसे दूसरे बतरा ने झपटकर उसके हाथ से खींच लिया।

और फिर उन्होंने बतरा से वह सारा सामान ले लिया जो कि डॉक्टर बतरा के पास होना अनिवार्य था।

❑❑❑

फांसीघर के बाहर आठ सुरक्षा गार्ड हाथों में स्टेनगन लिए पूरी तरह से सतर्क खड़े थे। हालांकि आज किसी ऐसे मुजरिम को फांसी नहीं दी जा रही थी जिसके मरते ही हंगामा खड़ा हो जाता। आज जिसे फांसी दी जाने वाली थी उसका तो रिश्तेदार के नाम पर भी कोई नहीं था।

लेकिन फिर भी अपनी ड्यूटी को पूरी मुस्तैदी से निभा रहे थे गार्ड।

तभी एक टैक्सी फांसीघर के आगे रुकी और उसमें से डॉक्टर बतरा उतरकर फांसीघर के गेट की तरफ बढ़ने लगा।

फांसीघर के बाहर खड़े सुरक्षा गार्ड उसे जानते थे, तभी तो उसके नजदीक आते ही एक गार्ड बोल पड़ा—"आज आपकी कार

नहीं आपके साथ डॉक्टर साहब...?"

एक बार तो हड़बड़ा गया डॉक्टर बतरा—लेकिन अगले ही क्षण वह मुस्करा पड़ा—"शुक्र है मैं यहां पहुंच गया—रास्ते में कार मोटरसाइकिल से टकरा गई, भगवान का शुक्र है कि मोटरसाइकिल वाले की जान बच गई...। पुलिस कार्यवाही के लिए मुझे कार को वहीं छोड़ना पड़ गया, यूं भी कार की विण्ड स्क्रीन चूर-चूर हो गई थी।"

"ओह!" दूसरा बोला—"आपको चोट तो नहीं आई?"

"बच गया—वर्ना यहां कैसे आ जाता...।" कहकर बतरा ने अपनी जेब से अपना आइडेंटिटी कार्ड निकालकर एक गार्ड की तरफ बढ़ा दिया।

"इसकी क्या जरूरत थी डॉक्टर साहब—हम तो आपको जानते ही हैं।" गार्ड कार्ड लेकर उसे गौर से देखते हुए बोला।

"हर बार यही कहते हो और हर बार कार्ड लेकर मुझे गौर से देखते भी हो।" मुस्कुराया बतरा—"फिर भी मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं, क्योंकि तुम अपनी ड्यूटी पूरी मुस्तैदी से निभा रहे हो।"

"इस बैग में क्या है...? बतरा के हाथ में पकड़े डॉक्टरों वाले बक्से की तरफ देखते हुए पूछा।

अन्दर ही अन्दर कांप उठा बतरा—लेकिन अपने चेहरे पर उनके भावों को उजागर नहीं होने दिया।

"डॉक्टरी का सामान...चैक कर लो...।" बक्सा आगे बढ़ाते हुए बोला।

गार्ड ने आई० कार्ड वापिस दिया और बक्सा खोलकर एक सरसरी नजर मारकर मुस्कुराते हुए बोला—"आप जा सकते हैं।"

भगवान का लाख-लाख धन्यवाद करने लगा बतरा—अगर कहीं गार्ड बक्से में पड़े सामान को निकालकर चैक करता तो वह रिवॉल्वर उसकी निगाहों में जरूर आ जाता जो कि ब्लडप्रेशर यन्त्र के अन्दर पड़ा हुआ था।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ...। बाल-बाल बच गया था डॉक्टर बतरा।

मुस्कुराकर देखा उसने गार्ड की तरफ और अन्दर चला गया।

❑❑❑

वेड़ियों में जकड़े बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए मुस्कुराया डॉक्टर बतरा—"हैलो यंगमैन...!"

प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया ने मुस्कुराना चाहा—मगर हँसी तो उसका साथ छोड़ चुकी थी—निर्विकार ढंग से उसने बतरा की तरफ देखा और सिर झुका लिया।

"मैं डॉक्टर बतरा हूं। तुम्हें चैक करने आया हूं...। ऐसा ही दस्तूर है हमारे कानून का कि जब तक मुलजिम पूरी तरह से ठीक-ठाक न हो उसे फांसी नहीं दी जा सकती।"

बलराज गोगिया फिर भी कुछ नहीं बोला—बस सूनी-सूनी आंखों से बतरा का चेहरा निहारने लगा।

बतरा ने बलराज गोगिया के आस-पास खड़े दोनों सिपाहियों की तरफ देखा और बोला—"इसकी हथकड़ियां और बेड़ियां खोल दो।"

आज्ञा का पालन किया उन्होंने...। कुछ ही देर में बलराज गोगिया पूरी तरह से आजाद था।

"लेट जाओ...।" डॉक्टर का अगला आदेश बलराज गोगिया के लिए था।

बलराज गोगिया जेल के अन्दर बने स्थान पर लेट गया...। आंखें छत की तरफ टिकाये हुए वह सोचों में डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था...। लेकिन वह सोचों में नहीं डूबा हुआ था बल्कि अपनी तरफ बढ़ रही मौत को देख रहा था जो कि उससे कुछ ही दूर रह गई थी...।

केवल दस मिनट शेष रह गये थे—उसके पश्चात् फांसी का फंदा उसके गले में पड़ जाना था।

बतरा ने अपना बक्सा खोलकर उसमें से स्टैथेस्कोप निकाला और उसकी दोनों ट्राइयां कानों में डालकर बलराज गोगिया को चैक करने लगा।

दोनों सिपाही अपने आप में बातें करने में मशगूल हो गये थे—डॉक्टर के क्रिया-कलापों में जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे दोनों।

बलराज गोगिया को चैक करते हुए ही बतरा ने ब्लडप्रेशर चैक करने का यन्त्र निकाला और दोनों सिपाहियों की तरफ देखा...। दोनों अभी भी पूर्वावस्था में ही खड़े थे।

घबरा उठा बतरा का दिल...। उस यन्त्र के अन्दर वस्तु ही ऐसी थी कि अगर किसी को भी पता चल जाता तो उसकी तो घण्टी बज जानी थी।

किसी तरह उसने अपने दिल को मजबूत किया और यन्त्र का लॉक खोल दिया।

हल्की-सी क्लिक की आवाज के साथ यन्त्र का ढक्कन ऊपर उठ गया और उसमें रखा रिवॉल्वर किसी नाग की तरह नज़र आने लगा।

कांपते हाथों से उसने रिवॉल्वर बाहर निकाली और फिर तेजी से बलराज गोगिया के हाथ में दे दी।

छत की तरफ देखता बलराज गोगिया एकदम उछल पड़ा और जब उसकी नजर रिवॉल्वर पर पड़ी तो मारे हैरत के उसकी आंखें फटने लगीं। अगर डॉक्टर बतरा तुरन्त ही उसका हाथ दबाकर उसे चुप रहने का संकेत नहीं करता तो यकीनन बलराज गोगिया के होठों से कोई आवाज निकल जानी थी।

फटी-फटी आंखों से वह डॉक्टर को देखने लगा...। लेकिन बलराज ने उसे रिवॉल्वर अपने कपड़ों में छुपा लेने का इशारा कर दिया।

मौत की राह में गहराते अंधेरों में यकायक ही बलराज गोगिया को जिन्दगी की एक हल्की-सी चमक नजर आई...।

अगले ही पल रिवॉल्वर उसके पायजामे के नाड़े में फंस गई।

और तब बतरा ने पुनः एक नजर उन दोनों गार्डों पर डाली और अपनी जेब से एक गोली निकालकर बलराज गोगिया के मुंह की तरफ ले जाने लगा।

गोली को देखते ही बलराज गोगिया समझा कि बतरा उसे वह गोली देना चाहता है...। क्योंकि इसका पता नहीं था उसे—फिर भी उसने अपना मुंह खोल दिया—यह सोचकर कि अवश्य ही इस गोली में ऐसा जादू मन्त्र होगा जो उसे आजाद कर देगा।

हो सकता है गोली मुंह में जाते ही वह अदृश्य हो जाये—और आराम से टहलता हुआ यहां से निकल जाये, जो कुछ भी था—बलराज गोगिया ने गोली लेने के लिए अपना मुंह खोल दिया।

बतरा ने गोली उसके खुले मुंह में डाल दी और साथ ही उसे निगल जाने का इशारा कर दिया। अगले ही पल गोली बलराज गोगिया के पेट के अन्दर पहुंच गई।

चैन की एक लम्बी सांस छोड़ी बतरा ने और डॉक्टरी का अन्य सामान निकालकर बलराज गोगिया को चैक करते हुए बोला—

"बाखुदा तुम तो बिल्कुल ठीक-ठाक हो, अच्छे खासे हो, जबकि ऐसी हालत में तो आम आदमी वक्त से पहले ही स्वयं को मरा हुआ महसूस करने लगता है। बहुत हौसला है तुममें। वक्त से पहले मौत से डर जाना बेवकूफी होती है और तुम बेवकूफी तो

बिल्कुल भी नहीं दिखा रहे... । मौत तो यकीनी है फिर उससे डरना कैसा?"

चैक करने के साथ-साथ बतरा उसे भाषण भी पिलाता जा रहा था, जैसे उसे सीख दे रहा हो।

इधर बलराज गोगिया को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसके सीने में कोई अंगारा भड़क रहा हो—और उसकी तपिश धीरे-धीरे पूरे सीने में फैल रही हो... ।

अपने सीने में तप रहे ज्वालामुखी को किसी प्रकार ठण्डा करने की कोशिश करने के साथ-साथ बलराज गोगिया यह भी सोच रहा था कि बतरा आखिर है कौन—क्यों आजाद करवाना चाहता है वह, उसे रिवॉल्वर दी, उसने बलराज गोगिया को देखा—उसे कोई गोली खिलाना, यह सब क्यों कर रहा है बतरा?

जबकि वह कोई ऐसा खास शख्स भी नहीं जिसकी किसी को खास जरूरत हो। और भी बहुत कुछ सोचना चाहता था बलराज गोगिया और वह सोचता भी...लेकिन उससे पहले ही उसके पेट में पहुंची गोली ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था।

सीने में सुलग रहा ज्वालामुखी भड़क उठा था—पूरे सीने में जैसे आग भर गई थी—चेहरे पर पीड़ा के लक्षण उजागर होने लगे।

और फिर!

जोर-जोर से चीखने लगा बलराज गोगिया। उसके साथ ही वह उठा और वहीं पर कै कर दी। बुरी तरह से तड़फता हुआ वह जमीन पर लोटने लगा।

बलराज गोगिया की चीख सुनकर दोनों गार्ड बुरी तरह से चौंक कर उसकी तरफ देखने लगे—और जब उन्होंने बलराज गोगिया की हालत देखी तो उन दोनों के चेहरों पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं।

फांसी लगने में तो अभी दस मिनट पड़े थे—मगर बलराज गोगिया की हालत देखकर ऐसा महसूस हो रहा था कि वह दस मिनट भी नहीं जी पायेगा।

घबराते हुए चेहरों के साथ दोनों गार्डों ने बतरा की तरफ देखा जो कि खुद हैरानी से बलराज की तरफ देख रहा था... ।

दोनों को अपनी तरफ देखते ही जोर से चीख उठा वह—"इसने कोई जहरीली चीज खा ली है... ।"

"क...या...?" बुरी तरह से उछल पड़े दोनों गार्ड।

"ल...लेकिन अभी-अभी तो यह बिल्कुल ठीक-ठाक था—खुद आपने भी इसे ठीक घोषित किया था?" एक गार्ड शक

भरी निगाहों से वतरा को देखते हुए बोला।

"मैं कब कह रहा हूं कि मैंने इसे ठीक-ठाक घोषित नहीं किया—लेकिन कोई जहरीली चीज इसने काफी पहले ही खा ली थी और उसका असर अब हुआ।"

"लेकिन... ।"

"बहस मत करो और इसे फौरन अस्पताल पहुंचाने का बन्दोबस्त करो।" चीख उठा बतरा—"अगर कैदी को कुछ हो गया तो मैं सारी गलती तुम्हारी ही निकालूंगा।"

"आप जो जी में आये करते रहिये डॉक्टर साहब—लेकिन कैदी को हम मजिस्ट्रेट की मर्जी के बिना अस्पताल नहीं ले जायेंगे।"

"चाहे यह मर ही क्यों न जाये?"

"बेशक यह मर जाये... ।" दूसरा गार्ड कठोर लहजे में बोला।

"ठीक है!" हारे हुए स्वर में बोला बतरा—"तुम मजिस्ट्रेट को सूचित करके खुद ही इसे ले जाना। मैं चलता हूं... ।"

और जैसे ही बतरा चलने को हुआ दूसरे गार्ड ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया।

चौंक कर बतरा उसकी तरफ देखने लगा—"मेरा रास्ता क्यों रोका?"

"कैदी की हालत तुम्हारे यहां आने के बाद ही खराब हुई है डॉक्टर!"—गुर्राहट उबली गार्ड के मुख से—"इसलिए फिलहाल तो तुम कहीं नहीं जा सकते... ।"

"त...तुम मुझ पर शक कर रहे हो?" गुस्से से तमतमा उठा बतरा का चेहरा।

"तुम कुछ भी समझो—लेकिन जब तक अस्पताल में यह जांच नहीं हो जाती कि कैदी को जहर कब दिया गया था या उसने खुद लिया—तुम शक के ही दायरे में रहोगे।"

मन-ही-मन मुस्कुरा पड़ा बतरा।

वह खुद भी तो यही चाहता था कि बलराज के पास रहे—और वही हो रहा था।

लेकिन ऊपर से उसने हारी हुई एक सांस छोड़ी और बोला—"ठीक है, तुम मजिस्ट्रेट को फोन करो।"

उस गार्ड ने अपने साथी की तरफ देखा।

उसके देखने का मतलब समझ दूसरा गार्ड फौरन बाहर निकल गया।

करीब पांच मिनट बाद जब गार्ड वापिस लौटा तो मजिस्ट्रेट

कुलकर्णी उनके साथ था। आजू-वाजू हाथों में गनें लिए तो बॉडीगार्ड उनके वरावर चल रहे थे।

बॉडीगार्डों पर नजर पड़ते ही वतंरा के होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान आकर गायव हो गई। वे दोनों बॉडीगार्ड उसके अपने ही आदमी थे। यानि सारा बन्दोबस्त हो चुका था।

मजिस्ट्रेट कुलकर्णी साहब ने अपनी बुझी हुई आंखों से एक नजर बतरा पर डाली—फिर बतरा को कवर किये गार्ड की तरफ देखते हुए बोले—"क्या हुआ कैदी को...?"

"मालूम नहीं सर!" गार्ड तुरन्त ही सीधा होते हुए बोला—"डॉक्टर कैदी का चैकअप कर रहे थे कि कैदी की हालत एकदम से खराब होने लगी—डॉक्टर के मुताविक कैदी ने कोई जहरीली वस्तु खा ली है।"

कुलकर्णी साहब ने बलराज गोगिया की तरफ देखा जो कि फर्श पर लगभग बेहोशी की अवस्था में पड़ा था, मुंह से झाग निकलने लगी थे उसके। उन्होंने बतरा की तरफ देखा—

"फिलहाल तो आप खुद को हिरासत में समझिये डॉक्टर बतरा।"

"क...यों?" बुरी तरह से उछल पड़ा बतरा...। लेकिन मन ही मन वह कुलकर्णी साहब को उनकी एक्टिंग पर शाबासी दिये बिना नहीं रह सका...।

"कैदी की हालत आपकी मौजूदगी में खराब हुई है-जबकि आपके आने से पहले कैदी भला-चंगा था।"

"हो सकता है कैदी ने मेरे आने से पहले ही कोई जहरीली वस्तु खा ली थी।"

"इसका फैसला अस्पताल के एम०एस० ही करेंगे...।" कहकर अपने साथ आये दोनों गार्डों में से बाईं तरफ वाले गार्ड की तरफ देखा—"तुरन्त ही एम्बूलैंस का बंदोबस्त करो।"

"जी...।"

बॉडीगार्ड हौले से मुस्कुराया और वापिस मुड़ गया।

"और आप!" कुलकर्णी साहब ने बतरा की तरफ देखा—"हमारे साथ अस्पताल में चलेंगे ताकि कहीं बाद में आप कोई बहाना न बना दें।"

"सांच को आंच नहीं।" बतरा बोला—"जब मैंने कुछ किया ही नहीं तो फिर मैं डरूं क्यों—मैं आपके साथ चलने को तैयार हूं।"

❑❑❑

एम्बूलैंस पूरी रफ्तार से अस्पताल की तरफ जा रही थी।

एम्बूलैंस के स्ट्रेचर पर बलराज गोगिया अब बेहोशी की अवस्था में पड़ा था। उसके पास ही दो बेंचों पर चार पुलिस कर्मी हाथों में गनें लिये बैठे थे।

एम्बूलैंस से आगे एक एम्बेसडर थी जिसमें खुद मजिस्ट्रेट कुलकर्णी दोनों गार्डों के साथ सवार थे।

एम्बूलैंस के पीछे एक पुलिस की जिप्सी थी जिसमें छः पुलिस वाले बिल्कुल चौकन्नी अवस्था में बैठे थे—किसी भी खतरे का सामना करने के लिये वे पूरी तरह से तैयार थे।

उसी जिप्सी की ड्राईविंग सीट के बगल में बतरा बैठा हुआ था—आंखें सोचपूर्ण मुद्रा में सिकुड़ी हुई थीं उसकी, वह जानता था जहर की जो गोली उसने बलराज गोगिया को दी थी वह दरअसल घातक जहर नहीं था बल्कि एक ऐसा जहर था जो सिर्फ आधा घण्टे तक अपना असर इस प्रकार दिखाता था कि सामने वाला भी उसकी मौत को यकीनन मान बैठता। आधे घण्टे बाद गोली का असर खत्म होने के पश्चात् आदमी पुनः पूर्व हालत में आ जाता था...।

और उसे बलराज गोगिया को गोली दिये हुए पच्चीस मिनट बीते थे, पांच मिनट अभी शेष थे बलराज गोगिया के स्वस्थ होने में।

इधर एम्बूलैंस में बैठे चारों गार्ड में से एक गार्ड बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए कह रहा था—"बहुत चालाक निकला हरामजादा—ऐन फांसी के वक्त से कुछ देर पहले कोई जहर खा लिया—अब इसका ट्रीटमेंट होगा—और फांसी की तारीख नये सिरे से लगेगी, जो कि पन्द्रह दिन बाद भी हो सकती है और महीने बाद भी। यानि अपनी जिन्दगी को और बढ़ा लिया इसने।"

"क्या पता अस्पताल पहुंचने से पहले ही दम तोड़ दे यह।" दूसरा बोला।

"ऐसा कमजोर दिल का नहीं लगता यह।" तीसरा बोला—"छः-छः कत्ल किये हैं साले ने—वे भी इस ढंग से कि कोई सुने तो हैरान रह जाये, हर आदमी को बहुत ही वीभत्स मौत दी है इसने।"

"मुझे तो डॉक्टर पर शक हो रहा है।" चौथा भला कहां पीछे रहने वाला था—"जरूर उसी ने ही इसे जहर दिया होगा।"

"शक तो मुझे भी पड़ रहा है—मगर जहर देने का कोई कारण नजर नहीं आ रहा। आखिर कोई तो कारण होना चाहिए था—अगर डॉक्टर को इससे दुश्मनी थी तो भी उसे इसे जहर देने की क्या जरूरत

थी—यूं भी दस मिनट बाद इसे फांसी लगने वाली थी—ऐसी हालत में जहर देना जानबूझकर मौत के कुएं में छलांग लगाना माना जाता। और समझदार डॉक्टर से ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नहीं की जा सकती।'' पहले वाला गार्ड बोल पड़ा।

''जो भी हो अस्पताल पहुंचते ही पता चल जायेगा।'' तीसरा गार्ड बोला।

अपनी बातों में चारों गार्ड इस कदर मस्त थे कि उन्हें पता तक नहीं चला कि बलराज गोगिया न केवल होश में आ चुका है बल्कि उनकी बातें भी सुन रहा है। अपने पायजामे के नाड़े में फंसी रिवॉल्वर का स्पर्श महसूस कर उसने राहत की एक सांस ली लेकिन हिला नहीं वह।

अभी वह ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाना चाहता था जिससे कि वह स्वयं ही अपनी फरारी के तमाम रास्ते बन्द कर ले।

उसे पूरा विश्वास था कि बतरा अवश्य ही कुछ करेगा और वह उसकी तरफ से होने वाले किसी एक्शन के ही इंतजार में था।

इधर बतरा ने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली।

बत्तीस मिनट हो चुके बलराज गोगिया को गोली दिये हुये।

यानि अब तक उसे न केवल होश में आ जाना चाहिए बल्कि पूरी तरह चौकस भी हो जाना चाहिए।

गर्दन घुमाकर बतरा ने अपने पीछे नजर मारी।

काफी दूर पर एक ट्रक आता दिखाई दिया उसे।

एक जहरीली मुस्कान रेंग गई बतरा के होठों पर और उसी के साथ ही उसने अंगड़ाई लेने वाले अंदाज में अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये।

यह संकेत था पीछे आ रहे ट्रक के लिए जिसमें कि उसके ही साथी सवार थे।

अगले ही पल ट्रक ने रफ्तार पकड़ी और शीघ्र ही जिप्सी को ओवर टेक करता हुआ आगे निकल गया।

जैसे ही ट्रक आगे निकला!

'वड़ाम...वड़ाम।'

एक-के-बाद-एक कई बम सड़क पर आ गिरे और धुएं का गाढ़ा बादल उबलने लगा।

शीघ्र ही पुलिस की जिप्सी उस धुएं के बादल में गुम हो गई।

धुएं का फायदा उठाया बतरा ने और धीमी हो चुकी जिप्सी में से छलांग मार दी।

जिप्सी में बैठे पुलिस कर्मी कुछ भी नजर न आने के बावजूद भी गोलियां चलाने लगे।

'रेट-रेट' की आवाजों से पूरा इलाका गूंज उठा।

मगर तब तक ट्रक कहीं-का-कहीं पहुंच चुका था।

सड़क पर कुछ दूर लुढ़ककर जैसे ही बतरा खड़ा हुआ, पीछे से आ रही एक मारुति वैन उसके समीप आकर खड़ी हुई।

बिजली की सी फुर्ती से बतरा उस वैन में सवार हो गया और ड्राइविंग सीट पर बैठे अपने साथी से बोला—"जल्दी से वैन को एम्बूलैंस के समीप ले जाओ—बलराज गोगिया किसी भी क्षण एम्बूलैंस से बाहर निकल सकता है।" एक तेज झटका खाया वैन ने और आगे बढ़ गई।

❑❑❑

धमाकों की आवाज सुनते ही एम्बूलैंस में बैठे चारों गार्ड बातें करते-करते बुरी तरह से चौंक उठे।

"यह धमाके कैसे?"

"बमों के हैं,...।" दूसरा बोला।

"कहीं कोई असामाजिक तत्व कैदी को छुड़ाने के लिए हमला तो नहीं कर रहा?" तीसरा बोला।

और तुरन्त ही चारों एम्बूलैंस की खिड़की में से बाहर की तरफ झांकने लगे।

बलराज गोगिया को तो वे बेहोश समझ रहे थे इसी कारण उसकी तरफ से वे पूरी तरह से लापरवाह थे।

बस यही लापरवाही उनके लिए घातक साबित हो गई।

अधखुली आंखों से बलराज गोगिया ने उन चारों की तरफ देखा। मौका था उसके पास एक्शन में आने का। बिजली की सी फुर्ती से उसका हाथ अपने पायजामे में रखे रिवॉल्वर की तरफ लपका।

और अगले ही पल!

'धांय...धांय...धांय...धांय...।'

एक-के-बाद-एक चार फायर हुए और वे चारों खिड़की से बाहर का नजारा भी ठीक से नहीं कर पाये कि स्वर्ग की तरफ कूच कर गये।

फायरिंग की आवाज सुनकर एम्बूलैंस का ड्राईवर बुरी तरह से चौंक उठा और घबराकर उसने एक्सीलेटर पर अपने पैर का दबाव और भी बढ़ा दिया।

एम्बूलैंस तोप से निकले गोले की तरह छूट निकली।

मगर बलराज गोगिया ने एम्बूलैंस की रफ्तार की परवाह नहीं की और दरवाजा खोलकर बाहर छलांग लगा दी।

काफी दूर तक लुढ़कता हुआ वह सड़क के नीचे जा पहुंचा और सम्भलते ही खड़ा हुआ और एक तरफ भागने लगा।

भागते हुए ही उसने आगे जा रही एम्बेसडर से दो गार्डों को निकलकर एक तरफ भागते देखा।

गार्डों को देखकर पहले तो बलराज गोगिया बुरी तरह से खौफजदा हो गया लेकिन जब उसने गार्डों को अपनी तरफ आते देख अपने पीछे आने का इशारा करते देखा तो वह समझ गया कि गार्डों के वेश में वे उसे आजाद करने वाले ही लोग हैं।

सो अपनी रफ्तार को उसने और भी तेज कर दिया।

दोनों गार्ड आगे खड़ी वैन की तरफ बढ़ रहे थे—उनके पीछे-पीछे भागता हुआ बलराज गोगिया भी वैन की तरफ बढ़ने लगा—और जैसे ही बलराज गोगिया ने अपना पैर वैन के खुले दरवाजे में रखा वैन बन्दूक से छूटी गोली की तरह भाग निकली। अगर बतरा और वैन में बैठे अन्य लोग उसे तुरन्त ही अन्दर न खींच लेते तो अवश्य ही वह पीठ के बल सड़क पर जा गिरता।

वैन में बैठते ही बलराज गोगिया ने छुटकारे की एक लम्बी सांस छोड़ी—अपनी मौत को धोखा देकर वह बच निकला था। उसने अपने बाईं तरफ बैठे बतरा की तरफ देखा और बोला—"जान बचाने का शुक्रिया बतरा, मैं तो स्वयं को कब से ही मरा हुआ महसूस कर रहा था लेकिन तुम लोगों ने वक्त पर आकर मेरी जान बचा ली, लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई।"

"क्या...?" बतरा मुस्कुराया।

"मैं तुम्हें जानता तक नहीं कि तुम लोग कौन हो और जहां तक मेरा ख्याल है तुम भी मुझे नहीं जानते—फिर तुम लोगों ने मेरी जान क्यों बचाई?"

बतरा के होठों पर तैर रही मुस्कान और भी तेज हो गई—"हमारे चीफ से मिल लो वही तुम्हें सब कुछ बतायेंगे।"

हैरत से बलराज गोगिया बतरा की तरफ देखने लगा—"त...तो तुम इन सबके चीफ नहीं हो...?"

"हूं...।" बतरा बोला—"इस वक्त इन सभी की कमान मेरे हाथ में है—यह कमान चीफ ने दी है मुझे...।"

"फिर भी तुम्हें कुछ तो मालूम होगा...। आखिर इतना बड़ा रिस्क लिया है तुम लोगों ने मेरे प्राण बचाने के लिए। कोई न कोई बात तो होगी ही।"

"बिना स्वार्थ के कौन किसी के लिए कुछ करता है...। बस यूं तो मैं भी जानता हूं कि तुम्हें छुड़ाया क्यों गया है...लेकिन चीफ की तरफ से मनाही है—इसलिए मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता।"

"ल...लेकिन...।"

अभी बलराज गोगिया अपनी बात शुरू भी नहीं कर पाया था कि तभी एक आदमी चौंकते हुए चीखा—"पुलिस!" पुलिस का नाम सुनकर बतरा के साथ-साथ बलराज गोगिया भी बुरी तरह से चौंक पड़ा—अपने आप ही उनकी गर्दनें पीछे की तरफ घूम गई।

पुलिस की तीन जिप्सियां उनके पीछे लगी हुई थीं।

बलराज गोगिया के चेहरे पर आया संतोष एक बार पुनः खौफ में बदल गया—"साली भूत की तरह पीछे पड़ गई है।"

बड़बड़ाया वह और व्याकुल नजरों से बतरा की तरफ देखने लगा।

बतरा ने तुरन्त ही अपनी जेब से नोटों की एक गड्डी निकाली और बलराज गोगिया की तरफ बढ़ाते हुए बोला—"इसे अपने पास रख लो।"

हिचकिचाते हुए बलराज गोगिया ने नोट ले लिये और बतरा की तरफ देखने लगा।

तब बतरा ने सीट के नीचे से एक जोड़ा कपड़ों का निकाला और बलराज गोगिया को जबरदस्ती थमाते हुए बोला—"थोड़ा आगे एक मोड़ है—हम वहां पर गाड़ी को धीमी कर देंगे, बस तुम कूद जाना और फिर जल्द-से-जल्द इन कपड़ों से छुटकारा पाकर वे कपड़े पहन लेना, क्योंकि कैदियों के कपड़े तुम्हारे लिए बहुत बड़ी मुसीबत बन सकते हैं।"

"ल...लेकिन तुम लोग...?"

"हमारी चिन्ता मत करो तुम, हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती पुलिस, मगर तुम्हारा बचना बहुत जरूरी है और मैं नहीं चाहता कि हमारी मेहनत यूं व्यर्थ चली जाये।"

बलराज गोगिया ने नोटों की गड्डी बतरा से मिली पैंट की जेब में डालकर पैंट तथा शर्ट को रोल करके लपेटा और अपने सीने से लगा लिया।

"मोड़ आ रहा है तैयार हो जा बलराज गोगिया।" डॉ० बतरा देखते हुए बोला।

बलराज गोगिया कूदने के लिए तैयार हो गया जबकि बतरा ने वैन का दरवाजा खोल दिया।

और जैसे ही वैन मोड़ पर मुड़ी!

बलराज ने बाहर की तरफ छलांग लगा दी और सड़क से लुढ़कता चला गया। शीघ्र ही उसने स्वयं को सम्भाला और उठकर पास के खेत में घुस गया।

यही वह वक्त था जब सायरन बजाती हुई तीनों जिप्सियां वहां से निकलीं।

उनके जाते ही बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और जल्दी-जल्दी कैदियों की ड्रेस उतारकर पैंट और शर्ट पहनने लगा।

कुछ देर बाद जब बलराज गोगिया खेत से बाहर निकला उसका रूप ही बदला हुआ था। पैंट-शर्ट ने उसके हुलिये को काफी बदल डाला था। लेकिन उसकी बढ़ी हुई दाढ़ी-मूंछ और मैला चेहरा तथा नंगे पैर उसे अभी भी संदिग्ध बता रहे थे—और इन सब से छुटकारा पाने के लिये बलराज गोगिया के पास रुपये थे।

पूरे दस हजार रुपये।

❑❑❑

चण्डीगढ़ शहर की सीमा से बाहर ही बलराज गोगिया ने एक नाई की दुकान से अपनी दाढ़ी और मूंछों से निजात पाई और कटिंग करवाकर अपने बालों का स्टाईल भी बदल लिया।

और जब वह नाई की दुकान से बाहर निकला तो उसका हुलिया एकदम से बदला हुआ था, इस वक्त वह किसी फिल्मी हीरो से कम नजर नहीं आ रहा था। बस एक ही कमी रह गई थी उसके नंगे पैर। उसने शहर में आकर उस कमी को भी पूरा कर लिया और फिर एक चश्मे वाले की दुकान से बड़े शीशों वाला बढ़िया-सा चश्मा खरीदकर नाक पर चढ़ा दिया।

अब पहली नजर में इतनी आसानी से नहीं पहचाना जा सकता था बलराज।

वहीं से उसने रिक्शा की और सीधा बस अड्डे आ पहुंचा।

वहां से बस पकड़ी और लुधियाना के लिए रवाना हो गया। बस में बैठा हुआ सारे रास्ते वह बतरा के विषय में और उसके चीफ के विषय में सोचता रहा कि उन्होंने उसे छुड़ाने के लिए इतनी बड़ी तैयारी क्यों की, क्या स्वार्थ था उनका उसे आजाद करवाने के पीछे?

लेकिन लुधियाना पहुंच जाने के उपरान्त भी उसके दिमाग में कोई ऐसी बात नहीं घुसी जिसे सोचकर वह संतुष्ट हो सके।

बहरहाल, जो कुछ भी था वह फांसी के फंदे तक पहुंचकर भी लौट आया था।

छोलेवाला चौक के पुल के ऊपर ही बस से उतर गया वह और दाईं तरफ बनी सीढ़ियां उतरकर पुल के नीचे आ गया।

एक बार पहले भी आ चुका था वह लुधियाना में और इसी पुल के पास ही उसने होटल गोल्ड को देखा था, सो अब वही होटल उसके दिमाग में घूम रहा था।

शीघ्र ही वह गोल्ड होटल के काउंटर पर खड़ा हुआ अपने लिए एक कमरे को मांग रहा था।

"आपका नाम...?" काउंटर गर्ल ने रजिस्टर पर झुके हुए ही उसका नाम पूछा।

"विजय।" पहले से ही सोचा हुआ जवाब दिया बलराज गोगिया ने। और जो कुछ भी काउंटर गर्ल ने पूछा सब कुछ बताया उसने, लेकिन सच्चाई का एक शब्द भी नहीं था उसमें। काउंटर गर्ल ने उससे पेशगी के तौर पर तीन दिन का किराया लिया और की-बोर्ड से चाबी उतारकर बलराज गोगिया की तरफ बढ़ाते हुए बोली—"ऊपर सैकिण्ड फ्लोर पर चौदह नम्बर कमरा।"

"थैक्यूं!" कहकर बलराज गोगिया ने चाबी ली और लिफ्ट की तरफ रवाना हो गया।

अपने कमरे में ऐसा घुसा वह कि दो दिन तक बाहर का सूरज भी नहीं देखा। एक तरह से वह शेष दुनिया से बिल्कुल मर गया था...। आदमजात के दर्शन वह तभी करता जब वेटर उसके लिए खाना, कॉफी वगैरह लेकर आता था।

तीसरे दिन तक वह कमरे में पड़ा-पड़ा बोर हो चुका था। रात को डिनर करने के लिए वह हॉल में आकर बैठ गया। डिनर करने के पश्चात् उसने कॉफी का ऑर्डर दिया—और कॉफी का कप होठों से लगाकर उसे चुसकने लगा। आंखें दरवाजे में प्रवेश कर रहे चार पुलिसियों की तरफ अटक कर रह गईं।

दरवाजे के पास खड़े हो वह चारों पुलिसिये हॉल में मौजूद लोगों को इस प्रकार देखने लगे जैसे उन्हें किसी की तलाश हो।

चोर की दाढ़ी में तिनका—बलराज गोगिया अपने स्थान से उठा और लिफ्ट की तरफ तेज कदमों से चलने लगा—गर्दन पीछे मोड़कर देखने की हिम्मत नहीं हुई उससे कि कोई उसे देख भी रहा है या नहीं, लेकिन फिर भी उसे उन चारों की निगाहें अपनी पीठ पर चिपकी हुई महसूस हो रही थीं।

कमरे में पहुंचकर उसने दरवाजा बन्द करके सिटकनी चढ़ाई और आकर पलंग पर पसर गया।

अभी पांच मिनट भी नहीं बीते होंगे कि दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

बलराज गोगिया इस तरह उछल पड़ा जैसे पास ही बम फट पड़े हों।

"क...कौन?" दरवाजे की तरफ देखते हुए पूछा बलराज ने।

"वेटर सर...।" बाहर से आवाज आई।

"क्या काम है?" वेटर की आवाज को पहचानते हुए एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज।

"डिनर का बिल देना है सर...।"

बलराज गोगिया उठा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

और जैसे ही उसने दरवाजा खोला—एक आंधी ने जैसे प्रवेश किया कमरे में।

जोरदार झटका लगा उसे और वह पीछे फर्श पर जा गिरा।

और जब तक वह सम्भलता वह उन चारों पुलिसियों से घिर चुका था जिनसे बचने के लिए वह कमरे में आया था।

"तू क्या समझता है हरामजादे!" एक सब-इंसपेक्टर रिवॉल्वर की नाल बलराज के माथे से लगाते हुए फुंफकारा—"तू कानून से बच निकलेगा...?"

बलराज गोगिया के मुंह से बोल नहीं फूटा। बस होंठ हिलकर रह गये। आंखों में लौट आई जिन्दगी एकदम से गायब हो गई और उसका स्थान पुनः मौत ने ले लिया।

"हथकड़ी डाल दो इसे।" अन्य सिपाहियों की तरफ देखे बिना दहाड़ा सब-इंस्पेक्टर।

और अगले ही पल बलराज गोगिया हथकड़ियों में जकड़ गया।

तत्पश्चात् उस सब-इंस्पेक्टर के आदेश पर उसके कमरे की तलाश ली गई और उसके रुपये तथा रिवॉल्वर पर उन्होंने कब्जा कर लिया।

जिन्दगी की तरफ भाग रहे उसके कदम एक बार फिर मौत की तरफ मुड़ गये थे।

बलराज गोगिया को गिरफ्तार कर वे चारों पुलिसिये उसे होटल से बाहर ले आये और एक बन्द वैन की तरफ बढ़ने लगे जो सड़क पार करके किनारे पर खड़ी थी।

"बैठ जा...।" उसके पीछे-पीछे वैन में प्रवेश करके एक सिपाही ने कहा।

बलराज गोगिया खामोशी से बैठ गया।

सब-इंसपेक्टर और अन्य दो सिपाही भी अन्दर आ गये। उनके प्रवेश करते ही वैन एक हल्के-से झटके से आगे बढ़ गई। सब-इंस्पेक्टर ने वैन का खुला दरवाजा बन्द किया और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए अर्थभरी मुस्कान मुस्कुराने लगा।

हैरान हुआ बलराज गोगिया उसे इस प्रकार मुस्कुराते देखकर और जब उसने अन्यों को भी उसी तरह मुस्कुराते देखा तो खोपड़ी घूम गई उसकी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे इस प्रकार मुस्कुरा क्यों रहे हैं?

"हा...हा...हा...।" तभी सब-इंसपेक्टर का ठहाका गूंजा वैन में और साथ ही उसका हाथ बलराज गोगिया के कंधे पर याराना अंदाज में पड़ा।

"हथकड़ी खोल दो इसकी...।" वह बोला।

तुरन्त ही एक सिपाही ने बलराज गोगिया की हथकड़ी खोल दी।

और बलराज गोगिया हैरान परेशान कभी सब-इंसपेक्टर को देख रहा था, तो कभी उस सिपाही को जिसने उसकी हथकड़ी खोली थी।

"क्यों...खा गये न धोखा!" तभी सब-इंस्पेक्टर पुनः बोला—"अरे हम पुलिस वाले नहीं हैं। हमने ही तो तुझे आजाद कराया था।"

"क...क्या!" इतनी जोर से उछला बलराज गोगिया कि उसका सिर वैन की छत से जा टकराया।

"हां...।" उसकी हैरत पर आनन्दित होते हुए बोला सब-इंस्पेक्टर—"तुम तो गधे के सीगों की तरह गायब हो गये थे। सो तुम्हें ढूंढने के लिए चीफ ने यही तरीका निकाला—हम सभी पुलिस की ड्रेस में हर उस स्थान पर तुम्हें ढूंढने लगे जहां पर तुम्हारे होने की सम्भावना हो सकती थी, वैसे ज्यादा सम्भावना यही थी कि तुम किसी होटल...वो भी छोटे होटल में मिल सकते हो।"

"ल...लेकिन इसमें पुलिस का वेश धरने की क्या जरूरत थी?" बलराज गोगिया बोला।

"अगर हम ऐसा न करते तो हम पर शक पड़ सकता था, जिससे भी तुम्हारे बारे में बात करते पहले वही हमसे सवाल करता कि हम उसे क्यों ढूंढ रहे हैं, क्या लगता है तू हमारा? जबकि पुलिस की ड्रेस में होने पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ सकती थी कि वह हमसे कुछ पूछे।"

"तुम लोगों ने तो मुझे डराकर रख दिया था।" मुस्कुराते हुए बोला बलराज गोगिया—"मैं तो स्वयं को फिर से मरा हुआ समझ बैठा था।"

"पुलिस से बहुत खौफ खाते हो तुम?"

"पुलिस बला ही ऐसी है जिससे चिपट गई उससे तब तक नहीं छूटती जब तक कि प्राण न निकल जायें। यह तो तुम लोगों की मेहरबानी थी जो मैं बच गया...वर्ना मैं भी तो मर ही गया था।" बलराज बोला। अब तक उसका चेहरा सामान्य हो चुका था आंखों में जिन्दगी की लहर पुनः ठाठे मारने लगी थी।

"मेरा रिवॉल्वर और वे रुपये...?" रिवॉल्वर की याद आते ही पुनः बोला बलराज।

तुरन्त ही रिवॉल्वर और रुपये उसकी झोली में आ गिरे।

बलराज गोगिया ने तुरन्त ही रुपयों को उठाया और जेब में डाल लिया, जबकि रिवॉल्वर को पैंट की बैल्ट में ठूंसते हुए बोला—"अब हम कहां जा रहे हैं?"

"चीफ के पास...।" बोला सब-इंस्पेक्टर।

उसके पश्चात् उनमें कोई बात नहीं हुई।

लगभग ढाई घण्टे के सफर के पश्चात् वैन एक आधुनिक और काफी जगह घेरे खड़ी कोठी के पोर्च में जा रुकी।

"उतरो...।" सब-इंसपेक्टर दरवाजा खोलकर अपना पैर बाहर रखते हुए बोला।

पीछे-पीछे बलराज गोगिया भी उतर आया।

वह सब-इंस्पेक्टर और सिपाही बलराज गोगिया को लिए पोर्च में ही बने दरवाजे में प्रविष्ट हो गये। दरवाजे में प्रवेश करते ही बलराज गोगिया ने स्वयं को कोठी में खड़ा हुआ पाया। दाईं तरफ छः दरवाजे थे तथा बाईं तरफ भी छः दरवाजे थे।

"आ जाओ...।" दाईं तरफ बने बीच वाले दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए सब-इंस्पेक्टर ने बलराज गोगिया से कहा।

और बलराज गोगिया को लेकर वह जिस कमरे में पहुंचा वह कमरा किसी बादशाह के रंगमहल से कम नहीं था। हर तरफ एक-से-एक महंगी और आयातित वस्तुएं सजी हुई थीं...। जिस कालीन पर बलराज गोगिया खड़ा था वह कालीन भी उसे आयातित महसूस हो रहा था।

सामने एक मूवी चेयर पर किसी शख्स का केवल सिर नजर आया बलराज गोगिया को, क्योंकि चेयर की पीठ उसकी तरफ थी

इस वजह से उस पर बैठे शख्स का चेहरा और शेष जिस्म चेयर की बैक की ओट में छिप गया था।

"बलराज गोगिया आ गया है चीफ!" सब-इंस्पेक्टर बना व्यक्ति अपने स्वर में पूरा सम्मान दर्शाते हुए बोला।

उसकी आवाज के साथ ही कुर्सी घूमी और जो चेहरा बलराज गोगिया के सामने नमूदार हुआ वह उसके लिए बिल्कुल अन्जान था।

चेहरे पर चेचक के दाग होने के बावजूद भी उस शख्स का चेहरा बुरा नहीं लग रहा था। आंखों में एक विशेष आकर्षण था। उसके चौड़े कंधे उसकी असीम शक्ति का परिचय दे रहे थे और पतले होंठों के बीच चमकते उसके सीने के दो दांत इस प्रकार चमक रहे थे जैसे उसका मुंह ही सोने की एक खान हो—"वैलकम बलराज गोगिया, मौत से निजात पाने की बधाई स्वीकार करो।" चीफ बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला।

"थैंक्यू मिस्टर...!"

"मेरा नाम इकबाल है—इकबाल राय...।"

"यह सब आपकी वजह से ही सम्भव हो सका है मिस्टर इकबाल राय, वर्ना अब तक तो मेरा अन्तिम संस्कार भी हो चुका होता।"

प्रत्युत्तर में चीफ उर्फ इकबाल की मुस्कान तेज हो गई।

"लेकिन एक बात अभी तक मेरे जेहन में नहीं समा रही कि आपने मुझे आजाद क्यों कराया? ऐसी क्या बात देखी आपने मुझमें जो मुझे बचाने के लिए आपने इतना बड़ा रिस्क लिया?"

"जब आ गये हो तो बतायेंगे भी—लेकिन उससे पहले यह बताओ कि पीने-पिलाने का शौक रखते हो?"

"कभी-कभार...।" थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला बलराज गोगिया।

इकबाल ने बलराज गोगिया के पीछे खड़े सब-इंस्पेक्टर की तरफ इशारा किया।

तुरन्त ही उसने सिर झुकाया और बाहर निकल आया—और शीघ्र ही वापिस भी लौट आया।

उसके पीछे-पीछे दो आदमी और थे जो कि हाथों में स्काच तथा अन्य जरूरी सामान लिए हुए थे।

□□□

"हां...अब पूछो क्या पूछना चाहते हो?"

दो पैग हलक में उड़ेल चुकने के पश्चात् तीसरा पैग उठाते हुए बोला इकबाल राय।

बलराज गोगिया ने अपने हाथ में पकड़ा पैग नीचे रखा और इकबाल की तरफ देखते हुए बोला—"मेरा सवाल वही है जो मैं आपसे पूछ चुका हूं—कि मुझे आजाद करवाने के पीछे आपका क्या स्वार्थ है?"

मुस्कुराया इकबाल और बोला—"मैं औरों के लिए आप जरूर हूं मगर तुम्हारे लिए तुम, तुम मुझे तुम कहकर ही बुलाओ, इससे हमारे बीच की दूरियां खत्म होंगी और हम और ज्यादा नजदीक आ सकेंगे।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने—"बताओ, मुझे आजाद क्यों करवाया है?"

"चौधरी को जानते हो?"

चौधरी का नाम सुनते ही बलराज गोगिया के दिमाग में एक जबरदस्त विस्फोट हुआ। बुरी तरह से उछल पड़ा वह—"क...किस चौधरी की बात कर रहे हो तुम...?"

"दुष्यन्त चौधरी...।" उसकी आंखों में झांकते हुए बोला इकबाल—"तुम्हारा आखिरी शिकार।"

हैरत से इकबाल की तरफ देखने लगा बलराज गोगिया—"तुम उसे कैसे जानते हो...?"

"यानि अभी तक भूले नहीं उसे...?"

"उसे कैसे भूल सकता हूं मैं!" बलराज गोगिया की आवाज में जहर भर आया—"अगर मुझे फांसी भी लग जाती तो भी मैं उसे खत्म करने के लिए दोबारा जन्म लेता—एक वही तो रह गया था—बाकी सभी को तो खत्म कर चुका था मैं...।"

"बस समझ लो तुम्हें उसे खत्म करने का मौका मिल गया...।"

"लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि तुम उसे कैसे जानते हो—और सिर्फ मेरा बदला चुकाने के लिए तो तुमने मुझे आजाद नहीं करवाया—मेरी-तुम्हारी कोई रिश्तेदारी तो है नहीं, और न ही कोई याराना है...।"

"बिल्कुल ठीक। मैं न तो तुम्हारा रिश्तेदार हूं न ही यार...। लेकिन फिर भी मैंने अपने आदमियों को मौत के मुंह में धकेल कर तुम्हें आजाद करवाया—और उसके पीछे एक बहुत बड़ा कारण है।"

"वही कारण तो जानना चाहता हूं मैं...।" अपना पैग उठाते हुए बोला बलराज।

इकबाल ने अपना पैग खाली किया और बलराज गोगिया के चेहरे पर नजरें टिकाते हुए बोला—"इतना तो तुम समझ ही गये होंगे कि हम शरीफ आदमी नहीं हैं।"

"वो तो तुम्हारे आदमियों की कारगुजारी देखकर ही पता चल गया था।"

"दरअसल, हमें कुछ रोज पहले ही पता चला कि चौधरी के पास क़रीब साठ करोड़ के कीमती हीरे पड़े हैं।"

"स...सा...60 करोड़ के!" हैरत से बलराज गोगिया की आंखें फटने लगीं।

"हां...।" बोला इक़बाल—"लेकिन हम यह पता नहीं लगा पाये कि वे हीरे उसने छिपा कहां रखे हैं? और साठ करोड़ के वे हीरे हासिल करना मेरे लिए बहुत जरूरी हो गया, बस मैंने अपने आदमियों को उसके पीछे लगा दिया। लेकिन वह हरामजादा हमसे भी ज्यादा होशियार निकला। उसने अपने इर्द-गिर्द बॉडीगार्डों का पहरा लगा दिया और वह जहां भी जाता बॉडीगार्डों के पहरे में ही जाता...। हीरे मुझे अपने हाथ से निकलते महसूस होने लगे, लेकिन मैं उन्हें छोड़ना नहीं चाहता था, सो मैंने चौधरी की कमजोरी का पता लगाना आरम्भ कर दिया—लेकिन अफसोस उसकी कोई भी कमजोरी पता नहीं चल सकी मुझे। लेकिन इतना जरूर पता चल गया मुझे कि वह तुम्हारे नाम से ही खौफजदा हो जाता है...। मेरे सामने अब यही रास्ता बचा था कि मैं तुम्हारा पता लगाऊं और तुम्हें उसके पीछे लगा दूं—मैंने तुम्हें ढूंढना आरम्भ किया, तो तुम्हारी दर्दभरी दास्तान मेरे सामने आई और साथ ही मुझे पता लगा कि उसी चौधरी के कारण तुम पुलिस के शिकंजे में फंसे थे और इत्तफाक से जिस दिन मुझे तुम्हारा पता लगा उससे अगले दिन तुम्हें फांसी दी जाने वाली थी।

आनन-फानन मैंने अपना प्लान बनाया और तुम्हें आजाद करवा लिया...।" कहकर इकबाल ने अपना पैग उठाया और बोला—"अब तो तुम समझ गये होंगे कि मैंने तुम्हें क्यों छुड़ाया?"

"हां।" गम्भीर स्वर में बोला बलराज गोगिया—"लेकिन एक बात अभी भी मेरी समझ में नहीं आ रही, तुम्हारे पास इतनी ताकत है कि मेरे जैसे सौ आदमी तुम्हारे पास हैं। तुम अपनी ताकत से उसके गार्डों को खत्म करके उस तक पहुंच सकते थे...।"

"उस हालत में अगर चौधरी आत्महत्या कर लेता वे हीरे हम जिन्दगी भर नहीं ढूंढ पाते।"

"मैं भी तो उसकी जान का दुश्मन हूं, उसकी लाश बिछाना चाहता हूं मैं... ।"

"मैं जानता हूं। मगर साथ ही मैं तुमसे ऐसी बेवकूफी की उम्मीद कभी नहीं रखूंगा कि तुम उसे जान से मार दोगे, बल्कि यह सलाह दूंगा कि उसे मारने के बजाय उसे तड़पाओ, कंगाल कर दो उसे, साठ करोड़ लुट जाने पर वह यकीनन पागल हो जायेगा और जहां तक मैं समझता हूं उसे ऐसी हालत में देखकर तुम्हारे मन को पूरा-पूरा सुकून मिलेगा। जिस तरीके से तुमने पिछली हत्यायें की, जिनकी वजह से तुम्हें फांसी की सजा मिली—उस तरीके को देखकर मैं यकीन से कह सकता हूं कि तुम उसे पागल बना सकते हो। उस वक्त भी अगर ऐन वक्त पर चौधरी को पता न चलता तो तुम कब का उसका काम कर चुके होते, बलराज—!" इकबाल ने बलराज गोगिया को चढ़ाने वाले अंदाज में कहा—"तुम्हारे पास अक्ल है, हिम्मत भी है, जिगर भी बहुत बड़ा है तुम्हारा—मगर हमारे पास पैसा हो सकता है—अगर तुम मेरा साथ दो तो वे साठ करोड़ भी मिल जायें और साथ ही तुम्हारा बदला भी पूरा हो जायेगा—मैं वायदा करता हूं कि न केवल तुम्हें विदेश में भेज दूंगा बल्कि तुम्हारी झोली सोने से भर दूंगा और बाकी की जिन्दगी तुम बिना किसी खौफ के मस्ती से पूरी करोगे।"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"यूं भी यह जिन्दगी तुम्हारी ही बख्शी हुई है, अगर चौधरी मेरा दुश्मन न भी होता तो भी मैं तुम्हारे लिये उसे मारने में या पागल बनाने में देर न लगाता... ।"

"इसे तुम मेरा अहसान समझने की भूल मत करना बलराज। तुम्हें छुड़ाने के पीछे मेरा अपना स्वार्थ छुपा हुआ था—अगर मुझे तुम्हारे जरिये साठ करोड़ रुपये पाने की न सूझती तो क्या मैं तुम्हें फांसी के फंदे से आजाद करवाता? कभी नहीं... ।"

"फिर भी तुमने मुझ पर अहसान किया है, तुम बेशक ऐसा न सोचो। मैं तो यही समझूंगा।"

"तुम्हारी सोचों पर तो अंकुश लगा नहीं सकता मैं... ।"

"खैर...!" पुनः असल बात पर आते हुए बलराज गोगिया बोला—"बताओ मुझे करना क्या होगा?"

इकबाल ने लम्बी सांस छोड़ी—"चौधरी तक पहुंचने से पहले तुम्हें उस ताकत को खत्म करना है बलराज गोगिया, जो हमारे रास्ते का रोड़ा बनेगी।"

"क्या मतलब...?" चौंका बलराज़ गोगिया।
"अवतार सिंह...।"
"अवतार सिंह?" पुनः चौंका बलराज गोगिया—"यह अवतार सिंह कौन है?"
"मेरी ही तरह एक गैंगस्टर है, ताकत में भी वह मुझसे कम नहीं—हमारे लिए सबसे बड़ी मुसीबत वही है—चौधरी को पाने के लिए वह किसी भी नीच हरकत पर उतर सकता है, यहां तक कि वह तुमको यह भी कह सकता है तुम मेरे लिए नहीं बल्कि उसके लिए साठ करोड़ के हीरे प्राप्त करो। इसलिए चौधरी से निपटने से पहले उस अवतार सिंह का सफाया करना जरूरी है।"
"अपने आदमी तो दे सकते हो?"
"जितने चाहोगे मिल जायेंगे।"
"और साथ ही मेरे चेहरे पर थोड़ा मेकअप करवा दो, कहीं ऐसा न हो कि खुद मैं अवतार सिंह के पीछे पड़ा होऊं—उधर पुलिस मेरे पीछे पड़ जाये।"
"यह काम भी हो जायेगा, और कुछ?"
"बस इतना ही बहुत है...।" एक जहरीली मुस्कान होठों पर लाते हुए बोला बलराज गोगिया।
❑❑❑
सिंह वार एण्ड रैस्टोरेंट...!
बलराज गोगिया ने उस बिल्डिंग के ऊपर चमक रहे न्यून बोर्ड पर एक नजर डाली और फिर अपने पीछे खड़े उन आठ हट्टे कट्टे मुस्टंडों की तरफ देखने लगा जो कि इकबाल ने बतौर गुलाम उसे पेश किये थे।
"तैयार हो...?" उसके मुख से निकला।
सभी की मुंडी ऊपर तथा नीचे हुई। फिर अधर में खड़ी हो गई।
सभी के हाथों ने लोहे के सरिये और हॉकियां पकड़ी हुई थीं।
बलराज गोगिया ने अपनी जेब में पड़े रिवाल्वर को थपथपाया और रेस्टोरेन्ट में प्रवेश कर गया। पीछे-पीछे उसके आठों गुलाम भी गेट में प्रवेश कर गये।
काउंटर के पीछे खड़े काउंटरमैन की नजरें जैसे ही हॉकियों, सरियों से लैस लोगों पर पड़ीं—बुरी तरह से चौंक उठा वह। उसकी चौंकाहट घबराहट में उस वक्त तब्दील हो गई जब उसने बलराज गोगिया को अपनी तरफ बढ़ते देखा। माथे पर पसीने की छोटी-छोटी

बूंदें चुहचुहा आईं।

"मैनेजर का कमरा कौन-सा है?" काउंटर पर आते ही फुंफकारा बलराज गोगिया।

"व...वो...वे पीछे गैलरी में...सबसे लास्ट...।"

"बुला उसे।"

"स...साहब यहां नहीं हैं...।"

"नहीं है तो आ जायेगा।"—गुर्राहट उभरी बलराज गोगिया के मुख से, उसी के साथ ही वह उछलकर काउंटर पर चढ़ गया।

तभी एक मुस्टंडे ने मेज पर रखे शीशे के शो पीस पर सरिया चला दिया।

'खनाक।' की आवाज के साथ शीशा टूटकर चारों तरफ बिखर गया।

यह हॉल में बैठे पी रहे लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने का एक ढंग था—और यह तरीका सौ फीसदी कामयाब भी हुआ था। हॉल में मौजूद सभी लोगों का ध्यान काउंटर की तरफ हो गया।

और जब उन्होंने बलराज गोगिया को काउंटर पर खड़े और नीचे खूंखार नजर आने वाले हथियारबन्द लोगों को खड़े देखा तो सभी की सांस रुक गई।

"जिसको भी अपनी जान प्यारी है वह तुरन्त ही यहां से दफा हो जाये।" जोर से दहाड़ा बलराज गोगिया—"क्योंकि अब यहां पर मौत का ताण्डव शुरू होने जा रहा है।"

बलराज गोगिया की चेतावनी ने एकदम से घबराहट का माहौल पैदा कर दिया। लोग धड़ाधड़ बाहर की तरफ भागने लगे—कई तो घबराहट के मारे कुर्सी समेत ही उलट गये।

तभी बलराज गोगिया ने अपने गुलामों को आदेश सुना दिया—"एक भी चीज साबुत नहीं रहनी चाहिये, अगर मुझे कोई भी चीज साबुत नजर आ गई तो मैं तुम्हारी टांगें तोड़ डालूंगा।"

हॉकियों, सरियों से लैस गुलाम शुरू हो गये तोड़-फोंड़ में। मेज पर वो गिलासों, जग वगैरा को तोड़ रहे थे। कीमती शराबों की बोतलों पर लोहे के सरिये बरसने लगे। ऐसा लगने लगा जैसे कांच की बरसात हो रही हो वहां।

इधर बलराज गोगिया ने गैलरी की तरफ छलांग लगाई और मैनेजर के ऑफिस की तरफ चल पड़ा।

अभी वह ऑफिस तक पहुंचा ही था कि ऑफिस का दरवाजा खुलता देखा उसने।

बाहर हॉल में छूट रहे पटाखों की आवाजों के कारण मैनेजर कारण जानने के लिए ऑफिस से बाहर निकला था...। लेकिन बाहर निकलकर बहुत बड़ी गलती कर डाली उसने।

'धड़ाक!' बलराज गोगिया के सिर की भरपूर ठोकर उसके नाक पर आ पड़ी और वह डकारता हुआ पीछे गैलरी में जा गिरा।

इसके पहले कि मैनेजर सम्भल पाता—बलराज गोगिया की रिवॉल्वर उसकी गर्दन से आ सटी।

"खड़ा हो हरामजादे...।" गुर्राया बलराज गोगिया।

हैरान परेशान उसे देखता हुआ मैनेजर खड़ा हो गया—"क...कौन हो तुम...?"

"अन्दर चल।" उसकी बात का उत्तर देने के स्थान पर आदेश दिया बलराज ने।

रिवॉल्वर के आगे मजबूर था वह—सो आदेश का पालन करना पड़ा उसे।

ऑफिस में आ गया वह—और उसकी पीठ से रिवॉल्वर सटाये बलराज गोगिया भी अन्दर आ गया।

"यह पटाखों की आवाजें सुन रहा है न तू?" उसे कुर्सी पर धकेलते हुए बोला बलराज गोगिया—"तेरे रैस्टोरेंट का सत्यानाश हो रहा है और अभी कुछ ही देर में तेरे इस ऑफिस की हालत भी वैसी ही हो जायेगी। और उसके बाद तेरी बारी...। बस थोड़ी टूट-फूट करेंगे तेरी।"

"मगर तुम लोग हो कौन, हमारे साथ तुम्हारी क्या दुश्मनी है?"

"स्मैक बेचता है न तू...?"

उछल पड़ा मैनेजर और फटी-फटी आंखों से बलराज गोगिया को देखने लगा।

"बोल बेचता है कि नहीं...?"

"न...हीं...हम स्मैक का धंधा नहीं करते...।"

"फिर तो तू यह भी कहेगा कि तू अवतार का पुत्तर नहीं है।"

हैरानी का एक और जबरदस्त झटका लगा उसे। फटी-फटी आंखों से वह बलराज की तरफ देखने लगा।

"बलराज गोगिया नाम है मेरा हरामजादे!"—सांप की तरह फुंफकारा वह—"तेरे बाप अवतार सिंह का पूरा का पूरा सत्यनाश कर दूंगा मैं और इसकी शुरूआत इसी रैस्टोरेंट से शुरू कर रहा हूं। अपने बाप अवतार से बोल देना कि बलराज गोगिया उसे तब तक

नहीं छोड़ेगा जब तक कि वो इस धरती पर सांस ले रहा है।"

तभी दो गुलाम ऊपर आये और बलराज की तरफ देखते हुए बोले—"बाहर का काम तो लगभग पूरा हो चुका है। अब आगे बताओ क्या करना है?"

"यह ऑफिस बहुत सजा हुआ है।" बलराज़ गोगिया बोला—"लाखों की सजावट की हुई है। मुझे यह एक आंख नहीं भा रहा।"

"अभी लो...।" एक गुलाम बोला।

"और इसकी भी थोड़ी मरम्मत कर दो, साथ ही इससे यह भी उगलवाना है कि स्मैक का स्टोर किधर है?"

अगले ही पल एक गुलाम ऑफिस की सजावट को निखारने में जुट गया...जबकि दूसरा मैनेंजर की तरफ बढ़ने लगा।

तेजी से लहराई उसकी हॉकी और उसकी दाईं टांग पर आ लगी।

दर्दनाक चीख निकल गई मैनेजर के मुख से—एक ही वार में उसकी टांग की हड्डी टूट गई थी।

लेकिन गुलाम जैसे पैदा ही बहरा हुआ था—मैनेजर की चीख का उस पर कोई असर नहीं हुआ। उसकी हॉकी पुनः लहराई और दूसरी टांग पर आ बरसी।

और फिर तो वह लगातार मशीनी अंदाज में उस पर हॉकियां बरसाने लगा—मैनेजर की चीखें इतनी भयानक अंदाज में उसके मुख से उबल रही थीं कि उन्हें सुनकर जल्लाद सरीखे व्यक्ति का भी दिल दहल जाये।

"वता हरामजादे—कहां है स्मैक...?" पास खड़ा बलराज गोगिया गुर्राया।

टूट चुका था मैनेजर। उसकी टांगों की सारी हड्डियों का चूरा-चूरा कर डाला था बलराज गोगिया के गुलाम ने।

"म...मेज की निचली दराज में...।" दर्द से चीखता हुआ बोला मैनेजर।

बलराज गोगिया तुरन्त ही मेज की तरफ लपका और निचला दराज बाहर खींच लिया।

स्मैक के दो बड़े पैकेट मौजूद थे वहां...।

उसने दोनों पैकेट उठाये और पुनः मैनेजर के सामने करते हुए बोला—"अवतार को मेरा नाम बताना न भूलना, बलराज नाम है मेरा—बलराज गोगिया।"

और कुछ देर बाद जब बलराज गोगिया अपने गुलामों के साथ बाहर निकला तो सिंह रैस्टोरेंट एण्ड बार अन्दर से पूरी तरह से खण्डहर बन चुका था। मानो कोई तूफान आकर गुजर गया हो वहां से।

"अब कहां चलना है उस्ताद?" एक गुलाम बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला।

"रशीद मार्ग...।" मुस्कुराते हुए जवाब दिया बलराज गोगिया ने।

❑❑❑

अवतार सिंह एक लम्बे कद-काठी का करीब पैंतालीस वर्ष का आदमी था। इतना कुछ हो जाने के बावजूद भी वह चेहरे-मोहरे-से बला का फुर्तीला नजर आ रहा था। अपनी दहशतभरी आंखों से वह बड़े-बड़े मजबूत दिल वालों के कलेजे दहला देने की कुव्वत रखता था। गोरे चेहरे पर सिर्फ आंखें ही ऐसी थीं अवतार सिंह की जो कि उसके चेहरे से कतई मेल नहीं खाती थीं। अगर अवतार सिंह अपनी आंखें बंद कर ले तो उसके सामने आने वाला शख्स, जो कि उससे अंजान हो, उसे न जानता हो, वह यही समझेगा कि अवतार सिंह एक शरीफ किस्म का इंसान है।

शराब के हल्के-हल्के घूंट भरते हुए उसने अपने सामने खड़े अपने दाहिने हाथ राजवीर की तरफ देखा और बोला—"उसका पता चला कुछ...?"

"अभी तो कुछ पता नहीं चला सरदार साहब—लेकिन उसकी खोज जारी है, हमारे आदमी उसे चप्पे-चप्पे पर तलाश कर रहे हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि शीघ्र ही उसके मिलने की खबर आप को मिल जायेगी।" अपने स्वर में सम्मान लाते हुए बोला राजवीर।

राजवीर की आवाज से तो ऐसा लगता था जैसे वह अवतार सिंह का जरखरीद गुलाम हो—और यह लगभग सच ही था—अवतार सिंह के सामने आने वाला उसका कोई भी आदमी एक गुलाम की हैसियत से बात करता था उससे...। अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"उसका मिलना बहुत जरूरी है राजवीर, वरना हमारी सारी मेहनत पर पानी फिर जायेगा, और अवतार सिंह अपनी मेहनत को बेकार जाते नहीं देख सकता।"

"आप इत्मिनान रखिये सरदार साहब—वह आज नहीं तो कल जरूर मिल जायेगा।"

"और चौधरी...?"

"दुष्यंत चौधरी...।"

"हां वही,..उसके बारे में पता किया?"

"वह तो हर वक्त हमारी आंखों के सामने है। हमारे दो आदमी लगातार उस पर नजर रखे हुए हैं।"

"हूं।"—एक हुंकार भरी अवतार सिंह ने और सोचों में डूब गया।

लेकिन तभी फोन की घण्टी बज उठी और सोचने की मुद्रा बनाने जा रहा अवतार सिंह, प्रश्नभरी निगाहों से राजवीर को देखने लगा जैसे पूछ रहा हो कि किसका फोन हो सकता है?

"लगता है उसी की कोई खबर आई है।" राजवीर फोन की तरफ बढ़ते हुए बोला।

फोन उठाकर उसने रिसीवर कान से लगाया और माऊथ पीस में बोला—"हैल्लो...।"

प्रत्युत्तर में उधर से जो कुछ कहा गया उसे सुनकर राजवीर के चेहरे पर हैरानी और अविश्वास की आंधियां चलने लगीं।

"क...कब हुआ यह सब...?" पूछा राजवीर ने।

"अभी...अभी...न...मुझसे बोला नहीं जा रहा...आह... कम्बख्त ने टांगों की सारी हड्डियां तोड़कर रख दी हैं।"

"मैं अभी वहां पहुंच रहा हूं तब तक तुम फोन करके किसी डॉक्टर को बुला लो।"

"अच्छा...।"

"और पुलिस के आने पर तूने यही कहना है कि तुझे नहीं पता कि वे लोग कौन थे—मैं खुद वहां पहुंचकर बाकी बात करूंगा तुझसे।"

कहकर राजवीर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और अवतार सिंह की तरफ देखने लगा, जो कि हैरानी से उसकी तरफ ही देख रहा था।

राजवीर की बात से इतना अंदाजा तो वह लगा ही चुका था कि अवश्य ही कोई अनिष्ट हुआ है, लेकिन वह अनिष्ट क्या हुआ है, यह अभी पता नहीं था उसे, सो जैसे ही राजवीर से उसकी निगाहें मिलीं वह बोल पड़ा—"क्या हुआ, किसका फोन था?"

"रघुनाथ का।" राजवीर बोला—"बलराज गोगिया ने सिंह रेस्टोरेंट को पूरी तरह से तबाह कर दिया है। इतना ही नहीं उसने रघुनाथ की दोनों टांगें तोड़ डाली हैं और साथ ही पच्चीस लाख की हेरोईन भी साथ ले गया है।"

"क...या?" फटी-फटी आंखों से राजवीर की तरफ देखने लगा अवतार सिंह—"बलराज गोगिया ने किया यह सब...?"

"नहीं—उसके साथ उसके आठ-दस साथी भी थे।"

आश्चर्य का एक और झटका लगा अवतार सिंह को—"बलराज गोगिया के साथ उसके साथी भी! ऐसा कैसे हो सकता है—अभी परसों ही तो फरार हुआ है वह और इतने में उसने अपने साथी भी पैदा कर लिए। नहीं अवश्य ही बलराज गोगिया किसी और के हत्थे चढ़ गया है—उसकी पीठ पर किसी का हाथ पड़ गया है—वर्ना इतनी जल्दी ताकत कैसे इकट्ठी कर लेता वह, और फिर उसको सिंह रेस्टोरेंट का पता किसने बताया—उसे खुद तो सपना आने से रहा।"

"मेरे लिए क्या हुक्म है, सरदार साहब...?"

"तू वहां जा और सारी बात मालूम कर रघुनाथ से...।"

"जी...बहुत अच्छा...।"

और पता लगा कि कौन है वो हरामजादा जो हमारे सामने सिर उठाने की कोशिश कर रहा है, कौन है वो जो बलराज गोगिया के कंधों पर बंदूक रखकर हम पर फायर कर रहा है?"

"मैं अभी इसका बन्दोबस्त कर देता हूं...।"

"तो फिर जा...खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहा है।" झुंझलाये हुए अंदाज में फटकारा उसने राजवीर को। बुरी तरह से हड़बड़ाई अवस्था में राजवीर कमरे से बाहर निकल गया।

❑❑❑

सिंह वार एण्ड रेस्टोरेंट के मेन गेट के बाहर लोगों की भीड़ तथा पुलिस देखकर ही राजवीर समझ गया कि पुलिस वहां पहुंच चुकी है। अब उसे यह मालूम करना था कि पुलिस को बलराज गोगिया का पता चल चुका था या नहीं।

कार से उतरकर वह आगे बढ़ा और भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ गेट के अन्दर प्रवेश कर गया। सामने ही स्टाफ के चार आदमियों के साथ एक इंसपेक्टर तथा एक सब-इंसपेक्टर बात कर रहे थे। इंसपेक्टर को पहली नजर में ही पहचान लिया राजवीर ने। वह पहाड़िया था। इंसपेक्टर अलोकनाथ पहाड़िया। अवतार सिंह जैसे बड़े लोगों की सेवा करने में पहाड़िया का नाम काफी ऊपर आता था।

पहाड़िया को देखते ही राजवीर के चेहरे पर सन्तोष झलकने लगा—मन-ही-मन वह भगवान का शुक्र मना रहा था कि उसने पहाड़ियां को ही यहां भेजा।

इधर पहाड़िया की नजर भी राजवीर पर पड़ चुकी थी...। लालच की एक तेज चमक पहाड़िया की आंखों में नाचने लगी। राजवीर को वह अवतार सिंह के दाहिने हाथ के रूप में अच्छी तरह से जानता था। और राजवीर की यहां आमद साफ बता रही थी कि मामला छोटे-मोटे गुण्डे-बदमाशों का न होकर काफी तगड़ा था।

यानि बड़ा मामला, बड़े नोट, ढेर सारी रिश्वत।

राजवीर ने गर्दन घुमाकर नजर उसकी पीठ पर डाली फिर पुनः अपनी गर्दन सीधी कर रेस्टोरेंट में प्रवेश कर गया।

रेस्टोरेंट की हालत देखकर ही हैरान रह गया वह—ऐसी कोई भी चीज वहां नहीं छोड़ी थी बलराज गोगिया ने जिसे देखकर यह कहा जा सके कि वह पुनः काम में लाई जा सकती है।

पूरे हॉल का फर्श कांच के छोटे-बड़े टुकड़ों से भरा पड़ा था। कुर्सियां-मेजें टूटी पड़ी थीं—शराब की एक भी बोतल साबुत नहीं छोड़ी थी उसने।

राजवीर ने एक लम्बी सांस छोड़ी और दाईं तरफ खड़े स्टाफ के उन चारों आदमियों की तरफ बढ़ गया जो कि अभी कुछ देर पहले पहाड़िया के पास खड़े थे।

राजवीर को अपनी तरफ बढ़ते देख चारों एकदम से पीछे हो गये और उसका अपने पास पहुंचने का इंतजार करने लगे।

"इंसपेक्टर या सब-इंसपेक्टर को कुछ बताया तुम लोगों ने,...?" पास पहुंचते ही पूछा राजवीर ने।

"ज...जी नहीं।" एक आदमी बोला—"अभी उसने हमसे पूछा ही नहीं था।"

"कोई पूछे तो बताना भी नहीं...।"

बात करने वाले आदमी के साथ-साथ उसके साथी भी हैरानी से राजवीर की तरफ देखने लगे। जबकि उनकी हैरानी को नजरअंदाज करते हुए राजवीर कह रहा था—"किसी के भी पूछने पर तुम्हें सिर्फ यही कहना है कि तुम्हें कुछ नहीं मालूम कि वे लोग कौन थे!"

"ज...जी।"

"वैसे वे लोग थे कौन...?"

"य...यह तो हम भी नहीं जानते—हम एक बलराज गोगिया को जानते हैं, क्योंकि केवल वही अपने नाम का प्रयोग कर रहा था—उसके अलावा हम किसी को नहीं जानते...।"

"हूं...।" एक हुंकार भरी राजवीर ने और बोला—"पता

लगाओ कि बलराज गोगिया के साथी कौन थे—और पता लगते ही फौरन मुझे खबर देना।"

"जी...।" वह आदमी बोला।

"यही बात स्टाफ के सभी सदस्यों को भी समझा देना कि उन्हें पुलिस या किसी और को कुछ नहीं बताना...।"

"ज...जी बहुत अच्छा...।"

राजवीर ने उनकी तरफ पीठ की और काउंटर की तरफ बढ़ गया...। उसे अपने अन्य अड्डों पर भी फोन करना था।

लेकिन वहां उसे फोन बिल्कुल बुरी हालत में मिला...।

एक लम्बी सांस लेकर वह मैनेजर रघुनाथ के ऑफिस की तरफ बढ़ गया—रघुनाथ ने उसे फोन किया था—जाहिर था कि वहां का फोन बिल्कुल ठीक-ठाक था।

रास्ते में बिखरे कांच तथा अन्य सामान से बचता हुआ वह रघुनाथ के ऑफिस में पहुंचा और फोन उठाकर नम्बर डायल करने लगा।

दस मिनट तक वह अपने विभिन्न अड्डों पर निर्देश देता रहा फिर बाहर निकल गया।

❑❑❑

"हा...हा...हा...।" बेतहाशा अट्ठहास उबल रहे थे इकबाल के मुख से...।

उसके सामने खड़ा उसका खास गुलाम उसके पी०ए० की हैसियत रखने वाला निरंजन मुस्कुराते हुए उसकी तरफ देख रहा था।

अभी-अभी फोन पर उसे सिंह रेस्टोरेंट की तबाही की सूचना मिली थी—उसी सूचना को सुनकर ही वह अट्ठहास लगा रहा था।

कुछ देर बाद उसके ठहाकों को ब्रेक लगी और वह निरंजन की तरफ देखते हुए बोला—"इसे कहते हैं जिसकी लाठी उसका सिर। बलराज गोगिया को आजाद तो करवाया था अवतार ने—मगर उसका फायदा उठा रहे हैं हम, वो भी उसके खिलाफ जिसने उसे आज़ाद करवाया, यह तो मुझे अचानक ही अवतार की खबर लग गई कि वह बलराज गोगिया को फरार करने जा रहा है, सो मैंने उसका फायदा उठाने में देर नहीं लगाई—आनन-फानन में मैंने बलराज गोगिया की पिछली जिन्दगी के बारे में मालूमात की और बलराज को अपने फांसे में ले लिया—मेरे अहसानों तले दब बलराज गोगिया अब अवतार सिंह को तबाह कर देगा और तब...तब अण्डरवर्ल्ड का सरताज मैं

हूंगा—हा...हा...हा।"

"लेकिन चीफ, एक बात अभी भी समझ में नहीं आ रही...।" निरंजन बोला।

इकबाल उसकी तरफ देखने लगा—"क्या...?"

"इस बात का पता हमें अभी तक नहीं लग सका कि अवतार ने बलराज गोगिया को फांसी के तख्ते से आजाद क्यों करवाया?"

"उन हीरों की खातिर जो कि दुश्मन के पास हैं...।"

"नहीं, उन हीरों को तो वह बलराज गोगिया के बिना भी प्राप्त कर सकता था—इसके पीछे कोई और कारण है चीफ, अगर वह कारण हमें पता चल जाये तो हो सकता है जो फायदा अवतार उठाना चाहता था वह हम उठा लें, क्योंकि बलराज तो अपने हाथ में है।"

इकबाल की मुद्रा सोचपूर्ण हो गई—"तू ठीक कह रहा है निरंजन—लेकिन उस कारण का पता हमें तभी लग सकेगा जब अवतार हमारे कदमों में रहम की भीख मांग रहा होगा—और अण्डरवर्ल्ड का यह असूल है कि किसी पर रहम न किया जाये—जिसने भी रहमदिली दिखाई—वह गया—लेकिन हम रहमदिली करेंगे अवतार पर—उसे आजाद करने का वायदा करके हम उससे उस कारण का पता पूछेंगे और जब वह कारण बता देगा—तब अण्डरवर्ल्ड का उसूल याद करा देंगे उसे...।"

कहते-कहते इकबाल के होठों पर जहरीली मुस्कान नाचने लगी।

"और अगर अवतार ने वही कारण बताया जो कि हमने बलराज को बताया है तो...?"

"तब की तब देखी जायेगी।" हल्की झुंझलाहट में बोला इकबाल—"मजा किरकिरा करने का अभी वक्त नहीं, अभी तो अवतार के अड्डों पर हो रहे हमलों की जानकारी पाकर खुश हो लो—नाचो, अवतार को लग रही एक-एक चोट मेरी ताकत में बढ़ोत्तरी कर रही है। और अपनी बढ़ती हुई ताकत के नशे को मैं फिलहाल तो खराब नहीं करना चाहता।"

निरंजन ने फिर कोई बात नहीं की—इकबाल के हुक्म ने उसे चुप रहने को मजबूर कर दिया था—जबकि उसके दिमाग में अभी भी कई प्रश्न जहरीले सांपों की तरह घूम रहे थे।

❑❑❑

रशीद मार्ग पर अवतार सिंह का कपड़े का विशाल शोरूम बना हुआ था—उस शोरूम की आड़ में उसका नशे का व्यापार

बादूबो फल-फूल रहा था—रोज ही लाखों के वारे-न्यारे हो रहे थे उसके।

शोरूम के ऊपर 'आपका क्लाथ हाउस' के नाम का काफी बड़ा न्यून बोर्ड लगा हुआ दूर से ही नजर आ रहा था। बलराज गोगिया ने शोरूम से काफी दूर कार में बैठे-बैठे ही न्यून बोर्ड पर नजरें डालीं और फिर अपने अगली सीट पर बैठे इकबाल द्वारा बख्शे गये अपने गुलामों की तरफ देखते हुए बोला—"पैट्रोल तैयार है न...?"

"हां...!" उसके दाईं तरफ बैठा गुलाम बोला—"पांच गैलन पैट्रोल कार की डिक्की में पड़ा है।"

"मैं शोरूम में पहुंचता हूं। जैसे ही मैं इशारा करूं तुम सभी वहां आ जाना और शोरूम को पैट्रोल से नहला देना।"

"ठीक है...!"

"कार को आगे बढ़ाओ—"बलराज गोगिया ड्राईवर से मुखातिब हुआ—"और शोरूम के नजदीक ले जाओ।"

ड्राईवर ने तुरन्त ही कार आगे बढ़ा दी और शोरूम के ऐन सामने सड़क के उस पार लाकर खड़ी कर दी।

कार का दरवाजा खोलकर बलराज गोगिया कार से बाहर निकला और सड़क पार करता हुआ शोरूम में इस प्रकार दाखिल हो गया जैसे वह कोई कस्टमर हो और कपड़ा खरीदने के लिए आया हो।

काउंटर के पीछे खड़े सेल्समैन ने व्यापारिक मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया—"आईये सर—शोरूम में आपका स्वागत है—कहिए क्या दिखाऊं आपको?"

बिजली की सी तेजी से बलराज गोगिया का दाहिना हाथ आगे बढ़ा और उसने सेल्समैन के सिर के बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया।

इससे पहले कि सेल्समैन अपनी मदद के लिए चिल्लाता—एक जबरदस्त झटका दिया बलराज गोगिया ने उसे। बुरी तरह से चीखता हुआ सेल्समैन मैनेजर के ऑफिस के दरवाजे से टकराया। दरवाजा तेज झटके से खुला और सेल्समैन अन्दर जा गिरा।

इसके पहले कि दरवाजा पुनः बंद होता बलराज गोगिया अन्दर छलांग लगा चुका था...। और साथ ही उसकी रिवॉल्वर जेब से निकलकर उसके हाथ में आ चुकी थी।

अन्दर मैनेजर सकते की अवस्था में अभी सेल्समैन को देख ही रहा था कि बलराज की रिवॉल्वर उसकी कनपटी से आ टकराई।

बुरी तरह से बौखला उठा मैनेजर—"क...कौन हो तुम...?"

"तेरे बाप का बाप...।" बेहद क्रूर स्वर में गुर्राया बलराज गोगिया।

"क...क्या मतलब...?"

"अवतार है न तेरे बाप का नाम, मैं उसका बाप बलराज गोगिया हूं—अब यह मत कहना कि तू अवतार को नहीं जानता...।"

मैनेजर हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा।

"हैरान हो रहा है न यह सोचकर कि मैं अवतार के इस अड्डे के बारे में कैसे जानता हूं? मैं तो यह भी जानता हूं कि अवतार का यह शोरूम तो सिर्फ लोकदिखावा है जबकि यहां पर उसका नशे का व्यापार चलता है, शोरूम की आड़ में वह लाखों-करोड़ों कमा रहा है—और आज अवतार के इस अड्डे पर जितना भी नशा पड़ा है उस पर सिर्फ मेरा ही हक है।"

"त...तुम्हें गलतफहमी है। य...यह शोरूम सरदार साहब का जरूर है मगर यहां ऐसा कोई गैर कानूनी धंधा नहीं होता—अगर विश्वास न हो तो खुद ही तलाशी ले सकते हो।"

एक जहरीली मुस्कान थिरकने लगी बलराज गोगिया के होठों पर—"गलतफहमी मुझे है या तुझे, इसका पता अभी लगा जाएगा, बाहर निकल।"

और मैनेजर को रिवॉल्वर की नोक पर कवर किए हुए बलराज़ गोगिया केबिन से बाहर ले आया।

इधर शोरूम के बाहर खड़े बलराज गोगिया के गुण्डों ने जैसे ही बलराज गोगिया को मैनेजर को रिवॉल्वर की जद में लिए देखा पैट्रोल की गैलनें उठाए हुए सभी तेजी से सड़क पार करते हुए शोरूम की तरफ बढ़ने लगे।

"उधर देख हरामजादे!" सड़क पार कर रहे अपने गुलामों की तरफ इशारा करते हुए भेड़िये की तरह गुर्राया बलराज गोगिया—"ये सब मेरे गुलाम हैं—और उनके हाथों में जो गैलनें देख रहे हो वे पैट्रोल की भरी हुई हैं—और यह सारा पैट्रोल शोरूम में बिखेर दिया जाएगा, तब बस माचिस की एक तीली की जरूरत पड़ेगी और सब कुछ स्वाहा हो जाएगा। शोरूम के साथ तेरे शोरूम में काम करने वाले भी उस आग की भेंट चढ़ जाएंगे और साथ ही नशे का वह स्टॉक भी जिसे बचाने के लिए तू रीं-रीं कर रहा है।"

अभी बलराज गोगिया की बात पूरी हुई थी कि मैनेजर की तरफ से पता नहीं कैसा इशारा हुआ कि अगले ही क्षण रेट-रेट की

आवाजों से आस-पास का पूरा इलाका गूंज उठा।

गोलियां सड़क पार कर रहे उन गुलामों के हाथों में पकड़ी गैलनों से टकराईं।

'बड़ाम-बड़ाम!'

ऐसा लगा जैसे दुश्मनों ने परमाणु बमों के धमाके कर दिये हों वहां।

आग की फुलझड़ियां चारों तरफ इस तरह बिखरीं जैसे आतिशबाजी छूट रही हो—आग के उड़ रहे उन शोलों में इंसानी गोश्त तथा खून भी था, जो कि बलराज के गुलामों का था।

आठों-के-आठों गुलामों के जिस्मों के चीथड़े उड़ गए—चीख भी नहीं सके थे वे।

इधर बलराज गोगिया हैरान अवाक्-सा अभी भी बाहर की तरफ देख रहा था। आंखों में अभी भी अविश्वास नजर आ रहा था। सकते की सी अवस्था में उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया था।

चौंका तो वह तब, जब एक साथ कई रिवॉल्वरें उसके जिस्म से आ लगीं और साथ ही एक वजनी प्रहार उसकी बांह पर पड़ा।

बिलबिला उठा बलराज गोगिया और रिवॉल्वर उसके हाथ से छूट गई।

"क्यों...कैसी रही?" मैनेजर जहरीली मुस्कान होंठों पर बिखेरते हुए बोला—"कुछ गुलामों के दम पर बड़े-बड़े किले फतह नहीं किए जा सकते बलराज गोगिया—उसके लिए बहुत बड़ी ताकत की जरूरत होती है—केवल हौसला ही काफी नहीं होता।"

बलराज गोगिया के होंठ केवल हिलकर रह गये, मुंह से बोल भी नहीं फूटा उसके। इकबाल द्वारा किए गए अहसान को चुकाने के लिए उसने दुश्मन की ताकत का अंदाजा भी नहीं लगाया और हमला कर दिया।

बहुत बड़ी बेवकूफी कर बैठा था वह और उस बेवकूफी का पता भी उसे तब लगा, जब मौत ने चारों तरफ से उसे घेर लिया था। होंठों पर जुबान फेरते हुए वह मैनेजर की तरफ देखने लगा। जबकि मैनेजर होंठों पर विजयी मुस्कान बिखेरे हुए कह रहा था—"तू क्या समझता है बलराज गोगिया, सिंह रेस्टोरेंट को तबाह करके तूने सरदार साहब का वजूद ही खत्म कर दिया है, अरे बेवकूफ ऐसे हजारों रेस्टोरेंट सरदार साहब की बाईं जेब में पड़े होते हैं। लेकिन फिर भी तुमने उनकी शख्सियत को ललकारा और परिणाम देख लो, तुम हमारे

सामने रहमोकरम पर खड़े हो, मेरा एक ही इशारा तुम्हारे जिस्म को छलनी कर सकता है—मगर हम तुम्हें मारेंगे नहीं जानते हो क्यों...?"

बलराज थूक सटक कर रह गया। मुंह से बोल नहीं फूटा उसके।

"इसलिए कि यह सरदार साहब का हुक्म है। वे तुम्हें जिन्दा एकदम से सही-सलामत अपने सामने देखना चाहते हैं।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस मैनेजर का मुंह ताकने लगा।

"यहां की पुलिस सरदार साहब की गुलाम है—यूं समझ लो सरदार साहब की मेहरबानी से पुलिस वालों के घरों में चूल्हे जल रहे हैं। सरकार द्वारा मिल रही तन्ख्वाह तो उनकी शराब में ही खत्म हो जाती है—और तुम्हें भी पुलिस वालों से एलर्जी है—इसलिए बाहर निकलकर चीखने-चिल्लाने की कोशिश मत करना—इसमें हमारा तो कुछ नहीं जाएगा—अगर तुम पुलिस के हत्थे चढ़ गये तो दुनिया की खूबसूरती देखने को तरसते हुए ही फांसी चढ़ जाओगे, इसलिए चुपचाप बाहर निकलो और बाईं तरफ खड़ी फीयेट में सवार हो जाओ।

बलराज गोगिया के सामने आज्ञा मानने के सिवा और कोई चारा भी तो नहीं था।

मैनेजर और वह वहीं पर ही खड़े रह गए और बलराज गोगिया अकेला ही शोरूम के गेट को पार करता हुआ बाहर निकल आया।

बाईं तरफ एक सफेद फीयेट खड़ी थी जिसका दरवाजा खुला हुआ था। एक गुण्डे की गर्दन बाहर झांक रही थी।

मन ही मन भगवान से अपनी जान बच जाने की प्रार्थना करता हुआ वह कार की तरफ बढ़ने लगा।

कार की तरफ बढ़ते हुए उसने एक नजर सड़क पर डाली।

चारों तरफ खून तथा गोश्त बिखरा पड़ा था। कई जगह अभी भी आग लगी हुई नजर आ रही थी—दूर-दूर तक किसी इन्सान का वजूद तक नजर नहीं आ रहा था।

एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और कार में आकर बैठ गया।

कार के अन्दर तीन आदमी बैठे नजर आए उसे, एक अगली सीट पर तथा दो पिछली सीट पर।

"कोई गलत हरकत करने की कोशिश मत करना बलराज गोगिया।" एक बदमाश चेतावनीभरे स्वर में गुर्राया—"वर्ना हमें

मजबूरन तुम्हें बेहोश करके सरदार साहब के सामने ले जाना पड़ेगा।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला, बस अपने कंधे उचका दिए।

ड्राईवर ने कार स्टार्ट की और गियर में डालकर आगे बढ़ा दी।

□□□

अवतार सिंह ने बलराज गोगिया को ऊपर से नीचे तक भरपूर निगाहों से देखा फिर अपनी आंखें उसकी आंखों में डालते हुए मुस्कुराया—"फ़रार होते ही रंग दिखाना शुरू कर दिया—जानते हो मेरा कितना नुकसान कर बैठे हो तुम?"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस उसकी तरफ देखता रहा।

"पचास लाख से ऊपर का नुकसान हो चुका है मेरा।" अपने प्रश्न का स्वयं ही उत्तर दिया अवतार सिंह ने—"ऊपर से रघुनाथ की टांगें तोड़ीं वे अलग। अगर हम चाहते तो तुम्हारे आठों साथियों के साथ-साथ तुम्हें भी खत्म कर सकते थे। लेकिन हमने ऐसा नहीं किया, जानते हो क्यों?"

बलराज गोगिया पुनः कुछ नहीं बोला।

"इसलिए कि तुम्हारी जान हमारे लिए बहुत कीमती है—अपने आदमियों की जान खतरे में डालकर मैंने तुम्हें इसलिए फरार नहीं करवाया था कि तुम्हें कुत्ते की मौत मार दूं।"

"क...क्या?" उछल पड़ा बलराज गोगिया—हैरानी से उसकी आंखें चौड़ी हो गईं—"त...तुमने आजाद करवाया था मुझे?"

"हां...।"

"झूठ बोलते हो तुम—मुझे तुमने नहीं बल्कि उसने फरार करवाया था।" अविश्वासभरी आवाज में चीखा बलराज गोगिया।

मुस्कुरा पड़ा अवतार सिंह—"हमारी मेहनत का फायदा कोई और उठा रहा है। बलराज गोगिया तुम्हें बेवकूफ बनाया गया है—असल में हमने तो तुम्हें फांसी के फंदे से आजाद कराया था—और इसका पुख्ता सबूत है हमारे पास—उस सबूत को देखते ही तुम यह मानने को मजबूर हो जाओगे कि जिसकी बातों में आकर तुम हमको तबाह करने को तुल गए थे असल में वह धोखेबाज था।"

"क...क्या सबूत है तुम्हारे पास—?" बोला बलराज गोगिया—लेकिन साथ ही उसका कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा था—आंखों में अभी भी अविश्वास की रेखाएं तैरती नजर आ रही थीं।

अवतार सिंह की मुस्कान और भी तेज हो गई थी—''गोगिया!'' अपनी आंखों को उसकी आंखों में डालते हुए वह बोला—''सबसे पहला सबूत तो यही है कि हमने अपने इतने बड़े नुकसान के बावजूद भी तुम्हें एक खरोंच तक नहीं आने दी—वर्ना हमारे आगे उठने वाला सिर फौरन से पेश्तर कलम कर दिया जाता है—इससे यही साबित होता है कि हमें तुम्हारी लाश की नहीं बल्कि तुम्हारे जिन्दा वजूद की जरूरत थी—और हमने तुम्हें जिन्दा ही पकड़ा।''

''य...यह कोई खास सबूत नहीं माना जाएगा—यही बात तो वो शख्स भी कह सकता है जिसके लिए मैंने तुम्हारा इतना बड़ा नुकसान कर डाला—और आगे भी करने जा रहा था। कोई पुख्ता सबूत पेश करो अवतार सिंह, जिससे कि मैं यह मानने को मजबूर हो जाऊं कि मैंने अपने जीवनदाता पर ही हमला किया था।''

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—''उस शख्स ने जिसे तुम अपना जीवनदाता समझ रहे हो—क्या उसने तुम्हें बताया कि उसने तुम्हें आजाद कैसे करवाया?''

''उसकी जरूरत ही नहीं पड़ी पूछने की।''

''वह बता भी नहीं पायेगा—क्योंकि उसे पता ही नहीं कि तुम फरार कैसे हुए—उसने तो पेड़ पर लगा फल देखा और फट से उसे लपक लिया—जबकि उस फल पर उस माली का ज्यादा अधिकार था जिसने उस पेड़ को पानी से सींचा—खाद भी दिया—दिन-रात उसकी रखवाली की।'' कहकर अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और रहस्यभरे अंदाज में बोला—''बतरा को तो नहीं भूले होगे तुम, डॉक्टर बतरा—जिसने तुम्हें रिवॉल्वर दी थी।''

बुरी तरह से चौंका बलराज गोगिया। फटी-फटी आंखों से अवतार सिंह की तरफ देखने लगा।

''बतरा ने ही तुम्हें मजिस्ट्रेट को कवर करने को कहा था न?''

एक और झटका लगा बलराज के जेहन को।

''ऐसी और भी कई बड़ी बातें हैं जो कि बतरा खुद तुम्हें बतायेगा।''

कहकर अवतार सिंह ने दो बार ताली बजाई।

ताली बजते ही दाईं तरफ वाली दीवार एक तरफ सरकने लगी—और उसके पीछे जो चेहरा नमूदार हुआ, उसे देखकर उछल पड़ा बलराज गोगिया।

''ब...तरा...!'' चीख पड़ा वह।

मुस्कुराते हुए डॉक्टर बतरा उसके सामने आया और

बोला—"शुक्र है पहचान तो लिया तुमने—वर्ना मुझे तो यही खौफ खाये जा रहा था कि कहीं तुम पहचानने से ही इंकार न कर दो।"

बलराज गोगिया के मुंह से बोल नहीं फूटा। वह भाड़ की तरह मुंह खोले फटी-फटी आंखों से बतरा की तरफ देख रहा था।

"बतरा...!"

तभी अवतार सिंह बोल पड़ा—"बलराज गोगिया को बताओ कि तुमने किस तरह इसे फरार करवाया था?"

"जी सरदार साहब।"

और बतरा बलराज गोगिया को उसे फांसी पर से फरार कराने की पूरी कहानी सुनाने लगा।

इधर बलराज गोगिया के जेहन में विस्फोट-पर-विस्फोट हो रहे थे। वह हैरान हो रहा था, पर वह सोच-सोच कर उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही थी कि अपने ही जीवनदाता की जान के पीछे कैसे पड़ गया वह?

किस खूबसूरती से एक बात ने उसे बेवकूफ बनाकर उसके कंधे पर बंदूक रख दी थी और वह बेवकूफ बनकर उसके इशारों पर नाचने लगा था।

पूरी कहानी सुनाकर बतरा चुप हो गया और बलराज गोगिया के चेहरे पर उमड़ रहे भावों को गौर से देखने लगा। अवतार सिंह की निगाहें भी उसके चेहरे पर ही टिकी हुई थीं।

कुछ पल तो कमरे में मौत-सा सन्नाटा छाया रहा—आखिर इस सन्नाटे को अवतार सिंह की आवाज ने भंग किया—"अब तो तुम्हें विश्वास हो गया होगा बलराज कि तुम्हें फांसी के फंदे से आजाद करवाने वाला मैं था, वो नहीं जिसके इशारों पर चलकर तुमने मुझ पर ही हमला कर दिया था—अगर अभी भी विश्वास नहीं हुआ तो मैं उन सभी को सबूत के तौर पर बुला सकता हूं जिन्होंने तुझे मौत के जबड़े से निकालने में अपना योगदान दिया था।"

"बस सरदार साहब बस...!" जबान भर्रा गई बलराज गोगिया की—"अब और शर्मिन्दा करने की जरूरत नहीं। सचमुच बहुत बड़ा धोखा खा बैठा मैं, लेकिन अब"—अंगारे की तरह दहक उठीं उसकी आंखें—"अब मैं उस हरामजादे को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा—आपके हुए एक-एक पैसे के नुकसान का हिसाब लूंगा मैं उससे—पूरा का पूरा तबाह कर डालूंगा मैं। उसे—इतना बड़ा धोखा दिया उस कुत्ते ने मुझे...मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

"नहीं...यह काम तुम नहीं करोगे बलराज।"

"क...क्या मतलब?" उछल-सा पड़ा बलराज गोगिया—"अ...आप कहना क्या चाहते हैं?"

मुस्कुराया अवतार सिंह और बलराज गोगिया के कंधे पर थपकी देते हुए बोला—"तेरी जिन्दगी इतनी सस्ती नहीं बलराज गोगिया, कि मैं उसे लड़ने-भिड़ने के लिए लगा दूं—तुझे तो जिन्दा रहना है मेरे लिए—अपने लिए। तुम बस उस शख्स का नाम बता दो—बाकी का काम हम खुद सम्भाल लेंगे।"

"य...यह कैसे हो सकता है—नहीं सरदार साहब, अपने साथ हुए धोखे का बदला मैं खुद लूंगा उस हरामजादे से।"

"मैंने कहा न जो कुछ करना होगा हम खुद कर लेंगे—तुम बस उसका नाम बता दो।"

"ल...लेकिन...।"

"देखो बलराज गोगिया!" उसे समझाने वाले अंदाज में बोला अवतार सिंह—"अगर लड़ने-भिड़ने के लिए ही तुम्हें फांसी के फंदे से फरार कराना होता तो वो हमारी बेवकूफी कहलाती—तुम्हारी जिंदगी हमारे लिए बहुत कीमती है—लड़ने-भिड़ने वालों की हमारे पास कोई कमी नहीं—तेरी कीमती जिन्दगी को हम खतरे में नहीं डाल सकते।"

"म...मैं कुछ समझा नहीं—किस बिनाह पर आप मेरी जिन्दगी को कीमती बता रहे हैं?"

"वो भी बता दूंगा—पहले मुझे उस शख्स का पता तो बताओ, जिसने हमारे सामने सिर उठाने की जुर्रत की?"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"इकबाल नाम है उस हरामजादे का, जिसके झांसे में आकर मैंने आपका इतना बड़ा नुकसान कर डाला।"

"बस इतना ही बहुत है।"—अवतार सिंह की आवाज में हल्की-सी गुर्राहट का समावेश हो गया था—"उस हरामजादे इकबाल को मैं अच्छी तरह से जानता हूं—एक बार पहले भी वह अपनी हरकतबाजी दिखा चुका है—उस वक्त तो मैंने उस पर तरस खाकर छोड़ दिया था लेकिन अब...।"

झटके से उसने अपनी गर्दन बतरा की तरफ मोड़ी।

बतरा एकदम से सीधा हो गया—"मैं समझ गया सरदार साहब—इकबाल का एक भी कारिंदा जिन्दा नहीं बचेगा—दो दिन के अंदर-अंदर इकबाल के समस्त अड्डों का सत्यानाश हो जाएगा—और इकबाल को आपके रूबरू पेश कर दिया जाएगा।"

"तो फिर जा—शुरू हो जा।"

"जी सरदार साहब।"

"लेकिन जाते-जाते बलराज गोगिया को अपना असली रूप दिखाता जा। कहीं कल को असली डॉक्टर बतरा को देखकर वह धोखा न खा जाए।"

बतरा ने अपने बायें कान के पीछे नाखूनों से अपनी चमड़ी को खुरचा और फिर धीरे-धीरे अपनी चमड़ी को जो कि असल में फेसमास्क था और बतरा की शक्ल बना हुआ था अपने चेहरे से अलग करने लगा।

बतरा के चेहरे के पीछे से जो चेहरा उजागर हुआ वह राजवीर का था; जो कि बलराज के लिए कतई अंजान था।

"यह राजवीर है—!" राजवीर का परिचय कराते हुए बोला अवतार—"मेरा दायां हाथ।"

मुस्कुराकर बलराज गोगिया ने राजवीर से हाथ मिलाया और बोला—"जिन्दा रहा तो अपने ऊपर हुए अहसान का बदला जरूर चुकाऊंगा।"

"यह बात तुम सरदार साहब से कहो बलराज गोगिया, क्योंकि हमारी इस सारी कारगुजारी के पीछे इन्हीं का दिमाग था। इनकी सरपरस्ती में ही हम इतना बड़ा कारनामा अंजाम दे पाये।"

"अब तू जा राजवीर!" तभी अवतार सिंह बोल पड़ा—"और अपने काम पर लग जा।"

"जी सरदार साहब।"

पूरे सम्मान से बोला राजवीर और बलराज गोगिया के हाथ से अपना हाथ छुड़ाकर बाहर निकल गया।

"तुम मेरे साथ आओ बलराज गोगिया—मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हारी जिन्दगी हमारे लिए कितनी कीमती है।"

राजवीर के जाते ही अवतार सिंह बलराज गोगिया की बांह पकड़ते हुए बोला।

और वह उसे लेकर पीछे बने एक दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

❑❑❑

अवतार सिंह ने बीयर का मग खाली किया और उसे मेज पर रखकर मग को पुनः भरते हुए बोला—

"कत्ल करने के जुर्म में तुझे फांसी की सजा मिली थी बलराज गोगिया।"

"मैं जानता हूं।" बीयर गटकते हुए बोला बलराज

गोगिया—"अब सातवां कत्ल भी करना है मुझे।"

"दुष्यन्त चौधरी का—।" मुस्कुराया अवतार सिंह।

"हां—मगर उससे पहले मुझे उससे वे हीरे प्राप्त करने हैं जो कि वह अपने सीने से लगाए घूम रहा है।"

"यह खबर अवश्य ही तुझे इकबाल ने दी होगी—उसने यही कहा होगा कि कि उन हीरों की खातिर ही उसने तुझे फरार करवाया है।"

"क्या तुमने ऐसा नहीं किया—क्या तुम वे हीरे प्राप्त नहीं करना चाहते—?" बलराज गोगिया ने घूरकर उसकी तरफ देखा।

मुस्कुरा पड़ा अवतार सिंह—एक अर्थभरी मुस्कान और इन्कार में सिर हिलाया उसने—"बिल्कुल नहीं।"

"क...क्या मतलब—?" चौंक उठा बलराज गोगिया—"कहीं तुम ये तो नहीं कहना चाहते कि दुष्यन्त के पास हीरे हैं ही नहीं?"

"मैं यह नहीं कहना चाहता—चौधरी के पास हीरे हैं—इकबाल ने तुम्हें सही सूचना दी थी—लेकिन मैंने तुम्हें इन हीरों की खातिर फांसी के फंदे से नहीं छुड़वाया—उन हीरों को तो मैं खुद अपनी ताकत से भी प्राप्त कर सकता हूं—उसमें मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं।"

आंखें फैल गईं बलराज गोगिया की—हैरानी से वह उसकी तरफ देखने लगा—"य—यानि मुझे फरार करवाने के पीछे कोई और कारण है?"

"बिल्कुल।"

"क्या—?"

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और अपनी निगाहें बलराज गोगिया के चेहरे पर केन्द्रित करते हुए बोला—"तुमने जो छः कत्ल किये थे बलराज गोगिया, क्यों किये थे—?"

"अपना इंतकाम पूरा करने के लिए—।"

"कैसा इन्तकाम?"

"उन हरामजादों ने मेरे बाप तथा मेरी बहन को मार डाला था—बाप की तथा बहन की हत्या तो शायद मैं बर्दाश्त कर लेता—लेकिन उन कुत्तों ने मेरी फूल-सी बहन की इज्जत की धज्जियां उड़ा दी थीं—और कोई भी गैरतमंद भाई अपनी बहन के बलात्कारियों को कभी माफ नहीं कर सकता—मैंने भी ऐसा ही किया—उन कुत्तों को बहुत ही खतरनाक मौत दी मैंने—मगर अफसोस कि चौधरी बच गया मेरे हाथों से, उससे पहले ही मैं पुलिस की गिरफ्त में आ गया।"

अवतार सिंह ने बड़े सब्र के साथ उसकी बात सुनी—उसकी बात खत्म होते ही उसने अपना बीयर का भरा हुआ मग्र उठाया और दो घूंट भरकर पुनः मेज पर रखते हुए बोला—

"क्या तूने यह जानने की कोशिश की बलराज, कि उन लोगों ने जिन्हें तुमने सजाये-मौत दी, तेरे बाप को क्यों मारा—तेरी बहन की इज्जत क्यों लूटी?"

बलराज गोगिया इस बुरी तरह से उछला कि हाथ में पकड़े मग में से बीयर उछलकर उसके कपड़ों पर आ गिरी।

"बीयर गिर रही है—।" अवतार मुस्कुराया।

लेकिन बलराज गोगिया ने तो जैसे उसकी बात ही नहीं सुनी। फटी-फटी आंखों से वह उसकी तरफ देख रहा था—मुंह इस कदर खुल गया था कि तीन-चार मक्खियां उसके मुंह के अन्दर का पूरा राउंड लगाकर वापिस बाहर आ गई थीं और बलराज गोगिया को इसका पता भी नहीं चला।

"तेरे कपड़े खराब हो गए हैं बलराज गोगिया।" इस बार जरा ऊंचे स्वर में बोला था अवतार सिंह।

बलराज गोगिया को अब होश आया।

बीयर का मग मेज पर रखकर उसने अपने कपड़े झाड़े और अवतार सिंह की तरफ देखने लगा।

"मुझे तो बस इतना पता है कि उन्होंने मेरे बाप तथा बहन की इज्जत लूटकर उसे भी खत्म कर दिया—मेरी जगह और कोई भी होता तो उसके दिमाग में भी सिर्फ इन्तकाम ही होता—कारण जानने की किसे पड़ी थी। अगर कारण जान जाते तो शायद अब तक तुम भी ऊपर पहुंच चुके होते।"

बलराज गोगिया हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा—"जरा खुलकर बताओ—कहना क्या चाहते हो तुम—? कौन-सी वजह थी जिसके कारण उन लोगों ने मेरे बाप तथा बहन को मार डाला।"

"खजाना....।" रहस्यभरे अंदाज में बोला अवतार सिंह।

"ख...ख...जाना...कैसा खजाना?"

"अरबों का खजाना।"

बलराज गोगिया की आंखें पुनः फटने लगीं—उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि अवतार सिंह किस खजाने की बात कर रहा है?

अवतार सिंह ने उसके चेहरे के भावों को पढ़ा और मुस्कुराते हुए बोला—"तुझे इसका पता नहीं—मैं तुझे पूरे विस्तार से तो नहीं

बता सकता—लेकिन तुझे संक्षिप्त में जरूर बता सकता हूं।"

"तो बताओ—मेरा तो दिमाग फटा-सा जा रहा है, तुमने बम तो बहुत तगड़ा चलाया है—लेकिन उसकी धमक अभी तक नहीं सुनाई दी मुझे और उसी धमक को सुनने को मरा जा रहा हूं मैं—जल्दी कहो।"

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बीयर का मग उठाकर उसे धीरे-धीरे गटकने लगा।

सस्पैंस के मारे बलराज गोगिया का पूरा वजूद उत्तेजना से भरा पड़ा था—लेकिन आगे अवतार सिंह था, उसे जैसे उसकी उत्तेजना की परवाह ही नहीं थी।

अवतार सिंह के बीयर का मग खाली करने तक का समय बलराज गोगिया ने किस तरह से गुजारा—यह वह ही जानता था—। एक-एक लम्हा सदियों की बराबरी कटता महसूस हो रहा था बलराज को।

अवतार सिंह ने खाली मग मेज पर रखा और रूमाल निकाल कर अपने होंठ पोंछते हुए सस्पैंस को तोड़ा।

"तुझे याद होगा बलराज गोगिया के मरने से छः महीने पहले तेरा बाप तीन महीने बाहर रहकर आया था।"

"हां..." याद करते हुए बोला बलराज गोगिया—"मुझे अच्छी तरह याद है—मेरी बहन को मेरे सुपुर्द कर मेरा बाप काम के सिलसिले में बाहर गया था और तीन महीने बाद लौटा था।"

❑❑❑

"हां—अरबों-खरबों के उस खजाने की खबर उसे चौधरी ने दी थी—और वे सातों तथा तेरा बाप उस खजाने को प्राप्त करने के लिए निकल पड़े थे—उस खजाने की भनक मुझे भी लगी थी—मगर जब तक मैं खजाने वाले स्थान तक पहुंचता तेरा बाप और उसके साथी खजाना ले जा चुके थे—मुझे मालूम नहीं था कि खजाना किन लोगों के हाथ लगा था—सो उस खजाने का पता लगाने के लिए मैंने अपने आदमी चारों तरफ फैला दिये और जब तक मुझे पता चलता यह सारा काण्ड हो चुका था—तेरा बाप मर चुका था और इंतकाम की आग में जलते हुए तूने छः कत्ल कर डालो, सातवां चौधरी का कत्ल भी कर देता, मगर चौधरी चालाक निकला और उसने तुझे पुलिस के हाथों पकड़वा दिया। ऐसा करके चौधरी निश्चिंत हो गया लेकिन यह उसकी भूल थी। उस खजाने की चाहत मुझे भी थी। सो मेरे हाथ सीधे चौधरी के गिरेबान पर जा पड़े। मेरे आदमी उसे

पकड़कर सामने ले आये और तब चौधरी से मुझे पता चला कि तेरे बाप के दिल में बेईमानी आ गई थी—पूरा खजाना ही हड़प कर जाना चाहता था वह और ऐसा कर भी डाला उसने, पता नहीं किस स्थान पर छुपा दिया, उसने खजाने का पता नहीं बताया। उसके साथियों ने प्यार से, गुस्से से तेरे बाप से खजाने के बारे में जानने की बहुत कोशिश की मगर तेरे बाप ने खजाने का पता नहीं बताया। तैश में आकर उन्होंने तेरे बाप के सामने तेरी बहन की इज्जत लूट ली और उसे मार डाला मगर खजाने का मोह तब भी नहीं छोड़ा उसने—और आखिर तंग आकर उन्होंने तेरे बाप को भी मार डाला...। चौधरी के पास जिन हीरों का पता मुझे इकबाल ने बताया था वे हीरे उसी खजाने का एक छोटा-सा हिस्सा है।"

"ओह!" बलराज गोगिया के मुख से निकला...।

हैरान हो रहा था वह साथ ही जिस बाप के लिए कुछ देर पहले तक उसके दिल में श्रद्धा थी वहीं अब नफरत उमड़ आई थी—खजाने की खातिर उसने अपनी बेटी की इज्जत लुटवा दी वह भी अपनी आंखों के सामने। इससे बड़ा जलील काम और क्या हो सकता था?

"तेरा बाप तो मर गया बलराज गोगिया!" उसके चेहरे पर निगाहें गाड़ते हुए अवतार सिंह आगे बोला—"लेकिन उसके साथ ही वह खजाना भी एक रहस्य बन गया—किसी को कुछ मालूम नहीं कि खजाना कहां छुपा रखा है तेरे बाप ने, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि तेरा बाप कहीं न कहीं उस खजाने तक पहुंचने का रास्ता जरूर बना गया होगा—और उसी खजाने को प्राप्त करने के लिए ही मैंने तुझे फांसी के फंदे से आजाद करवाया।"

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—"तू उसका बेटा है, उसकी आदतों से भली-भांति परिचित है—उसके कई अनूठे करतबों को तू जानता होगा—इसलिए तू जल्दी उस खजाने का पता लगा सकता है,..। और उसी खजाने का पता लगाना है तुझे।"

अवतार सिंह के चुप होते ही बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और उसकी तरफ देखने लगा।

"ठीक है...।" कुछ सोचते हुए बोला बलराज गोगिया—"मैं पता लगाऊंगा।"

"वैरी गुड...।" अवतार सिंह की आंखों की चमक कई गुणा बढ़ गई।

"लेकिन मुझे उस खजाने में से क्या मिलेगा...?"

अवतार सिंह ने एक बात तो खा जाने वाली निगाहों से उसे देखा लेकिन तुरन्त ही उसने स्वयं पर काबू पाया, जबरदस्ती होठों पर मुस्कान लाते हुए बोला।

"तेरे बाप समेत उस खजाने के आठ हकदार थे—यानि आधा हिस्सा तेरे बाप का था—सो तुझे तेरे बाप का हिस्सा मिल जायेगा।"

"और मेरा हिस्सा...?"

"क्या मतलब...?"

"आठवां हिस्सा तो तेरे बाप का था—उसके मरने के बाद वह हिस्सा तुझे ही मिलता बिना कोई मेहनत किये—बिना हाथ-पैर चलाये जबकि अब उसे पाने के लिए मुझे हाथ-पैर हिलाने पड़ेंगे—मेहनत करनी पड़ेगी—दिमाग के घोड़े दौड़ाने पड़ेंगे। उस हिसाब से तो मैं भी उस खजाने का बराबर का हिस्सेदार हुआ...।"

"हमने तुझे नई जिन्दगी दी...यह क्या कम है तुम्हारे लिए?"

"अगर मैं मर जाता तो तुम उस खजाने को कैसे ढूंढते—खजाने को पाने का सिर्फ एक ही रास्ता नजर आया तुम्हें...मैं...सो मुझे आजाद करवाकर तुमने मुझ पर कोई अहसान नहीं किया...।"

बलराज गोगिया मुस्कुराते हुए बोला—"उस खजाने में मेरे बाप के हिस्से के साथ-साथ एक हिस्सा मेरा भी होगा—यानि आठ में से दो हिस्से मेरे—बाकी के छः तुम्हारे...।"

"यह तुम ठीक नहीं कर रहे बलराज...।"

"मैं बिल्कुल ठीक कर रहा हूं अवतार सिंह—छः कत्ल मैंने किये—उस हिसाब से तो पूरे खजाने का मालिक सिर्फ मुझे ही होना चाहिए था—लेकिन चूंकि उस खजाने के बाबत तुमने मुझे बताया—साथ ही अब अपनी ताकत भी दोगे मुझे—तो मैं सिर्फ एक-चौथाई हिस्सा ही मांग रहा हूं—और ऐसा करके मैं कोई नाजायज नहीं कर रहा। यूं समझ लो कि तीन हिस्से तुम्हें मुझ पर किये अहसान के बदले मिल रहे हैं।"

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"ठीक है, कुछ भी न मिलने से कुछ मिलना बेहतर, मुझे तुम्हारा प्रस्ताव मंजूर है।"

"शुक्रिया...।" बलराज गोगिया के होठों पर सफलताभरी मुस्कान नृत्य करने लगी।

"अब यह बताओ—शुरूआत कहां से करोगे...?" अवतार बात को आगे बढ़ाते हुए बोला।

"अपने घर से ही—हो सकता है वहां से कोई क्ल्यू मिल जाये और खंजाने का पता लग जाये।"

"ओ०के०...।" मुस्कुराया अवतार सिंह—"तुम्हें कैसी भी मदद की जरूरत हो बता दो।"

"फिलहाल तो मैं आराम करना चाहता हूं—इस प्रकार मैं अपने बाप के क्रिया-कलापों के बारे में ज्यादा से ज्यादा सोच सकूंगा।"

"थकावट उतारने के लिए अगर साथी की जरूरत हो तो मिल जायेगा...।" अर्थभरी मुस्कान फेंकते हुए बोला अवतार सिंह।

"नहीं—फिलहाल मैं अकेला ही ठीक हूं...।" उसकी मुस्कान का मतलब समझते हुए बोला बलराज गोगिया।

❑❑❑

"खबरदार...अगर किसी ने भी चालाकी दिखाने की कोशिश की तो अपनी मौत का जिम्मेदार वह खुद होगा...।"

उस गर्जदार आवाज ने सभी की गर्दनें दरवाजे की तरफ मोड़ दीं।

दरवाजे के बीचो-बीच राजवीर अपने पांच साथियों के साथ स्टेनगनों से लैस खड़ा हुआ था। सभी स्टेनगनों का रुख हॉल में मौजूद विभिन्न मेजों पर बैठे आदमियों की तरफ था।

हॉल में पड़ी मेजों पर नोटों के ढेर पड़े थे और मेजों के आस-पास बैठे लोगों के हाथों में पत्ते थमे हुए थे।

इकबाल के विभिन्न गैरकानूनी अड्डों में से एक यह अड्डा भी था, रोज लाखों का जुआ होता था सिर्फ इकबाल की सरपरसती में—धोखे वाला कोई काम नहीं था यहां पर...। इकबाल की तरफ से यहां कोई भी गैम्बलर नहीं खेलता...। जुआघर में आने वाले हर ग्राहक से दो हजार रुपया लिया जाता था वह भी एक दिन का। दो हजार रुपया देकर वह बेखौफ होकर खेल सकता था—अगर इकबाल के पास किसी पत्तेबाज की शिकायत पहुंच जाती और वह रंगे हाथों पकड़ा जाता तो इकबाल के दरिन्दे उसकी ऐसी हालत करते कि वह जिन्दगी भर के लिए ताश खेलना ही भूल जाता था।

इस जुआघर से इकबाल को रोज अढ़ाई लाख की कमाई हो जाती थी—और इतना तगड़ा मुनाफा देने वाले अड्डे की हिफाजत के लिए इकबाल ने काफी तगड़े इंतजाम कर रखे थे।

गेट पर दो गनमैन खड़े कर रखे थे उसने—तथा जुआघर के अन्दर भी उसने स्टेनगनों से लैस आठ गुण्डों को नियुक्त किया हुआ था।

इतने अर्से से जुआघर एकदम से ठीक-ठाक चल रहा था, कभी किसी किस्म की मुसीबत नहीं आई थी, जुआघर के गार्ड भी आलसी हो गये थे और साथ ही लापरवाह भी।

लापरवाही का परिणाम यह निकला कि राजवीर और उसके साथियों को जरा भी हिम्मत का सामना नहीं करना पड़ा बाहर गेट पर मौजूद गार्डों को खत्म करने में।

दो कत्ल करके राजवीर अपने साथियों के साथ अन्दर हॉल की तरफ चल पड़ा...। गेट पर खड़े होकर उसने हॉल में हो रहे जुए का जायजा लिया और फिर अपनी ललकार से सभी के कलेजे दहला दिये—"सभी अपने-अपने हाथ मेजों पर रख दें...।" राजवीर का अगला आदेश गूंजा।

आज्ञा का पालन करना पड़ा सभी को। सभी के हाथ मेजों पर आ पड़े।

हाथों के पकड़े पत्ते तो कभी के नीचे गिर पड़े थे।

राजवीर ने स्टेनगन से अपने साथियों की तरफ इशारा किया और दहाड़ा—"लूट लो इस जुआघर को।" आदेश मिलते ही पांचों स्टेनगनधारी हॉल में प्रवेश कर गये—जबकि राजवीर दरवाजे में ही खड़ा रहा। उसकी चौकन्नी निगाहें पूरे हॉल को बिजली की सी तेजी से थिरक रही थीं—छोटी-से-छोटी हरकत पर उसकी स्टेनगन उधर घूम जाती।

उसकी सतर्कता का फल बहुत जल्द ही प्राप्त हो गया उसे।

पांचों स्टेनगनधारी तो रुपया बटोरने में लगे हुए थे इसलिए उनका ध्यान सिर्फ रुपये की तरफ ही था। इसलिए वे उन तीन स्टेनगनों की नालों को नहीं देख पाये जो कि हॉल की पिछली दीवार में लगे दरवाजों में से अलग-अलग झांक रही थीं।

पूरी तरह सतर्क तो था ही वह।

सो जैसे ही इकबाल के पालतू गुण्डे दरवाजों से बाहर निकले!

'रेट...रेट...रेट।' राजवीर की स्टेनशन गर्ज उठी।

तीन चीखें एक साथ गूंजीं और वे तीनों गुण्डे फर्श पर गिरकर तड़पने लगे।

गोलियों की आवाजों ने राजवीर के साथियों को चौकन्ना कर दिया—सौ रुपयों पर से ध्यान हट गया उनका, स्टेनगनें हाथों में आ गईं।

सतर्कता को अपने साथ लिए सभी की निगाहें हॉल में गूंज रही थीं।

लेकिन इकबाल भी कम चालाक नहीं था—अपने जुएखाने की हिफाजत का उसने पूरा बंदोबस्त कर रखा था।

दाईं तरफ वाली दीवार में एकाएक ही चार होल प्रकट हुए और—

'रेट...रेट...रेट...।'

गोलियों की बौछारें निकलने लगीं उन सुराखों में से।

वक्त पर राजवीर ने उन सुराखों को देख लिया था—तभी तो उसने एकदम से स्वयं को नीचे गिरा लिया था...।

गोलियां उसके ऊपर से होती हुई आगे निकल गईं।

राजवीर ने तो स्वयं को बचा लिया—लेकिन गोलियों की इस बौछार में उसके दो साथियों के साथ-साथ पांच ग्राहक भेंट चढ़ गये।

"चारों तरफ फैल जाओ।" नीचे लेटे-लेटे ही दहाड़ उठा राजवीर—"और स्वयं लुढ़कता हुआ उस दीवार की जद में आ गया जिसमें से गोलियां निकल रही थीं।

खड़े होकर वह कमर झुकाये हुए ही सामने दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा।

इधर गोलियों से पांच ग्राहक मर जाने के कारण वहां अफरा-तफरी फैल गई थी—कई ग्राहकों ने दरवाजे की तरफ भागना चाहा लेकिन राजवीर के साथियों ने दहाड़कर उन्हें वहीं रुके रहने का आदेश दनदना दिया—"अगर किसी ने बाहर निकलने की कोशिश की तो गोलियों से भून दिया जायेगा।"

बेबस होकर रह गये थे ग्राहक।

अन्दर मौत बरस रही थी—और बाहर वे निकल नहीं सकते थे। सो अपनी जान बचाने के लिए कोई जमीन पर लेट गया और कोई मेज-कुर्सी की ओट में छुप गया।

इधर राजवीर दरवाजे के करीब पहुंच चुका था।

पैर की एक तेज ठोकर मारी उसने दरवाजे पर मगर दरवाजा अन्दर से मजबूती से बंद था। सो अपनी ही ठोकर से कराह उठा वह।

लेकिन अगले ही पल उसके चेहरे पर क्रूरता उभर आई—आंखों में पूरे जिस्म का खून आकर ठहर गया।

दरवाजे के पीछे लगी सिटकनी का अंदाजा लगाया उसने और स्टेनगन का रुख उधर करके ट्रिगर दबा दिया।

कोशिश कामयाब रही...। सिटकनी टूट गई।

दरवाजे को धक्का देने की भी जरूरत नहीं पड़ी उसे, गोलियों

के वेग से वह स्वयं ही खुल गया।

एक रनर की तरह उसने अधखुले दरवाजे में छलांग लगाई और लुढ़कनियां खाता हुआ सामने दीवार तक जा पहुंचा।

लुढ़कते हुए ही राजवीर ने अंदर का पूरा जायजा ले लिया था। वह एक छोटा-सा कमरा था—बिल्कुल खाली। फुर्ती से खड़ा हुआ राजवीर और कमरे में चारों तरफ निगाहें घुमाने लगा।

दाईं तरफ एक और दरवाजा नजर आया उसे।

पूरी सतर्कता बरतते हुए राजवीर ने दरवाजे पर हाथ रखा और उसे अन्दर की तरफ धकेल दिया। दरवाजा निःशब्द खुलता चला गया।

एक पल के लिए ठिठका वह—और फिर उसनें उस खुले दरवाजे में छलांग लगा दी।

वह एक गैलरी थी—उसी गैलरी में कुछ दूरी पर चार गुण्डे स्टेनगनों की नालें दीवारों में लगे होल में से फायरिंग कर रहे थे।

फायरिंग करने में गुण्डे इस कदर मस्त थे कि उन्हें राजवीर के वहां आ जाने का आभास भी नहीं हुआ। और जब तक उन्हें किसी की आमद का पता चलता—राजवीर की स्टेनगन गर्ज उठी।

पलक झपकते ही उन सभी की आत्माओं ने उनके जिस्मों का त्याग कर दिया।

राजवीर ने कहरभरी निगाहें उन लाशों पर डालीं और वापिस हॉल में आ गया।

हालांकि हॉल में अब गोलियां नहीं चल रही थीं लेकिन दहशत का माहौल अभी भी छाया हुआ था वहां।

"लूट लो पूरा जुआघर—हर एक की तलाशी लेकर उसकी जेबें साफ कर दो।" वहशियाना अंदाज में दहाड़ा राजवीर।

उसी के साथ ही उसके तीनों साथी नोटों का ढेर एक स्थान पर लगाने लगे—घबराये हुए ग्राहक स्वयं इस काम में उनकी मदद कर रहे थे।

कुछ ही देर में मेजों पर बिछी मेजपोशों में से दो मेजपोशों में राजवीर के साथियों ने रुपये डाले और उनकी गांठ बनाकर बांध लिया।

"चलो...।" राजवीर पुनः दहाड़ा।

तीनों गांठों को उठाये बाहर की तरफ चल पड़े। जबकि राजवीर ने अपनी कमीज में से एक चौकोर डिब्बा निकाल लिया।

वह टाईम बम था।

टाईम बम को उसने दस मिनट के लिए सैट किया और उस खुले दरवाजे में रख दिया जिसमें कि वह स्वयं खड़ा था।

"मैंने यहां टाईम बम लगा दिया है।" राजवीर दहाड़ा—"जो ठीक दस मिनट बाद पूरे जुएखाने को खण्डहर बना डालेगा—अगर अपनी जान बचाना चाहते हो तो जितनी जल्दी हो सके इस स्थान से दूर हो जाओ।"

पूरे हॉल में भगदड़ मच गई—एक-दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते हुए लोग बाहर की तरफ भागने लगे।

इस प्रयास में कई लोग कुचले जा रहे थे।

लेकिन उन लोगों को इसकी परवाज कहां थी कि कोई उनके पैरों में कुचला भी जा रहा है कि नहीं, उन्हें तो अपनी जान बचाने की पड़ी हुई थी और वे पूरी लगन से—पूरी शक्ति से जान बचाने में लगे हुये थे।

पांच मिनट में ही पूरा हॉल खाली हो गया।

कुछ जख्मी इंसान कराहते हुए दरवाजे की तरफ रेंग रहे थे—तथा कुछ लाशें इधर-उधर बिखरी हुई थीं। राजवीर ने एक नजर उन जख्मी लोगों पर डाली—फिर उन्हें उनकी किस्मत पर छोड़कर गेट की तरफ कदम बढ़ा दिये।

मेन गेट के पास ही उनकी फीयेट खड़ी थीं जिसमें कि उसके साथी उसका इंतजार कर रहे थे।

राजवीर के कार में बैठते ही कार झटके के साथ आगे बढ़ गई।

अभी कार कुछ ही दूर जा पाई थी—'धड़ाम' की आवाज से पूरा वातावरण दहल उठा।

कार में बैठे-बैठे ही राजवीर ने पीछे गर्दन मोड़कर देखा—धुएं और गर्त का बादल आकाश में उठता नजर आया उसे।

एक क्रूर मुस्कान उसके होठों पर तैर गई—गर्दन सीधी कर उसने बैक से सिर टिकाया और आंखें बंद कर लीं।

❑❑❑

चेहरे की रंगत स्याह पड़ गई इकबाल के। मरे-मरे हाथों से उसने फोन को क्रेडिल पर रखा और अपने सामने खड़े निरंजन की तरफ देखने लगा।

उसकी रंगत देखकर ही निरंजन समझ गया कि अवश्य ही कुछ बुरा हो गया है...।

—"क्या हुआ चीफ...?" पूछ ही लिया उसने।

"बलराज गोगिया अवतार के हत्थे चढ़ गया है।" इकबाल की आवाज़ कांप रही थी—"और हमारे आठों आदमी बहुत बुरी मौत मारे गयें।"

"य...यह तो बहुत बुरा हुआ चीफ—अगर बलराज गोगिया ने अवतार को आपके बारे में बता दिया तो बहुत बुरा होगा—अवतार की ताकत के आगे हम तो कुछ भी नहीं हैं।"

"मुझे उम्मीद नहीं कि बलराज गोगिया अवतार को हमारे बारे में कुछ बतायेगा—वह हमें अपना जीवनदाता मानता है—ऐसे में वह हमारे बारे में कैसे कहेगा अवतार को?"

"और अगर अवतार ने यकीन दिला दिया कि उसे फांसी के फंदे से आजाद कराने वाले आप नहीं बल्कि वह है तो...?"

'ट्रिन...ट्रिन...।' निरंजन की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि फोन की घण्टी दनदना उठी।

"फोन उठा निरंजन!" मुंह बनाते हुए बोला इकबाल—"एक मनहूस खबर तो मैं सुन चुका हूं—लग रहा है कि कहीं यह खबर भी मनहूस न हो इसलिए फोन तू ही उठा।"

निरंजन ने फोन उठाया और बोला—"हैल्लो—निरंजन स्पीकिंग...।"

उधर से जो खबर उसके कानों में पड़ी उसे सुनकर वह इस बुरी कदर से कांपा कि रिसीवर उसके हाथ से छूट कर नीचे मेज पर आ गिरा। आंखों में खौफ लिए वह इकबाल की तरफ देखने लगा।

"अब क्या हुआ?"

"अवतार के आदमियों ने पूरा जुआघर उड़ा दिया है।"

इकबाल को लगा कि अभी उसे बेहोशी का दौरा पड़ने वाला है। जुएघर की तबाही हार्ट अटेक से कम नहीं थी उसके लिए।

सूनी-सूनी आंखों से उसने निरंजन की तरफ देखा—किसी प्रकार अपने होशो-हवास पर काबू पाया और कांपते स्वर में बोला—"अवतार द्वारा हम पर किया गया हमला साफ कह रहा है कि बलराज गोगिया से उसे सब कुछ पता चल गया है—और अवतार के गुस्से के बारे में पूरा शहर जानता है कि वह अपने खिलाफ सिर उठाने वाले को किसी भी हालत में जिन्दा नहीं छोड़ता—उस हिसाब से तो उसके आदमी किसी भी क्षण यहां पर पहुंच सकते हैं—और इससे पहले कि वे यहां पहुंचें हमें तुरन्त ही यहां से निकल जाना चाहिये।"

"ल...लेकिन हम जायेंगे कहां...?"

"एक जगह है मेरी नजर में—अगर हम वहां पहुंच गये तो अवतार की निगाहों में कभी नहीं आ सकेंगे।" कुछ सोचते हुए बोला इकबाल—"और इस प्रकार वहां पर मैं अपनी ताकत को इस कदर बढ़ा लूंगा कि अवतार सिंह को ख़ुलेआम चैलेंज दे सकूं।"

निरंजन कुछ नहीं बोला—वह अपने चीफ का चेहरा देखने लगा।

❑❑❑

अखबार का प्रथम पृष्ठ देखते ही उछल पड़ा दुष्यन्त चौधरी। चेहरे की रंगत एकदम से पीली पड़ गई—आंखों में खौफ और अविश्वास नाचने लगा।

फटी-फटी आंखों से वह अखबार में छपी बलराज गोगिया की फोटो देख रहा था—जिसके नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—इनाम बीस हजार।

नीचे बलराज गोगिया की फोटो थी तथा उसके नीचे उसे फांसी की सजा पाये हत्यारे के रूप में लिखा गया था। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखने के साथ-साथ इनाम का भुगतान तुरन्त अदा करने के बारे में भी लिखा गया था।

बलराज गोगिया की फरारी की खबर ने ही चौधरी के पसीने छुड़ा दिये थे—आंखों में खौफ भर आया था। उसके साथ ही उसकी आंखों के सामने बलराज के विषैले कारनामे घूमने लगे जिसके इनाम के तौर पर उसे फांसी का फंदा मंजूर किया गया था।

लेकिन बलराज गोगिया ने वह इनाम कबूल नहीं किया और ऐन फंदे के नीचे से निकल भागा था।

जिस क्रूरता से बलराज गोगिया ने उसके साथियों की हत्यायें की थीं वही दृश्य अब उसकी आंखों के सामने नाच रहा था। चौधरी को लग रहा था कि बलराज गोगिया किसी भी वक्त उसका टेंटुआ दबाने के लिए उसके सामने आ सकता है, क्योंकि उसका आखिरी शिकार वही तो था। उन सात लोगों में वह भी तो शामिल था जिन्होंने बलराज गोगिया की बहन के साथ सामूहिक बलात्कार किया था।

पुलिस को खिला-पिलाकर उन्होंने मामले को तो दबा दिया मगर बलराज गोगिया के दिल में भड़क रही चिंगारी को नहीं दबा पाये वे...। पता नहीं किस प्रकार बलराज गोगिया ने उनका पता पा लिया और फिर हत्यायों का जो सिलसिला शुरू किया उसने तो पीछे मुड़कर नहीं देखा।

यह तो दुष्यंत चौधरी की किस्मत अच्छी थी जो उसे उस दिन वक्त पर पता चल गया कि आज उसकी बारी है—और उसने अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस को बुला लिया और इस प्रकार लक्ष्य पूरा करने से पहले बलराज गोगिया पकड़ा गया और उसे फांसी की सजा हो गई।

चौधरी स्वयं को पूरी तरह से आजाद समझने लगा था।

लेकिन अब...अब बलराज गोगिया की फरारी ने एक बार फिर उसकी धुकधुकी लगा दी थी—उसे पूरा विश्वास था कि बलराज गोगिया केवल उसी को मारने के लिए ही फरार हुआ है।

और इसके पहले कि बलराज गोगिया उस तक पहुंचे उसे अपनी सुरक्षा के प्रबन्धों को और भी पुख्ता कर लेना चाहिये।

यही सोचकर चौधरी ने अखबार एक तरफ रखी और मेज के पाये के साथ लगे बटन को दबा दिया।

बाहर कहीं बजर बज उठा।

अगले ही क्षण गुरिल्ले की शक्लो-सूरत जैसा खूंखार लगने वाला एक आदमी अन्दर आया और उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"राघव को भेज जल्दी... ।" आदेश देने वाले अंदाज में बोला चौधरी।

गुरिल्ला वापिस मुड़ा और बाहर निकल गया।

करीब दो मिनट लगे राघव को उस कमरे में आने में।

राघव एक ठिगने कद का मगर बला का फुर्तीला शख्स था। उसे जानने वाले उसके बारे में यह कहते थे कि वह जितना जमीन से ऊपर है उससे कहीं ज्यादा जमीन से नीचे है। पैसे लेकर खून करना ही उसका मुख्य धंधा था—इन दिनों वह चौधरी का बॉडीगार्ड का काम सम्भाले हुए था बदले में काफी मोटी रकम मिल रही थी उसे—लेकिन फिर भी कई बार उसका दिल कोई खून करने को मचल उठता था। यह तो उसका दिल ही जानता था कि वह अपने आपको किस तरह सम्भाले हुए था।

"आपने मुझे बुलाया बॉस...?" चौधरी के सामने कुर्सी पर बैठते हुए बोला राघव।

कुर्सी पर बैठने के उपरान्त राघव का केवल गर्दन का ऊपरी हिस्सा ही नजर आ रहा था चौधरी को शेष हिस्सा मेज की ओट में गायब हो गया था।

चौधरी ने उसके नजर आ रहे चेहरे पर नजर डाली और

"ल...लेकिन हम जायेंगे कहां...?"

"एक जगह है मेरी नजर में—अगर हम वहां पहुंच गये तो अवतार की निगाहों में कभी नहीं आ सकेंगे।" कुछ सोचते हुए बोला इकबाल—"और इस प्रकार वहां पर मैं अपनी ताकत को इस कदर बढ़ा लूंगा कि अवतार सिंह को खुलेआम चैलेंज दे सकूं।"

निरंजन कुछ नहीं बोला—वह अपने चीफ का चेहरा देखने लगा।

❑❑❑

अखबार का प्रथम पृष्ठ देखते ही उछल पड़ा दुष्यन्त चौधरी। चेहरे की रंगत एकदम से पीली पड़ गई—आंखों में खौफ और अविश्वास नाचने लगा।

फटी-फटी आंखों से वह अखबार में छपी बलराज गोगिया की फोटो देख रहा था—जिसके नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—इनाम बीस हजार।

नीचे बलराज गोगिया की फोटो थी तथा उसके नीचे उसे फांसी की सजा पाये हत्यारे के रूप में लिखा गया था। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखने के साथ-साथ इनाम का भुगतान तुरन्त अदा करने के बारे में भी लिखा गया था।

बलराज गोगिया की फरारी की खबर ने ही चौधरी के पसीने छुड़ा दिये थे—आंखों में खौफ भर आया था। उसके साथ ही उसकी आंखों के सामने बलराज के विषैले कारनामे घूमने लगे जिसके इनाम के तौर पर उसे फांसी का फंदा मंजूर किया गया था।

लेकिन बलराज गोगिया ने वह इनाम कबूल नहीं किया और ऐन फंदे के नीचे से निकल भागा था।

जिस क्रूरता से बलराज गोगिया ने उसके साथियों की हत्यायें की थीं वही दृश्य अब उसकी आंखों के सामने नाच रहा था। चौधरी को लग रहा था कि बलराज गोगिया किसी भी वक्त उसका टेंटुआ दबाने के लिए उसके सामने आ सकता है, क्योंकि उसका आखिरी शिकार वही तो था। उन सात लोगों में वह भी तो शामिल था जिन्होंने बलराज गोगिया की बहन के साथ सामूहिक बलात्कार किया था।

पुलिस को खिला-पिलाकर उन्होंने मामले को तो दबा दिया मगर बलराज गोगिया के दिल में भड़क रही चिंगारी को नहीं दबा पाये वे...। पता नहीं किस प्रकार बलराज गोगिया ने उनका पता पा लिया और फिर हत्यायों का जो सिलसिला शुरू किया उसने तो पीछे मुड़कर नहीं देखा।

यह तो दुष्यंत चौधरी की किस्मत अच्छी थी जो उसे उस दिन वक्त पर पता चल गया कि आज उसकी बारी है—और उसने अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस को बुला लिया और इस प्रकार लक्ष्य पूरा करने से पहले बलराज गोगिया पकड़ा गया और उसे फांसी की सजा हो गई।

चौधरी स्वयं को पूरी तरह से आजाद समझने लगा था।

लेकिन अब...अब बलराज गोगिया की फरारी ने एक बार फिर उसकी धुकधुकी लगा दी थी—उसे पूरा विश्वास था कि बलराज गोगिया केवल उसी को मारने के लिए ही फरार हुआ है।

और इसके पहले कि बलराज गोगिया उस तक पहुंचे उसे अपनी सुरक्षा के प्रबन्धों को और भी पुख्ता कर लेना चाहिये।

यही सोचकर चौधरी ने अखबार एक तरफ रखी और मेज के पाये के साथ लगे बटन को दबा दिया।

बाहर कहीं बजर बज उठा।

अगले ही क्षण गुरिल्ले की शक्लो-सूरत जैसा खूंखार लगने वाला एक आदमी अन्दर आया और उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"राघव को भेज जल्दी...।" आदेश देने वाले अंदाज में बोला चौधरी।

गुरिल्ला वापिस मुड़ा और बाहर निकल गया।

करीब दो मिनट लगे राघव को उस कमरे में आने में।

राघव एक ठिगने कद का मगर बला का फुर्तीला शख्स था। उसे जानने वाले उसके बारे में यह कहते थे कि वह जितना जमीन से ऊपर है उससे कहीं ज्यादा जमीन से नीचे है। पैसे लेकर खून करना ही उसका मुख्य धंधा था—इन दिनों वह चौधरी का बॉडीगार्ड का काम सम्भाले हुए था बदले में काफी मोटी रकम मिल रही थी उसे—लेकिन फिर भी कई बार उसका दिल कोई खून करने को मचल उठता था। यह तो उसका दिल ही जानता था कि वह अपने आपको किस तरह सम्भाले हुए था।

"आपने मुझे बुलाया बॉस...?" चौधरी के सामने कुर्सी पर बैठते हुए बोला राघव।

कुर्सी पर बैठने के उपरान्त राघव का केवल गर्दन का ऊपरी हिस्सा ही नजर आ रहा था चौधरी को शेष हिस्सा मेज की ओट में गायब हो गया था।

चौधरी ने उसके नजर आ रहे चेहरे पर नजर डाली और

अखबार उठाकर उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला—"बलराज गोगिया फरार हो गया है।"

बड़े ही सामान्य अंदाज में बिना किसी उत्तेजना के राघव ने अखबार ली और उस पर लगी बलराज गोगिया की तस्वीर के साथ छपा हुआ ब्यौरा पढ़ने लगा।

ब्यौरा पढ़कर उसने पुनः बलराज गोगिया की तस्वीर पर निगाहें मारीं और अखबार को मेज पर रखकर अपना हाथ वापिस खींच लिया और चौधरी की तरफ देखने लगा।

"इसे खत्म करना है...।" अपनी तरफ देखते राघव से बोला चौधरी—"जब तक यह जिन्दा रहेगा मेरे सिर पर तलवार लटकती रहेगी...इसलिए इसे जल्द-से-जल्द खत्म करना है।"

"मजदूरी क्या मिलेगी...?" भावहीन था राघव का स्वर।

"तुम क्या मांगते हो...?"

"दो लाख...।"

"दो...ल...ला...ख!" आश्चर्य से आंखें फटने लगीं चौधरी की—"केवल एक कत्ल करने के दो लाख!"

"कत्ल होने वाले की औकात देखकर पैसा मांगा है मैंने—सरकारी मुहर लगी है उस पर, पूरे बीस हजार की—ऊपर से वह तुम्हारी जान का दुश्मन हैं—क्या तुम्हारी जिन्दगी की कीमत दो लाख भी नहीं बॉस...?"

बात तो ऐसी कह दी थी राघव ने कि बोलने लायक ही नहीं छोड़ा था उसे...।

"ठीक है—मैं दो लाख दूंगा—कब तक कर दोगे यह काम?"

"बस उसका पता लगने की देर है—मेरी रिवॉल्वर तो कब से उतावली हो रही है...।"

चौधरी ने पांच-पांच सौ की दो गड्डियां मेज की दराज से निकालीं और उन्हें राघव की तरफ फेंकते हुए बोला—"बाकी के एक लाख काम हो जाने के बाद।"

"ये रुपये मेरी पगार से अलग होंगे...।" नोटों को देखते हुए बोला राघव—"अपनी पगार का मैं एक पैसा भी कम नहीं होने दूंगा...।"

"मैं जानता था तू ऐसा ही कहेगा—नोटों के मामले में तेरा कमीशन जगजाहिर है।" खौफभरे स्वर में बोला चौधरी।

मुस्कुरा पड़ा राघव...। दोनों गड्डियां उठाईं और उन्हें अपनी जेब के हवाले करते हुए बोला—"एक बात बताऊं बॉस...?"

चौधरी घूरकर उसकी तरफ देखने लगा—"क्या...?"

उसके मुंह से निकला—"तुमसे काफी कुछ सीख रहा हूं मैं। तुम्हारे पास आने से पहले मैं इतना बड़ा कमीना नहीं था। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग तो बदलेगा ही।"

और उसके इस डायलॉग की चौधरी पर क्या प्रतिक्रिया हुई—यह देखने के लिए राघव वहां रुका नहीं।

फुदकता हुआ वह दरवाजे से बाहर निकल गया।

जब तक चौधरी उसे कोई सख्त बात करने के लिए मन बनाता—राघव गायब हो चुका था।

मां-बहन की पांच-सात गालियां निकालकर चौधरी ने अपने मन की भड़ास निकाली और पाये पर लगा पुश बटन पुनः दबा दिया।

गुरिल्ला पुनः अन्दर आया और अपनी लाल आंखों से चौधरी की तरफ देखने लगा।

"मोना के पास संदेश भेज दे कि मैं आज रात उसके पास आ रहा हूं।" चौधरी उसकी आंखों से अपनी आंखें चुराते हुए बोला।

गुरिल्ला बाहर निकल गया।

चौधरी ने दीवार पर लगे क्वार्टज क्लाक में समय देखा।

शाम के छः बज रहे थे।

मोना के पास उसे करीब दस बजे पहुंचना था। उससे पहले जाने का कोई फायदा भी तो नहीं था।

एक लम्बी सांस छोड़ी उसने और कुर्सी की पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बंद कर लीं।

❑❑❑

अंधेरे में ही उसने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली—रेडियम लगी सुइयां अंधेरे में अपनी चमक से उसे समय बता रही थीं।

एक बजकर पांच मिनट हो रहे थे।

रात के निस्तब्ध वातावरण में बलराज गोगिया ने अपने चारों तरफ भरपूर निगाह मारी और फिर गांव में प्रवेश कर गया।

बलराज पर निगाह पड़ते ही गांव के कुत्तों ने आसमान सिर पर उठा लिया—मगर बलराज गोगिया ने उनके भौंकने की परवाह नहीं की—चलता हुआ वह अपने घर के पीछे बने चौधरी रणसिंह के घर के सामने आ खड़ा हुआ...। उसके घर की और रणसिंह के घर की छतें आपस में बिल्कुल बराबरी पर मिलती थीं। इधर-उधर नजर मारकर उसने रणसिंह के मकान की कच्ची मुंडेर पर हाथ रखा और उछलकर अंदर आंगन में आ गया।

सर्दी की वजह से सभी कमरों में सो रहे थे।

खिड़की की तरफ देखे बिना चलता हुआ बलराज गोगिया सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर छत पर आ गया और छत पर छलांग लगाकर अपने घर की छत पर आ गया।

कुछ ही देर में वह अपने घर के आंगन में खड़ा अपने बाप के कमरे के दरवाजे की तरफ देख रहा था।

दिल जोर-जोर से धड़क रहा था बलराज गोगिया का। धड़कते दिल को किसी तरह सम्भालने की कोशिश करते वह दरवाजे तक पहुंचा...। दरवाजे पर ताला लगा हुआ था—ऊपर पुलिस द्वारा सील भी किया हुआ था।

मगर उसे उस सील की परवाह कहां थी—ताले को हाथ में पकड़कर उसने एक नजर उस पर मारी—फिर छोड़ दिया। दरवाजे के पास ही खिड़की लगी हुई थी—बलराज गोगिया ने खिड़की के दोनों पल्ले पकड़े और उन्हें अपनी तरफ खींचकर पीछे धकेल दिया।

आठ-दस बार यही क्रिया दोहराई उसने तभी 'खट' की आवाज पड़ी उसके कानों में।

खिड़की के पल्लों को अन्दर की तरफ धकेला उसने...। और दोनों पल्ले एक-दूसरे से जुदा होकर उसके लिए रास्ता बनाते चले गये।

कामयाबी भरी मुस्कान थिरक उठी बलराज गोगिया के होंठों पर।

अपने घर के भेद वह भली-भांति जानता था—बचपन में जब वह गुल्ली-डण्डे का खेल खेलता था तो उसका बाप उसकी शरारतों से बहुत तंग आ जाता था और इसी कमरे में उसे बन्द कर दिया करता था तथा बाहर से कुण्डी लगा देता था।

रोता-पीटता बलराज गोगिया कभी दरवाजे को तो कभी खिड़की को झंझोड़ने लगता था...। खिड़की की सिटकनी चढ़ जाने के बावजूद भी काफी लूज रहती थी—पल्लों को अन्दर-बाहर करने से वह धीरे-धीरे सरकती हुई नीचे आ गिरती थी।

किशोरावस्था में भी बलराज गोगिया को जब कभी पैसों की जरूरत होती तो वह बाहर से खिड़की से अपने बाप के कमरे में घुस जाता और उसकी जेब साफ करके चम्पत हो जाता था।

आज वही हुनर उसके काम आ रहा था।

खुली खिड़की में प्रवेश कर बलराज गोगिया अन्दर कूद गया और खिड़की को पुनः बंद करके सिटकनी चढ़ा दी। अंधेरे में ही

उसने स्विचबोर्ड को टटोला और जैसे ही वह बल्ब जलाने को हुआ उसकी उंगली वहीं ठिठक गई।

दिल की धड़कन एकदम से कई गुणा ज्यादा हो गई। अपने जिस्म को एकदम से उसने गीला होते महसूस किया।

भारी बूटों की आवाज ने उसके पूरे जिस्म को बुत की तरह बना डाला था।

बूटों की आवाजें ठीक उस कमरे के दरवाजे के सामने आकर रुकीं जिसमें कि बलराज गोगिया खड़ा था।

"यहां तो कोई नहीं है...।" एक खुरदरी आवाज उसके कानों में पड़ी।

आवाज से ही बलराज गोगिया समझ गया कि वह किसी पुलिसिये की आवाज है। आखिर पूरा मुकदमा चलने तक और फांसी के फंदे तक पहुंचने तक वह पुलिस वालों के बीच रहा था।

"लेकिन आवाज तो आई थी—ऐसा लगता था जैसे कोई दरवाजे को आगे पीछे कर रहा था।" दूसरी आवाज आई। तभी टॉर्च की रोशनी दरवाजे की दरारों से छनकर अन्दर आई। बाहर खड़ा पुलिसिया टॉर्च से ताले को देख रहा था।

"ताला तो बिल्कुल ठीक है—सील भी लगी हुई है...।" पहली आवाज आई।

और फिर बलराज गोगिया ने दो जोड़ी बूटों की आवाज दूर होते सुनी।

छुटकारे की एक लम्बी सांस छोड़ी उसने और अपने होशो-हवास काबू में करने की कोशिश करने लगा।

करीब पांच मिनट लग गये उसे स्वयं को सामान्य करने में। तब जाकर उसने बल्ब का स्विच ऑन किया।

'खट' की हल्की-सी आवाज के साथ कमरे में बल्ब की पीली रोशनी में फैल गई...।

बलराज जानता था कि यह रोशनी दरवाजे तथा खिड़की की दरारों से छनकर बाहर आंगन में भी जा रही होगी—मगर बाप के कमरे की तलाशी वह अंधेरे में तो ले नहीं सकता था।

सो—वक्त की नजाकत को समझते हुए वह तेजी से कमरे की तलाशी लेने लगा।

तलाशी लेते-लेते एकाएक ही बुरी तरह से चौंका वह—उसी के साथ ही वह स्विचबोर्ड की तरफ झपटा और तुरन्त ही बल्ब को ऑफ कर दिया।

उल्लू की उस आवाज को वह फौरन पहचान गया था, रजनी के मुंह से निकली आवाज थी वह।

यानि रजनी को उसके आने का पता चल गया था—और वह उसे बुला रही थी—या उसे किसी खतरे से सचेत कर रही थी। इसका फैसला तो नहीं कर पाया बलराज गोगिया, लेकिन उसने सतर्कता का दामन थामते हुए कमरे में अंधेरा कर दिया था और स्वयं एक कोने में दुबककर बैठ गया था।

कलेजे की धड़कन एक बार फिर असामान्य होने लगी थी।

लेकिन कोई खतरा पेश नहीं आया...। करीब दस मिनट वहीं दुबके रहने के पश्चात् बलराज गोगिया ने पुनः बत्ती जलाई और तलाशी में जुट गया।

अपने बाप की अलमारी की तलाशी लेते हुए उसके हाथ एक ऐसी चीज लग गई जो उसके लिए बहुत मददगार साबित हो सकती थी...। वह चीज थी एक डायरी, जिसमें विभिन्न पते लिखे हुए थे, लेकिन आखिर में एक पता लाल स्याही से लिखा गया था।

वह पता किसी बलबीर पाल शाह का था जो कि गुरुदासपुर में रहता था।

बलराज गोगिया ने वह डायरी अपनी जेब के हवाले की और पुनः तलाशी में जुट गया। अलमारी में अन्य सामान के बीच उसे एक फोटो मिली।

वह फोटो किसी औरत की थी। फोटो देखकर ही उस औरत की उम्र का अन्दाजा लगाया जा सकता था कि वह पैंतीस से ज्यादा की नहीं। चेहरे-मोहरे से काफी खूबसूरत लग रही थी वह फोटो।

बलराज गोगिया ने फोटो पलटी...।

पीछे लिखा हुआ था—हमारे देसराज को पुष्पा का प्यार—नीचे लुधियाना का एक पता लिखा था।

देसराज, बलराज गोगिया के बाप का नाम था।

यानि उसका बाप भी किसी औरत के इश्क में गिरफ्तार था। और फोटो के पीछे लिखा हुआ पता या तो पुष्पा का पता था—या फिर उन दोनों की मिलन स्थली का।

बलराज गोगिया ने वह फोटो भी जेब के हवाले की और कुछ देर और तलाशी लेने के उपरान्त बिजली बन्द करके खिड़की के रास्ते बाहर आ गया।

वापिस छत पर चढ़ा और रणसिंह के आंगन से होता हुआ वह गली में आ गया।

गली में आते ही वह एक क्षण के लिए ठिठका—फिर कुछ सोचकर अपना रुख खेतों की तरफ कर लिया।

उधर बढ़ने लगा बलराज गोगिया जिधर कभी वह रजनी से मिलने जाया करता था।

अंधेरे में ईख के खेत खड़-खड़ करते हुए जैसे भूतया माहौल पैदा कर रहे थे—लेकिन बलराज तो जवानी तक इसी माहौल में पला-बढ़ा था, उसे भला क्या डर लगता।

ईख के खेत में प्रवेश कर गया बलराज गोगिया और गन्नों के बीच से रास्ता बनाता हुआ खेत के बीचो-बीच पहुंच गया। बीच में गन्नों को साफ करके एक छोटा-सा स्थान बना हुआ था और उसमें उसे तारों की रोशनी में जो जनाना आकृति नजर आई—उसे फौरन पहचान लिया।

"र...रज्जी...।" स्वर निकला उसके मुख से।

"बल्लू...।" कांपती आवाज कानों से टकराई जो कि निश्चय ही रजनी की थी।

बलराज गोगिया का खून एकदम से गर्मी खाने लगा—कानों की लवें तप कर लाल हो गयीं...। उसका वजूद अंगड़ाई लेने लगा—मुंह से जैसे भाप निकलने लगी।

अगले ही पल वह आगे बढ़ा और रजनी को अपनी बांहों में भर लिया।

पीड़ा से कराह उठी रजनी—"अरे छोड़-छोड़ मुझे मार ही डालेगा क्या?"

"हां।" बलराज गोगिया के मुख से दरिन्दे की सी गुर्राहट निकली—"अगर तू सच नहीं बोलेगी तो तेरे इन खूबसूरत गुलाबी उभारों को तेरे तन से जुदा कर दूंगा—बता क्यों बुलाया था तूने मुझे?"

"म...मैं सच कह रही हूं—प्यार करने के लिए बुलाया था...।" आवाज लड़खड़ा गई थी रजनी की—उस वक्त अगर रोशनी होती तो उसके चेहरे की उड़ी हुई रंगत को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वह झूठ बोल रही है।

मगर बलराज गोगिया ने तो उसकी आवाज की लड़खड़ाहट से ही पता लगा लिया था।

"बकवास कर रही है हरामजादी...।" उसने और जोर से भींच दिया रजनी के उभारों को—"रात के इस वक्त तू उन पुलिस वालों के पास अपनी मां को ढूंढने गई थी या अपना मुंह काला करने गई थी...?"

बात पूरी करते ही बलराज झपट कर खड़ा हो गया—रजनी के गुलाबी उभारों को उसने अपने हाथों से आजाद कर दिया था। लेकिन उभारों को छोड़ते वक्त जो बेदर्दी उसने दिखाई उसकी पीड़ा बर्दाश्त नहीं कर पाई रजनी और जोर से चीख उठी।

लेकिन बलराज गोगिया ने उसकी चीखने की जरा भी परवाह नहीं की और अपना एक पैर रजनी की गर्दन पर रखकर उसे दबा दिया तथा साथ ही अपने कपड़ों को उठाकर जल्दी-जल्दी उन्हें पहनने लगा।

"इसी तरह तेरी गर्दन दबाकर मार डालूंगा कुतिया—सच-सच बता क्या खेल खेल रही है तू मेरे साथ, वर्ना सुबह तेरी नंगी लाश गांव की चौपाल में पड़ी नजर आयेगी।"

"छ...छोड़ मुझे...।" पिपियाते हुए बोली रजनी—"म...मैं बताती हूं—छोड़...।"

बलराज गोगिया ने पैर उसकी गर्दन से हटा लिया—आजाद होते ही रजनी अपने कपड़ों की तरफ झपटी—मगर बलराज गोगिया ने बीच रास्ते में ही उसके बाल पकड़कर उसे पुनः जमीन पर पटक दिया।

"तू इसी हालत में रहकर मुझे बतायेगी हराम की जनी—बता क्या खेल खेल रही है तू मुझसे...?"

एकाएक ही जोर-जोर से रोने लगी रजनी—"मुझे माफ कर दे बल्लू—लालच में आकर मैंने तेरे से धोखा किया है...।"

"कैसा धोखा किया है जल्दी बता...।" भेड़िये की तरह गुर्राया बलराज गोगिया।

"तेरे पर बीस हजार का इनाम है—उसी बीस हजार को पाने के लिए मैं पुलिस वालों से मिल गई थी—और उन्हें यह बता दिया कि अगर कभी तू वापिस गांव में आया तो मैं तुझे पकड़वा दूंगी। अब जब तू अपने घर में था तो पुलिस वालों को तेरी आमद का शक हो गया। लेकिन चूंकि वे दो थे और तुम फांसी के फंदे से फरार मुजरिम स्वयं को बचाने के लिए तुम कोई भी खतरनाक कदम उठा सकते थे—तुम्हारे पास हथियार की सम्भावना नहीं नकारी जा सकती थी—सो दोनों सिपाही मेरे पास आये—मुझे उठाया और तुझे पकड़ने का कोई तरीका पूछने लगे—मैंने उन्हें बता दिया कि हम अक्सर इस स्थान पर मिला करते थे...। सो हमने एक योजना बनाई। उस योजना के तहत मैंने तुझे खेत में पहुंचने का इशारा कर दिया, जबकि वे दोनों पुलिसिये पास की चौकी से फोर्स लेने चले गये...। मेरे

जिम्मे यह काम था कि पुलिस के आने तक मैं तुझे रोके रखूं...लेकिन तुझे वक्त से पहले ही पता चल गया।"

बलराज गोगिया की आंखों में अंगारे छुटने लगे—"हरामजादी, छिनाल मैं समझ गया तू कितनी नीच और गिरी हुई है—तेरा भोग करके तो मैं खुद को अपवित्र समझने लगा हूं—और इसका अब एक ही प्रायश्चित्त है कि मैं तेरा क्रियाकर्म कर दूं...।"

"नहीं...।" खौफ से चीख उठी रजनी—"मु. .मुझे माफ कर दे—मेरी इस गलती पर न सही—हमारी बीती हुई रातों को याद करके ही मेरी जान बख्श दे बल्लू, जो हमने इसी जगह पर बिताई थीं।"

सहसा ही गन्नों की खड़खड़ाहट एकदम से तेज हो गई।

चौंक उठा बलराज गोगिया—वह समझ गया कि पुलिस खेत में घुस रही है...। और किसी भी क्षण वहां पहुंच सकती है। पुलिस की आमद का पता रजनी को भी लग गया था। आखिर वह भी तो इन्हीं खेतों में पली-बढ़ी हुई थी—आवाज से ही वह पहचान सकती थी कि खेत में कोई है या नहीं।

और इस वक्त पुलिस के अलावा और कौन आ सकता था यहां।

बलराज गोगिया रजनी को लगभग घसीटते हुए खेत से बाहर आ गया।

"तेरे बीस हजार तो गये हरामजादी।" बाहर निकलते ही रजनी से बोला वह—"उन बीस हजार के लालच में तुझे खुद अपनी जान के लाले पड़ गये।"

"मुझे माफ कर दे बल्लू—लालच ने मेरी आंखों पर पर्दा डाल दिया था। मुझे माफ कर दे।"

"वो तो गांव से निकलने के बाद सोचूंगा कि तेरे साथ क्या सलूक किया जाये...।" गुर्राया बलराज गोगिया...। कुछ दूरी पर ही उसे इंसपेक्टर की जीप खड़ी दिखाइ दी।

फरार होने का रास्ता मिल गया उसे। रजनी को साथ लिए वह जीप में आ बैठा।

किस्मत अच्छी थी उसकी जो चाबी छोड़ गया था इंसपेक्टर।

चाबी को घुमाया उसने...।

'घर्र...घर्र...।' की आवाज के साथ जीप स्टार्ट हो गई।

और गाड़ी को गियर में डालने के लिए जैसे ही उसने रजनी की गर्दन छोड़ी...!

रजनी ने जीप से बाहर छलांग लगा दी।

"रुक जा रजनी...।" दहाड़ उठा बलराज गोगिया।

लेकिन रजनी ने रुकने का कोई उपक्रम नहीं किया—पूरी रफ्तार से वह गन्ने के खेत की तरफ भाग रही थी जिसमें से कि पुलिस वाले बाहर निकल रहे थे।

पहले तो बलराज का दिल किया शूट कर दे उस नागिन को—लेकिन फिर कुछ और सोचकर उसने जीप के एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

तोप से निकले गोले की तरह भाग छूटी जीप।

पीछे से पुलिस ने फायरिंग कर दी।

लेकिन किस्मत का धनी निकला बलराज गोगिया...। गोलियां उसके दायें-बायें से गुजर गईं।

गांव से बाहर निकलकर उसने जीप को सड़क से नीचे झाड़ियों की तरफ धकेल दिया और स्वयं तेजी से सड़क पर ही एक तरफ बढ़ने लगा।

थोड़ी देर बाद ही उसे विपरीत दिशा में एक ट्रक आता नजर आया। बलराज गोगिया ने ट्रक को रुकने का इशारा किया। ट्रक रुका—ड्राईवर ने खिड़की से सिर निकालकर बाहर झांका।

"ओये वीरे...!"

"भाजी मैंनू लुधियाना जाना वे...।" बलराज गोगिया बोला।

"मैं भी लुधियाना चलना वे—वीस रुपये (बीस रुपये) लगन में नी।"

"ओय तुसी चाली (चालीस) लिया जे।" बलराज गोगिया भी शुद्ध पंजाबी में बोला।

"तो फिर आजा, बै जा...।"

बलराज गोगिया तुरन्त ही दूसरी तरफ पहुंचा और खिड़की खोलकर अन्दर आ गया।

❑❑❑

अवतार सिंह ने डायरी में लिखे पते पढ़े—उस औरत का फोटो देखा जिसके पीछे उसका नाम पुष्पा लिखा हुआ था...। फिर गर्दन उठाकर बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"कुछ और भी मिला...?"

"नहीं...।" बलराज बोला—"बस यही काम की चीजें हाथ लगीं—सो ले आया।"

"अब...अब क्या करोगे...?"

"करना क्या है—इस औरत से मिलूंगा और बलवीर पाल शाह

से भी जिसका पता मेरे बाप ने लाल स्याही से लिखा है...। हो सकता है इनसे कुछ हासिल हो जाये।"

"तुम ऐसा करो पुष्पा से मिल लो—मैं अपने आदमियों को गुरुदासपुर भेज देता हूं बलवीर को टटोलने के लिए।"

"नहीं...।" तुरन्त ही इन्कार में सिर हिलाया बलराज गोगिया ने—"इन दोनों से मैं खुद ही मिलूंगा—हो सकता है मेरे मिलने से कुछ फायदा हो जाये...।"

"अगर न हुआ तो...?"

"अगर मुझे महसूस हुआ कि दोनों या इनमें से कोई एक कुछ जानते हुए भी छुपा रहा है तो फिर मैं तुम्हारी मदद ले लूंगा—अगर कोई चीज प्यार से मिले तो जरूरी नहीं कि जबरदस्ती की जाये।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला अवतार सिंह—"लेकिन जरा सम्भल कर रहना, कहीं रजनी की तरह पुष्पा के रूपजाल में न फंस जाना।" कहते हुए [illegible] पड़ा अवतार सिंह—"वो तो तुमने तुरन्त ही सूझबूझ से काम ले लिया था वर्ना ऐसे मौकों पर तो आदमी की अक्ल वैसे ही साथ छोड़ जाती है।"

"मैं ख्याल रखूंगा...।" प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया भी मुस्कुरा पड़ा।

"थक गये होंगे—पिओगे?"

"हां—सचमुच थकान महसूस कर रहा हूं...।"

अवतार सिंह ने अपने तथा बलराज गोगिया के लिए पीने का सामान मंगा लिया।

❑❑❑

अगले दिन सुबह करीब सात बजे ही बलराज गोगिया अवतार की कार लेकर पुष्पा से मिलने के लिए निकल पड़ा।

करीब आठ बजे वह न्यू शक्ति नगर के एक सौ आठ नम्बर मकान के सामने कार से नीचे उतरा और कार से टेक लगाकर मकान को देखने लगा।

दो मंजिला बना वह मकान आसपास बने अन्य मकानों से काफी खूबसूरत और ढंग का बना नजर आ रहा था। लोहे का छोटा मेन गेट कोठी का सा आभास दिला रहा था।

बलराज गोगिया गेट के पास पहुंचा और पास ही दीवार पर लगा पुश बटन दबा दिया।

अन्दर कहीं म्यूजिक बेल बजने की आवाज सुनी उसने—और दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा।

ज्यादा इंतजार नहीं करनी पड़ी उसे...। एक मिनट बाद ही अन्दर से उसे चप्पलें घिसटने की आवाज सुनाई दी और साथ ही किसी औरत की आवाज उसके कानों में पड़ी—"कौन...?"

"दरवाजा खोलिए...।" आवाज में सम्मान लाते हुए बोला बलराज गोगिया।

दरवाजा खुला—और जो चेहरा दरवाजे के पीछे से नमूदार हुआ—वह उस फोटो वाली औरत पुष्पा का हरगिज नहीं था।

दरवाजा खोलने वाली औरत अधेड़ उम्र की चेहरे से ही खेली खाई तजुर्बेकार नजर आ रही थी—आंखों में मक्कारी तथा फरेब झलकता नजर आ रहा था।

बलराज गोगिया को न पहचानने वाले अंदाज में घूरा और उससे बोली—"किससे मिलना है?"

एक क्षण के लिए बलराज गोगिया हिचकिचाया—फिर स्वयं को संयत करते हुए बोला—"ज...जी मुझे पुष्पा से मिलना है...।"

पुष्पा का नाम सुनकर औरत चौंकी और गहरी निगाहों से बलराज गोगिया को देखने लगी। लेकिन तुरन्त ही उसने बलराज पर से निगाहें हटा लीं और दरवाजा बन्द करने का उपक्रम करते हुए बोली—"यहां कोई पुष्पा नहीं रहती...।"

"दे...देखिये...मेरा पुष्पा से मिलना बहुत जरूरी है—उनके लिए एक बहुत जरूरी मैसेज है...।"

"मैंने कहा न—यहां कोई पुष्पा नहीं रहती...।"

और जैसे ही उसने दरवाजा बंद करना चाहा—बलराज गोगिया ने जबरदस्ती उसे पुनः खोल दिया।

"य...यह क्या बदतमीजी है?" आश्चर्य से गुर्राई वह।

"बदतमीजी तो मैं अब करूंगा...।" बलराज गोगिया भी गुर्रा पड़ा—"जब घी सीधी उंगली से न निकले तो उंगली टेढ़ी करनी ही पड़ती है। तुम्हारे चेहरे से इतना तो साफ नजर आ रहा है कि तुम झूठ बोल रही हो—इसलिए अब बेहतरी इसी में है कि पूरी शराफत दिखाते हुए मुझे पुष्पा से मिला दो।" कहने के साथ ही बलराज ने रिवॉल्वर निकालकर उस औरत पर तान दी।

रिवॉल्वर पर नजर पड़ते ही औरत के रंग उड़ गये—आंखों में खौफ उभर आया।

"प...पा...पा...!" वहीं खड़े-खड़े ही उस औरत ने ऊंचे स्वर में आवाज लगाई। उसकी आवाज बुरी तरफ से कांप रही थी।

औरत की आवाज के जवाब में जो दूसरी औरत बाहर

निकली—उसे फौरन पहचान लिया बलराज गोगिया ने।

वह पुष्पा ही थी—फोटो वाली पुष्पा।

"क्या है मां...?" पास आते हुए वह बोली।

लेकिन जब उसकी नजर बलराज गोगिया और उसके हाथ में पकड़े रिवॉल्वर पर पड़ी तो वह बुरी तरह से दहल गई।

"त...तुमसे मिलना चाहता है यह...।" औरत कांपते स्वर में बोली।

पुष्पा ने अपनी खौफजदा निगाहों से बलराज गोगिया की तरफ देखा—"क्यों मिलना चाहते हो तुम मुझसे—म...मैं तो तुम्हें नहीं जानती...।"

"नहीं जानतीं तो जान जाओगी।" बलराज गोगिया बोला—"आओ बाहर मेरी कार खड़ी है।"

"न...हीं...मैं नहीं जाऊंगी...।"

"घबराओ नहीं...तुम्हें हाथ भी नहीं लगाऊंगा मैं—कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा मैं, तुमसे बस थोड़ी-बहुत बातें पूछनी हैं फिर तुम वापिस आ जाना।"

"ज...जो पूछना है यहीं पूछ लो।"

बलराज गोगिया ने उस अधेड़ औरत की तरफ देखा जिसे पुष्पा ने मां कहकर बुलाया था—फिर पुष्पा की तरफ देखते हुए बोला—"तेरी यह मां मुझे एक नम्बर की हरामजादी नजर आती है—इसके सामने कुछ नहीं पूछूंगा मैं तुमसे—बाहर चलो।"

रिवॉल्वर के आगे बेबस थी पुष्पा—सो उसकी आज्ञा का पालन करते हुए वह कार में जा बैठी।

बलराज गोगिया ने एक नजर उस अधेड़ औरत पर डाली और बोला—"घबरा नहीं—बहुत जल्दी तेरी बेटी बिल्कुल ठीक-ठाक एकदम से तन्दरूस्त वापिस आ जायेगी।"

औरत होठों पर जुबान फेरकर रह गई।

बलराज गोगिया वापिस कार की तरफ मुड़ गया।

रिवॉल्वर को जेब में रखकर उसने ड्राईविंग सीट सम्भाली और पीछे बैठी पुष्पा से बोला—"आगे आ जाओ—मेरे पास...।"

सीट के ऊपर से होती हुई पुष्पा उसके करीब आकर बैठ गई।

"पूछो—क्या पूछना चाहते हो...?"

बलराज गोगिया ने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

मेन रोड पर आकर बलराज गोगिया ने गर्दन मोड़कर पुष्पा की तरफ देखा और बोला—"मुझे जानती हो?"

"नहीं...।" इन्कार में सिर हिलाया पुष्पा ने—"तुम्हें पहली बार देख रही हूं मैं...।"

"और देसराज को...?"

देसराज का नाम सुनकर बुरी तरह से चौंक पड़ी पुष्पा और घूरकर उसकी तरफ देखने लगी—"क...किस देसराज की बात कर रहे हो...?"

"वही जो तुम्हारा प्रेमी था—जिसे उसके ही दोस्तों ने मार डाला था।"

"ल...लेकिन त...तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो...? कौन हो तुम...? अपना परिचय क्यों नहीं दे रहे तुम...?"

बलराज गोगिया ने विण्ड स्क्रीन पर नजर डालते हुए एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"मैं उसी देसराज का बदनसीब बेटा हूं...।"

सुनकर इतनी जोर से उछली पुष्पा कि उसका सिर कार की छत से जा टकराया...। फटी-फटी आंखों से वह बलराज गोगिया की तरफ देखने लगी—"न...हीं...त...तुम झूठ बोल रहे हो—तुम—तुम बलराज नहीं हो सकते...।"

"क्यों...क्या तुमने बलराज को पहले भी कभी देखा है जो तुम मुझे बलराज मानने से इन्कार कर रही हो?"

"नहीं...देखा तो नहीं मैंने उसे—मगर फिर भी मैं पूरे यकीन से कह सकती हूं तुम बलराज नहीं हो—क्योंकि बलराज को तो फांसी हो चुकी है—छः कत्ल किये थे उसने...।"

"तुम्हारा यकीन गलत है पुष्पा—मैं बलराज ही हूं...। यह ठीक है कि मुझे फांसी की सजा हुई थी...लेकिन ऐन फांसी के दिन मैं भाग निकला था—अगर विश्वास न हो तो पास के किसी पुलिस स्टेशन पर जाकर पूछ लेना—तुम्हें विश्वास हो जायेगा।"

"त...तुम बलराज हो...?"

"सोलह आने बलराज हूं—देसराज गोगिया का इकलौता पुत्र, उसके वंश का आखिरी चिराग, बलराज गोगिया ही हूं मैं।"

पुष्पा फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगी—हालांकि उसका दिल नहीं मान रहा था कि वह बलराज गोगिया ही है—लेकिन फिर भी उसे मानना पड़ रहा था।

"मेरा पता कैसे लगा तुम्हें...?" पूछा पुष्पा ने।

"कल रात मैं अपने घर गया था—वहीं से तुम्हारे बारे में पता लगा...।" कहकर सब कुछ बता दिया उसने।

"ओह!" पुष्पा के मुंह से निकला—फिर एक लम्बी सांस

छोड़ते हुए बोली—"जानते हो जहां तुम मुझसे मिलने आये थे—वह एक चकला है—मेरी तरह वहां और भी कई औरते हैं जो जिस्म बेचकर अपना और बुढ़िया का पेट भरती हैं, जिसे हम सभी मां कहती हैं। देसराज से मेरी मुलाकात करीब साल भर पहले हुई थी...। उस वक्त मैं यहां पर नई-नई आई थी सो देसराज ने अपनी रात रंगीन करने के लिए मुझे चुन लिया। पता नहीं देसराज ने अपनी रात रंगीन करने के लिए मुझे क्यों चुन लिया। पता नहीं देसराज में मैंने क्या देखा कि मैं तो तन-मन से उस पर फिदा हो गई—स्वयं देसराज भी मुझमें खास दिलचस्पी लेने लगा। और फिर हमारे जिस्मों की तरह आत्मायें भी आपस में मिल गईं—एक-दूसरे से प्यार करने लगे हम...। तब एक दिन देसराज ने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया—पहले तो मैं चौंकी—लेकिन इस नर्क से निकलने के लिए मैंने फौरन हां कर दी। तब देसराज मां से मिला और उससे सारी बात स्पष्ट कहते हुए मेरी कीमत पूछी—मां ने मेरी कीमत पच्चीस हजार रुपये लगाई। दो दिन बाद देसराज ने पच्चीस हजार अदा करके मन्दिर में मेरे साथ शादी कर ली। लेकिन मुझे अपने साथ अपने घर नहीं ले गया वह...। यह कहकर उसने मुझे मां के पास ही छोड़ दिया कि जब तक अपनी बेटी की शादी नहीं कर लेता वह मुझे अपने घर नहीं ले जा सकता।

चकले में मैं पतिव्रता स्त्री का धर्म निभाते हुए रहने लगी। वक्त निकालकर देसराज मुझसे मिलने आता रहता।

और फिर करीब एक महीने बाद देसराज जब सुबह वापिस जाने लगा तो उसने मुझसे यह कहा कि वह चार-पांच महीनों के लिए बाहर जा रहा है—आते ही वह अपनी बेटी की शादी कर देगा और फिर वह मुझे हमेशा के लिए अपने साथ ले जायेगा। देसराज चला गया—और करीब छः महीने बाद वापिस लौटा—लेकिन उस वक्त उसके चेहरे पर मुझसे मिलने की खुशी नहीं थी...। वह बुरी तरह से घबराया हुआ नजर आ रहा था—साथ ही वह बड़ी जल्दी में लगता था।

मैंने उससे उसकी घबराहट का कारण पूछा तो कुछ बताने के स्थान पर उसने मुझे एक कागज दिया जिस पर कुछ आड़ी-तिरछी लकीरें बनाई हुई थीं और साथ ही कुछ लिखा हुआ था...। वह कागज मुझे देते हुए उसने यह कहा कि उस कागज को मैं सिर्फ तुम्हें ही दूं, तुम्हारे अलावा किसी को भी वह कागज न दूं—साथ ही उसने यह भी कहा था कि मेरा बेटा यानि तुम, मुझे मां बनाकर

रखोगे—यह बात उसने पूरे विश्वास से कही थी...।

और हफ्ते बाद ही मुझे पता लगा कि देसराज का कत्ल हो गया है। उसकी बेटी की इज्जत दरिन्दों ने लूट ली है। मैं विधवा हो गई।

अब तो मुझे सिर्फ तुम्हारा ही सहारा था—सो मैं तुम्हें ढूंढने के लिए तुम्हारे गांव पहुंच गई—मगर तुम कहीं नहीं मिले...। हारकर मैं वापिस लौट आई।

कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि तुम्हें छः क़त्ल करने के जुर्म में फांसी की सजा हो गई है।

और मैं जिसने इस नर्क से निकलने के सपने संजो रखे थे। पुनः इस नर्क में डूब गई...। कुछ दिनों तक तो मैं मां का विरोध करती रही। लेकिन पिछले महीने से मैं फिर से अपना जिस्म बेचने को मजबूर हो गई हूं।"

कहते हुए पुष्पा की आंखों से आंसू बहने लगे।

बलराज गोगिया ने पुष्पा की पूरी कहानी सुनी—उसे कहीं से भी ऐसा आभास नहीं हुआ कि पुष्पा झूठ बोल रही है।

एक लम्बी सांस छोड़कर उसने पुष्पा की तरफ देखा और बोला—"अपने बाप की आखिरी इच्छा को अवश्य पूरा करूंगा मैं।"

"नहीं...।" पुष्पा बोली—"फिलहाल तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती।"

"क्यों...?" चौंका बलराज गोगिया और गर्दन मोड़कर पुष्पा की तरफ देखने लगा।

"तुम उस कुतिया को नहीं जानते बलराज—जिसे तुमने रिवॉल्वर दिखाकर डरा दिया था—एक नम्बर की नागिन है वह—मौका लगते ही डसने से बाज नहीं आयेगी—और अगर उसे पता चल गया कि तुम बलराज हो तो पता नहीं क्या खेल-खेल डाले वह...। बेशक मैंने तुम्हें जन्म नहीं दिया बलराज—मेरी उम्र भी तुमसे कोई खास ज्यादा नहीं—फिर मैं तुम्हारे बाप की विधवा हूं—और एक तरह से मैं तुम्हारी मां ही हुई—और एक मां यह कभी नहीं चाहेगी कि उसके बेटे पर कोई आंच आये—और इसके लिए मेरा तुमसे दूर रहना ही बेहतर होगा।"

एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने। नर्क में जीवन बिता रही वह औरत जो हर रोज रात को एक नये आदमी को अपना जिस्म बेचती है, उसे पवित्र नजर आ रही थी—किसी देवी का सा दर्जा पा लिया था उसने बलराज गोगिया के दिल में।

"जैसी तुम्हारी इच्छा...।" बलराजा गोगिया बोला—"वह कागज क्या अब भी तुम्हारे पास है जिसे मेरे बाप ने तुम्हें दिया था?"

"हां...है। बहुत सम्भालकर रखा हुआ है मैंने उस कागज को...?"

"मुझे वह कागज चाहिए।"

"कार को वापिस मोड़ो।" बोली पुष्पा—"अभी वक्त है—'मां तुमसे खौफ खाये हुए है—और ऐसे हालात में तुम कागज आसानी से ले सकते हो। वर्ना कल को अगर दोबारा आओगे तो हो सकता है वह तुमसे भिड़ने का कोई जुगाड़ बना ले।"

थोड़ी दूर आगे बढ़कर बलराज गोगिया ने कार वापिस मोड़ दी और वापिस न्यू शक्ति नगर की तरफ बढ़ने लगा।

"उस कागज के बाबत मेरे बाप ने तुम्हें कुछ बताया था?" पूछा बलराज गोगिया ने।

"नहीं...केवल तुम्हें देने की बात की थी—और यह कहा था कि बलराज गोगिया सब कुछ समझ जायेगा।"

पुष्पा के चुप होते ही कार में खामोशी छा गई।

पुष्पा का मकान नजदीक आते ही पुष्पा ने बलराज गोगिया की तरफ देखा और बोली—"तुम मेरे साथ मेरे कमरे में एक ग्राहक की हैसियत से जाना वर्ना 'मां' को शक हो जायेगा और वह तुम्हारे जाने के बाद मुझे बेवजह ही तंग करना शुरू कर देगी।"

हां में सिर हिला दिया बलराज गोगिया ने और कार को एक सौ आठ नम्बर मकान के सामने रोक दिया।

पुष्पा के साथ कार से बाहर निकला बलराज गोगिया—दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए उसने अपना दायां हाथ पैंट की जेब में डाल दिया और किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए रिवॉल्वर को मजबूती से पकड़ लिया। पुष्पा ने घण्टी का बटन दबाया और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए आंखों-ही-आंखों में उसे पुनः समझाया कि उसे क्या करना है?

दरवाजा इस अधेड़ चालाक औरत ने खोला।

"कहां ले गया था वह मुआ तुझे...कौन था वह...?" पुष्पा की तरफ देखते हुए बोल पड़ी वह तथाकथित 'मां'। लेकिन तभी उसकी नजर पीछे खड़े बलराज गोगिया पर पड़ गई।

एक क्षण पहले उसके चेहरे पर जो मक्कारी और क्रोध झलक रहा था अब वहीं खौफ मंडराने लगा था...। "त...तुम...।" बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए हकला गई वह—"आखिर क्यों

पड़ा है तू इसके पीछे, कौन है तू...?"

बलराज गोगिया आगे बढ़ा और उस औरत के सामने आ खड़ा हुआ...। बड़े ही रहस्यमय अंदाज में उसने अपने होंठ हिलाये—"रिवॉल्वर मेरी जेब में है बुढ़िया—दिखाऊं...?"

रिवॉल्वर का नाम सुनते ही उसका रंग उड़ गया—हवा सरक गई उसकी...। "न...हीं...रिवॉल्वर बाहर मत निकालना...।"

"समझदार हो...।" कहकर उसने बुढ़िया की तरफ देखा और चेहरे पर ग्राहकों जैसी चमक लाते हुए बोला—"चल पुष्पा—अपने कमरे में ले चल मुझे...।"

पुष्पा अपनी मां की तरफ देखते हुए हिचकिचाने की एक्टिंग करने लगी—जैसे वह उसकी इजाजत मांग रही हो।

"अरे बेटा...!" तुरन्त ही उस अधेड़ औरत ने अपना रंग बदला—"तुझे प्यार ही चाहिए था तो पहले ही कह देता—यूं रिवॉल्वर के जोर पर बाहर ले जाने की क्या जरूरत थी—और फिर प्यार कोई जबरदस्ती नहीं किया जाता, प्यार तो प्यार से किया जाता है।"

बलराज गोगिया ने घूरकर उसकी तरफ देखा।

उसके देखने के ही ढंग से वह बुरी तरह से हड़बड़ा उठी।

"ज...जा बेटी—इसे अपने कमरे में ले जा—और याद रख जब यह बाहर निकले तो इसके चेहरे पर गुस्सा नहीं मुस्कान होनी चाहिए।"

पुष्पा बलराज गोगिया को अपने कमरे में ले गई।

कमरे की हालत बिल्कुल वैसी थी जैसी कि आम कोठों की होती है—एक बिस्तर लगा हुआ था—बस इसके अलावा कुछ नहीं था कमरे में। बाईं तरफ एक बन्द अलमारी थी जिसमें पता नहीं क्या था—शायद अमीर ग्राहकों को खुश करने के लिए या ठगने के लिए शराब रखी होगी उस अलमारी में।

पुष्पा ने बलराज गोगिया को उस पलंग पर बिठाया और स्वयं नीचे बैठकर पलंग के नीचे घुस गई।

और जब वह बाहर निकली तो उसके साथ-साथ सरकता हुआ लोहे का एक छोटा-सा ट्रंक भी बाहर आ गया। पुष्पा ने ट्रंक खोला और उसमें पड़े अपने कपड़े निकालकर एक तरह रखने लगी।

सबसे नीचे एक पर्स पड़ा था, लेडीज पर्स।

पुष्पा ने पर्स निकाला और उसे खोलकर उसमें से एक तह किया हुआ कागज निकालकर बलराज गोगिया की तरफ बढ़ाते हुए बोली—"लो सम्भालो अपनी अमानत को बलराज—बहुत सम्भाल

कर रखी हुई थी मैंने।'' बलराज गोगिया ने वह कागज उससे लिया और उसकी तह खोलकर उसे देखने लगा।

कुछ आड़ी-तिरछी लकीरें बनी हुई थीं—तथा नीचे कुछ लिखा हुआ था—बलराज ने अपने बाप की लेखनी को फौरन पहचान लिया।

''और कुछ...?'' कागज की तह करते हुए बोला बलराज गोगिया।

''बस यही एक कागज था।''

बलराज गोगिया ने कागज जेब में डाला और उठ खड़ा हुआ—''धन्यवाद--अगर जिन्दगी रही तो तुम्हें इस नरक से अवश्य ही मुक्ति दिलाऊंगा।''

पुष्पा कुछ नहीं बोली—बस आंसूभरी आंखों से बलराज को देखने लगी।

कमरा खोलकर बाहर आ गया बलराज गोगिया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उस खूसट बुढ़िया के दर्शन नहीं हुए उसे वर्ना वह तो यही सोचे बैठा था कि वह अवश्य ही उसे दरवाजे के पास खड़ी मिलेगी।

बाहर निकलकर वह कार में बैठा और वापिसी का सफर आरम्भ कर दिया।

पुष्पा से उसे उस खजाने का काफी बड़ा हल मिल गया था।

❑❑❑

सैंटर टेबल के ऊपर वह कागज बिछा हुआ था जिसे बलराज गोगिया पुष्पा से लेकर आया था....।

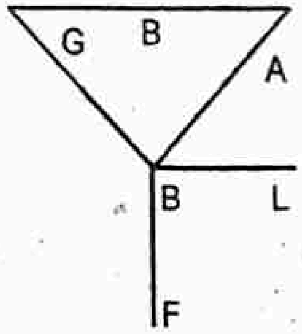
बलराज गोगिया और अवतार सिंह आमने-सामने कुर्सियों पर बैठे आपस में सिर जोड़े हुए उस कागज पर झुके, उसे समझने की कोशिश कर रहे थे।

कागज पर खिंची लकीरें एक स्थान से शुरू होकर इधर-उधर जा रही थीं—जिस स्थान से लकीरें शुरू हो रही थीं उस स्थान पर अंग्रेजी का अक्षर 'बी' लिखा हुआ था—दाईं तरफ जाती लकीर पर 'जी' लिखा था—उसके साथ ही एक अन्य लकीर जा रही थी जिस पर 'ए' लिखा था। नीचे जाती लकीर पर 'एल' लिखा हुआ था। बाईं तरफ जाती लकीर पर 'एफ' लिखा था, 'ए' और 'बी' की लकीरें मिली हुई थीं—और सबसे नीचे एक संदेश लिखा था—

''भाग्य को सिर्फ भगवान ही जगा सकते हैं—उसकी उपासना करो—उसकी शरण में जाओ।''

पाठकों की जानकारी के लिए उस कागज पर खिंची तस्वीरों

को ज्यों-का-त्यों दिया जा रहा है–



अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस लेकर अपनी अकड़ रही गर्दन को सीधा किया और बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा।

"पता नहीं कैसी पहेली छोड़ गया है तेरा बाप–कुछ भी समझ में नहीं आ रहा...। लिखा तो इस तरह है जैसे वो तुझे संन्यास ग्रहण करने की सलाह दे रहा हो।" एक लम्बी सांस छोड़ी उसने–"दो घण्टे से कागज देख रहा हूं, कुछ भी हल नजर नहीं आ रहा।"

बलराज गोगिया ने अपनी गर्दन उठाई और मुस्कुराते हुए बोला–"इतना बड़ा खजाना पाने के लिए दो घण्टे तो क्या दो महीने भी कुछ हैसियत नहीं रखते–अभी से हौसला क्यों हार रहे हो–कोई न कोई रहस्य तो है ही इसमें–और हमें उसी रहस्य को ढूंढना है।"

"अब तो तू ही सिर खपा इसमें–मैं तो जा रहा हूं आराम करने।" कहते हुए उठ खड़ा हुआ अवतार सिंह–"मेरी नजर में वह चौधरी का बच्चा सबसे खुशकिस्मत रहा, बेशक थोड़े-से हीरे ही सही–मगर फिर भी काफी बड़ी रकम पर हाथ साफ करने में कामयाब तो रहा।"

वह कहकर जैसे ही मुड़ने को हुआ एकदम से चीख पड़ा बलराज गोगिया–"रुको अवतार...।"

अवतार चौंककर उसकी तरफ देखने लगा–"चीखे क्यों–किसी बिच्छू ने डंक मारा है क्या...?"

"अभी-अभी तुमने क्या कहा दुष्यन्त चौधरी के बारे में...?"

"यह कि थोड़े-से हीरे प्राप्त करने वाला हमसे कहीं ज्यादा खुश किस्मत है।

"हीरे...।" एकदम से बोला बलराज गोगिया–"यह देखो अवतार–"उसने लकीरों पर उंगली फिराई जी, बी और ए की लकीरें आपस में मिलकर हीरे की शक्ल अख्तियार कर रही हैं–यानि खजाना हीरों के रूप में है...।"

अवतार सिंह फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगा—साथ ही वह पुनः कुर्सी पर बैठ गया।

लेकिन पर जी, बी, ए, वी, एल और एफ का क्या मतलब है?" वह बोला—"और जो तेरे बाप ने सतयुग का श्लोक लिख रखा है उसका क्या मतलब है?"

"इसका मतलब भी समझ रहा हूं मैं...।" अपनी चमक रही आंखों से उसकी तरफ देखते हुए बोला बलराज गोगिया।

"क्या...?" उछल पड़ा अवतार सिंह—"तूने हल निकाल लिया है इस पहेली का...?"

"हां...।" मुस्कुराया बलराज।

अवतार सिंह का कलेजा जोर से धड़क उठा—"क...क्या हल है? क...कहां है खजाना?" कहते-कहते गला सूखने लगा था उसका।

बलराज गोगिया ने सेन्टर बिन्दु पर लिखे 'बी' शब्द पर उंगली रखी और बोला—"बी का मतलब बटाला और ये जो लकीरें खिंची हैं ये सारी सड़कें हैं जो कि विभिन्न शहरों में जा रही हैं। 'जी' का मतलब गुरुदासपुर, 'ए' का अमृतसर, 'एफ' का फिरोजपुर और 'एल' का लुधियाना।

"और 'बी' का मतलब?"

"बलवीर को भूल रहे हो तुम—खजाना उसी के पास है—नीचे लिखे संदेश के अनुसार खजाना अवश्य ही किसी मूर्ति में होना चाहिए भगवान की मूर्ति में—और वह मूर्ति अवश्य ही बलवीर के पास होनी चाहिए।" हैरत से आंखें फटने लगीं अवतार सिंह की—लेकिन साथ ही कामयाबी की एक चमक भी थी उनमें।

"त...तो अरबों का वह खजाना गुरुदासपुर में है।"

"नक्शे के हिसाब से तो उसी के पास होना चाहिए।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"बाकी वहीं चलकर ही पता चल सकेगा...।"

"तो फिर चलें गुरुदासपुर...?"

"तुम भी चलोगे...?" हौले से चौंका बलराज गोगिया।

"अरे भाई पार्टनर हूं तुम्हारा।" वह मुस्कुराया—"और फिर इतने बड़े खजाने को लाने का रिस्क मैं तुझ अकेले पर कैसे छोड़ सकता हूं—पूरी तैयारी करके जाऊंगा मैं...।"

"क...कब जाना है...?"

"सुबह होते ही रवाना हो जायेंगे...।" अवतार बोला।

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस एक लम्बी सांस कर रह गया।

□□□

राजवीर पर निगाह पड़ते ही बलराज गोगिया की आंखों के सामने इकबाल की तस्वीर घूम गई।

"तुम तो इकबाल को खत्म करने गये हुए थे राजवीर—उसकी लाश को अवतार सिंह के कदमों में लाने की घोषणा कर दी थी तुमने—मार दिया उसको...?"

राजवीर ने एक नजर अवतार सिंह पर डाली—उसकी इजाजत मिलते ही उसने बलराज गोगिया की तरफ अपनी गर्दन मोड़ी और बोला—"इकबाल के कुल मिलाकर छः अड्डे थे जिन्हें हमने नेस्तनाबूद कर दिया है—मगर अफसोस, इकबाल हाथ नहीं आ पाया—वक्त से पहले ही उसे तुम्हारे बारे में तथा हमारे बारे में पता चल गया था—सो वह अण्डरग्राउंड हो गया—लेकिन खातिर जमा रखो—जैसे ही हमें उसके ठिकाने का पता चलेगा—हम उसे वहीं पर ही चूहे की तरह खत्म कर देंगे।"

"उसके खत्म होने या न होने से मेरी सेहत पर कोई खास फर्क नहीं पड़ने वाला—मैंने तो बस यूं ही पूछ लिया था।"

"तुम्हें बेशक फर्क पड़े न पड़े लेकिन मुझे जरूर पड़ता है।" अवतार सिंह बोल पड़ा—"शेर के जबड़े में घुसकर कोई शेर के दांत तोड़ने की कोशिश करे और जिन्दा निकल जाये—वह तो शेर के लिए डूब मरने वाली बात होगी—इकबाल की लाश अब मेरे लिए जरूरी हो गई—वर्ना जब तक वह हरामजादा जिन्दा रहेगा कांटा बनकर मेरे दिमाग में चुभता रहेगा—और मैं किसी भी चुभन को बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"यह तो तुम जानों—तुम्हारा काम जाने—खजाना पाने के पश्चात् मैं तुम्हारे यहां से दफा हो जाऊंगा—फिर मेरे पीछे जो चाहे करते रहना।" लापरवाही से बोला बलराज गोगिया और फिर असल बात पर आते हुए बोला—"चलने की तैयारी कर ली है?"

"हां—दस आदमी ले जा रहा हूं मैं अपने साथ—साथ में राजवीर भी होगा...।"

"कहीं किसी देश पर हमला करना है क्या, जो इतनी फौज इकट्ठी कर ली तुमने...?"

"यह तो सिर्फ मनोहर को दबाव में लेने के लिए होंगे—मनोहर की हवा तो उन्हें देखते ही सरक जायेगी।"

बलराज गोगिया एक ठण्डी सांस छोड़कर रह गया।

□□□

"क्या बात है जालिम सिंह...?"

गुरिल्ला को अपने सामने खड़े देखकर बोला चौधरी।

"दो आदमी आपसे मिलना चाहते हैं बॉस...।" गुरिल्ले के मुंह से उसके डरावने जिस्म की तरह ही डरावनी आवाज निकली, जिसे दुष्यन्त चौधरी ने जालिम सिंह कहकर पुकारा था।

"कौन हैं वो...?"

"एक तो अपने आपको इकबाल कह रहा है।"

इकबाल का नाम सुनकर सोच में पड़ गया चौधरी—यह नाम उसने पहले भी कभी कहीं पर सुना हुआ था।

कुछ देर सोचने के उपरान्त चौधरी ने पुनः जालिम सिंह की तरफ देखा—"उनकी तलाशी ली...?"

"हां—दोनों के पास रिवॉल्वर था।"

"रिवॉल्वर अपने पास रख लो और उन्हें अन्दर भेज दो।"

गुरिल्ला वापिस बाहर चला गया।

कुछ देर बाद ही इकबाल और निरंजन कमरे में प्रविष्ट हुए। वे दोनों चौधरी के लिए नितांत अजनबी थे—जिन्दगी में पहली बार वह उनकी सूरतें देख रहा था।

दुष्यन्त चौधरी ने दोनों की तरफ प्रश्नात्मक निगाहों से देखा, जैसे उनका परिचय पूछ रहा हो।

"मेरा नाम इकबाल है...।" तुरन्त ही बोला इकबाल।

"वो तो मैं भी जान चुका हूं—अपना पूरा परिचय दो...।" चौधरी बोला—"और साथ ही अपने यहां आने का, मुझसे मिलने का कारण भी बताओ—उसके बाद ही मैं सोचूंगा कि तुम्हें बैठने को कहूं या न कहूं।"

चौधरी की बात इकबाल को बुरी तो बहुत लगी—उसका दिल तो किया कि वह अभी आगे बढ़े और चौधरी के गिरेबान को पकड़कर पहले उसे ऊपर उठाये फिर नीचे पटक दे।

मगर ऐसा कुछ नहीं किया...। गर्ज जो थी उसकी, अपने गुस्से को अन्दर ही अन्दर पी गया।

निरंजन का भी कुछ ऐसा ही हाल था। उसने अपने बॉस की तरफ देखा भी, जैसे इजाजत मांग रहा हो कि वह चौधरी के हाथ-पांव तोड़ दे।

लेकिन इकबाल की तरफ से ऐसा कोई इशारा न होता देख

उसने भी अपने गुस्से को अपने अंदर समेट लिया।

"अण्डरवर्ल्ड के बारे में कुछ खबर रखते हो चौधरी...?" इकबाल ने चौधरी को घूरते हुए पूछा।

"ज्यादा नहीं—बस इतना जानता हूं कि अवतार सिंह का नाम बहुत बड़े गैंगस्टर के रूप में चर्चित है और लुधियाना एवं आसपास के इलाकों का बेताज बादशाह है।"

"किसी और के बारे में अगर जानते हो तो इकबाल का नाम भी सुना होगा तुमनें—लुधियाना में इकबाल का एक रुतबा है—एक दबदबा है...।"

एकदम से चौंक उठा चौधरी और घूरकर इकबाल की तरफ देखने लगा—"त...तुम वही इकबाल हो?"

"हां...मैं वही इकबाल हूं जिसका कल तक तो लुधियाना में राज चलता था—लेकिन अवतार सिंह के कारण मैं उससे बचता—मुंह छुपाता फिर रहा हूं...।"

"त...तो क्या अवतार ने...?"

"उस हरामजादे ने तो मुझे पूरी तरह से बरबाद करके रख दिया है—मेरे सभी ठिकानों को खत्म कर डाला उसने—मेरे हैडक्वार्टर को भी नहीं छोड़ा उसने...।"

"क्यों...?"

"तुम्हारे कारण...।" इकबाल ने कहा।

"क...क्या...?" उछल पड़ा दुष्यन्त चौधरी—"म...मैं मेरे कारण अवतार सिंह ने तुम्हें तबाह कर दिया?"

"हां...।"

"लेकिन मेरी उससे क्या दुश्मनी है—मैं तो उसे शक्ल से भी नहीं जानता—और आज से पहले तो मैंने तुम्हें भी नहीं देखा था फिर मैं तुम दोनों की दुश्मनी का सबब कैसे बन गया?"

इकबाल ने एक लम्बी सांस छोड़ी—"भागते-भागते हम बुरी तरह से थक गये हैं—टांगें भी हमारा बोझ उठाने में असमर्थ हो रही हैं।"

"ओह!" उनकी बात का अर्थ समझकर—कुर्सियों की तरफ इशारा किया उसने—"बैठो।"

इकबाल ने निरंजन की तरफ देखा और स्वयं भी एक कुर्सी सम्भाल ली—जबकि निरंजन उसके पीछे खड़ा हो गया।

"तुम भी बैठ जाओ...।" चौधरी ने निरंजन से कहा।

"यह मेरा असिस्टेंट है।" निरंजन के स्थान पर इकबाल

बोला—"जहां मैं बैठा हूंगा—वहां पर नहीं बैठ सकता...।"

"ओह!" चौधरी के मुंह से निकला।

निरंजन से निगाहें हटाईं उसने और इकवाल के चेहरे पर गड़ा दीं—"अब बताओ—तुम दोनों की लड़ाई का कारण मैं कैसे बन गया?"

इकबाल ने एक लम्बी सांस छोड़ी और अपनी तेज निगाहों को चौधरी के चेहरे पर गड़ाते हुए बोला—"गोगिया को जानते हो न...?"

"ग...गो...गिया?" इतनी बुरी तरह उछला चौधरी कि उसकी कुर्सी पलटते-पलटते रह गई।

"बलराज गोगिया...।" इकबाल ने बलराज का नाम लिया।

बलराज गोगिया के नाम ने जैसे वहां परमाणु बम का सा धमाका कर डाला था। कुछ पलों के लिए तो चौधरी की धमनियों में बहने वाला सारा खून पानी में बदल गया...। रंगत एकदम से सफेद पड़ गई थी—आंखों में खौफ के साये मंडराने लगे।

"लगता है बलराज गोगिया से काफी डर रहे हो, उसके नाम ने ही जैसे तुम्हारी हवा ख़राब कर दी है।" उसकी हालत देखकर मुस्कुराया इकबाल।

हड़बड़ा उठा चौधरी—साथ ही उसने तुरन्त ही स्वयं पर काबू भी पा लिया।

"गोगिया के बारे में क्या जानते हो?" वह पूछने लगा।

"जानता ही नहीं—बहुत ज्यादा जानता हूं...।"

"यह भी जानते हो वह कहां पर है?"

"बिल्कुल जानता हूं...।"

"बताओ...।"

"जरूर बताऊंगा—मगर उससे पहले तुम्हें यह बताऊंगा कि मुझे तुम्हारे पास क्यों आना पड़ा—और मेरे साथ रहकर तुम किस तरह फायदे में रह सकोगे?"

चौधरी उसकी तरफ देखने लगा। बोला कुछ नहीं वह।

इकबाल एक क्षण के लिए ठिठका—फिर कहने लगा—

"जानते हो मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ मालूम है कि तुम्हारे पास साठ करोड़ के हीरे हैं और साथ ही यह भी मालूम है कि तुमने देसराज गोगिया का कत्ल क्यों किया था?"

"बुरी तरह से चौंका चौधरी और फटी-फटी आंखों से इकबाल की तरफ देखने लगा—"त...तुम जानते हो?"

"सब कुछ जानता हूं...।" भेदभरी मुस्कान मुस्कुराया इकबाल।

जबकि वह सिर्फ उन हीरों के बारे में ही जानता था जो कि चौधरी के पास थे—और कुछ तो उसे मालूम ही नहीं था। उसने तो बस अंधेरे में ही तीर चलाया था।

"और यह राज।" इकबाल आगे बोला—"सिर्फ मैं ही नहीं अवतार सिंह भी जानता था—तभी तो उसने बलराज गोगिया को जेल से फरार करवाने के लिए इतना बड़ा खेल खेला, कई कत्ल कर डाले उसने। लेकिन चूंकि खुद मैं भी बलराज गोगिया को फरार करवाने की सोच रहा था लेकिन मुझसे पहले अवतार ने ही उसे निकाल लिया, इसे इत्तफाक समझो या मेरी चालाकी कि मैंने बलराज गोगिया पर अपना कब्जा कर लिया...। जेल से वह अकेला निकला था अवतार के साथियों के साथ यह मुझे मालूम नहीं था—लेकिन उसके फरार होने के बाद मैं इतना जरूर जान गया था कि बलराज गोगिया गायब हो गया है और अवतार उसे पागलों की तरह ढूंढ रहा है...। बलराज गोगिया को ढूंढने के लिए मैंने भी अपने आदमी लगा दिये और इस प्रकार बलराज गोगिया उसकी बजाय मेरे कब्जे में आ गया। अपनी चालाकी से मैंने उसे यह विश्वास भी दिला दिया कि उसे आजाद करवाने वाला मैं ही था—वह मुझे अपना जीवनदाता समझने लगा—और मैंने उससे वह काम करने के लिए जो कि उसके बाप की मौत का कारण बना था—लेकिन साथ ही मुझे अवतार की तरफ से भी डर लगा हुआ था—अगर अवतार को पता चल जाता तो वह मेरा जीना दूभर कर देता—सो मैंने पहले अवतार को ही खत्म करने की सोची और हथियार बनाया बलराज को। बलराज गोगिया ने उसका एक अड्डा भी खत्म कर दिया—लेकिन अगले अड्डे को खत्म करने से पहले ही वह अवतार के हत्थे चढ़ गया...। अवतार ने उसे समझाया, सच्चाई बताई और फिर मेरा क्या होना था—यह तो समझ सकते हो। एक-एक करके उसने मेरे सभी अड्डों को नष्ट कर दिया—मेरे कई आदमी मार डाले—एक तरह से मेरा चला-चलाया रोजगार खत्म कर डाला उस हरामजादे ने—और मैं अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागता हुआ आखिर तुम्हारे पास आ गया।"

"लेकिन इसमें अवतार सिंह की मेरे साथ क्या दुश्मनी...?" चौधरी बोला।

"बलराज गोगिया की तो है—वह तो तुम्हारी आत्मा को तुम्हारे जिस्म से निकालने के लिए तड़प रहा है—लेकिन फिलहाल तो अवतार

सिंह ने उसे रोका हुआ है—सिर्फ उस काम को करने के लिए जिसके कारण बलराज के बाप को तुम लोगों ने मार डाला था।"

"त...तो क्या खजाने का नक्शा बलराज गोगिया के पास है?"

खजाने का नाम सुनते ही बुरी तरह से चौंक पड़ा इकबाल। उसके पीछे खड़ा निरंजन भी बुरी तरह से उछल पड़ा था। साथ ही उसका दिल भी जोर-जोर से धड़कने लगा था।

लेकिन तुरन्त ही इकबाल ने स्वयं पर काबू पा लिया—अब वह समझ गया था कि अवतार सिंह ने बलराज गोगिया को फरार क्यों करवाया था—उसी खजाने के लिए ही।

अवश्य ही खजाना काफी बड़ा होना चाहिए—वर्ना अवतार उसे फरार कराने के लिए इतना बड़ा प्लान न बनाता।

इधर इकबाल को चौंकते देख दुष्यन्त भी बुरी तरह से चौंका था—आंखों में संदेह के कीड़े गिजबिजाने लगे थे—"खजाने का नाम सुनकर तुम चौंके क्यों?" उसने पूछा।

तब तक तो इकबाल ने स्वयं को बिल्कुल तैयार कर लिया था—"शी...शी...!" होंठों पर उंगली रखी उसने और धीरे बोलने का इशारा किया—"बार-बार खजाने का नाम न लो—दीवारों के भी कान होते हैं—क्या मैंने एक बार भी ऐसा कहा...। तुम्हें तो मैं बहुत समझदार समझता था कि तुम बात को अन्दर ही रखोगे—लेकिन तुमने तो ऊंचे स्वर में कह दिया—इसलिए मैं चौंक पड़ा था।"

बातों में आ गया चौधरी उसकी—छाती चौड़ी करते हुए मुस्कुराया वह—"फिक्र मत करो—इस कमरे की दीवारों के कान नहीं हैं—जितना ऊंचा मर्जी बोलो—बेखौफ होकर बोलो।"

इकबाल ने ऐसा मुंह बनाया जैसे वह उसकी बातों से प्रभावित हुआ हो।

"लगता है उन हीरों की हिफाजत के लिए काफी तगड़ा बंदोबस्त किया हुआ है तुमने?" इकबाल मुस्कुराया।

"हीरों की बात छोड़ो—यह बताओ अब मेरे पास क्या लेने आये हो तुम, क्या सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए मेरे पास आये हो—अगर ऐसा सोचकर आये हो तो यह ख्याल दिल से निकाल दो कि मैं तुम्हारी कोई मदद कर पाऊंगा। अरे मियां—जब तुम एक गैंगस्टर होकर खुद अपनी जान बचाते फिर रहे हो तो फिर मैं तो एक मामूली आदमी हूं—मैं कैसे बचा पाऊंगा तुम्हें...? और फिर मेरी-तुम्हारी रिश्तेदारी तो है नहीं जो तुम्हें बचाना मैं अपना फर्ज समझूं।"

"एक और एक ग्यारह होते हैं चौधरी...।" इकबाल रहस्यमय अंदाज में बोला—"जिस खजाने को पाने के लिए तुमने इतनी मेहनत की, बलराज गोगिया के बाप को मार डाला—उसकी बहन की इज्जत लूट ली—क्या उसे इतनी जल्दी भूल जाओगे—तुम्हें तो उस खजाने को पाने के लिए अपनी जान लड़ा देनी चाहिए।"

"मुझे अपनी जान बहुत प्यारी है...।"

"और खजाना?"

"वह भी प्यारा है—मगर जब उस तक पहुंचना ही नामुमकिन हो तो फिर मेहनत करने का क्या फायदा?"

"अगर तुम मेरा साथ दो, तो जो खजाना अवतार को मिलने वाला है—उसे हम हासिल कर सकते हैं।"

चौधरी आंखें चौड़ी करके उसकी तरफ देखने लगा—"कैसे?"

"अवतार के किले में सेंध लगाकर हम वहां की हर खबर हासिल कर सकते हैं।" इकबाल भेदभरे स्वर में बोला—"और जैसे ही हमें पता चलेगा कि खजाना कहां पर है, हम अवतार से पहले ही उस तक पहुंच जायेंगे। खजाना हाथ में आते ही अवतार और बलराज गोगिया की कीमत हमारे सामने उस कीड़े के समान हो जायेगी जिसे हम जब चाहें पैरों तले कुचल दें।"

"ल...लेकिन...।" कुछ कहना चाहा चौधरी ने।

मगर इकबाल ने हाथ उठाकर उसे होंठ बंद करने का इशारा किया और आगे कहने लगा—"बलराज गोगिया तुम्हारा दुश्मन है और अवतार सिंह मेरा दुश्मन है...। बेशक तुम मुझे अपना न समझो मगर वक्त की नजाकत को देखते हुए हमें आपस में दोस्ती कबूल कर लेनी चाहिए—अगर तुम मुझसे हाथ नहीं मिलाओगे तो खजाने के लालच में और कई बड़े-बड़े तीसमार खां मुझसे हाथ मिलाने को राजी हो जायेंगे—लेकिन उस सूरत में तुम्हारे पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा—ऊपर से बलराज की तरफ से भी तुम्हें हर वक्त खतरा बना रहेगा।"

बात को चौधरी के भेजे में डालने में कामयाब हो गया था इकबाल...। चौधरी के चेहरे से ही नजर आ रहा था कि वह उसकी बातों से काफी प्रभावित हो रहा है।

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला चौधरी—"मुझे तुम्हारी दोस्ती कबूल है।"

कहते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया जिसे इकबाल ने बड़ी गर्मजोशी से थाम लिया।

तभी जैसे चौधरी को याद आया। इक़बाल के हाथ से हाथ निकाला उसने और बोला—"लेकिन मैंने तो बलराज को खत्म करने का आदेश दे दिया है...।"

चौंक उठा इकबाल—"किसे...?"

"राघव को...।"

राघव का नाम सुनकर चौंक उठा इकबाल—"रा...घव को...उस पेशेवर हत्यारे को...!"

"हां...।"

"उसे कत्ल करने से रोको चौधरी!" बोला इकबाल—"अवतार ने बलराज गोगिया को यूं ही फरार नहीं करवाया, अवश्य ही बलराज गोगिया के पास कुछ ऐसा है जिससे कि अवतार खजाने तक पहुंच सकता है—अगर बलराज गोगिया मर गया तो फिर उसके साथ-साथ वह राज भी मर जायेगा...। अवतार तो वंचित होगा ही खजाने से—हमारे हाथ भी कुछ नहीं लगेगा—बलराज गोगिया के जिन्दा रहने तक कम से कम उम्मीद तो बनी रहेगी कि हम भी खजाने को पा सकते हैं—अवतार से पहले खजाने तक पहुंच सकते हैं। इसलिए जब तक खजाने का पता नहीं चलता तुम उसे खत्म नहीं करवाना।"

"मैं बात करूंगा राघव से...।" कुछ सोचते हुए बोला चौधरी।

"जल्दी बात करो उससे—कहीं ऐसा न हो कि वह अपना काम करने को निकल पड़ा हो।"

"निकल तो पड़ा होगा वह—मगर मुझे उम्मीद है कि मैं शीघ्र उसे ढूंढ निकालूंगा—या मेरा मैसेज उस तक पहुंच जायेगा।"

❑❑❑

बलराज गोगिया पर नजर पड़ते ही बलवीर पाल शाह बुरी तरह से उछल पड़ा और फटी-फटी आंखों से उसकी तरफ देखने लगा।

बलवीर के देखने के ढंग से ही बलराज समझ गया कि उसने उसे बलराज गोगिया या देसराज गोगिया के बेटे के रूप में पहचान लिया है।

बलराज गोगिया का सोचना एकदम से ठीक निकला...। अस्पष्ट स्वर में चीख उठा था बलवीर पाल शाह।

"ब...ल...राज...।"

"शुक्र है पहचान लिया तुमने।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"वर्ना अपना परिचय देने में मुझे भी अपना वक्त गंवाना पड़ता।"

"मैं तो तुम्हें कभी न पहचानता अगर अखबार में तुम्हारी फरारी की ख़बर के साथ तुम्हारी फोटो न छपी होती।"

"चलो जैसे भी पहचाना—पहचाना तो।"

"यहां मेरे पास कैसे आये...?" पूछा बलवीर ने।

"मरने से पहले मेरा बाप तुम्हारे पास आया था और कोई चीज छोड़ गया था—मेरे लिए...।"

"हां...!" तुरन्त ही बोला बलवीर—"मुझे याद है वह एक लिफाफा था—उस लिफाफे को मुझे देते हुए देसराज ने यह कहा था कि अगर तुम मेरे पास आओ तो मैं तुम्हें वह लिफाफा दे दूं, मैं खुद चलकर लिफाफा तुम्हारे पास पहुंचाता, इसके लिए उसने मना कर दिया।"

"अब तो मैं खुद ही तुम्हारे पास आ गया हूं...।"

"मैं अभी लाया...।" कहकर बलवीर पाल शाह अन्दर चला गया। कुछ देर बाद जब वह वापिस लौटा तो उसके पास खाकी रंग का एक लिफाफा था।

"लो।" लिफाफा उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला बलवीर—"सम्भालो अपनी अमानत।"

बलराज गोगिया ने लिफाफा पकड़ते ही अनुमान लगा लिया कि उसमें कोई भारी वस्तु नहीं—बस कागज ही है। लिफाफा पहले से ही खुला हुआ देख बलराज गोगिया ने बलवीर की तरफ देखा।

"मैंने देखा था इसे खोलकर।" तुरन्त ही बोला बलवीर—"तुम्हें तो फांसी की सजा हो चुकी थी—सो मैंने लिफाफे को खोलकर झांकने में कोई बुराई नहीं समझी...। यकीन मानो मैंने झांककर सभी कागजों को पुनः वापिस रख दिया था। और अगर इत्तफाक से मैं तुम्हारी फरारी की खबर न पढ़ता तो इसे फेंक चुका होता।"

उसकी साफगोई से खुश होकर बलराज गोगिया ने उसे कोई सख्त लफ्ज नहीं कहा।

लिफाफे के अन्दर हाथ डालकर बलराज गोगिया ने अन्दर पड़े कागजों को निकाला और उन्हें देखने लगा।

अभी वह उन्हें ठीक ढंग से देख भी नहीं पाया था कि बलवीर की खौफजदा आवाज सुनकर वह कागजों से निगाह हटाने पर मजबूर हो गया।

"क...कौन हो तुम लोग...क...क्या करने आये हो?"

बलराज गोगिया ने गर्दन मोड़कर पीछे देखा जिधर कि बलवीर अपनी खौफजदा आंखों से देख रहा था।

अवतार सिंह अपने गुण्डों के साथ दरवाजे में प्रवेश कर रहा था।

अवतार को देखकर बलराज गोगिया ने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला ही था कि अवतार उससे पहले ही बोल पड़ा—"इतनी देर हो गई थी तुम्हें अन्दर आये हुए—इसलिए मजबूरन मुझे अन्दर आना पड़ा...। भगवान का शुक्र है कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ।"

कहकर उसने बलवीर पाल शाह की तरफ देखा—"डरने की जरूरत नहीं, हम बलराज के साथ इसके बॉडीगार्ड...।" बलवीर हैरत से बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा।

"तुम्हें ऐसे नहीं आना चाहिए था अवतार, कुछ देर और सब्र नहीं कर सकते थे?"

"और इस बीच अगर तुझे कुछ हो जाता तो...?"

"अच्छा भला खड़ा हूं तुम्हारे सामने...।"

"वो तो मुझे अन्दर आकर ही पता चला।" मुस्कुराया अवतार सिंह—"काम हो गया?"

"मेरे बाप ने तो इसे सिर्फ ये कागज दिये थे।" उसने हाथ में पकड़े कागज अवतार को दिखाये।

"लगता है फिर कोई पहेली छोड़ गया है तेरा बाप।" झुंझलाई आवाज में बोला अवतार—"क्यों क्या उसे पहेलियां बुझाने का शौक था?"

"मालूम नहीं—मुझे तो कोई पहेली नहीं लगती इसमें।"

"खैर, देख तो सही—क्या है इन कागजों में?"

बलराज गोगिया ने कागज खोले तो उसमें से अखबार का एक टुकड़ा निकलकर नीचे गिर पड़ा—जिसे अवतार सिंह ने झुककर उठा लिया।

अखबार का वह टुकड़ा किसी खबर की कटिंग थी।

अवतार सिंह ने तह किये हुए उस टुकड़े को खोला।

ऊपर मुरली बजाते हुए भगवान कृष्ण की मूर्ति छपी हुई थी तथा नीचे उस मूर्ति के बारे में लिखा था—

"पांच हजार वर्ष पुरानी सोने की बनी भगवान कृष्ण की मूर्ति मिली।"

मूर्ति चोर फरार।

"लोगों को याद होगा कि कुछ रोज पहले चण्डीगढ़ के म्यूजियम से पांच हजार वर्ष पुरानी भगवान कृष्ण की मूर्ति चोरी

हो गई थी। चोरों ने अचानक ही म्यूजियम पर हमला बोलकर म्यूजियम के छः गार्डों की हत्या करके मूर्ति चुरा ली थी। पुरातत्व विभाग के अधिकारियों के अनुसार सोने की बनी इस मूर्ति की कीमत अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में दो अरब रुपये है। मूर्ति के मुकुट में जड़ा एक-एक हीरा पचास-पचास लाख की कीमत का है। ऊपर से मूर्ति पांच हजार वर्ष पुरानी है। इस वजह से मूर्ति की कीमत इतनी ज्यादा है। मूर्ति के चोरी होते ही पुलिस ने तत्परता दिखाई और शीघ्र ही उसे मूर्ति चोरों का पता चल गया। उस वक्त चोर देश से बाहर जाने की तैयारी कर रहे थे—जब अचानक ही पुलिस ने चोरों पर हमला बोल दिया।

चोर तो बचकर भाग निकले मगर मूर्ति पुलिस ने बरामद कर ली।

इस प्रकार मूर्ति वापिस म्यूजियम में पहुंच गई है। मूर्ति की सुरक्षा के लिए पुरातत्व विभाग ने अब अपने सुरक्षा प्रबंधों को और भी मजबूत करने की घोषणा की है।"

अवतार सिंह खबर पढ़कर पुनः मूर्ति को देखने लगा। भगवान कृष्ण की उस मूर्ति के चार हाथ थे। दो हाथों से वे बांसुरी पकड़े बजा रहे थे—एक हाथ में कमल का फूल था तो दूसरे हाथ को उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में उठा रखा था।

मूर्ति ब्लैक एण्ड व्हाइट में छपी हुई थी, इसलिए अवतार सिंह उस मूर्ति की भव्यता तो नहीं देख पाया। लेकिन खबर में मूर्ति की जो कीमत छपी हुई थी उस हिसाब से मूर्ति को पाने के लिए कोई भी बड़े-से-बड़ा जोखिम उठा सकता था।

इधर अवतार सिंह के चेहरे पर उभरने वाले भावों से बेखबर बलराज गोगिया अपने हाथ में पकड़े कागज पर लिखी अपने बाप की इबारत को पढ़ रहा था।

वह एक पत्र था जो कि उसके बाप ने उसी के नाम लिखा था—

"प्रिय बलराज!

मैं तुम्हारी सूझबूझ से अच्छी तरह वाकिफ हूं—मैं यह भी जानता हूं कि साधारण आदमी की तुलना में तुम्हारे दिमाग के घोड़े बहुत तेज दौड़ते हैं। बेटे—इंसान जब औलाद वाला हो जाता है तो उसकी एक ही ख्वाहिश बनी रहती है कि अपनी औलाद को ज्यादा से ज्यादा सुख दे सके—उसके लिए इतना कुछ छोड़कर जाये कि औलाद को सारी उम्र कमाने की भी जरूरत न पड़े। मैंने भी एक

वाप की हैसियत से अपनी औलाद के लिए यानि तेरे और कामिनी के बारे में सोचा--और सारा सुख एक साथ ही प्राप्त करने के लिए मैं उन लोगों से मिल गया जो कि एक खजाने की तलाश में अफ्रीका जा रहे थे—हमने खजाना प्राप्त कर लिया और वापिस आ गये मैं तो शायद अपने हिस्से पर संतोष कर जाता, मगर मेरे साथियों की नीयत डोल गई, वे और ज्यादा कमाना चाहते थे। उन्हीं दिनों अखबार में एक मूर्ति के बारे में खबर छपी जो कि पुरातत्व विभाग को खुदांई के दौरान मिली, सोने की बनी इस मूर्ति की कीमत दो अरब से अधिक थी। मेरे साथियों ने मुझे उस मूर्ति का लालच दिया—और मैं उनके लालच में आ गया—मैंने उस मूर्ति को चुरा लिया—लेकिन जब मैं मूर्ति लेकर अपने साथियों के पास पहुंचा तो मुझे उनकी असलियत का पता चला—वे आपस में मुझे खत्म करके खजाने और मूर्ति में से एक का हिस्सेदार बनाने की बात कर रहे थे।

उनकी बातें सुनकर मैंने भी कुत्तों को मजा चखाने की सोच ली—मैं जानता था कि वे सारे हीरे जो कि हम अफ्रीका से लाये थे पास वाले कमरे में हैं—मैं चुपके से वहां पहुंचा और सारे हीरे उठा लिये, मूर्ति को चुराने के थोड़ी देर बाद ही मुझे पता चला गया था कि उस मूर्ति का पेट बीच में से खोखला है और उसे खोलने का तरीका भी है।

मैंने वे सारे हीरे उस मूर्ति के पेट में डाल दिये और वहां से फरार हो गया।

इधर मुझे वापिस न आया देख मेरे बेईमान साथियों को चिन्ता हुई और वे मुझे ढूंढ़ने लग गये—और जब तक वे मुझ तक पहुंचते, मैंने पुलिस को सूचित कर दिया कि मूर्ति कहां है? ऐन वक्त पर पुलिस वहां पहुंच गई—उस वक्त मैं उन्हें मूर्ति दे रहा था।

पुलिस आ जाने के कारण हम सबको वहां से भागना पड़ा—वह भी मूर्ति को वहीं छोड़कर भाग गये। और यही तो चाहता था मैं कि मूर्ति पुलिस के पास पहुंच जाये—क्योंकि उस खजाने की सुरक्षा सबसे ज्यादा पुलिस ही कर सकती थी।

लेकिन मेरे साथियों को यह राज पता नहीं था। मूर्ति वापस पुलिस के पास पहुंच जाने के उपरान्त मेरे साथियों ने मुझसे खजाने के बारे में पूछा जिसका कि उन्हें पता चल चुका था कि वह मेरे ही पास है। लेकिन मैंने खजाने का पता बताने की पहले दो दिन की मोहलत मांग ली जो कि मुझे मिल गई। तब उस खजाने तक पहुंचने का नक्शा बनाकर मैंने पुष्पा को दिया—फिर बलवीर को

अखबार की कटिंग और यह पत्र जो कि तुम पढ़ रहे हो, दिया...। अब मैं यह शहर छोड़कर जा रहा हूं बेटे—पता नहीं अब मुलाकात होगी कि नहीं होगी—अगर मुझे कुछ हो गया और तू बलवीर तक पहुंच गया तो उस खजाने को जरूर प्राप्त करना जो कि तुम्हारा ही है सिर्फ तुम्हारा।

—देसराज गोगिया।"

बलराज़ गोगिया ने पत्र पढ़कर एक लम्बी सांस छोड़ी और पास खड़े अवतार सिंह की तरफ देखने लगा।

"क्या लिखा है?" अवतार सिंह उसकी आंखों में झांकते हुए बोला।

'खुद ही पढ़ लो...।" पत्र को उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा बलराज़ गोगिया ने।

अवतार सिंह ने पत्र लिया और पढ़ने लगा, जबकि बलराज गोगिया उससे अखबार की कटिंग लेकर पढ़ने लगा।

पत्र पढ़कर अवतार सिंह ने बलराज़ गोगिया की तरफ देखा—"अब...क्या ख्याल है—अपना हक पाओगे तुम?"

"वो तो पाऊंगा ही।" मुस्कुराया बलराज गोगिया।

"तो फिर...?"

"बस...।" बलराज गोगिया ने उसे बीच में ही रोक दिया—"बाकी बातें वापिस चलकर।"

अवतार सिंह मुस्कुरा पड़ा, वह समझ गया कि बलराज गोगिया बलवीर पाल शाह के सामने कोई बात नहीं करना चाहता।

तत्पश्चात् बलराज गोगिया ने सधन्यवाद बलबीर पाल शाह से वापिसी की इजाजत ली और अवतार सिंह तथा उसके आदमियों के साथ बाहर निकल गया।

❑❑❑

"अब बताओ क्या सोचा है तुमने...?" स्कॉच का पैग उठाते हुए बोला अवतार सिंह।

इस वक्त दोनों बलराज गोगिया और अवतार सिंह, अवतार सिंह के ठिकाने पर बैठे वापिसी की थकान मिटा रहे थे।

बलराज गोगिया ने आराम से अपना पैग समाप्त किया और खाली गिलास को मेज पर रखते हुए बोला—"सोचना क्या है—उस मूर्ति को उड़ाना है—कैसे भी, किसी भी हालत में। उस मूर्ति में पड़ा खजाना मेरे बाप का है और मेरे बाप की वसीयत जो कि बलवीर पाल शाह से मुझे मिली, उस सारे खजाने का मालिक मैं हूं—यह

अलग बात है कि उस खजाने के तीन हिस्से मैं अपनी मर्जी से तुम्हें दे रहा हूं...।"

"'बदले में मेरी मदद भी तो मिलेगी तुझे।"

"हां...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"वो तो तुम्हें देनी ही होगी—इतना बड़ा खजाना जो पाना है तुम्हें।" कहकर उसने मेज पर पड़ी प्लेट में से चिकन का पीस उठाया और उसे मुंह में डालकर दांतों से चबाने लगा।

"लो, फिर बताओ—क्या मदद चाहिए तुम्हें?"

"यह तो उस मूर्ति को देखकर ही बता सकूंगा कि मुझे तुम्हारी क्या मदद चाहिए...।" बलराज गोगिया बोला—"हां एक सबसे अहम काम तुम्हें पहले करना होगा।"

"क्या?"

"तुम्हें मुझे उस मूर्ति को दिखाने के साथ-साथ म्यूजियम के मूर्ति के सुरक्षा प्रबन्धों की जानकारी भी देनी है...। वह जानकारी तुम कैसे प्राप्त करते हो यह तुम्हारी सिरदर्दी है...।"

"उसका बंदोबस्त भी हो जायेगा।"

"कैसे?" हैरानी से उसकी तरफ देखा बलराज गोगिया ने।

मुस्कुराया अवतार सिंह—"जब बंदोबस्त हो जायेगा तो बता भी दूंगा।"

बलराज गोगिया निरूत्तर हो गया।

❑❑❑

चण्डीगढ़ के सेक्टर सत्रह के बीचो-बीच बना हुआ वह म्यूजियम जिसमें कि भगवान कृष्ण की सोने की बनी पांच हजार वर्ष पुरानी वह मूर्ति दर्शकों को दिखाने के लिए रखी हुई थी।

उस वक्त दिन के तीन बज रहे थे जब एक सफेद वैन म्यूजियम के ऐन सामने आकर रुकी।

वैन के ऊपर 'दिल्ली दूरदर्शन' लिखा हुआ था।

वैन को रुकते देख म्यूजियम के मेन गेट पर खड़े स्टेनगंनों से लैस चार गार्ड एकदम से चौंकन्ने हो गये। स्टेनगनों का रुख एकदम से वैन की तरह हो गया। जैसे किसी भी पल ट्रिगर दबाने को तैयार खड़े थे वे।

वैन का दरवाजा खुला और उसमें से एक-एक करके चार व्यक्ति उतरे।

शक्ल से चारों संभ्रांत तथा शरीफ नजर आने वाले लोग थे। उनमें से दो के कंधों पर मूवी कैमरा टंगा हुआ था और दोनों ने

ही फ्रेंचकट दाढ़ी रखी हुई थी।

तीसरे के कंधे पर बैग टंगा हुआ था—और वह क्लीन शेव था—चौथा खाली हाथ था।

चारों मेन गेट की तरफ बढ़े—और जैसे ही म्यूजियम के मेन गेट के निकट पहुंचे गार्ड ने उन्हें रोक लिया।

"कौन हो तुम...?" एक गार्ड ने स्टेनगन उनकी तरफ ही ताने हुए पूछा।

खाली हाथ वाला व्यक्ति आगे बढ़ा और गार्ड के सामने जाकर रुक गया...। अपनी वैन की तरफ इशारा किया उसने और बोला—"वैन पर इतने बड़े-बड़े अक्षरों में दिल्ली दूरदर्शन लिखा हुआ दिखाई नहीं दे रहा क्या?"

"हम अन्धे नहीं हैं।" गार्ड का स्वर सख्त था।

"तो फिर...?"

"अगर म्यूजियम में जाना है तो सारा सामान बाहर रखकर जाना पड़ेगा—क्योंकि अन्दर कोई भी सामान ले जाने की मनाही है।" दूसरा गार्ड बोल पड़ा।

"देखिये हम पूरे म्यूजियम की रील बनाकर टी०वी० पर दिखाना चाहते हैं और साथ ही हरियाणा सरकार के किये गये सुरक्षा प्रबन्धों की जानकारी भी दर्शकों तक पहुंचाना चाहते हैं। ऐसे में हम खाली हाथ अन्दर कैसे जा सकते हैं?"

"हम कुछ नहीं जानते—हमें आदेश मिला हुआ है कि कोई भी सामान अन्दर न जाने पाये।"

तभी म्यूजियम देखने के लिए तीन दर्शक वहां पहुंचे...। गार्डों ने उन्हें भी रोक लिया, उनकी आइडेण्टी फिकेशन मांगी। आई० कार्ड देखे। फिर उनकी भरपूर तलाशी लेने के उपरान्त ही उन्हें अन्दर जाने दिया।

इस बीच एक गार्ड टी०वी० टीम से बातें करता रहा। टीम के चारों सदस्यों ने उन्हें मनाने की बहुत कोशिश की मगर वे गार्ड तो जैसे बहरे हुए पड़े थे—उनकी कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं थे वे।

"ठीक है...।" आखिर एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला वह चौथा व्यक्ति—"हमें म्यूजियम के प्रबंधक से तो मिलवा सकते हो—उनकी परमिशन से तो हमें अन्दर दाखिल होने दे सकते हो?"

"हां—अगर मैनेजर ने इजाजत दे दी तो फिर हमें क्या ऐतराज हो सकता है?"

"तो फिर मिलवाओ उनसे...।"

"आप ऐसा कीजिये—म्यूजियम की दीवार खत्म होते ही वो जो गली दिखाई दे रही है न...!" गार्ड ने दाईं तरफ म्यूजियम की बाहरी दीवार के अन्त की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"हां...।"

"आप उस गली में चले जायें—उसी गली में छः दरवाजे छोड़कर सातवां दरवाजा मैनेजर साहब का है—गेट पर खड़ा गार्ड आपके आने की सूचना मैनेजर साहब तक पहुंचा देगा।"

उस व्यक्ति ने एक लम्बी सांस छोड़ी और अपने साथियों की तरफ देखते हुए बोला—"चलो।"

और वे चारों टी०वी० टीम के सदस्य म्यूजियम की दीवार के साथ-साथ आगे बढ़ने लगे।

दीवार के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते उन्हें तीन और गार्डों के दर्शन हुए जो कि गेट पर खड़े दरवाजों की तरह ही हथियारबंद थे। वे गार्ड शायद उन्हें रोक भी लेते मगर गेट के गार्डों ने उन्हें इशारा कर दिया था—इसी कारण वे निर्विघ्न गली में प्रवेश कर गये।

❑❑❑

लोहे के उस विशाल गेट के बाहर क्रूर चेहरे वाला गार्ड खड़ा था। शक्ल देखकर तो ऐसा लगता था जैसे गार्ड बनने से पहले वह किसी बूचड़खाने में काम करता था।

अपनी लाल आंखों से उसने उन चारों को घूरा और ईंट मारने वाले लहजे में बोला—"क्या है...?"

"हमें साहब से मिलना है।"

"क्यों?"

"हम दिल्ली दूरदर्शन की तरफ से आये हैं।" वही खाली हाथ वाला व्यक्ति बोला।

गार्ड की आंखों ने एक्सरे की तरह उन चारों का बारी-बारी से निरीक्षण किया और बोला—"तुम यहीं ठहरो, मैं साहब से पूछ कर आता हूं...।"

और गार्ड गेट के बीच ही बने एक छोटे दरवाजे में प्रवेश कर गया।

एक मिनट भी नहीं बीता कि गार्ड वापस आ गया।

"आओ...।" इस बार उसके लहजे में जरा नमी थी—"साहब तुम्हारा ही इंतजार कर रहे हैं।"

और चारों गार्ड के पीछे-पीछे उस छोटे दरवाजे में प्रवेश कर गये।

अन्दर प्रवेश करते ही सामने काफी लम्बा ड्राईवे नजर आया उन्हें—जिसके दोनों तरफ लॉन बना हुआ था। पहले तो वे हैरान हुए कि इतना लम्बा ड्राईव-वे पार करके अन्दर बनी कोठी में मैनेजर से मिलकर गार्ड इतनी जल्दी वापिस कैसे आ गया?

लेकिन इन्टरकॉम की तार ने उनकी हैरानी को दूर कर दिया जो कि लॉन के दोनों तरफ लगे वृक्षों से बंधकर आगे बढ़ती हुई कोठी में जा रही थी।

"आप लोग कोठी में जाइये—वहीं आपकी कोठी का एक नौकर साहब के पास पहुंचा देगा...।" गार्ड ने कहा और स्वयं वापिस बाहर निकल गया।

उसकी ड्यूटी शायद यहीं तक ही थी।

ड्राइव-वे पर से होते हुए जैसे ही कोठी के बाहर बने बरामदे में पहुंचे—सामने वाला दरवाजा खुला और मैनेजर के कपड़े पहने मगर जिस्म से हट्टा-कट्टा एक व्यक्ति बाहर निकला और अपने स्वर में पूरी इज्जत लाते हुए बोला—"आइए—साहब आपका ही इंतजार कर रहे हैं।"

चारों ने एक बार एक-दूसरे की तरफ देखा फिर उस खुले दरवाजें में प्रवेश कर गये।

अन्दर प्रवेश करते ही उन्होंने स्वयं को एक बड़े ड्राइंगरूम में पाया।

सामने बिछे हुए विभिन्न सोफों में से एक सोफे पर मैनेजर बैठा हुआ था—उसके चेहरे से तथा कपड़ों से ही मालूम हो रहा था कि वह मैनेजर ही है।

स्वागत करने वाले अन्दाज से मैनेजर खड़ा हुआ और बारी-बारी से उन चारों से हाथ मिलाने के पश्चात् उसने चारों को बैठने को कहा। उनके बैठने के पश्चात् वह स्वयं भी सोफे पर बैठ गया।

"फरमाइए!" वह बोला—"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"इतना तो आप जान ही गये होंगे कि हम दिल्ली से आये हैं?"

"हां—गार्ड ने कहा था कि आप दिल्ली दूरदर्शन की तरफ से आये हैं।"

"और हमारे कैमरे भी यही कह रहे हैं।"

"कैमरा तो कोई भी ऐरा-गैरा व्यक्ति भी अपने पास रख

सकता है...।" मैनेजर मुस्कुराया—"फिलहाल तो आप मुझे अपना आईडेन्टिटी कार्ड दिखाइये ताकि मुझे पूरा विश्वास हो जाये कि आप ही दिल्ली दूरदर्शन की टीम हैं।"

दिल्ली दूरदर्शन का प्रतिनिधि मुस्कुराया और अपनी जेब से आई० कार्ड निकालकर मैनेजर की तरफ बढ़ा दिया—"लीजिये... देखिये...।"

मैनेजर ने उसके आई० कार्ड को देखा और वापिस कर दिया। बारी-बारी से बाकी तीनों के आई० कार्ड भी देखे और उन्हें वापिस करने के उपरान्त मैनेजर ने तसल्लीभरी एक सांस छोड़ी और बोला—"फरमाइये, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?"

"हरियाणा सरकार की सिफारिश पर दूरदर्शन के प्रबंधकों ने हमें भेजा है, म्यूजियम के बारे में दर्शकों को बताने के लिए, ताकि ज्यादा से ज्यादा दर्शक म्यूजियम में आयें।"

"हरियाणा सरकार की तरफ से आपको कोई स्वीकृति पत्र भी मिला होगा।"

"जी हां...।" वह बोला और जेब से एक पत्र, जो कि तह किया हुआ था निकालकर मैनेजर की तरफ बढ़ा दिया।

मैनेजर ने पत्र खोला—उस पर हरियाणा सरकार की मोहर के साथ यह आदेश भी लिखा हुआ था कि टीम को म्यूजियम की अन्दरूनी तस्वीरें भी लेने दी जायें।

पत्र को अपने पास रखकर मैनेजर ने उसकी तरफ देखा और मुस्कुरा पड़ा।

"आप अन्दर की तस्वीरें ले सकते हैं—मगर...।"

"मगर क्या...?" चौंका वह चौथे वाला। साथ ही उसका दिल भी धड़क उठा।

"मगर आप कोई हथियार अन्दर नहीं ले जा सकते।"

"ओह!" एक लम्बी सांस निकल गई उसके मुख से—"मैं तो पता नहीं क्या समझ बैठा था—खैर, हमारे पास कोई हथियार भी नहीं है सिवाय कुछ छोटे औजारों के, वो भी हमें इसलिए रखने पड़ते हैं, अगर एमरजैंसी में कोई कैमरा बिगड़ जाये तो हम उसे ठीक कर सकें।"

"उसकी कोई बात नहीं...। आइए—मैं आपको म्यूजियम में पहुंचाये देता हूं...।"

"एक बात और...।"

"पूछिए...।"

"आपका एक छोटा-सा इंटरव्यू भी लेना है हमें...।"

"जरूर देंगे...।" मुस्कुरा पड़ा मैनेजर और खड़ा हो गया। उसके खड़ा होते ही वे चारों भी खड़े हो गये।

❑❑❑

टी०वी० कैमरा टीम का चौथा व्यक्ति जो कि खाली हाथ था और जिसके आई० कार्ड पर उसका नाम राजेश गोगिया लिखा हुआ था, ने अपनी गर्दन चारों तरफ घुमाकर उस म्यूजियम हॉल का मुआयना किया और फिर अपने तीनों साथियों की तरफ देखते हुए बोला—"एक-एक कोने की तस्वीर क्लोजअप में आनी चाहिए ताकि देखने वालों को समझने में जरा भी दिक्कत न हो।"

कहकर उसने तीसरे व्यक्ति जिसके कंधे पर बैग टंगा हुआ था, की तरफ देखा।

तुरन्त ही उस व्यक्ति ने अपना बैग खोला और उसमें से माइक निकालकर राजेश की तरफ बढ़ा दिया।

माइक से लगी लीड बैग के अन्दर रखे टेपरिकॉर्डर के साथ कनैक्ट थी।

राजेश ने मैनेजर की तरफ देखा और बोला—"जब तक मेरे साथी हॉल के हर कोने को कैमरे में कैद करते हैं—तब तक आपका इन्टरव्यू हो जाये—इससे आपका वक्त भी बचेगा और हम भी जल्दी फारिग हो जायेंगे।"

"ठीक है—जैसी आपकी मर्जी...।" मैनेजर मुस्कुराया।

तुरन्त ही राजेश ने एक कैमरामैन को मैनेजर पर फोकस करने को कहा।

जबकि दूसरा हॉल में लगी एक-एक वस्तु को अपने कमरे में कैद करने में जुट गया।

कैमरा मैनेजर पर फोकस हुआ और राजेश ने इन्टव्यू लेने के लिए अपना सवाल दाग दिया।

"म्यूजियम में रखी पांच हजार वर्ष पुरानी भगवान कृष्ण की मूर्ति म्यूजियम का विशेष आकर्षण है—क्या अन्य वस्तुएं भी दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र हैं—या फिर वही मूर्ति ही है?"

"अन्य वस्तुओं का अपनी जगह आकर्षण है—लेकिन ज्यादातर दर्शक उस मूर्ति को देखने के लिए ही आते हैं।"

"मूर्ति पहले भी तो एक बार चोरी हो गई थी...।"

"हां...लेकिन पुलिस ने बहुत जल्द मूर्ति को ढूंढ निकाला था।" मैनेजर ने जवाब दिया—"उसके पश्चात् हमने अपने सुरक्षा

प्रबन्धों को कई गुणा ज्यादा सख्त कर दिया।"

"क्या उसके पश्चात् भी मूर्ति को चुराने की कोशिश की गई थी?"

"दो बार ऐसा चांस हो चुका है—लेकिन हमारे सुरक्षा प्रबंधों के कारण चोरों को नाकामी का मुंह देखना पड़ा।"

"क्या-क्या प्रबंध किये हैं आपने मूर्ति की सुरक्षा के लिये?"

"सॉरी...।" मैनेजर बोला—"यह हम नहीं बता सकते। ऐसा करने से बात सार्वजनिक हो जायेगी—और तब कोई भी दिमाग रखने वाला शातिर उन सुरक्षा प्रबंधों में कोई न कोई सेंध लगाने की जुर्रत कर सकता है।"

"चोर अगर जबरदस्ती आपसे सुरक्षा प्रबंधों के बारे में जान लें तो...?"

"ऐसा हो ही नहीं सकता।" मुस्कुराया मैनेजर—"मेरी कोठी के सुरक्षा प्रबंध भी इतने तगड़े हैं कि चोर मुझ तक पहुंच ही नहीं पायेगा—फिर मेरे से पूछेगा क्या वो? कोठी के अन्दर जिसमें, मैं अपने परिवार के साथ रहता हूं उसमें हर कमरे में एक ऐसा गुप्त बटन लगा हुआ है जिसके दबाते ही आस-पास के पूरे ऐरिये में अलार्म बज उठेगा—और उस बटन का मेरी पत्नी तथा मेरे बच्चे को भी पता है तथा हम सभी को पूरी छूट है कि अवांछित तत्व को देखते ही हममें से कोई भी बटन दबा सकता है।

बटन के दबते ही अलार्म बजेगा और सिर्फ पांच मिनट के अन्दर-अन्दर पुलिस की कई गारदें वहां पहुंच जायेंगी।

इसके अलावा कोठी में हर वक्त तीन गार्ड विभिन्न नौकरों के रूप में मौजूद रहते हैं—वह भी हथियारबंद।"

थोड़ी देर और इन्टरव्यू लेने में लगाई राजेश ने और फिर मैनेजर का धन्यवाद करके कैमरामैन को कैमरा बंद करने का इशारा कर दिया।

उधर दूसरा कैमरामैन पूरे म्यूजियम के साथ-साथ उस मूर्ति को भी कैमरे में बंद कर चुका था जिसके लिए इतना बड़ा खेल खेला जा रहा था।

"थैंक्यू सर...!" मैनेजर से हाथ मिलाया राजेश ने—"आज सण्डे है—अगले मण्डे को टी०वी० पर देखना न भूलियेगा...।"

"जरूर देखेंगे...।" मैनेजर पूरी गर्मजोशी दिखाते हुए बोला। और फिर मान-सम्मान के साथ कैमरा टीम वापिस लौट गई, जो कि असल में टी०वी० के प्रतिनिधि नहीं थे बल्कि अवतार सिंह के आदमी थे।

❑❑❑

टी०वी० स्क्रीन पर मूर्ति का दृश्य चल रहा था...।

मूर्ति को देखकर कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा था कि मूर्ति पांच हजार वर्ष पुरानी हो सकती है—बस मूर्ति का बना हुआ चेहरा ही उस युग की चुगली कर रहा था।

मूर्ति के होठों से लगी बांसुरी में सुराखों के स्थान पर हीरे चमक रहे थे—इसके अलावा मूर्ति के माथे पर सुशोभित मुकुट तो हीरों की खान लग रहा था।

बलराज गोगिया ध्यान से मूर्ति को देख रहा था—लेकिन उस मूर्ति में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी—उसे दिलचस्पी तो मूर्ति के पेट में दफन उन हीरों में थी जिन्हें उसका बाप उसके लिए वसीयत कर गया था।

इधर अवतार सिंह तो मूर्ति को ऐसे देख रहा था जैसे मूर्ति साक्षात् उसके सामने पड़ी हो—और उसी की पर्सनल प्रोपर्टी हो।

दृश्य बदला और अन्य वस्तुओं के दर्शन होने लगे—साथ ही साथ हॉल की दीवारें—यहां तक म्यूजियम हॉल के एक-एक कोने के दर्शन कर रहा था बलराज।

और जब टी०वी० स्क्रीन पर झिलमिल शुरू हो गई तो एक लम्बी सांस छोड़कर बलराज गोगिया सीधा होकर बैठ गया।

अवतार सिंह ने टी०वी० और सी०डी० ऑफ किया और फिर टेपरिकॉर्डर निकालकर बलराज के सामने रख दिया।

"इसमें म्यूजियम के मैनेजर का इन्टरव्यू भरा हुआ है—इसे भी सुन लो।"

बलराज गोगिया ने उस इन्टरव्यू को भी बड़े ध्यान से सुना और फिर टेपरिकॉर्डर ऑफ करके अवतार सिंह की तरफ देखने लगा।

"अब...?" अवतार सिंह उसे अपनी तरफ देखते पाकर बोला।

"अब क्या...?"

"मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में तो मैनेजर ने बताने से साफ इन्कार कर दिया—और हम मैनेजर से जबरदस्ती भी नहीं जान सकते।"

"जबरदस्ती जान सकते हैं...।"

"कैसे...?"

"उसके घर में घुसकर...।"

अवतार सिंह ने उसे देखा, जैसे उसे शक हो रहा हो कि वह

पागल हो गया है और अपने शक को जाहिर भी कर दिया उसने—"लगता है जेल में रहकर और फांसी की सजा सुनकर तेरा दिमाग काम करना बंद कर चुका है। मैनेजर से इण्टरव्यू में सुना नहीं तुमने कि कोठी में प्रवेश करने के उपरान्त अगर कोई मैनेजर से जबरदस्ती करने की कोशिश करेगा तो पांच मिनट के अन्दर पुलिस की कई गारदें वहां पहुंच जायेंगी।"

"सुना है—बड़े ध्यान से सुना है मैंने...।"

"फिर भी तुम यह कह रहे हो कि उससे जबरदस्ती करके मालूमात प्राप्त करोगे।"

बलराज गोगिया के होठों पर तैर रही मुस्कान और भी तेज हो गई।

"अवतार!" वह बोला—"जबरदस्ती करने का सिर्फ एक रास्ता नहीं होता जो कि तुम सोच रहे हो...।"

"क्या सोच रहा हूं मैं...?"

"तुम्हारी समझ में मेरे कहने का यह मतलब है कि हम मैनेजर की कोठी में घुसेंगे और उसकी कनपटी पर रिवॉल्वर रखकर कहेंगे कि बता म्यूजियम के सुरक्षा प्रबन्ध क्या हैं?"

"त...तो तुम क्या कुछ और करना चाह रहे हो?"

"बिल्कुल...।"

"क्या...?"

"ऐसी तरकीब है मेरे दिमाग में कि मैनेजर को सिवाय हमारी बात मानने के और कोई रास्ता दिखाई नहीं देगा...।"

"वही तरकीब तो जानना चाह रहा हूं मैं...।"

"बलराज गोगिया एक क्षण के लिए रुका—फिर अपनी बात को शुरू करते हुए बोला—"मैनेजर के इन्टरव्यू में तुमने यह भी सुना है कि उसकी पत्नी, उसका बच्चा भी बटन दबाने में पूरी तरह से ट्रेंड हैं—बच्चा...यानि मैनेजर का सिर्फ एक ही बच्चा है—यह उसके बोलने के ढंग से लग रहा है—अगर उसके एक से ज्यादा बच्चे होते तो वह 'बच्चे' की बजाय बच्चों का शब्द इस्तेमाल करता और बच्चा कहने का मतलब है कि उसका बच्चा अभी छोटा है...।" यह कहकर एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और आगे कहने लगा—"जाहिर है कि उस मैनेजर का बच्चा किसी स्कूल में पढ़ता होगा—बस हम बच्चे को अपने काबू में कर लेंगे—अपने इकलौते बच्चे की खातिर मैनेजर अपना मुंह खोलने को अवश्य ही मजबूर हो जायेगा वह भी तब जब उसे मालूम पड़ेगा कि उसके बच्चे का

किडनैप बलराज गोगिया ने किया है—उस बलराज गोगिया ने जिसे कि फांसी की सजा मिली हुई है।"

"तो क्या तुम चण्डीगढ़ जाओगे—क्या वहां की पुलिस तुम्हें पहचान नहीं लेगी...?"

"चण्डीगढ़ तो मुझे जाना ही पड़ेगा—अब नहीं तो उस दिन तो जरूर ही जाना पड़ेगा जब मूर्ति चुरानी होगी—मेरे पास कोई जादू का डण्डा तो है नहीं जो घुमाया और मूर्ति म्यूजियम से निकलकर मेरे पास आ जायेगी। सो उस दिन जाना है तो फिर एक चक्कर पहले क्यों न लगा लूं।"

"ठीक है—जैसी तुम्हारी मर्जी...।" फिर कुछ रुककर बोला अवतार सिंह—"कब जा रहे हो चण्डीगढ़...?"

"बस तुम्हें उस बच्चे का पता लगाने की देर है।"

"वो तो मैं कल सुबह तक तुम्हें बता दूंगा...।"

"तो मैं कल ही रवाना हो जाऊंगा...।"

"ठीक है—मगर अपना ध्यान रखना...।" बोला अवतार सिंह।

"हूं!" अपनी जान मुझे बहुत प्यारी है—बेशक मेरी जिन्दगी के दिन अब गिने-चुने हैं—पुलिस कभी भी मुझे गिरफ्तार कर सकती है या फिर कभी भी पुलिस की गोली मेरे सीने में दफ्न हो सकती है—मगर फिर भी मैं अधिक से अधिक दिन जीना चाहता हूं और ऐसा तभी होगा जब मैं पुलिस की निगाहों से स्वयं को बचा सकूं।"

"ओ०के०।" एक लम्बी सांस छोड़कर खड़ा हो गया अवतार सिंह—"कल सुबह ही तुम्हें पूरी जानकारी मिल जायेगी...।"

❑❑❑

अगली सुबह आठ बजे ही अवतार सिंह बलराज गोगिया के कमरे में पहुंच गया—उस वक्त तक बलराज गोगिया नित्य क्रिया से फारिग होकर अभी-अभी बाथरूम से नहाकर निकला था।

कमर पर तौलिया बांध रखा था उसने।

"बच्चे का पता लगा?" पलंग पर पड़ी अपनी पैंट को उठाते हुए पूछा बलराज गोगिया ने।

"तभी तो इतनी सुबह तुम्हारे पास आया हूं।"

बलराज गोगिया अपनी पैंट पहनने लगा जबकि अवतार सिंह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—"बच्चे का नाम संदीप है और मैनेजर का नाम अशोक गुप्ता है—बच्चा थर्ड स्टैण्डर्ड में बीस

सेक्टर के लवली स्कूल में पढ़ता है।" और सारी जानकारी देने लगा अवतार सिंह उसे।

"बच्चे की कोई खास पहचान?" शर्ट के बटन बंद करते हुए पूछा बलराज गोगिया ने।

"बच्चे को पहचानने के लिए किसी निशानी की जरूरत नहीं पड़ेगी तुम्हें—मैं उसकी फोटो ले आया हूं।" कहकर अवतार सिंह ने अपनी जेब से एक फोटो निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दी—"बड़ी मुश्किल से मिली है यह।"

बलराज गोगिया ने फोटो ली और ध्यानपूर्वक उस बच्चे को देखने लगा, जिसका उसे किडनैप करना था।

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज गोगिया और फोटो को जेब में रख लिया—मैं अभी रवाना हो जाता हूं।"

"मैनेजर का फोन नम्बर भी पता करवा लिया है मैंने।"

"वैरी गुड़—क्या है?"

"2667267....।" अवतार सिंह ने नम्बर बता दिया।

कुछ और जानकारियां प्राप्त कर बलराज गोगिया ने अवतार सिंह की कार ली और वहां से रवाना हो गया।

❑❑❑

बैड से उतरकर राघव ने जेब से पांच हजार की गड्डी निकाली और पुष्पा की तरफ फेंकते हुए बोला—"रख ले इन्हें...।" पुष्पा ने हैरानी से राघव की तरफ देखा और फिर गड्डी उठाकर उसे पंखें की तरह अपने चेहरे के सामने हिलाती हुई मुस्कुराई—"लगता है कहीं से मोटा हाथ मारा है तूने...।"

प्रत्युत्तर में मुस्कुरा पड़ा राघव—"तू कुछ भी समझ सकती है—लेकिन एक बात बिल्कुल सच्ची कहता हूं—मैं आज तक तेरे सिवा किसी और औरत के साथ नहीं सोया—दिल से चाहता हूं मैं तुझे—पता नहीं ऐसा क्या है तुझमें कि दिल करता है कि अपनी जिन्दगी भर की सारी कमाई तुझ पर ही लुटाता रहूं।"

पुष्पा के होठों पर मुस्कान थिरक उठी—"बात को तो इस तरह फेर गया तू जैसे मुझे कुछ भी बताना न चाहता हो।"

"ऐसा क्यों कह रही है तू...?"

"और क्या कहूं—मैंने तो बस यही पूछा था कि एक साथ इतना रुपया कहां से आ गया तेरे पास...?" पुष्पा इठलाई।

मुस्कुरा पड़ा राघव और आकर पुष्पा के पहलू में बैठकर उसके अधरों को चूमते हुए बोला—"तू तो जानती है पुष्पा, कि आजकल

मैं दुष्यन्त चौधरी के पास नौकरी कर रहा हूं।"

"और तेरी पगार इतनी ज्यादा है कि तू पांच हजार रुपया एक साथ मुझ पर वार दे वह भी एक वक्त में...।"

"मेरी पेशगी भी तो जानती है तू।"

"तो क्या...!" चौंककर पुष्पा राघव की तरफ देखने लगी—"किसी का कत्ल करने का ठेका लिया है तूने?"

"हां।"

"कि...सका?" स्वर हल्का-सा कांप गया पुष्पा का।

"तू उसे नहीं जानती—बलराज गोगिया नाम है उसका—अभी-अभी फांसी के फंदे से फरार हुआ है वो—लेकिन बेचारा बाहर भी जिन्दा नहीं रह पायेगा...। पूरे दो लाख में ठेका हुआ है।" बताता जा रहा था राघव—"बस अब बलराज गोगिया के पता चलने की देर है कि वह कहां छिपा हुआ है, उसके पश्चात् फिनिश...।" राघव ने अपनी गर्दन पर चाकू की तरह उंगली फेर दी।

एक रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी पुष्पा के होठों पर...।

उसे इस तरह मुस्कुराते देख राघव चौंक कर उसकी तरफ घूरने लगा—"इस तरह हँस क्यों रही है तू?"

"तेरी बेवकूफी पर...।"

"मेरी बेवकूफी पर...?" राघव और भी जोर से चौंका—"क्या बेवकूफी की है मैंने...?"

"दरअसल चौधरी को अब तेरी जरूरत नहीं रह गई...। इसलिए तुझे एक लाख देकर चलता कर दिया उसने।"

"लेकिन उसने तो मुझसे यह भी कहा था कि मेरी नौकरी भी साथ-साथ चलती रहेगी।"

"कहा होगा...।" मुस्कुराई पुष्पा—"लेकिन देख लेना बहुत जल्द वह तुमसे यह कहेगा कि उसे तेरी सेवाओं की जरूरत नहीं और जो एक लाख तुझे दिया है उसने, वह तुझे पी०एफ० के रूप में दे देगा। क्योंकि बलराज का कत्ल तुम कभी नहीं कर पाओगे इसलिए एक लाख जो कि तुम्हें मिल चुका है बस वही एक लाख ही तुम्हारे पास रहेगा। या फिर वह तुम्हें बलराज गोगिया का कत्ल करने से मना कर देगा।"

"ऐसा कैसे हो सकता है—तू तो ऐसे कह रही है जैसे बलराज कोई बहुत बड़ा हव्वा हो जो कि मुझे अपने पास भी नहीं फटकने देगा।"

"बलराज हव्वा नहीं है—हव्वा तो वो है जो कि उसकी पीठ पर बैठा हुआ है और जिसके हाथ में बलराज की नकेल है।"

"कौन है वो हव्वा...जरा मैं भी तो सुनूं उसका नाम...?"

"सुनाई, तो मुझे डर है कि कहीं तुम बेहोश न हो जाओ।"

"अब बता भी दे...।"

"अवतार सिंह...।"

"अ...व...तार सिंह...!" बुरी तरह से उछल पड़ा राघव और घूरकर पुष्पा की तरफ देखने लगा।

लेकिन अगले ही पल वह यह सोचकर और भी जोर से चौंका कि पुष्पा बलराज और अवतार सिंह के बारे में कैसे जानती है? घूरकर उसने पुष्पा की तरफ देखा—"तुझे कैसे मालूम कि बलराज गोगिया अवतार सिंह की सरपरस्ती में ऐश कर रहा है?"

पुष्पा के होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी—"बहुत लम्बा-चौड़ा खेल चल रहा है—और यह सारा खेल अवतार सिंह का ही चलाया हुआ है...।"

"और इस खेल में तुम भी इन्वॉल्व हो।"

"मैं ही क्या, दुष्यन्त चौधरी भी इस खेल का एक मोहरा है—अवतार सिंह ने शतरंज की जो बिसात बिछा रखी है उसमें अवतार के सारे-के-सारे मोहरे जिन्दा हैं जबकि दूसरी तरफ सिर्फ एक ही मोहरा है—और वह मोहरा है बलराज जिसे अवतार और उसके मोहरों ने घेर रखा है—अवतार सिंह के मोहरे जब तक चाहें उसके साथ खेल सकते हैं—लेकिन जैसे ही किला फतह होगा, बलराज की जीवन लीला समाप्त हो जायेगी।"

"मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा पुष्पा—जरा खुलकर बताओ—क्या कहना चाहती हो तुम—कैसा खेल खेल रहा है अवतार सिंह और कौन-सा किला फतह करना है उसे...?"

बात करने के साथ-साथ राघव का कलेजा और जोर-जोर से धड़क रहा था—आंखें सोचनीय अंदाज में सिकुड़ी हुई थीं।

पता नहीं पुष्पा राघव की मर्दानगी पर मरमिटी थी या वक्ती तौर पर उसका दिमाग फिर गया था जो वह उसके सामने सारी असलियत बताने लगी!

"तू जानता है चौधरी भी अवतार सिंह का ही आदमी है?"

"नहीं...।"

"यह तो जानता होगा कि उसने तुझे अपना बॉडीगार्ड किसलिए बनाया?"

"उसको अपनी जान का खतरा था इसलिए...।"

"खतरा क्यों था...?"

"पता चला कि उसके पास कुछ हीरे हैं—काफी कीमती—उन हीरों की खातिर कोई भी उसका कत्ल कर सकता था—इसलिए उसने अपनी सुरक्षा के लिए मुझे रख लिया।"

"चौधरी के पास कोई हीरे-वीरे नहीं हैं—यह तो हवा उड़ाई हुई है उसने...।"

"क...क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा राघव और फटी-फटी आंखों से पुष्पा की तरफ देखने लगा।

"इस तरह तू कुछ नहीं समझेगा—मैं तफसील से सब कुछ बताती हूं तुझे...।"

कहकर पुष्पा कुछ पलों के लिए ठिठकी, फिर राघव के दोनों हाथ अपने उभारों पर रखते हुए बोली—"तुम जरा इन्हें सहलाते रहो—बड़ा आनन्द मिलता है।"

हालांकि राघव का दिल उस वक्त सिर्फ अपनी बात सुनने का था—लेकिन फिर भी वह पुष्पा के गुलाबी उरोज सहलाने लगा। यह सब वह सच्चाई जानने के लिए कर रहा था।

उन्माद से पुष्पा ने आंखें बंद कर लीं और सिसकियां भरने लगी।

"तू कुछ बताने जा रही थी...।" उसके गर्म हो रहे चेहरे की तरफ देखा राघव ने।

"हां...।" मुस्कुराई पुष्पा और फिर बात शुरू करते हुए कहने लगी—"यह बात करीब आठ महीने पहले की है तब जब बलराज गोगिया का बाप देसराज गोगिया जिन्दा था। एक नम्बर का हरामी था—पैसों के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहता था...। लेकिन साथ ही वह अपने दोनों बच्चों से प्यार भी बहुत करता था...। उसके बुरे धंधों का साया उसके बच्चों पर न पड़े इसलिए वह ज्यादातर अपने बच्चों से दूर ही रहता था। बलराज बड़ा हुआ तो उसने उसे अमृतसर भेज दिया—वहीं पर बलराज मोटर मैकेनिक का काम सीखने लगा।

अण्डरवर्ल्ड में देसराज गोगिया की बहुत पूछ थी—बहुत तेजतर्रार दिमाग का मालिक समझा जाता था वह। उन्हीं दिनों अवतार सिंह की नजर चण्डीगढ़ के म्यूजियम में कृष्ण की मूर्ति पर पड़ी जो कि पांच हजार वर्ष पुरानी थी। उस वक्त अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मूर्ति की क़ीमत दो अरब रुपये थी।

अवतार सिंह ने उस मूर्ति को चुराने के लिए देसराज की सेवायें प्राप्त कीं... । उस मूर्ति को चुराने के लिए अवतार सिंह और देसराज गोगिया के अलावा वे छः आदमी भी थे जिनका कि बलराज ने कत्ल किया था।

देसराज गोगिया ने अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाये और मूर्ति चुराने की स्कीम तैयार कर ली। मूर्ति चोरी भी हो गई... । लेकिन मूर्ति चोरी के पश्चात् अवतार सिंह, दुष्यन्त चौधरी और उसके छहों साथियों की नीयत में खोट आ गया—और उन्होंने देसराज को रास्ते से हटाने की योजना बना डाली।

ऐन वक्त पर देसराज को उनकी नीयत का पता चल गया। गुस्से में आकर देसराज ने 'न ख़ुद खाऊंगा न किसी और को खाने दूंगा' वाली कहावत चरितार्थ कर दी।

सीधा थाने गया वह और सारी बात बता दी।

मूर्ति को पाने के लिए पुलिस ने अवतार सिंह के अड्डे पर छापा मारा... । मूर्ति तो बरामद कर ली पुलिस ने, लेकिन अवतार सिंह और उसके साथी फरार हो गये।

इधर देसराज गोगिया को कानून की मदद करने के इनाम में सिर्फ छः महीने की सजा हुई। जबकि बलराज समझता रहा कि उसका बाप कहीं बाहर गया है।

इधर मूर्ति हाथ से निकल जाने पर अवतार सिंह, चौधरी और उसके साथी बुरी तरह से तपे हुए थे... । देसराज को वे उसके किए की सख्त से सख्त सजा देने को उतावले हो रहे थे—और इस इंतजार में थे कि कब देसराज बाहर आये और कब वे उसे ख़त्म करें।

देसराज भी चालाक था—जेल में पड़े-पड़े ही उसने अंदाजा लगा लिया कि उसके बाहर निकलते ही आफत टूट पड़ेगी उस पर।

सो बाहर आते ही उसने सीधा अपने गांव का रुख किया और अपनी बेटी के साथ रहने लगा। अवतार सिंह और साथियों से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता था उसके पास कि वह शहर को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़कर गांव में बस जाये—उसे पूरा विश्वास था अवतार सिंह को उसके गांव का पता मालूम नहीं।

उसका यह सोचना सही था... । उसे ढूंढ़ने के लिए अवतार सिंह और उसके साथी जैसे पागल हो गये थे और यहां-वहां टक्करें मार रहे थे।

आखिर उनकी मेहनत रंग लाई—अवतार सिंह को देसराज़ के ठिकाने का पता चल ही गया।

फौरन ही उसने चौधरी और अन्य छः साथियों को देसराज के गांव भेज दिया, जहां पर उन्होंने देसराज की आंखों के सामने पहले उसकी बेटी का बलात्कार किया—फिर उसे मारकर देसराज को भी खत्म करके अपना प्रतिशोध पूरा किया।

और तब शुरू हुआ देसराज के बेटे बलराज गोगिया का प्रतिशोध...। अपने अन्दर ज्वालामुखी लिए हुए वह अण्डरवर्ल्ड के बादशाह अवतार सिंह से टकरा गया।

पर अवतार सिंह की खुशकिस्मती थी या बलराज गोगिया की, कि उस जंग के दौरान बलराज अवतार सिंह के बारे में कुछ भी नहीं जान पाया—उसका निशाना तो वे सातों थे जिन्होंने उसकी बहन के साथ बलात्कार किया और जिस ढंग से जिस युक्ति से बलराज गोगिया ने छः कत्ल किये उसे देखकर अवतार सिंह की अक्ल भी चकरा गई...। उस लड़के के दिमाग पर हैरानी हो रही थी उसे।

बेटा तो बाप से भी बढ़कर तेज निकला था।

बलराज गोगिया के कारनामों को देखकर तो अवतार सिंह और दुष्यन्त चौधरी की भी अपनी जानों के लाले पड़ गये...। अकेला बलराज गोगिया ही अवतार के पूरे गैंग पर भारी पड़ रहा था—अवतार सिंह के आदमी उसकी जान के पीछे पड़े हुए थे—मगर वह था कि छलावा बना हुआ था—किसी के हाथ नहीं आ रहा था।

इधर पुलिस भी बलराज गोगिया को पकड़ने के लिए यहां-वहां सिर पटक रही थी—मगर बलराज गोगिया न तो पुलिस के हत्थे चढ़ रहा था न अवतार सिंह के।

उस जंग में बलराज ने जहां अवतार के छः जांबाज साथी मार डाले थे वहीं आर्थिक रूप से भी उसका बहुत नुकसान किया था।

और फिर!

एक दिन अवतार सिंह को बलराज गोगिया का पता चल ही गया...। दुष्यन्त चौधरी तो उसको जान से खत्म कर देने पर आमादा होने लगा था—आखिर उसे डर था कि अगर उसने बलराज गोगिया को नहीं मारा तो बलराज गोगिया उसे मार डालेगा।

लेकिन अवतार सिंह तो कुछ और ही सोच रहा था। अपनी उस सोच में अवतार सिंह ने दुष्यन्त से यह कहा कि अगर बलराज गोगिया को पलिस के हाथों पकड़वा दिया जाये तो ज्यादा बेहतर होगा—क्योंकि बलराज जो उनके लिए आदमखोर शेर बन चुका था उनका और भी ज्यादा नुकसान कर सकता था और उस हालत में एक आदमखोर शेर तो और भी ज्यादा खूंखार हो जाता है जब वह

स्वयं को चारों तरफ से घिरा देखता है। अवतार सिंह की बात मानकर चौधरी ने पुलिस को बलराज गोगिया का पता बता दिया।

बलराज गोगिया पकड़ा गया—और उसे फांसी की सजा हो गई।

इधर बलराज गोगिया के पकड़े जाने के पश्चात् अवतार सिंह पुनः उस मूर्ति की तरफ आकर्पित हो गया जिसके लिये इतना खून बहा रहा था—जो इतनी बड़ी जंग का कारण बनी थी।

मूर्ति वापिस म्यूजियम में पहुंच चुकी थी—उसकी सुरक्षा के प्रबंध पहले से भी सख्त कर दिये गये थे। अवतार सिंह के पास इतना दिमाग नहीं था कि वह मूर्ति को उड़ाने की कोई फुलप्रूफ योजना बना सकता, फिर भी उसने दो बार मूर्ति को उड़ाने की कोशिश की।

मगर नाकाम रहा।

और तब!

अवतार सिंह के दिमाग में बलराज गोगिया का ख्याल आया। वह बलराज गोगिया के काम करने के ढंग को देख रहा था—और फिर वह देसराज गोगिया का बेटा था—बेटे में बाप का खून था तो दिमाग भी बाप पर गया था। उसने दुष्यन्त चौधरी को अपने पास बुलाया और फिर मूर्ति उड़ाने के लिए एक लम्बा-चौड़ा प्लान बनाया।

बलराज अवतार सिंह को तो जानता नहीं था जबकि वह चौधरी के खून का प्यासा था...। सो अवतार सिंह ने योजना बनाई। उस योजना के तहत पहले उसने यह हवा उड़ाई कि दुष्यन्त के पास साठ करोड़ के हीरे हैं—साथ ही उसने दुष्यन्त से अपना नाता भी तोड़ लिया, ताकि किसी को यह शक न हो कि दुष्यन्त अवतार सिंह का आदमी है। हवा फैलने के पश्चात् दुष्यन्त ने अपने लिए तुम्हें जालिम सिंह और अन्यों को बॉडीगार्ड के रूप में रख लिया इस पर जिस किसी को संदेह था कि दुष्यन्त झूठ बोल रहा है उसे भी यकीन हो गया।

फिर अवतार सिंह ने अपनी योजना के अगले चरण की तरफ ध्यान दिया और उसने मेरा पता लगाया। चूंकि देसराज गोगिया मेरा पक्का ग्राहक था, मेरे अलावा वह किसी दूसरी की तरफ देखता भी नहीं था, इसी कारण अवतार सिंह मेरे बारे में बहुत जल्दी जान गया और मुझे उस मूर्ति का हिस्सेदार बनाया—बेशक छोटा हिस्सा मिलना है मुझे—फिर भी मेरे लिए बहुत बड़ी रकम थी जो उसने मुझे ऑफर की थी—मैं फौरन उसका काम करने को तैयार हो गई—यूं भी अगर मैं तैयार न होती तो भी वह मुझे जबरदस्ती तैयार करवा लेता।

तब उसने मुझे एक नक्शा दिया और मुझे यह हुक्म दिया कि उस नक्शे को मैं देसराज गोगिया की अमानत बताकर बलराज गोगिया को दूं—तथा उसके साथ क्या डायलॉग बोलने हैं वे भी बता दिये अवतार ने मुझे।

तत्पश्चात् उसने बलवीर पाल शाह जो कि अवतार सिंह का ही आदमी है उसे भी उसका रोल बता दिया कि उसे क्या करना है—और फिर अवतार सिंह ने अपने एक आदमी की मदद से जो कि किसी की भी राईटिंग की नकल आसानी से कर सकता था, से एक डायरी में कुछ पते लिखवाकर अन्त में एक पता जो बलबीर पाल शाह का था, लाल स्याही से लिखवाकर उसे देसराज गोगिया के घर में रखवा दिया—साथ ही उसने मेरी एक तस्वीर भी देसराज गोगिया के घर में रखवा दी। सारा प्लान तैयार हो चुका था। अब आखिरी जो काम रह गया था—वह था बलराज गोगिया को फरार करवाना।

और ऐन उसी दिन उसी वक्त जब बलराज गोगिया को फांसी लगने वाली थी, अवतार सिंह ने बलराज को फरार करवा दिया।

बलराज गोगिया फरार हो गया—और इत्तफाक से इकबाल के हत्थे चढ़ गया—इकबाल भी उसी हवा में सांस ले रहा था जो कि अवतार सिंह की ही फैलाई हुई थी—उसे यह पता था कि अवतार सिंह ने ही बलराज गोगिया को फरार करवाया है—और इसका कारण वह यही समझ रहा था कि अवतार सिंह ने साठ करोड़ के हीरों को उड़ाने के लिए बलराज गोगिया को फरार करवाया है। मन ही मन इकबाल अवतार सिंह से जलता तो था ही—लेकिन वह अवतार सिंह से खौफ भी बहुत खाता था, इसी कारण वह अवतार सिंह से टकराने से डरता था।

बलराज गोगिया के कारनामों के बारे में वह जानता था—सो बलराज गोगिया को उसने हथियार के रूप में प्रयुक्त किया—स्वयं को उसने बलराज गोगिया का जीवनदाता कहकर उस पर अहसान जताया और उसे अवतार सिंह से भिड़ा दिया।

अवतार सिंह की खुशकिस्मती थी कि बलराज उसका नुकसान नहीं कर पाया और वह अवतार के हत्थे चढ़ गया—और तब अवतार सिंह ने स्वयं को अपना जीवनदाता साबित करके उसे एक काल्पनिक खजाने के बारे में बताया, जो कि उसका बाप उसके लिए छोड़ गया था।

उस खजाने को पाने के लिए बलराज गोगिया अपने घर

पहुंचा—लेकिन अवतार सिंह ने तो पहले ही से जाल बिछा रखा था, सो बलराज उसके बुने हुए जाल में उलझता चला गया।

वह काल्पनिक खजाना जो कि बलराज गोगिया का बाप उसके नाम वसीयत कर गया था, उसके बारे में बलराज गोगिया को पता चला कि वह चण्डीगढ़ म्यूजियम में स्थित उस मूर्ति में है।

और अब वह मूर्ति को उड़ाने के लिए लगा हुआ है—कोई रास्ता सोच रहा है जिस पर चलकर उस मूर्ति को उड़ाया जा सके।"

सब कुछ बताती चली गई वह नागिन।

इधर राघव आंखें फाड़े हैरानी से पुष्पा की तरफ देख रहा था—उसके गुलाबी उभारों को सहलाना तो कब का भूल चुका था वह। मस्तिष्क 'सांय-सांय' कर रहा था।

कितना तगड़ा और मजबूत जाल तैयार किया था अवतार सिंह ने—सिर्फ इसलिए कि बलराज के दिमाग का इस्तेमाल किया जा सके—उसके करामाती दिमाग की मदद से वह दो अरब की मूर्ति प्राप्त करना चाहता है।

"और जब वह मूर्ति प्राप्त कर लेगा तो उसके पश्चात्...?"

यही प्रश्न उसने पुष्पा से कर डाला...।

मुस्कुरा पड़ी पुष्पा—"मूर्ति हाथ में आते ही अवतार सिंह बलराज को उसके असली स्थान पर भेज देगा।"

"यानि...?" बुरी तरह से चौंका राघव।

"उसके घर—यानि जेल—पुलिस के पास—कानून की मदद करेगा अवतार सिंह और बलराज को फांसी पर चढ़ा दिया जायेगा—किस्सा खत्म।"

"ल...लेकिन चौधरी ने मुझे एक लाख रुपया क्यों दिया बलराज को कत्ल करने के लिए?"

"तुम्हें बताया तो था कि बलराज गोगिया को किसी किस्म का शक न होने पाये—वह यही समझे कि चौधरी उसकी जान के पीछे पड़ा हुआ है—और कत्ल तुम उसका कर नहीं पाओगे—यह भी तुम समझ गये होंगे—बलराज अवतार सिंह की पनाह में है और अवतार सिंह की पनाह में रह रहा व्यक्ति बेखौफ होकर जीता है।"

वहशत के कीटाणु सिर उठाने लगे।

"तू भी तो अवतार सिंह की सरपरस्ती में है।" वह बोला—"फिर तो तेरा भी मैं कुछ नहीं बिगाड़ सकता...।"

हौले से चौंक उठी पुष्पा—"त...तू कहना क्या चाहता है...त...तेरी आंखों में खून नजर आ रहा है मुझे...?"

"ह...हां हरामजादी...।" भेड़िये की सी गुर्राहट निकली राघव के मुख से—"और मेरी आंखों में खून तभी भरता है जब मुझे किसी की आत्मा उसके जिस्म से अलग करनी होती है।"

बात पूरी होते ही वह उछला और पुष्पा के गुलाबी उभारों पर अपने घुटने टिका दिए—साथ ही उसके फौलादी पंजे पुष्पा की गर्दन से जा लिपटे।

आतंक से पुष्पा की आंखें फटने लगीं—"य...यह क्या कर रहा है तू राघव...? छ...छोड़ दे मुझे, मेरा दम घुट रहा है।" कहते-कहते पुष्पा की आंखों में पानी भर आया था।

"अब तो ये हाथ तेरी गर्दन से तभी अलग होंगे जब तेरी जुबान कुतिया की तरह बाहर लटकने लगेगी—आंखें कटोरों से उबलकर बाहर आ गिरेंगी...।" ऐसा लगा जैसे कोई दरिन्दा गुर्रा रहा है।

"ल...लेकिन म...मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है?"

"औरत जात को राघव खूब पहचानता है—अपने पेट में कोई भी बात पचा पाना औरत के लिए बेहद मुश्किल कार्य होता है—तभी तो तूने मुझे अवतार सिंह के फैलाये जाल के बारे में बता दिया—तू किसी और को यह भी बता सकती है कि तूने यह बात मुझे भी बताई थी—और ऐसा मैं हरगिज नहीं चाहूंगा।"

"म...मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगी।" गिड़गिड़ा उठी पुष्पा।

"मुझे तुझ पर विश्वास नहीं—अब तेरा मरना बहुत जरूरी हो गया है।"

पुष्पा नें अपने बचाव के लिए चीखना चाहा—लेकिन तब तक राघव का फौलादी शिकंजा कस चुका था।

चीख पुष्पा के हलक में ही दम तोड़ गई।

अपने बचाव के लिए पुष्पा ने संघर्ष करना चाहा—लेकिन सेर भर के उस शैतान में बला की ताकत थी, दांत पर दांत जमाये वह अपनी जकड़ को मजबूत करता चला गया।

पुष्पा के संघर्ष की शक्ति क्षीण पड़ने लगी—मुंह भाड़ की तरह खुल गया जिसमें से उसकी जीभ लम्बी होकर बाहर ऐसे लटकने लगी जैसे गरमी का मारा कोई कुत्ता जीभ को बाहर निकाले हांफ रहा होता है।

आंखें कटोरों से बाहर निकल गईं।

और फिर—पुष्पा के हाथ-पैर शिथिल पड़ने लगे।

एक आखिरी हिचकी ली पुष्पा ने और अपने प्राण त्याग दिये।

राघव ने एक लम्बी सांस छोड़ी और पुष्पा पर से खड़ा हो

गया। कुछ पलों तक वह पुष्पा की निर्वस्त्र पड़ी लाश को घूरता रहा, फिर पांच हजार की वह गड्डी जो उसने पुष्पा पर खुश होकर उसे दी थी उठाकर अपनी जेब में डाल ली।

"तेरे नसीब में ही नहीं थे ये रुपये, फिर मैं तुझे दे कैसे सकता हूं।" हौले से मुस्कराया वह।

उसके चेहरे से कहीं से भी ऐसा आभास नहीं हो रहा था कि उसने अभी-अभी एक खून किया है और वह अभी लाश के पास ही खड़ा है—जबकि ऐसी स्थिति में आम आदमी तो क्या बड़े-से-बड़ा खूनी भी घबराकर भागने की जल्दी में होता है।

लेकिन राघव को जैसे कोई जल्दी ही नहीं थी। उसने पुष्पा की बाहर को निकल रही उसे घूरती आंखों में झांका और अरमान भरे स्वर में बोला—"सचमुच तू मुझे बहुत याद आयेगी—मर्दों को खुश करने का जो तरीका तेरे पास था पता नहीं कहीं और मिलेगा भी या नहीं! खैर, अब चलता हूं।"

कहकर उसने बड़ी अदा से आदाब करने वाले अंदाज में अपना पोज बनाया और फिर बाहर निकल गया।

मकान के गेट के पास ही उसे उस चकले की बाई यानि पुष्पा की 'मां' मिल गई।

"जा रहा है...।" वह उसकी तरह देखते हुए मुस्कुराई।

"हां...।" भेदभरी मुस्कान मुस्कुराया राघव।

"ज्यादा तंग तो नहीं किया मेरी फूल-सी बच्ची को?"

"बिल्कुल नहीं—मैं तो उसी के इशारों पर ही नाचता रहा—जैसे वो कहती रही वैसा मैं करता रहा।"

"अब क्या कर रही है वो...?"

"काफी थक गई है—इसलिए आराम कर रही है—मुझे उसने यही कहा है कि तुम्हें कह दूं कि उसे तंग न करें...।"

"जब भी आता है बुरी तरह थका देता है मेरी बच्ची को—पिद्दी-सा छोकरा है तू—मगर है पूरा शैतान।" अर्थभरी मुस्कान के साथ बोली वह।

"लगता है तेरी भी राल टपक रही है मुझ पर—तुझे भी अपने जौहर दिखाने पड़ेंगे।"

"ठहर तो हरामी की औलाद—मुझसे मसखरी करता है...।"

औरत उसकी तरफ झपटी—मगर जब तक वह उस तक पहुंचती तब तक तो राघव दरवाजा पार करके बाहर भी निकल चुका था।

❑❑❑

बुरी तरह से उछल पड़ा अवतार सिंह...। फटी-फटी आंखों से वह अपने सामने खड़े राजवीर की तरफ देख रहा था।

"कब हुआ यह सब...?" उसके मुंह से निकला।

"अभी-अभी रेशमा बाई ने खबर दी है सरदार साहव।" राजवीर स्वर में पूरा सम्मान करते हुए बोला...।

"किसने मारा है पुष्पा को...यह पूछा तुमने...?"

"पूछा था सरदार साहब—रेशमा कह रही है कि उसे राघव ने मारा है...।"

"क्यों...?"

"इसका कारण तो वह भी नहीं जान पाई—अच्छा-भला वह पुष्पा के कमरे में गया था—और वापिसी पर भी वह रेशमा से हँसकर मिला था—उसे तो जरा भी शक नहीं हुआ राघव पर कि उसने पुष्पा का खून कर दिया था।"

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और सोचभरे अंदाज में बोला—"लेकिन मैं समझ गया हूं कि राघव ने उसका कत्ल क्यों किया—जरूर उस हरामजादी ने उस ठिंगू को सब कुछ वता दिया होगा...।" वोलते-वोलते ही अवतार सिंह कुछ सोचकर चौंक उठा और राजवीर की तरफ देखते हुए वोला—"उस बुढ़िया को दफा कर यहां से और कुछ आदमी लेकर फौरन चण्डीगढ़ रवाना हो जा—अगर वह हरामी की औलाद राघव वहां पहुंच गया और उसने वलराज को सारी सच्चाई वता दी तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जायेगा—तब मूर्ति तो वह पता नहीं चुरायेगा या नहीं—हमारा दुश्मन जरूर वन जायेगा वह—और हमारी मेहनत पर पानी फिर जायेगा।"

"जी सरदार साहव—मैं अभी रवाना हो जाता हूं...।"

"और जहां भी वह हरामजादा राघव मिले बिना कुछ सोचे-समझे उसे गोली से उड़ा देना, अपने प्लान में मैं जरा-सी भी ढील नहीं आने देना चाहता, जाल का एक भी तार अगर कमजोर पड़ जाये तो मछली के निकल जाने का भय वना रहता है, और तव भी जव मछली वलराज गोगिया जैसी खतरनाक हो, अब जा खड़ा-खड़ा मेरा मुंह क्या देख रहा है, जल्दी से रवाना हो जा।"

हड़बड़ाते हुए राजवीर पलटा और वाहर निकल गया।

❑❑❑

अपनी कार में बैठे हुए हुए वलराज गोगिया ने विण्ड स्क्रीन में से लवली स्कूल के सामने खड़ी उस एम्वेसडर की तरफ देखा

जिसका ड्राईवर कार के बोनट पर बैठा स्कूल के मेन गेट की तरफ देख रहा था।

अवतार सिंह से बलराज गोगिया को पता चल गया था कि संदीप को लेने के लिए म्यूजियम का मैनेजर हर रोज अपनी एम्बेसडर भेजता है।

बलराज गोगिया ने एक नजर स्कूल के मेन गेट पर डाली। मेन गेट बन्द था।

घड़ी में वक्त देखा...। छुट्टी होने में अभी आठ-दस मिनट थे—और इतना वक्त बहुत था बलराज गोगिया के लिए। आराम से वह अपनी कार से बाहर निकला और उधर बढ़ने लगा जिधर कि एम्बेसडर का ड्राईवर खड़ा था।

ड्राईवर की पीठ उसकी तरफ थी इसलिए उसके पास पहुंचने तक ड्राईवर को कुछ भी पता नहीं चला—और जब तक पता चलता तब तक बलराज गोगिया की रिवॉल्वर उसकी कमर से सट चुकी थी, इस तरह कि आने-जाने वालों की निगाह भी पड़ जाये, तो उन्हें शक न हो कि वहां कोई अनहोनी होने वाली है— 'खबरदार...!" दरिन्दे की सी गुर्राहट निकली बलराज गोगिया के मुख से—"रिवॉल्वर तेरी पीठ से सटा हुआ है और मेरी अंगुली ट्रिगर पर है, अगर तूने जरा भी गलत हरकत करने की कोशिश की या शोर मचाने के लिए मुंह खोला तो मैं ट्रिगर दबाव दूंगा।"

रिवॉल्वर की बात ने ही ड्राईवर की रंगत को एकदम से स्याह कर दिया—खौफ के कारण उसकी आंखें फट गईं—और रही-सही कसर बलराज गोगिया की चेतावनी ने पूरी कर दी।

"क...कौन हो तुम...?" स्वर बुरी तरह से कांप रहा था ड्राईवर का...।

"मुस्कुराकर बात कर—" गुर्राया बलराज गोगिया—"किसी भी रहा चलते को शक नहीं होना चाहिए कि तेरी पीठ से रिवॉल्वर लगी है।"

ड्राईवर ने मुस्कुराने के लिए होंठ तो जरूर फैला दिये—मगर ऐसा लगा जैसे वह मुस्कुरा नहीं बल्कि रो रहा है—"अ...मेरे बाप—मुझे बता तो सही कि मेरा कसूर क्या है—त...तू कौन है...?"

"सब बताता हूं—चल कार में बैठ...।" कहकर बलराज गोगिया ने रिवॉल्वर का दबाव बढ़ाया।

ड्राईवर की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह उसका हुक्म टाल सके। चुपचाप वह कार के पिछले दरवाजे की तरफ बढ़ा—दरवाजा खोला

"तूने तो दुनियाभर के शैतानों को भी मात कर दिया—हैवानों को शर्मसार, पिशाचों को शर्मिन्दा, राक्षसों को जलील किया है। डायनों का मखौल उड़ाया है, भेड़ियों को बेइज्जत करके रख दिया। पेप्सी और कोका-कोला की तरह ही इन्सानों के खून को फ्रिज में ठण्डा करके पीया—गोश्त को प्रेशर-कुकर में पकाकर खाया। चैन की नींद सोने के लिये हड्डियों के बेड पर गोश्त का गद्दा और खालों की चादर बिछाई! कसाई भी इतनी बेरहमी से जानवरों को हलाल नहीं करता, जितनी बेरहमी से तूने इन्सानों को चीर-फाड़कर उनकी बोटी-बोटी कर डाली। मैं इस गलतफहमी में जी रहा था कि दुनिया के हरेक जीव को भगवान ने बनाया है। किसी शैतानी ताकत ने सांपों, भेड़ियों, बिच्छुओं, शेरों, लकड़बग्घों, मधुमक्खियों, ततैयों, छिपकलियों, मगरमच्छों, व्हेलों, ऑक्टोपसों, गिरगिटों, मकड़ियों, जैसे जानवरों को 'मिक्स' करके तेरा पुतला बनाया होगा और दुनियाभर के शैतानों की आत्माओं को तेरे भीतर डाल दिया होगा। दुनिया के किसी भी कानून के पास ऐसी कोई सजा नहीं होगी, जो तेरे काबिल हो! इसलिये तुझे कानून के हवाले नहीं करूंगा। मैं खुद कानून बनकर तुझे ऐसी सजा दूंगा कि शैतानों की सांसें थम जायेंगी, हैवानों के कलेजे कांप उठेंगे और पिशाचों का खून जम जायेगा। तेरे जिस्म के सबसे बड़े टुकड़े को देखने के लिये भी सूक्ष्मदर्शी की जरूरत पड़ेगी। कीड़े-मकोड़ों को भी उन टुकड़ों को चबाने के लिये दांतों को तकलीफ नहीं देनी पड़ेगी। चाट-चाट कर ही चट कर जायेंगे तुझे। लेकिन हो सकता है कि जी खराब होने पर उन्हें उल्टी कर देनी पड़े—तेरी सड़ांध बर्दाश्त ना हो पाये उनसे...।"

वो लाश खाने वाला

सीऽऽऽ...वो आसपास ही मौजूद है!

धीरज पॉकेट बुक्स

में प्रकाशित रहस्य व रोमांच का वो तूफान, जो दिलो-दिमाग को झकझोर कर रख देगा।

...यों से सावधान रहिये। दिमाग के चैम्पियन *आशीर्वाद पण्डित* के नये उपन्यास ...पॉकेट बुक्स से प्रकाशित होते हैं।

...दूगर *केशव पण्डित* के पूर्व प्रकाशित 104 उपन्यास तथा सभी नये उपन्यास धीरज पॉकेट बुक्स से प्रकाशित हो रहे हैं—अन्य कहीं से नहीं।

और जैसे ही वह पिछली सीट पर बैठा, बिजली की सी तेजी से बलराज गोगिया का रिवॉल्वर वाला हाथ हरकत में आया...।

'खटाक' से रिवॉल्वर की बट ड्राईवर की खोपड़ी से जा टकराई।

बेचारा चीख भी नहीं पाया और वहीं सीट पर ढेर हो गया।

बलराज गोगिया ने तुरन्त ही अपना दायां घुटना सीट पर रखा और आधा अन्दर प्रवेश करके ड्राईवर को सीट के नीचे लुढ़का दिया।

अब पहली नजर देखने से ऐसा आभास नहीं होता था कि कार का ड्राईवर पिछली सीट के नीचे बेहोश पड़ा है।

एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बलराज गोगिया बाहर आया—दरवाजा बन्द किया और घूमकर ड्राईविंग सीट पर आ बैठा। सिर को उसने स्टेयरिंग पर इस तरह टिका लिया जैसे ऊंघ रहा हो।

'टन...टन...टन...।' तभी स्कूल की छुट्टी की घण्टी बज उठी।

स्कूल का मेन गेट खुला और शोर मचाते हुए बच्चे बाहर निकलने लगे।

स्टेयरिंग से सिर लगाये हुए ही बलराज गोगिया मेन गेट की तरफ देख रहा था—उसकी तेज निगाहें उस वक्त संदीप को देख रही थीं जो कि गेट से निकलकर कार की तरफ बढ़ रहा था।

कितना प्यारा व मासूम बच्चा था संदीप—उसके भोले-भाले चेहरे को देखकर एक बार तो बलराज गोगिया का इरादा भी डगमगा गया—दिल किया वह अभी वापिस लौट जाये।

लेकिन फिर अवतार सिंह का अहसान आड़े आ गया—उसने उसे फरार करवाकर एक नया जीवन दिया था—यह जिन्दगी उसकी कर्ज के रूप में थी। और वह अपने ऊपर किसी किस्म का कर्ज बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

ऊपर से उस खजाने का लोभ जो उसका बाप उसके नाम वसीयत कर गया था।

बलराज गोगिया ने अपने दिल को मजबूत किया और बड़ी बेकरारी से संदीप के कार के पास आने का इंतजार करने लगा।

आने वाली मुसीबत से बेखबर संदीप कार के समीप पहुंचा और दरवाजा खोलकर बलराज गोगिया की बगल में बैठ गया। शायद बलराज गोगिया पर अभी उसकी निगाह नहीं पड़ी थी वरना वह चौंकता जरूर।

और जब तक उसकी नजर बलराज गोगिया पर पड़ती—बलराज का चौड़ा पंजा उसके मुंह पर कस गया।

दूसरा हाथ भी तुरन्त ही हरकत में आया—जेब से रूमाल

निकाला जो कि पहले से ही क्लोरोफार्म से भीगा हुआ था और उसे उस मासूम की नाक से लगा दिया।

अगले ही पल संदीप सीट पर लुढ़का हुआ पड़ा था।

बलराज गोगिया ने तरसभरी निगाहों से उस भोले फरिश्ते की तरफ देखा और एक लम्बी सांस छोड़कर कार आगे बढ़ा दी।

उसकी अपनी कार पीछे अपने स्थान पर खड़ी हुई उसके वापिस लौटने का इंतजार कर रही थी।

❑❑❑

'ट्रिन...ट्रिन...।' फोन की घण्टी घनघना उठी।

म्यूजियम के मैनेजर अशोक गुप्ता ने फोन उठाया और रिसीवर को कान से लगाते हुए माउथपीस में बोला—"हैलो अशोक गुप्ता स्पीकिंग...।"

"मैं बलराज गोगिया बोल रहा हूं...।"

"बलराज..." चौंका अशोक गुप्ता—"कौन बलराज...?"

"बलराज गोगिया।" उधर से गुर्राहट उभरी—"वही बलराज गोगिया जो कि फांसी की सजा पाया हुआ पुलिस से फरार मुजरिम है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा अशोक गुप्ता—"मुझे फोन क्यों किया तुमने...?"

"अपने बेटे संदीप के लेट हो जाने का तुझे अभी भी पता नहीं चला—पूरा एक घण्टा हो गया है स्कूल की छुट्टी हुए—और वह अभी भी तेरे पास नहीं आया।"

मैनेजर अशोक की रंगत एकदम से स्याह पड़ गई—आंखों में खौफ के साये मंडराने लगे—हाथ में पकड़ा रिसीवर तक बुरी तरह से कांप उठा था।

बलराज गोगिया की बात का मतलब वह समझ गया था कि संदीप उसका इकलौता लड़का उसके कब्जे में है—बलराज गोगिया ने उसे स्कूल से ही अगवा कर लिया है।

"म...मेरा बेटा...?" आवाज तक कांप रही थी उसकी।

"बिल्कुल ठीक है मैनेजर बाबू—लंच कर रहा है...।"

"क...क्या चाहते हो तुम...?"

"मैं वहीं तेरी कोठी में तेरे पास आ रहा हूं—अगर अपने बेटे से प्यार नहीं हो तो बेशक अलार्म वाला बटन दबा देना—मैं तो फिर भी बच निकलूंगा—मगर मुझे पता चला है कि तेरी औरत अब दोबारा कभी मां नहीं बन सकती...।"

"न...हीं...ए...ऐसा गजब मत करना—म...मैं कुछ नहीं करूंगा...।" मैनेजर का पूरा जिस्म पसीने से भीग गया।

"अपने गेट पर खड़े गार्ड से कह देना कि मुझे रोकने की कोशिश न करे।

बात पूरी होते ही उधर से फोन कट गया।

इधर अशोक गुप्ता इस बुरी कदर कांप रहा था कि हाथ में पकड़ा रिसीवर तक नहीं सम्भाला गया उससे और वह छूटकर नीचे जा गिरा।

बड़ी मुश्किल से उसने रिसीवर को क्रेडिल पर रखा और धम से सोफे पर बैठ गया।

यह तो अच्छा हुआ कि उसकी पत्नी मायके गई हुई थी वर्ना अब तक तो पूरी कोठी में उसके रोने-पीटने की आवाज गूंज रही होती, जो कि उसके बेटे की जान के लिए हानिकारक साबित हो सकती थी। कुछ देर तो वह यूं ही सोफे पर पड़ा कांपता रहा—आखिर उसने किसी प्रकार स्वयं को सम्भाला और सोफे पर बैठे-बैठे ही उसने सोफे की साईड में लगे एक पुश को दबा दिया।

दो पलों में ही उसका एक नौकर जो कि वास्तव में एक ट्रेंड गार्ड था कमरे में आ गया।

अशोक गुप्ता ने अपनी आवाज को दुरुस्त करते हुए उससे कहा—"अभी थोड़ी देर बाद एक आदमी कोठी में आयेगा—उसे पूरी इज्जत से मेरे पास ले आना। बहुत ही खासम-खास है वह मेरा।"

"यस सर।" गार्ड बोला—और बाहर निकल गया।

❑❑❑

आशानुरूप बलराज गोगिया को मैनेजर अशोक गुप्ता से मिलने में कोई परेशानी पेश नहीं आई।

अशोक गुप्ता का चेहरा देखते ही पता चल रहा था कि वह स्वयं बड़ी बेसब्री से उसका इंतजार कर रहा था।

"ब...ताओ...क्या चाहते हो तुम...?" बलराज गोगिया के बड़ी ही बेतकल्लुफी से सोफे पर बैठते ही बोल पड़ा अशोक गुप्ता।

मुस्कुरा पड़ा बलराज गोगिया—एक अर्थभरी मुस्कान...।

"अरे भाई—तुम्हारा खासमखास हूं—पहले इस खासमखास की खातिर तो करो—वरना मुझे भूखे पेट वापिस लौटते देख तुम्हारे गार्डों को शक हो सकता है।"

कसमसाकर पहलू बदला अशोक गुप्ता ने और एक गार्ड को बुलाकर चाय-पानी लाने का आदेश दे दिया...।

जब तक खाने-पीने का सामान वहां रखकर गार्ड वापिस चला नहीं गया—तब तक बलराज उससे ऐसी बातें करता रहा जैसे बहुत अर्से से दोनों की यारी हो।

"अ...अब बताओ...।" गार्ड के बाहर निकलते ही बोला

अशोक गुप्ता—"क्या चाहते हो, क्यों पकड़ा है तुमने मेरे बेटे को?"

बलराज गोगिया ने आराम से बड़े इत्मिनान से अपने लिये चाय का कप भरा और बर्फी का एक पीस उठाकर मुंह में डालते हुए बोला—"अगर हमारी बात को किसी और स्थान पर पहुंचाने का यहां कोई यन्त्र है तो बेशक उसे चालू रहने दो—मेरा क्या है मैं तो... ।"

"हम दोनों के अलावा और किसी तीसरे के कानों में हमारी बातें नहीं पहुंचेंगी... ।" बलराज गोगिया की बात पूरी होने से पहले ही बोल पड़ा अशोक गुप्ता।

"गुड... ।" मुस्कुराहट तेज हो गई बलराज गोगिया के होठों पर।

"अब बताओ—क्या चाहते हो तुम...?"

बलराज गोगिया ने आराम से चाय के दो-तीन घूंट भरे और कप को मेज पर वापिस रखते हुए थोड़ा आगे को झुका और अपना चेहरा अशोक गुप्ता के चेहरे के पास ले आकर बड़े ही भेदभरे स्वर में बोला—"परसों दिल्ली दूरदर्शन से चार आदमी आये थे तुम्हारे पास... ।"

उछल पड़ा अशोक गुप्ता और फटी-फटी आंखों से उसकी तरफ देखने लगा—"त...तुम कहना क्या चाहते हो...?"

"उन्होंने तुम्हारा इन्टरव्यू भी लिया था... ।"

"हां... ।"

"मगर तुम्हारा वह इन्टरव्यू अधूरा था—और उस इन्टरव्यू को तुम अब पूरा करोगे।"

"म...मैं कुछ समझा नहीं—त...तुम कहना क्या चाहते हो?" आश्चर्य तैर रहा था गुप्ता की आंखों में... ।

"परसों इन्टरव्यू के दौरान तुमने कुछ प्रश्नों के जवाब देने से इन्कार कर दिया था—उन प्रश्नों का उत्तर देना है तुम्हें—बस और कुछ नहीं करना।"

"क...क्या पूछना चाहते हो तुम...?" कहते-कहते अशोक गुप्ता का दिल बुरी तरह से धड़कने लगा था। बलराज गोगिया हौले से मुस्कुराया—अपना कप उठाया और बड़े इत्मिनान से अपनी चाय खत्म करके खाली कप को मेज पर वापिस रख दिया।

रूमाल निकालकर अपने होंठ साफ किये और अशोक गुप्ता की तरफ देखते हुए वह बोला।

"तुम्हारे परसों के इन्टरव्यू से यह तो जाहिर हो गया है कि तुम म्यूजियम के सुरक्षा प्रबंधों की पूरी जानकारी रखते हो—बस उन सुरक्षा प्रबंधों की पूरी जानकारी चाहिए हमें, जिन्हें बताने से तुमने

इन्कार कर दिया था।" अशोक गुप्ता की रंगत एकदम से पीली पड़ गई—आंखें आश्चर्य से फटने के कगार पर पहुंच गईं—शरीर एक बार ज़ोर से कांपा और स्थिर हो गया—ऐसा लगा जैसे उसने प्राण त्याग दिये हों।

लेकिन उसके कांपते होंठ और आंखों की ज्योति उसके जिन्दा होने का संदेश दे रही थी।

"क...कहीं तुम्हारा इरादा...।" उसने कुछ कहना चाहा।

"तुम ठीक सोच रहे हो—हमारा इरादा उस मूर्ति को चुराने का है।"

अशोक गुप्ता ने फटी-फटी आंखों से उसे घूरा और बोला—"बहुत बड़ी गलतफहमी में हो तुम—अगर तुम मुझसे म्यूजियम तथा मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में जान भी लोगे तो भी तुम किसी भी हालत में मूर्ति को हासिल नहीं कर पाओगे—मूर्ति तक पहुंचने से पहले तुम्हें कई बार मरना पड़ेगा—कदम-कदम पर मौत बिछी हुई मिलेगी तुम्हें...।"

"मेरी फिक्र मत कर—मैं तो फांसी के फंदे को धता बताकर निकल आया हूं—मौत का खौफ मुझे न दे...।"

"लेकिन...।"

"जो कहा है वही कर।" पहली बार गुर्राहट निकली बलराज गोगिया के होंठों से—"घबरा नहीं—अगर मैं मर भी गया तो भी तेरे बेटे का कोई अहित नहीं होगा—बशर्ते कि तू सब कुछ सही-सही बता दे।"

अशोक गुप्ता का पूरा जिस्म पसीने से नहा रहा था...। अपने इकलौते बेटे की जिन्दगी के लिए उसने अपने फर्ज से गद्दारी करने का फैसला कर लिया था।

"ठ...ठीक है...मैं तुम्हें सब कुछ बताने को तैयार हूं...।"

"गुड...।"

"लेकिन मैं फिर भी कहता हूं कि मूर्ति को चुराने का इरादा त्याग दो—क्योंकि मूर्ति को चुराने के लालच में तुम्हें सिवाय मौत के कुछ नहीं मिलेगा—मूर्ति तक पहुंच भी नहीं पाओगे तुम...।"

"तेरे पास टेपरिकॉर्डर तो होगा...।" उसकी बात अनसुनी करते हुए बोला बलराज।

"ट...टेपरिकॉर्डर?" खौफ के बावजूद भी चौंक उठा अशोक गुप्ता।

"और कैसेट भी होगी...?"

"ह...हां...है...लेकिन त...तुम टेपरिकॉर्डर का करना क्या चाहते हो?"

मुस्कुराया बलराज और अपना सिर ठोंकते हुए बोला—"सो क्या है कि मैं जरा भुलक्कड़ किस्म का आदमी हूं—इसलिए हो सकता है जो कुछ तुम बताओ उसे अपने घर पहुंचने तक मैं भूल जाऊं—इसलिए तुम टेपरिकॉर्डर के द्वारा एक कैसेट में अपनी आवाज भर दो...।"

"न...हीं...।" घबराहट छा गई अशोक गुप्ता के चेहरे पर।

"घबराओ नहीं...काम पूरा होते ही मैं कैसेट को नष्ट कर दूंगा...तुम पर किसी को शक भी नहीं होगा और हमारा काम भी बन जायेगा। और साथ ही तुझे एक काम और भी करना है—कल सुबह ही तुम पन्द्रह दिन की छुट्टी लेकर कहीं बाहर चले जाओगे ताकि किसी को यह शक न पड़े कि तेरा बेटा संदीप घर से गायब है। तुम्हारे बाहर जाने से सभी यही समझेंगे कि संदीप भी तेरे साथ ही बाहर गया है।"

अशोक गुप्ता की थूक तक अपने गले में अटक कर रह गई।

बलराज गोगिया उसे बेहद घाघ किस्म का लड़का नजर आ रहा था, जिसकी आंखों में दृढ़ इच्छा की चमक साफ बता रही थी कि वह कुछ भी कर गुजर सकता है।

❑❑❑

अवतार सिंह ने सामने मेज पर रखे टेपरिकॉर्डर के 'प्ले' के पुश पर हाथ रखा और बलराज की तरफ देखते हुए बोला—"शुरू करूं...?"

"हां...करो...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया।

अवतार सिंह के पीछे खड़े राजवीर का कलेजा धड़क उठा—यह सोचकर उसका कलेजा उत्तेजना से पहले से ही फटा जा रहा था कि उस कैसेट में अशोक गुप्ता ने मूर्ति की सुरक्षा व्यवस्था की पूरी पोल खोली हुई है।

राजवीर से मिलता-जुलता हाल अवतार सिंह का भी था—लेकिन फिर भी उसने स्वयं को काबू किया हुआ था—जबकि बलराज तो बिल्कुल सामान्य नजर आ रहा था।

अवतार सिंह ने प्ले का बटन ऑन कर दिया और कुर्सी की पुश्त से टेक लगाकर बैठ गया—उसके कान शिकारी कुत्तों की तरह खड़े हो गये...। दिमाग के समस्त दरवाजों को खोल डाला उसने ताकि सुरक्षा व्यवस्था की पूरी बारीकियों को अपने दिमाग में स्टोर कर सके।

कुछ क्षण तक कैसेट खाली चलती रही फिर स्पीकर से अशोक गुप्ता की आवाज आनी शुरू हो गई...।

कमरे में सिवाय टेपरिकॉर्डर से निकल रही आवाज के बिल्कुल

शान्ति थी—कहीं से भी ऐसा नहीं लगता था कि वहां व्यक्ति जिन्दा हालत में बैठे हुए हैं।

"चल अब शुरू हो जा—म्यूजियम हॉल की लम्बाई-चौड़ाई, ऊँचाई, किस कोने पर सुरक्षा का कौन-सा प्रबंध किया गया है, मूर्ति की हिफाजत के लिए क्या-क्या बंदोबस्त किये गये हैं? सब कुछ बता और पूरी तफसील से बता, एक भी प्वॉइंट नहीं छूटना चाहिए—वर्ना अपने बेटे की सूरत तू जिन्दगी भर नहीं देख पायेगा।"

टेपरिकॉर्डर से बलराज गोगिया की आवाज निकली।

"ब...बताता हूं—सब कुछ बताता हूं मैं।" अशोक गुप्ता का कांपता स्वर निकला—"ल...लेकिन मेरे बेटे को कुछ नहीं कहना, उसे किसी किस्म की तकलीफ न देना।"

"अगर तूने सब कुछ ठीक-ठाक बताया तो मेरा वायदा है कि तेरे बेटे का बाल भी बांका नहीं होगा।"

"म्यूजियम हॉल का बाहरी दृश्य तो तुम अपने मूवी कैमरे में कैद कर ही चुके हो।" अशोक गुप्ता का स्वर टेपरिकॉर्डर से निकला।

"हां...मगर फिर भी मैं सब कुछ तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूं।"

"म्यूजियम के मेन गेट पर ड्यूटी के वक्त यानि जब तक म्यूजियम खुला रहता है सुबह दस बजे से दो बजे तक और शाम तीन बजे से पांच बजे तक हर वक्त चार गार्ड तैनात रहते हैं जो कि स्टेनगनों से लैस होते हैं। इसके अलावा म्यूजियम के चारों तरफ बाहर की तरफ नौ गार्ड नियुक्त रहते हैं—वक्त-वक्त पर इन गार्डों की ड्यूटी बदलती रहती है, मगर इनकी संख्या में कोई कमी नहीं आती। ठीक पांच बजते ही म्यूजियम का मेन गेट बंद हो जाता है—और बाहर गेट पर तैनात गार्डों की गिनती दो गुनी हो जाती हैं—यानि आठ गार्ड वहां नियुक्त हो जाते हैं।"

टेपरिकॉर्डर में कुछ क्षण शान्ति रही। अशोक गुप्ता का स्वर पुनः उभरा—

"मेन गेट के अन्दर प्रवेश करते ही दायें-बायें से दो व्यक्ति जो कि हथियारबंद होंगे—वे तुम्हारे पास आयेंगे—अच्छी तरह से तुम्हारी तलाशी लेकर ही तुम्हें आगे बढ़ने दिया जायेगा—अगर तुम्हारे पास कोई भी आपत्तिजनक वस्तु निकलती है तो तुम किसी भी हालत में अन्दर नहीं जा सकते...।"

"वह आपत्तिजनक वस्तु अपने पास रखने के बाद भी...।" बलराज गोगिया की आवाज।

"हां...।" अशोक गुप्ता का स्वर—"करीब तीन फीट की गली पार करने के उपरान्त तुम सौ फीट चौड़े और डेढ़ सौ फीट

लम्बे हॉल में पहुंच जाओगे—लेकिन इस बीच तुम्हें दो बार मेटल डिटेक्टर से गुजरना होगा जिसका पता तुम्हें खुद को नहीं होगा...। अगर मेटल डिटेक्टर चीखा तो एक क्षण भी नहीं लगेगा कि वह व्यक्ति गार्डों की गिरफ्त में आ जायेगा।

हॉल में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग पुरातन वस्तुएं पड़ी हैं—लेकिन वह मूर्ति जिसके लिए तुमने मेरे बेटे का किडनैप किया है वह हॉल के बिल्कुल बीचो-बीच है। तीन फीट ऊंचे कंकरीट के बने मंच पर वह मूर्ति होगी—उसके चारों तरफ तथा छत पर शीशा लगा हुआ है, जो कि बुलेटप्रूफ है—हॉल में मूर्ति तथा अन्य पुरातन वस्तुओं की सुरक्षा के लिए दस गार्ड मौजूद रहते हैं जिन्हें पूरा अधिकार है कि बिना कोई कारण बताये वे किसी को भी गिरफ्तार कर सकते हैं चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो।

शाम को ठीक चार बजकर पचपन मिनट पर हॉल में से सभी दर्शकों को बाहर निकाल दिया जाता है—तत्पश्चात् पूरी बारीकी से पूरे हॉल की तलाशी होती है कि कहीं कोई अवांछित तत्व वहां छुप तो नहीं गया—और फिर हॉल में से वे दसों गार्ड भी बाहर आ जाते हैं—म्यूजियम का मेन गेट बंद हो जाता है और तब शुरू होता है इलैक्ट्रोनिक्स का मैकेनिज्म...।"

"क्या है वह मैकेनिज्म...?" बलराज गोगिया की आवाज टेपरिकॉर्डर के स्पीकर से निकली।

"बहुत ही जबरदस्त व तगड़ा इंतजाम किया गया है उस मूर्ति की सुरक्षा के लिए, अशोक गुप्ता की आवाज उभरी—"हॉल की छत का बीच का तीस बाई तीस फीट का हिस्सा मस्जिद की गुम्बद की तरह ऊपर गोल बना हुआ है जैसे किसी बड़ी कड़ाही को उल्टा रख दिया गया हो—उस गुम्बद में हॉल में सूर्य की रोशनी पहुंचाने के लिए शीशे लगे हुए हैं...। चोर उन शीशों को तोड़कर या काटकर किसी रस्से की मदद से या फिर छलांग मारकर हॉल में पहुंच सकता है। हालांकि रात के वक्त हॉल की छत पर दो गार्ड पहरे पर मौजूद रहते हैं—लेकिन ऐसी सम्भावना को नकारा भी तो नहीं जा सकता—सो हॉल के अन्दर छत के नीचे पूरी की पूरी इलैक्ट्रिक रेंज का जाल बिछा दिया गया है।

अगर चोर शीशा तोड़कर अंदर उतरने की कोशिश करेगा तो बीच रास्ते में ही उसका राम नाम सत्य हो जायेगा। इस दीवार से उस दीवार तक बनी ग्यारह हजार वोल्ट की वह इलैक्ट्रिक रेंज पल भर में ही चोर को राख में तब्दील कर देगी और उसके साथ ही पूरे ऐरिये में खतरे का अलार्म बज उठेगा।

जैसे ही खतरे का अलार्म बजेगा मूर्ति के चारों तरफ से इस्पात

की चार चादरें निकलेंगी और मूर्ति को पूरी तरह से अपने आगोश में ले लेंगी—फिर चाहे कोई तोप का गोला भी मूर्ति पर छोड़ दे—इस्पात की चादरों को वह गोला भी नहीं भेद पायेगा।"

"मान लो अगर कोई छत का शीशा तोड़कर इलैक्ट्रिक रेंज से बचकर हॉल के फर्श पर उतर भी जाता है तो क्या वो मूर्ति को प्राप्त कर लेगा...?" बलराज गोगिया की आवाज।

"बिल्कुल नहीं...।" अशोक गुप्ता का स्वर उभरा—"अगर चोर उस इलैक्ट्रिक रेंज से बच-बचाकर हॉल के फर्श पर पैर भी रखेगा तो खतरा होगा—जैसे ही चोर नीचे उतरेगा—ग्यारह हजार वोल्ट की वह इलैक्ट्रिक रेंज उसे स्वाहा कर देगी।

"और मूर्ति...।" बलराज की आवाज उभरी—"उसके स्टेज के आसपास तथा मूर्ति के आसपास के सुरक्षा प्रबंध कंकरीट के बने स्टेज पर पड़ी वह मूर्ति बुलेटप्रूफ शीशों के बीच तो है ही—चोर अगर उस स्टेज तक पहुंच भी जाता है तो भी वह मूर्ति को प्राप्त नहीं कर पायेगा—जैसे ही वह मूर्ति के शीशों को काटने की कोशिश करेगा खतरे का अलार्म बज उठेगा और उसी के साथ मूर्ति इस्पात की चादरों में छुप जायेगी—तब चोर मूर्ति को पाना तो दूर रहा देख भी नहीं पायेगा।"

"यानि शीशों के चारों तरफ भी इलैक्ट्रोनिक्स मैकेनिज्म है...?"

"हां...।"

"आगे बोलो...।"

"हॉल में प्रवेश करने का यही एकमात्र रास्ता है—इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं—चोर मेन गेट से तो आ नहीं सकता—क्योंकि मेन गेट से प्रवेश करने के लिए उसे पहले गेट पर मौजूद गार्डों को खत्म करना होगा—फिर जाकर गेट का ताला तोड़कर अन्दर प्रवेश कर पायेगा—लेकिन गली पार करके जैसे ही वह हॉल के फर्श पर पैर रखेगा फर्श पर बिछी इलैक्ट्रिक रेंज उसे राख में बदल देगी। इसलिए हॉल में प्रवेश करने का वही एकमात्र रास्ता है और उस रास्ते से भी अन्दर प्रवेश करने के सिवाय मौत के कुछ नहीं मिलेगा।"

"हॉल के बारे में बताओ...।"

"क...क्या बताऊं...?"

"यही कि उसकी दीवारें कितनी मोटी हैं—कहीं कोई होल वगैरह—या अन्दर कोई टायलेट वगैरह बनी हो?"

"कहीं ऐसा होल नहीं है, न ही कोई टायलेट बनी है हॉल में—दीवारें दो फीट कंकरीट की बनी हुई हैं जिसमें कि लोहे की चादरें

डाली गई हैं—अगर तुम टैंक लेकर भी आ जाओगे तो भी दीवारों को नहीं तोड़ पाओगे।"

"इस सारे इलैक्ट्रोनिक्स मैकेनिज्म का कहीं कंट्रोल रूम भी होना चाहिए।"

"हां है—मगर उसके बारे में मैं नहीं जानता...।"

"झूठ मत बोल गुप्ता...।" बलराज गोगिया की आवाज सख्त होकर उभरी।

"म...मैं सच कह रहा हूं मुझे कंट्रोल रूम का बिल्कुल नहीं पता।" अशोक गुप्ता का कांपता स्वर।

"मुझे तो बस इतना करना होता है कि अन्दर की तलाशी के उपरान्त मैं खुद एक बार अन्दर हॉल का दौरा लगाता हूं और बाहर आ जाता हूं। सवा पांच बजे से पहले-पहले मुझे हॉल से बाहर आ जाना होता है—ठीक सवा पांच बजे पता नहीं कहां से इलैक्ट्रिक मैकेनिज्म शुरू हो जाता है।"

"और अगर सवा पांच बजे के बाद भी हॉल में कोई रह जाये तो?"

"तो समझ लो वह जान से हाथ धो बैठा—साथ ही अलार्म, भी बज उठेगा।"

कुछ क्षण की खामोशी—फिर बलराज गोगिया की आवाज उभरी—

"अलार्म क्या सिर्फ उसी दशा में बजता है जब कोई जीवित प्राणी इलैक्ट्रिक रेंज से टकराता है या किसी कंकड़-पत्थर के टकराने से भी बज उठता है?"

"नहीं...कंकड़-पत्थर टकराने से अलार्म नहीं बजता—अगर ऐसा होता तो रात को कई बार अलार्म बजने लगता।"

"क्यों...?"

"धूल-मिट्टी कहां नहीं होती—और इलैक्ट्रिक रेंज से भी धूल-मिट्टी टकराती होगी—ऐसे में अलार्म तो हर वक्त ही बजता रहेगा—इसलिए कंकड़-पत्थर टकराने से अलार्म नहीं बजता।"

उसी के साथ ही टेपरिकॉर्डर खामोश हो गया।

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और हाथ आगे बढ़ाकर टेपरिकॉर्डर ऑफ कर दिया—उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा जो कि पहले से ही उसकी तरफ देख रहा था।

"लगता है तेरे बाप की वसीयत तेरे भाग्य में नहीं लिखी।"

"क्यों...?" बलराज गोगिया मुस्कुराते हुए बोला।

"अरे भाई! मूर्ति की हिफाजत के लिए सरकार ने इतने तगड़े बंदोबस्त किए हैं कि वहां परिन्दा भी पर नहीं मार सकता—अब

तो वे हीरे जिन्हें तेरे बाप ने बड़ी मेहनत से हासिल किए थे हमेशा के लिए उस कृष्ण की मूर्ति में दफ्न हो जायेंगे—किस्मत वाला तो वो होगा जो उस मूर्ति को खरीदकर ले जायेगा—दो अरब की उस मूर्ति के साथ अरबों रुपये के वे हीरे उसे मुफ्त में मिल जायेंगे।"

"अवतार सिंह!" बलराज गोगिया का स्वर गम्भीर था—"सुरक्षा प्रबंधों के बारे में सुनकर ही तुमने हिम्मत हार ली—हाथ-पैर चलाओ—दिमाग के घोड़े दौड़ाओ—हो सकता है कोई ऐसा रास्ता निकल जाये जिससे कि हम उस मूर्ति को प्राप्त कर लें—पहले से ही हिम्मत हारकर बैठ जाना इतने बड़े गैंगस्टर के लिए बुजदिली ही मानी जायेगी। मुझे तो उन हीरों का सिर्फ एक ही हिस्सा मिलना है—जबकि तुम्हें तीन, मेरे से ज्यादा तो तुम्हें अपना दिमाग का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन तुम तो विकेट पर पहुंचने से पहले ही स्वयं को आऊट हुआ समझ रहे हो।"

"मेरा तो दिमाग मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों को सुनकर ही काम करना बंद कर चुका है—हां अगर तू कुछ दिमाग रखता है तो सोच—हो सकता है तेरे दिमाग में ऐसी कोई स्कीम आ जाये जो हमें कामयाबी की मंजिल तक पहुंचा दे।"

"मैं तो सोचूंगा ही—तुम भी अपनी तरफ से कुछ सोचो न...।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए अवतार सिंह उठ खड़ा हुआ—"मैं सोचूंगा मगर मुझे उम्मीद नहीं कि मैं कोई रास्ता निकाल पाऊंगा।"

❑❑❑

अवतार सिंह को अपने सामने खड़ा देख दुष्यन्त चौधरी हक्का-बक्का रह गया।

"स...सरदार साहब आप...!" मुस्कुराता स्वर निकला उसके मुख से।

"हां...।" गम्भीर स्वर था अवतार सिंह का...।

उसने एक कुर्सी सरकाई और उस पर बैठते हुए बोला—"चौधरी बलराज गोगिया उन सुरक्षा प्रबंधों को जान गया है जो कि मूर्ति की हिफाजत के लिए किए गए हैं।"

"य...यह तो बड़ी खुशी की बात है—अब तो वह मूर्ति आपके पास पहुंची समझो—बलराज गोगिया का दिमाग तो उसके बाप से भी तेजतर्रार है—देख लीजियेगा बहुत जल्द वह उन सुरक्षा प्रबंधों का तोड़ निकाल लेगा।"

"उसे छोड़—यह बता इकबाल कहां तक पहुंचा...?"

"अंधेरे में ही टक्करें मार रहा है बेचारा!" चौधरी मुस्कुराते

हुए बोला—"यह तो अच्छा हुआ कि वह पनाह मांगने मेरे पास ही आया—अगर वह किसी और के पास पहुंचता तो हमारे किले में अवश्य ही सेंध लगा लेता—लेकिन अब तो उसकी एक-एक हरकत पर मेरी नजर है। वैसे एक बात कहना चाहता हूं सरदार साहब...!"

"कहो...।"

"जब हमें पता भी है कि इकबाल हमारे लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है तो फिर उसे जिन्दा क्यों छोड़ा गया है—मार क्यों नहीं देते उसे—इस तरह हमारे रास्ते का कांटा हमेशा के लिए दूर हो जायेगा।"

मुस्कुरा पड़ा अवतार सिंह उसकी बात सुनकर...।

"इकबाल को तो कभी भी मारा जा सकता है चौधरी—मगर अभी उसे खत्म करना हमारे लिए घाटे का सौदा हो सकता है। उसके बारे में मैं तुझे बाद में बताऊंगा—फिलहाल तो तू यह जान ले कि राघव ने पुष्पा को मार डाला है।"

"क...क्या...?" बुरी तरह से उछल पड़ा चौधरी और फटी-फटी आंखों से अवतार सिंह की तरफ देखने लगा।

"हां...।" अवतार सिंह का स्वर अपेक्षाकृत गम्भीर था—"पुष्पा की मौत इस तरफ भी इशारा करती है कि राघव हमारी योजना के बारे में सब कुछ जान गया है—इसलिए राघव का ज्यादा देर तक जिन्दा रहना मेरे लिए हानिकारक साबित हो सकता है—अगर राघव ने बलराज को सारी सच्चाई बता दी तो हमारी सारी मेहनत पर पानी फिर जायेगा, इसलिए जैसे ही राघव तेरे पास आये उसे खत्म कर देना।"

"ज...जी...।"

"उस हरामी का मर जाना ही हमारे हित में होगा...।"

"ज...जी...आप ठीक कह रहे हैं सरदार साहब—ऐसा ही होगा।"

उसकी बात खत्म होते ही अवतार सिंह उठ खड़ा हुआ—"फिलहाल तो मैं जा रहा हूं—तेरे पास ज्यादा देर तक रुकना ठीक नहीं।"

चौधरी कुछ नहीं बोला—उसके सम्मान में वह भी उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑

"कोई रास्ता मिला...?"

"तुम बताओ—तुमने कुछ सोचा...?"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था कि सुरक्षा प्रबंधों के बारे में सुनकर ही मेरे दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था...।"

"फिर भी कुछ तो सोचा होगा...?"

"सोचा तो बहुत था—मगर जिस रास्ते से भी म्यूजियम में घुसने की कोशिश की मौत के सिवाय कुछ नहीं मिला।" अवतार सिंह बोला—"गेट के रास्ते से घुसने की कोशिश की तो गार्ड खड़े हैं—छत के रास्ते से घुसने की कोशिश की तो हॉल में छत के नीचे बिछी इलैक्ट्रिक रेंज, वह भी ग्यारह हजार वोल्ट की पल भर में ही स्वाहा कर देगी, दीवारें तोड़ नहीं सकते हम—फिर मूर्ति तक पहुंचें तो किस रास्ते से पहुंचें?"

"एक रास्ता है मेरी नजर में....।" मुस्कुराते हुए बोला बलराज गोगिया।

अवतार सिंह हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा—"रास्ता है तेरे दिमाग में...?"

"हां...।"

"म्यूजियम में घुसने का...?"

"मूर्ति उड़ाने का भी...।" बलराज गोगिया की मुस्कान तेज हो गई।"

"क...कौन-सा रास्ता है?"

"बताऊंगा...।" बलराज गोगिया बोला—"जरूर बताऊंगा लेकिन उससे पहले मैं वह कैसेट पुनः देखना चाहता हूं—जिसमें कि उस अभेद्य किले की पूरी तस्वीरें हैं।"

आनन-फानन में अवतार सिंह ने सी०डी० और कलर टी०वी० वहीं उसी कमरे में लगवाया और उस पर कैसेट चढ़वाकर सी०डी० ऑन कर दिया।

टी०वी० म्यूजियम की रील चलने लगी। बलराज गोगिया की नजरें एक-एक दृश्य को पूरे गौर से देख रही थीं। अवतार सिंह भी टी०वी० पर निगाहें गड़ाये हुए था—लेकिन उस वक्त उसका दिमाग टी०वी० पर नहीं बल्कि उस मूर्ति की तरफ था जिसे उड़ाने के लिए बलराज गोगिया ने एक स्कीम तैयार की थी।

जैसे ही म्यूजियम के हॉल का बाहरी दृश्य स्क्रीन पर आया—कामयाबी भरी चमक बलराज गोगिया की आंखों में चमक उठी।

झट से वह उठा और टी०वी० के स्टिल वाले बटन को दबा दिया।

म्यूजियम का बाहरी दृश्य वहीं रुक गया।

उसकी हरकत पर अवतार सिंह चौंककर उसकी तरफ देखने लगा—"स्टिल क्यों किया...?

बलराज गोगिया ने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा और

बोला—"तुम्हें अच्छी तरह से समझाने के लिए।"

"क...क्या...?"

"सामने टी०वी० स्क्रीन पर नजर मारो...।"

अवतार सिंह गर्दन घुमाकर टी०वी० की तरफ देख रहा था।

"म्यूजियम के बगल में बनी यह इमारत हमारे म्यूजियम की छत तक पहुंचने का रास्ता बनेगी...।" बलराग गोगिया टी०वी० की तरफ उंगली कर उस इमारत की तरफ इशारा करते हुए बोला जो कि म्यूजियम हॉल के बगल में बनी हुई थी। हॉल तक इमारत के बीच दस फीट चौड़ी एक गली बनी हुई थी।

अवतार सिंह ने देखा कि म्यूजियम की छत इमारत की छत से करीब पन्द्रह फीट नीचे बनी हुई है।

गर्दन घुमाकर उसने बलराज गोगिया की तरफ देखा—"यानि तुम छत के रास्ते म्यूजियम हॉल में प्रवेश करना चाहते हो...?"

"मेरी निगाह में और कोई रास्ता नहीं जिस पर चलकर हम म्यूजियम में प्रवेश कर सकें—दीवार हम तोड़ नहीं सकते—और फर्श पर हम चल नहीं सकते...।"

"और इस रास्ते में कैसे पहुंचेंगे—छत के नीचे बनी इलैक्ट्रिक रेंज़ से टकराते ही राम नाम सत्य...।"

"पहले मेरी पूरी बात सुन लो फिर जो भी प्रश्न तुम्हारे दिमाग में कुलबुलाए—उसे होठों पर ले आना...।"

अवतार सिंह उसके मुंह की तरफ देखने लगा।

उसकी तरफ देख बलराज गोगिया एक पल के लिए मुस्कुराया—फिर अपनी स्कीम बताने लगा।

"पहले हम इस इमारत पर जायेंगे—इमारत की छत पर पहुंचकर सबसे पहले हमें छत पर मौजूद उन दो गार्डों को खत्म करना होगा जो कि पहरे पर होंगे—गार्डों को खत्म कर हम छत पर उतर आयेंगे और फिर गुम्बद का शीश तोड़कर नीचे चले जायेंगे।"

"मगर कैसे...?"

शॉक प्रूफ कपड़े पहनकर, यानि रबड़ के कपड़े—मैनेजर के मुताबिक इलैक्ट्रिक रेंज बेजान वस्तुओं के टकराने से हरकत में नहीं आती, अंदर हम तो पूरी तरह से रबड़ के कपड़ों से ढंके होंगे।"

"ठीक है—अब आगे बढ़ो—नीचे पहुंचकर क्या करोगे तुम—क्योंकि मूर्ति के शीशों से हाथ लगाते ही खतरे का अलार्म बज उठेगा—अलार्म को कैसे रोकेंगे?"

"हम शीशों के हाथ भी नहीं लगायेंगे।"

"क...क्या?" चौंक उठा अवतार सिंह—"ए...ऐसा कैसे हो सकता है—बिना शीशे को काटे मूर्ति कैसे उठा लोगे तुम?"

"हम शीशे को नहीं बल्कि नीचे वाले मंच को काटेंगे...।"

"कैसे...?"

इलैक्ट्रिक ड्रिल द्वारा...। बलराज गोगिया की मुस्कान तेज हो गई।

"म...मैं कुछ समझा नहीं—जरा खुलकर समझाओ...।"

"छत के दोनों गार्डों का काम तमाम कर हम छत पर आ जायेंगे...।" बलराज गोगिया ने कहना शुरू किया—"छत पर पहुंचकर हम छत के बीचो-बीच बने गुम्बद में लगे शीशों में से एक शीशे को ग्लास कटर से काटकर उसे अन्दर की तरफ फेंक देंगे। ऐसा करने से हमें यह भी मालूम पड़ जायेगा कि बेजान वस्तु के इलैक्ट्रिक रेंज के साथ टकराने से अलार्म बजता है या नहीं—क्योंकि हो सकता है मैनेजर झूठ बोल रहा हो—और हमारे शॉकप्रूफ कपड़ों के बावजूद भी इलैक्ट्रिक रेंज हमें जकड़ ले या अलार्म बज उठे। अगर अलार्म नहीं बजता तो हमें पूरी तसल्ली हो जायेगी...।

तत्पश्चात् शॉक प्रूफ कपड़े पहनकर और अन्य आवश्यक सामान के साथ हम नीचे फर्श से करीब एक फीट ऊपर हवा में ही रुक जायेंगे—और ड्रिल द्वारा मंच जो कि कंकरीट का बना हुआ है, में एक तरफ से इतना रास्ता बना देंगे कि उसमें हाथ डालकर आराम से मूर्ति निकाल सकें—इस प्रकार हमें मंच पर लगे बुलेटप्रूफ शीशो को काटना भी नहीं पड़ेगा और अलार्म भी नहीं बजेगा।"

"वाह!" सफलता से अवतार सिंह की आंखें चमकने लगीं—जैसे मूर्ति को अभी से प्राप्त कर लिया हो उसने—"स्कीम तो वाकई जानदार है!"

"मगर खतरे भी जगह-जगह पर हैं...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया।

"खतरे तो उठाने ही पड़ेंगे।" अवतार सिंह बोला—"अरबों का सवाल है—इतनी कमाई एक साथ करना वह भी बिना खतरे के ऐसा कैसे हो सकता है!" कहकर अवतार सिंह एक क्षण के लिए ठिठका फिर बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—"खैर—स्कीम तो तूने तैयार कर ली—अब जरा उस सामान के बारे में भी बता दे जो तुम्हें इस आपरेशन के लिए चाहिए—साथ ही यह भी बता दे कि इस काम के लिए तुझे कितने व्यक्ति चाहिएं और किस किस्म के चाहिएं?"

बलराज गोगिया कुछ क्षण तक तो सोचपूर्ण मुद्रा में बैठा रहा फिर कहने लगा—"पहले सामान के बारे में लिख लो...।"

"लिख लूं...!" चौंका अवतार सिंह—"लिखने की क्या जरूरत है? तुम यूं ही बता दो मैं मंगवा दूंगा।"

"सामान ज्यादा है अवतार सिंह—अगर कोई आईटम भूल गये तो सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा—इसलिए सामान के बारे में लिखना ही बेहतर होगा।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी अवतार सिंह ने—इस आपरेशन का कमांडर तुम्हें बनाया है तो तुम्हारी माननी ही पड़ेगी।"

कहकर उठा अवतार सिंह और साथ वाले कमरे से कागज और पैन उठा लाया और बलराज गोगिया के सामने आकर बैठ गया।

"बोलो...।" वह लिखने को तैयार होते हुए बोला।

बलराज गोगिया ने अपनी आंखें कमरे की छत की तरफ उठा लीं, सोचपूर्ण लहजे में कहने लगा—"इमारत जो कि म्यूजियम की बगल में है कि छत पर दो आदमी होंगे जो कि म्यूजियम की छत पर मौजूद दोनों गार्डों को एक साथ शूट करेंगे—इसके लिए दो टेलीस्कोपिक गनें चाहिएं जो कि साईलैंसरयुक्त हों—एल्यूमीनियम की फोल्डिंग सीढ़ी जिसके द्वारा हम इमारत की छत से म्यूजियम की छत पर पहुंचेंगे। एक ग्लास कटर जिसके द्वारा हम गुम्बद के शीशे को काटेंगे—एक तख्त जिसके चारों कोनों के साथ रस्से बंधे होंगे और जिसके ऊपर सारा सामान सजाकर नीचे मंच के बराबर में पहुंचा जायेगा—चार रस्से जो कि तख्त के चारों कोनों से बंधे होंगे और जिनका दूसरा सिरा ऊपर गुम्बज से बंधा होगा—एक ड्रिलिंग मशीन जो कि बैटरी से चले—क्योंकि बिजली का बन्दोबस्त होना लगभग असम्भव है—और दो शॉक प्रूफ ड्रैस—सिर से पैर के नाखून तक स्वयं को कवर करने के लिए—और एक बैटरी भी ड्रिलिंग मशीन चालू करने के लिए।"

"एक अकेले के बस का काम नहीं यह।" बलराज बोला—"ड्रिलिंग मशीन को पकड़े-पकड़े एक आदमी थक जायेगा—इसलिए दूसरे का होना बहुत जरूरी है—और दूसरे आदमी का स्थान तुम भरोगे।"

"म...मैं...!" हैरानी से बोला अवतार सिंह।

"बिल्कुल, ऐसे नाजुक वक्त पर दूसरा कोई भी आदमी बेशक वो कितना भी भरोसे का हो, हौसला छोड़ सकता है—इसलिए खुद तुम्हारा वहां होना बहुत जरूरी है।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला अवतार सिंह—"मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।"

"अब जरा उस लिस्ट को एक बार पढ़कर सुनाओ—कहीं कोई चीज छूट गई हो तो उसे लिख लिया जाये।"

अवतार सिंह ने कागज को आगे किया जिस पर उसने सामान लिखा था और ऊंचे स्वर में पढ़ने लगा।

"दो टेलिस्कोपिक गनें साईलैंसरयुक्त—एक फोल्डिंग सीढ़ी एल्यूमीनियम की...।"

"लम्बाई का अन्दाजा तुम खुद लगा लेना...।" बलराज गोगिया उसकी बात को काटते हुए बोला।

"ठीक है—लगा लूंगा।" बोला अवतार और आगे पढ़ने लगा—"एक ग्लास कटर—चार रस्से मजबूत—एक ड्रिलिंग मशीन—दो शाकप्रूफ ड्रेस और एक बैटरी।"

"ठीक है...।" उसके चुप होते ही बोला बलराज गोगिया। "अब जरा यह बता दो कि कुल कितने आदमी चाहिए तुम्हें?"

"दो तो इमारत की छत पर होंगे जो कि गार्डों को शूट करेंगे—और उसके पश्चात् भी वहीं रहेंगे किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए—दो म्यूजियम हॉल की छत पर रहेंगे—ऊपर बंधे रस्सों की देखभाल करने के लिए तथा हमें वापिस ऊपर खींचने के लिए।"

"क्या दो आदमी हमें नीचे से ऊपर खींच पायेंगे? ऊपर छत से नीचे तो भेज सकते हैं दो आदमी मगर नीचे से ऊपर खींचने के लिए काफी जोर की जरूरत पड़ेगी—उसके लिए दो आदमी बहुत कम होंगे?"

"चार कर लो...।"

"हां...चार आदमी हमें ऊपर खींच सकते हैं...।" अवतार सिंह ने सिर हिलाया—"यानि हम दोनों को छोड़कर छः आदमी और चाहिएं...।"

"हां...।" बोला बलराज गोगिया—"और इमारत से कुछ हटकर एक व्यक्ति और चाहिए जो कि उस वाहन में बैठा होना चाहिए जिसमें बैठकर हम वहां पहुंचेंगे—वह ड्राईवर का काम भी करेगा—और कोई भी खतरा देखते ही इमारत की छत पर मौजूद दोनों आदमियों को सचेत कर देगा—इशारा मिलते ही वे दोनों व्यक्ति उस सीढ़ी को तुरन्त ही इमारत की छत पर खींच लेंगे जो कि इमारत की छत से म्यूजियम की छत पर पहुंची होगी...। और साथ ही वे म्यूजियम की छत पर खड़े दोनों व्यक्तियों को भी सिगनल दे देंगे—और वे दोनों हमें सचेत कर देंगे।"

"छः जमा एक—सात व्यक्ति चाहिए तुम्हें...।"

"हां...।" बोला बलराज गोगिया—और फिर जैसे कुछ याद आ गया उसे—तुरन्त ही बोला वह—"सामान की लिस्ट में दो टॉर्च भी लिख लेना—हो सकता है हॉल में अंधेरा हो—ऐसे में टॉर्चों की जरूरत पड़ सकती है।"

अवतार सिंह ने सामान की लिस्ट के नीचे दो टॉर्च और लिख

दिया। और पुनः बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा।

"कब तक मिल जायेगा यह सारा सामान...?" बलराज ने पूछा।

"परसों तक तुम्हें यह सारा सामान मिल जायेगा...।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और खड़ा हो गया—"अब परसों सामान के साथ ही मुझे मिलना, तब तक मैं जरा अपनी स्कीम पर पुनर्विचार कर लूंगा।"

प्रत्युत्तर में अवतार सिंह बोला कुछ नहीं बस होंठ फैला दिये उसने।

❑❑❑

जो-जो सामान बलराज गोगिया ने अवतार सिंह को लिखवाया था वह सारा सामान बलराज गोगिया के सामने पड़ा था और बलराज गोगिया एक-एक वस्तु को पूरी बारीकी से देख रहा था—उसकी तवज्जो खासकर उन शॉकप्रूफ ड्रेसों की तरफ थी जिन्हें पहनकर उसे ग्यारह हजार वोल्ट की इलैक्ट्रिक रेंज में से निकलना था।

बाकी सारे सामान की तसल्ली कर लेने के पश्चात् बलराज ने एक शॉकप्रूफ ड्रेस उठाई और उन्हें अपने कपड़ों के ऊपर ही पहनने लगा।

कुछ ही देर में वह बलराज गोगिया के स्थान पर किसी दूसरे ग्रह का प्राणी नजर आने लगा—सिर से लेकर पैर तक वह रबड़ की पौशाक से ढका हुआ था, यहां तक कि उसकी आंखों वाले स्थान पर भी शीशे चढ़े हुए थे।

ड्रैस पहने हुए ही बलराज गोगिया कमरे के स्विचबोर्ड की तरफ गया और एक ही झटके में स्विचबोर्ड उखाड़ दिया।

पीछे नंगी तारों का जाल बिछा हुआ था...। बलराज गोगिया ने तारों की उस जाल को हाथों से पकड़ा, नंगे तारों के आपस में मिल जाने से जबरदस्त स्पार्किंग पैदा हुई—और सर्किट शार्ट हो जाने की वजह से मेन स्विच का फ्यूज उड़ गया—लेकिन बलराज गोगिया को कहीं से भी जरा भी नुकसान नहीं हुआ। हालांकि यह करंट केवल दो सौ बीस वोल्ट का था—मगर फिर भी बलराज गोगिया को पूरी तसल्ली हो गई कि ड्रैस पूर्ण रूप से सुरक्षित है।

ड्रैस को उतारकर उसने वापिस सामान में रख दिया और अपनी कुर्सी पर आ बैठा।

"तसल्ली हो गई...?" उसके बैठते ही अवतार सिंह ने पूछा।

"हां...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"सब कुछ ठीक है।"

"तो कब शुरू कर रहे हो आपरेशन...?"

"बस तुम्हारे आदमियों का बंदोबस्त होते ही टाईम फिक्स कर लिया जायेगा।"

"आदमी तो मेरे पांच-सात की वजाय सत्तर मिल जायेंगे—उनकी चिंता न करो। तुम बस बोलो आपरेशन कब शुरू करना है?"

"अगर ऐसा है तो कल रात को ठीक एक बजे आपरेशन शुरू कर दिया जायेगा।"

"यानि कल रात दस बजे हम यहां से चण्डीगढ़ के लिए रवाना हो जायेंगे।" अवतार बोला—"चण्डीगढ़ पहुंचते-पहुंचते साढ़े वारह-पौन तो बज ही जायेगा।"

"नहीं—चण्डीगढ़ हम कल शाम ही पहुंच जायेंगे।"

"क्यों...?" चौंका अवतार सिंह।

"उस इमारत की छत तक पहुंचने के लिए रास्ता भी तो तलाश करना है।" बलराज गोगिया बोला—"इतने सामान के साथ ऊपर छत पर पहुंचना कोई आसान काम नहीं—उसके लिए रास्ता बनाना पड़ेगा—और वह रास्ता तुम्हें बनाना है।"

"ओ०के०...।" मुस्कुराया अवतार सिंह—"कल दोपहर को दो बजे हम यहां से रवाना हो जायेंगे।"

"ठीक है...।" बलराज गोगिया भी प्रत्युत्तर में मुस्कुरा पड़ा।

❑❑❑

चण्डीगढ़ के सैन्टर में बने उस म्यूजियम की वगल में बनी उस इमारत से कुछ हटकर वह वैन खड़ी थी जिसमें बलराज गोगिया और अवतार सिंह उस सारे सामान के साथ मौजूद थे जो कि बलराज गोगिया ने चोरी करने के लिए अवतार सिंह को लिखवाया था।

उन दोनों के अलावा राजवीर और तीन व्यक्ति और थे उस वैन में...। ड्राइविंग सीट राजवीर ने सम्भाली हुई थी। बाकी के तीन व्यक्ति पीछे एक अन्य वैन में थे।

दोनों वैनों के शीशे काले थे...। काले शीशों के कारण अवतार सिंह और बलराज गोगिया लोगों की नजरों में आने से बचे हुए थे। हालांकि अवतार सिंह को लोगों की निगाहों से बचने की ऐसी खास जरूरत नहीं थी, जरूरत तो बलराज गोगिया को थी—फिर भी अवतार सिंह ने सावधानीवश स्वयं को भी और अपने साथियों को भी लोगों की निगाहों से बचाये रखना श्रेयस्कर समझा।

अवतार सिंह ने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला—"छः बजने वाले हैं...।"

"जानता हूं।" इमारत की तरफ देखते हुए बोला बलराज गोगिया।

इमारत में करीब तीस फ्लैट बने हुए थे—बीच में एक चौड़ा जीना ऊपर की तरफ जाता साफ नजर आ रहा था।

इमारत के मुख्य गेट पर बलराज गोगिया को कोई भी चौकीदार वगैरह नजर नहीं आया—फिर भी उसकी मौजूदगी को नजरअंदाज करना उसने ठीक नहीं समझा और अपनी बगल में बैठे दो व्यक्तियों की तरफ गर्दन घुमाते हुए बोला—

"तुम दोनों इमारत में जाओ—जाकर देखो चौकीदार है या नहीं—और साथ ही एक चक्कर ऊपर इमारत की छत पर लगाकर आओ—देखो तुम्हें कोई टोकता है या नहीं। अगर कोई कुछ पूछता है तो उसका पता लगाकर आओ वह कौन-से फ्लैट में रहता है।"

"वे दोनों वैन से बाहर निकलने के बजाय अवतार सिंह की तरफ देखने लगे।

"अबे हरामी के पुत्तरों!" अवतार सिंह ने आंखें निकालीं—"इस आपरेशन की कमान बलराज गोगिया की हाथ में है—जो कुछ भी कहता है उसे हुक्म समझकर उसकी तामील करो—मेरी तरफ क्या देख रहे हो?"

हड़बड़ाते हुए दोनों वैन से नीचे उतरे और इमारत की तरफ बढ़ने लगे—जबकि बलराज और अवतार सिंह विण्ड स्क्रीन में से उन दोनों को देख रहे थे।

दोनों इमारत के मेन गेट में दाखिल हुए—इधर-उधर झांका और फिर जीने की सीढ़ियां चढ़ने लगे।

करीब पन्द्रह मिनट बाद वे वापिस बलराज गोगिया के हुजूर में दाखिल हुए और हरी झण्डी दिखा दी—"इमारत में कोई चौकीदार है ही नहीं।"—एक बोला—"और किसी ने हमें ऊपर जाने से टोका भी नहीं—यूं भी इमारत के लगभग सभी दरवाजे बन्द हैं—कोई अन्दर आराम कर रहा है तो किसी के दरवाजे पर ताला झूल रहा है।"

"लगता है रब भी हमारा साथ दे रहा है।" अवतार सिंह बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला।

"हां...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"रब साथ ही तो दे रहा है—अगर रब साथ न होता तो अब तक तो बलराज गोगिया का आखिरी पिण्ड भी मर जाना था खैर!"—वह पुनः उन दोनों से मुखातिब हुआ—"सारा सामान किश्तों में ऊपर पहुंचाना है तुम्हें—बेशक चार चक्कर लगें या दस—लेकिन किसी को शक नहीं होना चाहिए।"

"और अगर कोई भी आदमी गलत हरकत करने के लिए आगे बढ़े तो तुरन्त ही उसका फ्यूज उड़ा देना है तुम्हें...।" अवतार सिंह जरा सख्त लहजे में बोला।

"ज...जी सरदार साहब...।" दोनों एक साथ बोले और वैन में पड़े सामान को उठाने लगे।

❑❑❑

उस वक्त रात का पौने एक बजा था जब वे दोनों वैन पुनः उसी स्थान पर आकर रुकीं जहां पर कि वे सुबह रुकी थीं।

सारा सामान छत पर पहुंचाकर वे सभी यानि बलराज गोगिया एण्ड कम्पनी वहां से चली गई थी—पंचकूला के एक होटल में अवतार सिंह ने सभी को रात का भोजन कराया और फिर नाइट सो दिखाने ले गया...। वक्त पास करने का इससे बढ़िया और कोई तरीका भी तो नहीं था उसके पास।

साढ़े बारह बजे पिक्चर खत्म होई और पन्द्रह मिनट में वे इमारत के पास आकर रुक गये।

बलराज गोगिया ने उन्हीं दोनों व्यक्तियों को फिर दोबारा यह पता करने के लिए भेजा कि वहां चौकीदार है या नहीं?

दोनों गये और जल्द वापस भी लौट आये।

"चौकीदार है...।" आते ही एक बोला—"सीढ़ियों में बैठा बीड़ी पी रहा है।"

बलराज गोगिया ने अवतार सिंह की तरफ देखा और अवतार सिंह ने राजवीर की तरफ...।

"मैं अभी आया...।" तुरन्त ही वैन से बाहर निकलते हुए बोला राजवीर।

मुस्कुराकर अवतार सिंह बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"हत्यायें करने का इसे बहुत पुराना तजुर्बा है...।"

जिस ढंग से उसने बात की थी—एक बार तो बलराज गोगिया भी फुरफुरी लेकर रह गया।

दस मिनट भी नहीं बीते कि राजवीर वापिस आ गया।

"क्या रहा...?" अवतार सिंह बोला।

"बड़ा ही कमजोर दिल का निकला चौकीदार—मुझे देखते ही उसके प्राण निकल गये—कुछ करने की जरूरत भी नहीं पड़ी।" मुस्कुराते हुए बोला राजवीर।

अवतार सिंह ने बलराज गोगिया की तरफ गर्दन घुमाई—"चलें?"

मुस्कुराया बलराज गोगिया और वैन का दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

यह अलग बात थी कि अन्दर से उसका दिल धड़कने लगा था। बेशक उसने बड़ी बेदर्दी से छः कत्ल किये थे वह भी पूरे प्लान के साथ—मगर उस वक्त उसका खून उबाल पर था—उत्तेजना की अवस्था में कत्ल किये थे उसने...। अब भी कत्ल करना होता तो

शायद उसका दिल इतना न धड़कता—लेकिन मामला चोरी का था—चोरी में तजुर्बे के नाम पर वह जीरो था। पहली चोरी थी यह बलराज गोगिया की, सो उसके दिल का धड़कना स्वाभाविक ही था।

किसी तरह अपने धड़कते दिल पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बलराज गोगिया अपने कदम इमारत की तरफ बढ़ाने लगा—उसके साथ-साथ अवतार सिंह भी चल रहा था।

राजवीर को वहीं रहने का हुक्म अवतार सिंह पहले ही दे चुका था, सो उसे छोड़कर बाकी के छहों उन दोनों के पीछे-पीछे चलते इमारत में प्रवेश कर गये।

सामने सीढ़ियों के पास पड़ी चौकीदार की लाश अंधेरे में आंखें फाड़े उनकी तरफ घूरती हुई प्रतीत हो रही थी जैसे लकवे का मारा कोई मरीज, जो हिल-डुल भी नहीं सकता, अपने पास से निकलते हुए लोगों को खा जाने वाली निगाहों से देखते हुए, मन-ही-मन जल रहा हो कि दूसरे लोग क्यों चल-फिर रहे हैं?

चौकीदार की लाश की बगल से होते हुए सभी सीढ़ियां चढ़ते हुए ऊपर छत की तरफ बढ़ने लगे। उसके चढ़ने का अंदाज ऐसा था कि उनके बूटों की जरा भी आवाज नहीं हो रही थी—एक चींटी की तरह दबे पांव सम्भल-सम्भल कर वे ऊपर चढ़ रहे थे।

छत पर पहुंचकर ही बलराज गोगिया तथा अवतार सिंह ने इत्मिनान की सांस ली।

तत्पश्चात् बलराज गोगिया ने छत की मुंडेर से म्यूजियम की छत की तरफ देखा।

छत पर मौजूद दोनों गार्ड खड़े आपस में बातें कर रहे थे—स्टेनगनें उनके कंधों पर लटक रही थीं। आने वाले किसी भी खतरे का आभास तक नहीं था उन्हें...।

बलराज गोगिया ने दोनों गार्डों पर से निगाहें हटाईं और नीचे गली में झांका।

गली में तीन गार्ड हाथों में स्टेनगनें लिए पूरी मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी पूरी कर रहे थे।

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और उन गार्डों पर से निगाहें हटाकर अवतार सिंह की तरफ देखा।

"कोई हथियार भी लाये हो अपने साथ...?" उसने पूछा।

"हां—रिवॉल्वर है मेरे पास।" अवतार रिवॉल्वर निकालकर उसे दिखाते हुए बोला—"तेरे पास भी होगा...।"

"मेरे पास तो है—लेकिन मैं बड़े हथियार की बात कर रहा हूं...।"

"तुमने कहा नहीं था—सो लाने को सूझी ही नहीं मुझे...।"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़कर और बात नहीं कही...। हालांकि इस आपरेशन के दौरान उसे भारी हथियार की सख्त जरूरत पड़ सकती थी जबकि गार्डों के पास स्टेनगनें थीं।

मगर अब कुछ नहीं हो सकता था।

सो उसने अवतार सिंह की तरफ देखते हुए कहा—"खैर जाने दो—और उन दो आदमियों को टैलीस्कोपिक गनें दे दो जो गार्डों को एक ही निशाने में खत्म कर सकें।"

अवतार सिंह के कहने की जरूरत नहीं पड़ी—तुरन्त ही दो व्यक्ति आगे बढ़े और छत पर पड़े सामान में से एक-एक टैलीस्कोपिक गन उठा ली।

बलराज गोगिया ने दोनों के कंधों पर हाथ रखा और समझाते हुए बोला—"इस आपरेशन का दारोमदार सिर्फ तुम लोगों पर है—तुम्हारा निशाना चूकने की देर है कि हम सभी की मौत निश्चित हो जायेगी—हालांकि तुम दोनों अच्छे निशानेबाज हो लेकिन फिर भी मैंने निशाना चूकने की सम्भावना को खत्म करने के लिए टैलीस्कोपिक गन की मांग रखी है अवतार सिंह से—फिर भी तुम्हें एक निशानची की तरह अपने शिकार को एक ही बार में खत्म करना है।"

"आप बेफिक्र रहिए—हमारा निशाना नहीं चूकेगा...।" दोनों ने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

बलराज गोगिया ने दोनों के कंधों से हाथ हटाये और उनके बीच में से निकल आया।

दोनों ने अपनी-अपनी गनों की नाल पर साईलैंसर फिट किये और अवतार सिंह की तरफ देखने लगे, जैसे वे उसकी इजाजत मांग रहे हों।

हल्के-से गर्दन हिलाकर अवतार सिंह नें इजाजत दे दी। उसी के साथ ही दोनों की गनों के बट उनके कंधों में जा लगे।

बलराज गोगिया और अवतार सिंह की निगाहें गार्डों की तरफ घूम गईं, जो कि अभी भी बातें करने में मशगूल थे।

और तभी...!

'पिट...पिट...।' एक साथ दो हल्की-सी आवाजें हुईं और उसी के साथ ही उन्होंने दोनों गार्डों को छत पर एक साथ गिरते देखा।

मानना पड़ा बलराज गोगिया को कि वे दोनों पक्के निशानेबाज थे—चीखने का मौका तक नहीं दिया उन्होंने अपने शिकारों को और मौत की नींद सुला दिया।

अवतार सिंह ने विजयी चमक के साथ बलराज की तरफ

देखा—"क्यों कैसा रहा...?"

"एकदम फर्स्टक्लास...।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"अब जल्दी से सीढ़ी को म्यूजियम की छत पर टिकाओ।"

कहकर बलराज गोगिया पुनः बीच-गली में घूम रहे गार्डों को देखने लगा।

तीनों गार्ड मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी अंजाम दे रहे थे—उनकी ऐसी कोई भी हरकत बलराज गोगिया को नजर नहीं आई जिससे कि आभास हो कि उन्हें कुछ शक हो गया है।

संतुष्ट होकर बलराज गोगिया ने अपनी गर्दन घुमाई और उन दो व्यक्तियों को देखने लगा जो कि सीढ़ी उठाकर उन्हें छत के किनारे की तरफ ला रहे थे।

छत के किनारे आकर उन्होंने सीढ़ी को लम्बा करना शुरू कर दिया—और कुछ ही क्षणों में करीब बीस फीट लम्बी सीढ़ी इमारत की छत पर फैली हुई थी।

"जरा ध्यान से उतारना सीढ़ी को।" बलराज गोगिया ने उन्हें चेतावनी दी—"नीचे घूम रहे गार्डों को जरा भी आभास नहीं होना चाहिए कि ऊपर कुछ हो रहा है।"

दोनों ने सहमति में सिर हिलाया और सीढ़ी को पकड़कर इंच-इंच म्यूजियम की छत की तरफ सरकाने लगे।

इस बीच बलराज गोगिया और अवतार सिंह की निगाहें नीचे घूम रहे गार्डों पर ही टिकी रहीं।

पांच मिनट लग गये सीढ़ी का दूसरा सिरा म्यूजियम की छत तक पहुंचाने में।

और फिर अवतार सिंह के आदेश पर पहले दो व्यक्ति म्यूजियम की छत पर पहुंचे—तब पिछले दो व्यक्ति सारा सामान लेकर उतरने लगे...। केवल एक तख्ता ही रह गया था इमारत की छत पर।

अभी वे सीढ़ी का आधा रास्ता ही तय कर पाये थे कि उस बोरे का मुंह खुल गया जिसमें कि सारा सामान बंधा हुआ था।

नाग की तरह अपनी गर्दन बाहर निकाली रस्सों ने और लम्बे होते हुए नीचे गिरने लगे।

रस्सों को नीचे गिरते देख बलराज गोगिया और अवतार सिंह का कलेजा हलक में आ अटका...। कामयाबी में लिपटी उन्हें अपनी मौत नजर आने लगी।

अवतार सिंह की तो चीख निकलते-निकलते रह गई—बड़ी मुश्किल से वह अपने मुंह से निकलने वाली चीख को रोक पाया था। जबकि बलराज गोगिया—उसे तो अपनी आंखों के सामने फांसी

का फंदा घूमता नजर आने लगा। लेकिन : दोनों शायद बलराज गोगिया और अवतार सिंह से ज्यादा दिल-गुर्दे वाले थे—या वक्त की नजाकत ने उनके जिस्मों में फुर्ती भर दी थी।

बिजली की सी तेजी से उनका एक-एक हाथ रस्सों की तरफ बढ़ा और उन्हें और ज्यादा बाहर नहीं निकलने दिया—और फिर रस्सों को पकड़े हुए ही बोरे की सीढ़ी के बीच दबोचे वे धीरे-धीरे सीढ़ी उतरने लगे।

जब तक वे दोनों सकुशल म्यूजियम की छत तक नहीं पहुंच गये—बलराज गोगिया और अवतार सिंह की जान उनके हलक में ही अटकी रही...। उनके सकुशल पहुंचने के उपरान्त ही दोनों ने एक लम्बी राहतभरी सांस छोड़ी और एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"बाल-बाल बचे...।" बलराज गोगिया का स्वर अभी भी खौफ से भरा हुआ था।

"जरा वापिस पहुंच लूं—उस हरामजादे की खाल में भुस भरवा दूंगा जिसने बोरे का मुंह बंद किया था—हरामजादे ने मरवाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी—अगर रस्से नीचे गिर पड़ते तो खैर नहीं थी।" गुस्से से आगबबूला हो रहा था अवतार सिंह।

"गुस्से को थूको अब—और ठण्डे दिमाग से नीचे उतरो।" बलराज गोगिया बोला।

अवतार सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और नीचे उतरने के लिए इमारत की मुंडेर पर चढ़कर पैर सीढ़ी के पाये पर रख दिया। उसके पीछे-पीछे बलराज गोगिया भी सीढ़ी पर आ गया।

और दोनों सकुशल म्यूजियम की छत पर उतर गये...।

इमारत पर बाकी के बचे दोनों आदमी पूरी मुस्तैदी से खड़े हो गये—किसी भी खतरे की सूचना अपने बॉस तक पहुंचाने के लिए वे दोनों पूरी तरह से तैयार नजर आ रहे थे।

बलराज गोगिया और अवतार सिंह छत के बीचो-बीच बने गुम्बद के समीप आ खड़े हुए और शीशे में से नीचे हॉल में पड़ी पुरातन वस्तुओं को देखने लगे...। बीचो-बीच गुम्बद के ऐन नीचे वह मूर्ति शीशे के घर में कैद पड़ी हुई साफ नजर आ रही थी उन्हें।

कोई ज्यादा फासला नहीं था और उनके और मूर्ति के बीच में—केवल बाईस फीट का फासला था।

लेकिन इस बाईस फीट के फासले में कई अदृश्य मौतें छिपी हुई थीं जिन्हें रौंद कर चकमा देकर उन्हें उस मूर्ति को प्राप्त करना था।

बलराज गोगिया ने बोरे को उलट सारा सामान बाहर निकाल लिया।

टार्च ऑन करके उसने अंधेरे में से ग्लास कटर को ढूंढा और उसे उठाकर अपने साथ आये चार व्यक्तियों की तरफ देखते हुए बोला-"चारों रस्सियां तख्त के कोनों में लगे कुण्डों से बांध दो।"

"तख्त...!" तख्त का नाम सुनकर चौंका अवतार-"तख्त तो इमारत की छत पर पड़ा है।"

सुनकर बलराज गोगिया पहले तो चौंका-फिर उसके चेहरे पर खौफ उभर आया-दिल किया कि अपना सिर पीट ले-अवतार सिंह पर गुस्सा आने के साथ-साथ उसे उसके अण्डर वर्ल्ड के बादशाह होने पर भी हैरानी हो रही थी कि कैसे उस जैसा पागल-बेवकूफ इंसान अण्डरवर्ल्ड पर राज करता होगा?

लेकिन बोला कुछ नहीं वह...। उसके कुछ कहने से पहले ही अवतार सिंह ने दो व्यक्तियों को तुरन्त लाने के लिए बोल दिया था।

जब तक तख्त आता तब तक बलराज गोगिया ग्लास कटर से गुम्बद के एक शीशे का काफी बड़ा भाग काट चुका था-बस अब हल्का-सा धक्का लगाने की जरूरत थी और शीशा अन्दर जा गिरना था।

बलराज गोगिया ने अवतार सिंह की तरफ देखा-"चलो अब जरा शीशे को अन्दर की तरफ धक्का दो।"

"म...मैं...!" स्वर कांप गया अवतार सिंह का-खतरे के अलाम के डर की वजह से ही उसके प्राण सूखने लगे थे...जबकि मैनेजर के कहे अनुसार ऐसा कोई खतरा पेश नहीं आना था। लेकिन खौफ तो खौफ था। बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और गम्भीर स्वर में फुसफुसाया-"देखो अवतार सिंह-मेरी जिन्दगी की यह पहली चोरी है-जबकि तुम्हें तो इसका काफी खासा तजुर्बा है-ऐसी हालत में तुमसे ज्यादा तो मेरी हालत खराब होनी चाहिए थी-मगर यहां तो मामला उल्टा नजर आ रहा है-एक तजुर्बेकार होकर भी तुम्हारी ऐसी-तैसी फिर रही है।"

"न...हीं...म...मैं भला कहां घबरा रहा हूं...!" बलराज गोगिया की बात ने अवतार सिंह के अहम पर चोट की थी-तभी तो जोश में आ गया वह-"मैं अभी धक्का दे देता हूं-बिना खतरा उठाये भी भला इतना बड़ा खजाना प्राप्त किया जा सकता है!"

यह अलग बात थी कि जब अवतार सिंह के शीशों पर हाथ रखा उसका समूचा जिस्म बुरी तरह से कांप उठा था-जिस्म के समस्त मसानों ने एक साथ ढेर सारा पसीना उगल दिया था।

बिल्कुल यही हालत बलराज की भी थी-मगर फिर भी उसने स्वयं पर काफी हद तक काबू पा रखा था। अवतार सिंह के थोड़ा-सा

धक्का लगाते ही हल्की-सी 'कड़क' की आवाज हुई और शीशों का वह भाग तेजी से नीचे हॉल के फर्श की तरफ गिरने लगा।

उसी के साथ ही बलराज गोगिया और अवतार सिंह की रगों में बहता खून जैसे एकदम से चलना बंद हो गया—दिल की धड़कन वहीं की वहीं थम गई...। आंखों में खौफ और मौत की परछाई आकर ठहर गई।

'खनाक्।'

तभी जैसे हॉल में कोई एटम बम फूटा...।

बलराज गोगिया और अवतार सिंह एक साथ उछले और हॉल में झांकने लगे।

शीशा नीचे गिरकर कई टुकड़ों में बंटकर दूर-दूर तक बिखर गया था।

तुरन्त ही बलराज गोगिया हॉल की छत के एक किनारे की तरफ भागा—जबकि अवतार सिंह दूसरे किनारे की तरफ। छत से नीचे झांककर उन्होंने पहरा दे रहे गार्डों पर नजर मारी...।

गार्ड पूरी मुस्तैदी से हाथों में स्टेनगनें लिए घूम रहे थे।

यानि हॉल में शीशा टूटने की आवाज उन्हें सुनाई नहीं दी थी।

इसी प्रकार उन्होंने बाकी के दोनों किनारों से नीचे झांककर तसल्ली की और वापिस गुम्बद के पास आ गये।

"मैनेजर ने ठीक कहा था।" फुसफुसाया अवतार सिंह—"बेजान वस्तुओं के इलैक्ट्रिक रेंज से टकराने से अलार्म नहीं बजता।"

"उसका इकलौता बेटा तुम्हारे कब्जे में है—ऐसे में झूठ कैसे बोल सकता है वो।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"खैर, अब जल्दी से शॉकप्रूफ ड्रेस पहनो।" अपनी ड्रेस उठाते हुए बोला बलराज।

अवतार सिंह ने भी बाकी की बची दूसरी ड्रेस उठाई और उसे पहनने लगा।

इसी बीच बाकी के चारों व्यक्तियों ने तख्त को हॉल में करीब दो फीट नीचे लटका दिया था। किसी अन्य ग्रह के वासी बनकर अवतार सिंह और बलराज धड़कते दिलों से आगे बढ़े और उस लटक रहे तख्त के ऊपर उतर गये। जबकि रस्सों को पकड़े हुए चारों व्यक्तियों में से एक व्यक्ति अन्दर हॉल में प्रयुक्त होने वाला सामान एक-एक करके बलराज गोगिया और अवतार सिंह को पकड़ाने लगा जिन्हें वे बड़े करीने से तख्त पर सजा-सजाकर रखने लगे।

पूरा सामान तख्त पर पहुंचाने के पश्चात् उस व्यक्ति ने पुनः रस्सा पकड़ लिया, जबकि अवतार और बलराज तख्त के दो सिरों पर रस्सों को पकड़कर बैठ गये।

इशारा मिलते ही रस्से इंच-इंच सरकने लगे और उसी के साथ ही वे दोनों उस मौत की तरफ बढ़ने लगे जो कि अदृश्य रूप में नीचे रास्तों में बिछी हुई थी।

इस बात का ख्याल उन्हें भी था—तभी तो उनके जिस्मों में कंपन शुरू हो गया था—वक्त से पहले ही मौत उन्हें अपनी तरफ झपटती महसूस होने लगी थी।

मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

शॉकप्रूफ ड्रेसें पहने होने की वजह से ग्यारह हजार वोल्ट की इलेक्ट्रिक रेंज का उन्हें हल्का-सा झटका भी महसूस नहीं हुआ।

बिल्कुल सकुशल वे उस मंच के पास आकर स्थिर हो गये जिस पर कि भगवान श्री कृष्ण की पांच हजार वर्ष पुरानी वह मूर्ति पड़ी थी जिसे चुराने के लिए वे दोनों नीचे उतरे थे।

तख्त पर बैठे-बैठे ही अवतार सिंह ने ड्रिलिंग मशीन की दोनों तारें बैटरी के साथ कनैक्ट कीं और मशीन उठाकर बलराज गोगिया की तरफ बढ़ा दीं।

मन-ही-मन भगवान को याद कर बलराज गोगिया ने बैटरी का स्विच ऑन कर कर दिया।

'घर्र...घर्र...।' की हल्की आवाज के साथ मशीन के आगे लगा ड्रिल तेजी से घूमने लगा।

अपने धड़कते हुए दिल को मजबूती बख्शी बलराज गोगिया ने और पूरी रफ्तार से घूम रहे ड्रिल को मंच पर लगे शीशों से करीब आठ-नौ इंच नीचे कंकरीट के साथ लगाकर दबाव डाल दिया।

'घर्र...घर्र' की आवाज एकदम से ऐसे शोर में बदल गई जैसे कोई भारी मशीन चल रही हो वहां।

ड्रिल मंच की कंकरीट को कुरेदता हुआ अन्दर जाने लगा—बजरी तथा सीमेंट के छोटे-छोटे टुकड़े बलराज गोगिया और अवतार सिंह की ड्रेसों से टकराकर नीचे गिरने लगे।

अगर उन्होंने शॉक प्रूफ ड्रेस न पहनी होती तो उड़ता हुआ कंकरीट उनके जिस्मों से टकराकर अवश्य ही उन्हें चोट पहुंचा सकता था।

दस मिनट में ही बलराज गोगिया का पूरा जिस्म पसीने से लथपथ हो गया—हाथ बुरी तरह से थक गये—सो उसने ड्रिल को वापिस बाहर खींचा और मशीन अवतार सिंह की तरफ बढ़ा दी।

अब अवतार सिंह काम में जुट गया—जबकि बलराज गोगिया के लिए असहनीय हो गई थी--मगर मजबूरी थी—पोशाक को वह उतार नहीं सकता था—सो उसने अवतार सिंह को और तेजी लाने का इशारा किया।

आधा घण्टा लग गया उन्हें मेहनत करते हुए—मगर उनकी मेहनत बेकार नहीं गई—मंच में उन्होंने इतना सुराख बना डाला था कि हाथ डालकर मूर्ति को बाहर निकाला जा सके।

अवतार सिंह ने मशीन को वापिस तख्त पर रख दिया जबकि बलराज गोगिया ने अपना हाथ बने हुए सुराख में आराम से डाल दिया और बड़ी ही एहतियात से मूर्ति की तरफ बढ़ाने लगा।

उस वक्त अगर अवतार सिंह शॉकप्रूफ ड्रैस से अपना चेहरा न ढंके होता तो साफ नजर आता कि वह किस कदर उत्तेजित हो रहा है।

शीशों के पीछे से झांक रही उसकी आंखों में एक खास किस्म की चमक नाच रही थी।

कुछ ऐसा ही हाल बलराज गोगिया का भी था—मूर्ति की तरफ बढ़ता हाथ बुरी तरह से कांप रहा था उसका। लेकिन फिर भी वह कंपन को रोकने की कोशिश कर रहा था।

जैसे ही बलराज गोगिया ने मूर्ति को पकड़ा—अवतार सिंह का कलेजा उछलकर उसके हलक में आ अटका।

दिल की धड़कन ने जैसे काम करना ही बंद कर दिया...।

बलराज गोगिया ने मूर्ति उठाई और उसे बड़ी ही एहतियात से बिना कोई खरोंच लगाये बाहर ले आया। तभी अवतार सिंह ने ऊपर खड़े आदमियों को रस्से खींचने का इशारा किया।

और वे दोनों ऊपर उठने लगे।

उस मूर्ति के साथ जिसे चुराने के लिए अवतार सिंह कई नाकाम कोशिशें कर रहा था—जबकि बलराज गोगिया की नजर में उस मूर्ति के पेट में वह खजाना था कि उसका बाप उसके नाम वसीयत कर गया था।

ऊपर छत पर आते ही पहले उन्होंनें अपनी ड्रैसों से निजात पाई—तत्पश्चात् अवतार सिंह ने मूर्ति को उठाया और सीढ़ी की तरफ बढ़ने लगा।

पीछे-पीछे बलराज भी चल पड़ा।

अवतार सिंह के साथ-साथ बलराज गोगिया भी कुशलता से इमारत की छत पर आ पहुंचे...।

उनके छत पर पहुंचते ही वहां खड़े दोनों व्यक्ति मूर्ति को देखने के लिए इस कदर उत्तेजित हुए कि वेख्याली में ही सीढ़ी पर से उनकी पकड़ छूट गई। उस वक्त तब बाकी के तीन व्यक्ति भी ऊपर आ चुके थे—बस आखिरी शेष रह गया था।

इधर वे दोनों अवतार सिंह की तरफ झपटे—ऊपर सीढ़ी फिसल गई।

परिणामस्वरूप एक तेज चीख पूरे वातावरण में गूंज गई।

बुरी तरह से उछल पड़े बलराज गोगिया और अवतार सिंह और किनारे की तरफ झपटे।

नीचे झांककर देखा तो उनके हाथों के तोते उड़ गये।

उनका चौथा व्यक्ति सड़क पर मरा पड़ा था—पास ही सीढ़ी गिरी पड़ी थी और गली में गश्त कर रहे तीनों गार्ड ऊपर की तरफ देख रहे थे।

"भागो...!" एकाएक ही बलराज गोगिया चिल्लाया और साथ ही जीने की तरफ छलांग लगा दी।

'धाड़...धाड़' करते हुए वे सीढ़ियां उतरने लगे।

लेकिन जब तक वे नीचे उतरते—गार्ड इमारत के मेन गेट पर पहुंच चुके थे।

पूरा आपरेशन कामयाब हो चुका था—बस आखिरी वक्त उसके साथियों से छोटी-सी गलती हो गई—और उस गलती की वजह से वे चूहों की तरह फंस चुके थे।

'रेट...रेट...रेट...।' गोलियों की बाढ़ सीढ़ियों की तरफ लपकी...।

जीने की चाह ने बलराज गोगिया को जैसे बिजली का बेटा बना दिया था—एक तेज और लम्बी छलांग मारी उसने और आखिरी सीढ़ी को पार कर एक तरफ लुढ़कता चला गया।

बलराज गोगिया के पीछे-पीछे आ रहे अवतार सिंह ने भी उसके पीछे-पीछे छलांग मार दी थी।

लेकिन उन दोनों के पीछे आ रहे बाकी के आदमी इतना फुर्तीलापन नहीं दिखा पाये—उधर वे अभी आठ-दस सीढ़ियां ऊपर थे ऐसे में वे छलांग भी तो नहीं लगा सकते थे।

परिणामस्वरूप—चार व्यक्ति चीखते हुए नीचे गिरे और लुढ़कते हुए आखिरी सीढ़ी पर एक-दूसरे के ऊपर ढेर होने लगे।

शेष बचे दो व्यक्तियों ने अपने हाथ ऊपर उठा लिये...। क्योंकि अब सिवाय आत्मसमर्पण के और कोई रास्ता नहीं था उनके सामने।

भागते हुए अवतार सिंह ने मुड़कर पीछे देखा तो मारे खौफ और गुस्से के उसका चेहरा एकदम से विकृत हो गया। उसके आदमियों का गार्डों के हत्थे चढ़ जाना उसके लिए मुसीबत का कारण बन सकता था—उसके सारे किए-किराये पर पानी फिर सकता था।

एक ही पल में अवतार सिंह ने एक भयानक फैसला कर लिया—और इसी के साथ ही उसके हाथ में उसकी रिवॉल्वर चमक उठी।

'धांय...धांय...।' दो बार आग उगली उसकी रिवॉल्वर ने।
उसी के साथ ही वे दोनों व्यक्ति जो कि हाथ ऊपर उठाये गार्डों की तरफ बढ़ रहे थे—वहीं ढेर हो गये।

कंगारू की तरह छलांग मारी अवतार सिंह ने और इमारत की दीवार पार कर वैन की तरफ भागने लगा...।

बलराज गोगिया तो पहले से ही वैन के करीब पहुंच चुका था।

'रेट...रेट...रेट...।' गोलियों की बाढ़ अवतार सिंह की तरफ लपकी।

मगर सांप की तरह भागते हुए अवतार सिंह का कुछ नहीं बिगड़ा...।

मौत उसके पीछे लगी हुई थी और वह मौत को चकमा देने के लिए वैन की तरफ भाग रहा था।

उसकी यह दौड़ सफल रही...।

वैन का दरवाजा पहले से ही खुला हुआ था सो अवतार सिंह ने वैन के खुले दरवाजे में छलांग मार दी...। उसकी के साथ ही वैन को एक तेज झटका लगा और वैन तोप से छूटे गोले की तरह भाग निकली।

अन्दर बैठे बलराज गोगिया ने अगर तुरन्त ही अवतार सिंह को सम्भाल न लिया होता तो अवश्य ही वह वैन से बाहर गिर पड़ता।

सीट पर सीधा बैठते ही अवतार सिंह ने बलराज गोगिया की तरफ देखा।

दोनों की निगाहें मिलीं जिनसे कामयाबी की चमक हिलोरे मार रही थी—और साथ ही होंठ मुस्कुरा पड़े।

"फतह...!" अवतार का आवेश से भरा स्वर निकला।

प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया की मुस्कान और भी तेज हो गई।

□□□

सैंटर टेबल पर भगवान कृष्ण की वह मूर्ति रखी थी—उसके एक तरफ कुर्सी पर अवतार सिंह बैठा था जबकि दूसरी तरफ बलराज गोगिया। जिसके चेहरे पर थकावट के चिह्न साफ नजर आ रहे थे।

अवतार सिंह के पीछे खड़ा राजवीर ललचाई नजरों से मूर्ति की तरफ देख रहा था।

"कमाल है...!" आवाज में खौफ भरी हुई थी बलराज गोगिया की—"दो घण्टे से मगज मार रहा हूं—मगर अभी तक ऐसा कोई भी रास्ता नजर नहीं आया जिससे मूर्ति के पेट तक पहुंचा जा सके। मूर्ति के हर स्थान से हर हिस्से से ऐसा लगता है कि इसे कहीं से खोला ही नहीं जा सकता।"

मन-ही-मन मुस्कुरा पड़ा अवतार सिंह—जब मूर्ति के पेट तक पहुंचने का रास्ता है ही नहीं तो फिर मिलेगा क्या...खाक...! बलराज गोगिया की बेवकूफी पर उसका ठहाके लगाने को मन कर रहा था।

लेकिन चेहरे पर मन के भावों को उजागर नहीं होने दिया। अवतार सिंह बोला—"पांच हजार वर्ष पुरानी है यह मूर्ति और इसे बनाने वाले ने अवश्य ही कोई ऐसा स्थान बनाया होगा जो कि अब हमारे लिए तिलिस्म बना हुआ है...।"

"लेकिन उस तिलिस्म को तोड़ना बहुत जरूरी है अवतार सिंह—इस मूर्ति...।" उसने मेज पर पड़ी मूर्ति की तरफ इशारा किया—"के पेट में मेरे बाप की दौलत पड़ी है जो कि वह मेरे नाम वसीयत कर गया है—और उस खजाने को पाने के लिए चाहे मुझे मूर्ति का पेट ही क्यों न काटना पड़े, मैं काटूंगा—जब घी सीधी उंगली से न निकले तो उंगली को टेढ़ी कर लेने में कोई हर्ज नहीं।"

"तू ठीक कह रहा है बलराज गोगिया।" अवतार ने उसकी हां में हां मिलाई—"लेकिन इतनी जल्दबाजी करने से हमारा नुकसान हो सकता है—दो अरब की मूर्ति है यह—अगर इसका पेट कट गया तो इसकी कीमत बिल्कुल ही खत्म हो जायेगी।"

"तुम दो अरब का रोना रो रहे हो—जबकि इसके पेट में तो कई अरबों का खजाना दबा हुआ है—उस खजाने को पाने के लिए दो अरब का नुकसान उठा लेने में मैं कोई हर्ज नहीं समझता।"

"मेरा एक दोस्त है जिसे पुरानी वस्तुओं के बारे में अच्छी खासी जानकारी है।"—अवतार सिंह बोला—"मैं उसे यह मूर्ति दिखाऊंगा—हो सकता है वही कोई रास्ता ढूंढ ले जिससे कि इस मूर्ति के पेट में दफ्न खजाने को हासिल करने में कामयाब हो जाऊं।"

"अगर वह भी नाकाम रहा तो...?"

"त...तो...तो फिर तुम अपनी मर्जी कर सकते हो।" अवतार सिंह ने अपना फैसला सुनाया।

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने—"जहां इतने दिन इंतजार किया है—वहां एक दिन और ठहर जाने में कोई हर्ज नहीं समझता मैं।"

❑❑❑

"य...यह आपने क्या कह दिया सरदार साहब—आप तो जानते हैं कि यह मूर्ति ठोस सोने की है और इसमें कोई खजाना भी नहीं—फिर भी आपने बलराज गोगिया को अपने उस काल्पनिक दोस्त के बारे में कह दिया—य...यह तो वक्त बरबाद करने वाली बात हुई।"

राजवीर की बात सुनकर मुस्कुरा पड़ा अवतार सिंह–जमाने भर का जहर जैसे उसके होठों पर आकर स्थिर हो गया।

"तू नहीं समझेगा राजवीर–यह तो बलराज को एक आध दिन का चकमा देने के लिए कहा था मैंने–इतना लम्बा खेल खेल कर जो सफलता हासिल की है मैंने उसे आखिरी वक्त पर व्यर्थ क्यों जाने दूं। फिलहाल तो मैं बलराज गोगिया को किसी किस्म का शक नहीं होने देना चाहता कि हमने उसके साथ एक खेल खेला है–उसे उस काल्पनिक खजाने का लोभ दिया जो कि असल में है ही नहीं।"

"सरदार साहब–अब जब कि बलराज गोगिया की हमें कोई जरूरत ही नहीं रह गई–तो फिर क्यों न उसका काम तमाम कर दिया जाए। इस प्रकार हमें बलराज की तरफ से कोई भी खतरा शेष नहीं रह जाएगा।"

"बलराज हमारे लिए अभी इतना बड़ा खतरा नहीं बना कि हमें उसके खून से अपने हाथ रंगने पड़ें–बस कल सुबह होने की देर है–फिर बलराज गोगिया पुनः अपने पुराने स्थान पर पहुंच जाएगा–और दो-चार रोज बाद उसे फांसी मिल जाएगी–ऐसे में हमें जीव-हत्या करने की क्या जरूरत है–जो कल सरकार करने के लिए तड़प रही है उसे हम क्यों करें? समझा तू...नहीं तू नहीं समझेगा।"
राजवीर निरूत्तर हो गया–होठों को जैसे जबरदस्ती भींच लिया उसने जबकि उसके दिल में अभी भी अनेकों सवाल मंडरा रहे थे–मगर अवतार सिंह से पूछने की हिम्मत नहीं थी उसके पास–आखिर वह उसका बॉस था।

सो चुप रहना ही बेहतर समझा उसने।

□□□

इधर पूरे पुलिस महकमे में घबराहट का माहौल पैदा हुआ पड़ा था।

मूर्ति गायब हो चुकी थी जिसकी हिफाजत के लिए सरकार ने इतने तगड़े बंदोबस्त किये थे कि कोई परिंदा भी मूर्ति के पास तक नहीं फटक सकता था।

मगर चोर ने उन सारे सुरक्षा प्रबंधों को तोड़कर सरकार के मुंह पर एक जबरदस्त तमाचा रसीद दिया था–मूर्ति को उड़ाकर ले गया था वह।

उसी मूर्ति को उस अन्जाने चोर से वापिस हासिल करने के लिए पुलिस के बड़े अफसरों की मीटिंग चल रही थी उस वक्त।

स्वयं डी०जी०पी० साहब उस मीटिंग की अध्यक्षता कर रहे थे।

"भगवान कृष्ण की उस मूर्ति का चोरी होना हमारी

कार्य-कुशलता पर प्रश्नचिह्न लगाने के साथ-साथ हरियाणा सरकार की इज्जत को भी दाग लगा रहा है।" डी०जी०पी० साहब मीटिंग में उपस्थित अफसरों को सम्बोधित कर रहे थे—"बेशक सरकार ने मूर्ति की हिफाजत के लिए बड़े सुरक्षा प्रबंध किये हों—मगर चोर का दिमाग सरकार के दिमाग से कहीं तेज निकला—और उसने अपने तेज दिमाग का भरपूर प्रयोग किया और मूर्ति की चोरी करने में कामयाब हो गया। हरियाणा पुलिस पूरे देश में सबसे अधिक तेज-तर्रार और सख्त समझी जाती है—मगर आज उसकी तेज-तर्रारी पर प्रश्नचिह्न लग गया है—इज्जत दांव पर लग गई है पुलिस की—अगर हमने जल्द से जल्द उस मुलजिम को नहीं ढूंढा तो हरियाणा पुलिस की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। और साथ ही हरियाणा सरकार की साख को भी जबरदस्त धक्का लगेगा—देश की एक बेशकीमती धरोहर विदेशी हाथों में पहुंच जाएगी।

लेकिन हमें अपनी उस धरोहर को, अपनी इज्जत को, अपनी साख को हर हालत में बचाना है—हर हालत में हमें उस चोर के साथ-साथ मूर्ति को वापिस म्यूजियम में पहुंचाना है।"

डी०जी०पी० साहब ने सांस लेने के लिए कुछ क्षणों के लिए अपनी जुबान को आराम दिया फिर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहने लगे—

"यूं तो हरियाणा पुलिस में एक-से-एक जांबाज ऑफिसर मौजूद हैं, जो अपने कर्त्तव्य के लिए कुछ भी कर गुजरने को हरदम तैयार रहते हैं लेकिन पिछले छः महीनों से मैं चण्डीगढ़ के एक इंस्पैक्टर लखनपाल की बड़ी तारीफ सुन रहा हूं—जो कि आज तक अपने किसी भी काम में असफल नहीं हुआ।"

कहकर डी०जी०पी० साहब चुप होकर मीटिंग में उपस्थित अफसरों को देखने लगे।

उनके चुप होते ही पिछली लाईन से ठिगने कद का थुल-थुल जिस्म का इंस्पैक्टर रैंक का एक आदमी उठा। डी०जी०पी० साहब जिसकी तरफ प्रश्नभरी नजरों से देखने लगे।

"इंस्पैक्टर लखन पाल सर।" वह फुटबाल टाईप इंस्पैक्टर सैल्यूट करते हुए बोला।

डी०जी०पी० साहब ने हैरानी से उसकी तरफ देखा—लखन पाल अपने शरीर के हिसाब से किसी भी कोण में नहीं लग रहा था कि उसने अपने हाथ में आया हर केस सफलतापूर्वक निपटाया है।

लेकिन जो रिपोर्ट उनको मिली थी उसे कैसे नकारा जा सकता था।

"इधर आओ।" आदेशभरे स्वर में बोले डी०जी०पी० साहब।

फुटबॉल की तरह लुढ़कता हुआ लखन पाल डी०जी०पी० के सामने आ खड़ा हुआ—उसकी ढलक रही चमड़ी देखकर तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपनी उम्र की गोल्डन जुबली मना चुका हो।

लेकिन उसकी आंखों की चमक उसे उसके शरीर के हिसाब से कहीं ज्यादा जबर दिखा रही थी।

डी०जी०पी० साहब ने लखनपाल का ऊपर से लेकर नीचे तक मुआयना किया।"

"तो तुम हो इंस्पैक्टर लखनपाल?"

"यस सर।" जैसे कोई फटा हुआ वांस खड़खड़ाया हो।

कुछ क्षण तक तो डी०जी०पी० साहब उलझन भरी निगाहों से देखते रहे—फिर सिर को हल्का-सा झटका देकर उन्होंने लखनपाल के कंधे पर हाथ रखा और मुस्कुराते हुए बोले—

"तुम्हारी इतनी सारी तारीफें पहुंची हैं मेरे पास कि मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि मूर्ति के चोर को केवल तुम ही पकड़ सकते हो। इसलिए मैं इस आपरेशन की कमान तुम्हें सौंप रहा हूं—मुझे पूरा विश्वास है कि तुम मेरे विश्वास को कायम रखते हुए जल्द से जल्द मूर्ति चोर को पकड़ लोगे।"

"आपका विश्वास कायम रहेगा सर।" पूरे विश्वास से भरी हुई थी लखनपाल की आवाज।

❑❑❑

लखनपाल ने उन तीनों गार्डों से पूछताछ की जिन्होंने की अवतार सिंह के पांच आदमियों को मार गिराया था—बेशक उनमें से दो अवतार सिंह की गोली का निशांना बने थे—मगर फिर भी उन्हें मारने का श्रेय गार्डों को ही मिला था।

पूछताछ के दौरान लखनपाल को कोई भी ऐसी मालूमात हासिल नहीं हो सकी जिससे कि उसे आगे बढ़ने की राह मालूम हो सके।

अब तो उसे उन लाशों से मालूम हो सकता था—वे लाशें ही उसे आगे बढ़ने का एक रास्ता बता सकती थीं।

पुलिस के फोटोग्राफर को बुलवा करके बाकी लाशों के फोटो उतरवाये और उन्हें देशभर के विभिन्न अखबारों में छपने के लिए भेज दिया।

उसके विचार से अगर सभी लाशें एक ही शहर के आदमियों की निकलीं तो अवश्य ही चोर भी उसी शहर का वासी होना चाहिए—इस प्रकार वह किसी एक शहर को निशाना बनाकर अपनी

तफतीश में तेजी ला सकता था।

इस काम से निपटकर लखनपाल थाने से निकला—जिप्सी में बैठा और पुरातन विभाग के ऑफिस की तरफ रवाना हो गया।

पुरातन विभाग के जनरल मैनेजर मिस्टर कुलकर्णी से लखनपाल की भेंट उसके ऑफिस में ही हो गई।

लखनपाल ने अपना परिचय दिया और साथ ही अपने आने का कारण बताते हुए बोला—"डी०जी०पी० साहब ने खुद मुझे इस काम के लिए नियुक्त किया है।"

"मुझे पता लग चुका है—आप पूछिये क्या पूछना चाहते हैं, आप—?"

लखनपाल एक क्षण के लिए ठिठका—अपनी गालों की लटक रही चमड़ी को थोड़ा खुरचा और मिस्टर कुलकर्णी की तरफ देखते हुए बोला—"मूर्ति की सुरक्षा के लिए किए गए प्रबंध तो जगजाहिर हो चुके हैं—लेकिन चोरी होने से पहले मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में कुछ खास व्यक्तियों को ही जानकारी थी—मैं आपसे उन सभी अधिकारियों, अफसरों या नेताओं की लिस्ट मांगना चाहता हूं जिन्हें कि मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों की मूर्ति की चोरी होने से पहले जानकारी थी।"

"उससे आपको क्या लाभ होगा?" चौंकते हुए बोले मिस्टर कुलकर्णी।

"मिस्टर कुलकर्णी—अगर दिमाग से काम लिया जाए तो दिमाग में पहला प्रश्न यही कुलमुलाएगा कि चोर या चोरों को मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों का पता कैसे लगा? म्यूजियम की छत पर गार्डों की लाशों का मिलना—साथ ही शॉकप्रूफ ड्रेसों का मिलना, तख्त और रस्से तथा नीचे मंच का शीशा न काटकर मंच को ही काटना—क्या यह सारी बातें इस तरफ इशारा नहीं करतीं कि चोर को पहले से ही मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों का पता था।

मिस्टर कुलकर्णी आंखें फाड़े लखनपाल की तरफ देखने लगे।

जबकि उनके दिमाग में उठ रही हैरानी की आंधी को नजरअंदाज करता हुआ लखनपाल अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कह रहा था—"इन सारी बातों से एक बात स्पष्ट होती है कि कोई ऐसा अधिकारी, अफसर या नेता उस चोर से मिला हुआ था जिसे कि मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में मालूम था।"

"आपकी बात सत्य है मिस्टर लखनपाल—मगर मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि जिस-जिस को भी मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों की जानकारी थी वह किसी भी हालत में बिकाऊ नहीं हो सकता।"

"मैं आपके विश्वास की कदर करता हूं—मगर फिर भी मैं

यह दावा अवश्य करूंगा कि चोर अवश्य ही उस व्यक्ति से मिला हुआ है—बेशक वह बिकाऊ न हो—मूर्ति की कीमत ने उसके इरादों को न डगमगाया हो—मगर इंसान की और भी कई ऐसी कमजोरियां होती हैं जिसका अगर किसी गलत व्यक्ति को पता लग जाए तो वह उसका भरपूर फायदा उठा सकता है।"

"ल...लेकिन...।"

"मिस्टर कुलकर्णी!"—लखनपाल का स्वर एकाएक ही थोड़ा सख्त हो गया—"वक्त की बहुत कदर करता हूं मैं—अगर आपसे बहस करने में लग गया तो मेरा सारा दिन यहीं गुजर जाएगा—इसलिए बराए मेहरबानी वह काम कीजिए जो मैंने आपसे कहा है—मुझे उन व्यक्तियों की लिस्ट चाहिए जो कि मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में जानते थे।

लखनपाल के बदले लहजे पर ताव तो बहुत आया मिस्टर कुलकर्णी को—लेकिन बोला कुछ नहीं वह—। बस एक नजर घूर कर देखा उन्होंने लखनपाल की तरफ और एक कागज पर कुछ नाम और पते लिखकर उसकी तरफ बढ़ा दिये।

"लीजिए।" स्वर आवेश से भरा था मिस्टर कुलकर्णी का—"इस कागज पर उन तमाम लोगों के नाम और पते लिखे हैं जिन्हें मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों का पता था—अब बराय मेहरबानी आप ऑफिस से बाहर निकलिये—मुझे भी अपना काम करना है—आपकी तरह मेरा वक्त भी कीमती है।"

मुस्कुराया लखनपाल और वह कागज ले लिया।

मिस्टर कुलकर्णी की बात का जरा भी बुरा नहीं माना उसने। कागज पर लिखे नाम और पतों पर नजर मारी उसने और उठ खड़ा हुआ।

कुल पांच नाम लिखकर दिये थे मिस्टर कुलकर्णी ने उसे, जिनमें से एक नाम तो खुद उनका था तथा एक डी०जी०पी० साहब का।

बाकी बचे तीन व्यक्ति—और इन तीनों से पूछताछ करना कोई ज्यादा भागदौड़ का काम नहीं था लखनपाल के लिए।

पुरातन विभाग के ऑफिस से निकलकर लखनपाल सीधा थाने आ पहुंचा।

वहीं से उसने बारी-बारी से तीनों व्यक्तियों के नम्बर मिलाये। दो नम्बरों पर तो दोनों व्यक्ति उपलब्ध हो गए जबकि तीसरा नम्बर जो कि अशोक गुप्ता का था उपलब्ध नहीं हो पाया। पूछने पर पता लगा कि वह मूर्ति की चोरी से दो दिन पहले ही अपने बेटे के साथ अपनी ससुराल चला गया था। लखनपाल ने कुछ क्षण सोचने की मुद्रा बनाई—फिर फोन को क्रेडिल पर रख थाने से बाहर निकल गया।

अपनी जिप्सी में सवार हुआ और म्यूजियम की तरफ रवाना हो गया। पहुंचते ही पूछताछ शुरू कर दी।

"जिस रोज मैनेजर साहब बाहर गए क्या उस रोज कोई उनसे मिलने आया था—?"

"जी हां साहब—एक लम्बा-सा गोरा-चिट्टा, बिल्ली-सी आंखों वाला आदमी साहब से मिलने आया था—बस उसके जाने के पश्चात् थोड़ी देर बाद मैनेजर साहब भी छुट्टी पर चले गए।"

"कौन था वो व्यक्ति?"

"यह तो मैं नहीं जानता साहब—साहब ने यही कहा था कि उनका कोई खासमखास आने वाला है इसलिए उसे सीधा उनके पास पहुंचाया जाए।" वह गार्ड जो कि मैनेजर अशोक गुप्ता की कोठी पर नौकर था लखनपाल के सवाल का जवाब देते हुए बोला।

"यह तो जानते होंगे कि उन दोनों के बीच क्या बातचीत हुई?"

"नहीं साहब।" बोला गार्ड—"मैं चाय देने अन्दर गया था—तब उनके बीच ऐसी बात चल रही थी जैसे वे दोनों बरसों से एक-दूसरे को जानते हों—लेकिन साहब के चेहरे पर हल्का-सा खौफ जरूर महसूस किया था मैंने। ऐसा लग रहा था जैसे वे कुछ सहमे-सहमे-से हैं।"

"हूं...।" लखनपाल ने सोचपूर्ण मुद्रा में हुंकार भरी—"उस लम्बे—गोरे-चिट्टे बिल्ली-सी आंखों वाले खूबसूरत व्यक्ति के अलावा भी कोई आया था मैनेजर के पास?"

"जी नहीं...!" सोचपूर्ण लहजा अपनाते हुए बोला गार्ड—फिर जैसे कुछ याद आया उसे—"हां साहब—दो दिन पहले दिल्ली दूरदर्शन की टीम जरूर आई थी।"

"क...क्या?" चौंक उठा लखनपाल।

"जी हां साहब—म्यूजियम के ऊपर फिल्म बनाने आई थी वह टीम।" और सब कुछ बताता चला गया गार्ड। उसकी बातें सुनकर लखनपाल की आंखों के आगे से अंधेरा हटता चला गया—फिर भी उसने किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले दिल्ली दूरदर्शन के कार्यालय से पूछताछ कर लेना बेहतर समझा।

"काश!" अफसोस भरा स्वर निकला लखनपाल के मुख से—"अगर किसी तरह से मुझे मालूम पड़ जाए कि मैनेजर और लम्बे व्यक्ति के बीच क्या बातचीत हुई थी तो हो सकता है मैं किसी निष्कर्ष पर पहुंच जाऊं—मैनेजर का उस व्यक्ति के जाने के पश्चात् पंद्रह दिन की छुट्टी पर जाना मुझे संदेह में डाल रहा है। हो सकता है मैं गलत होऊं मगर फिर भी संदेह तो संदेह ही है।"

"सा...हब!" कुछ अटकते हुए गार्ड ने लखनपाल से कहा।

लखनपाल ने घूर कर उसकी तरफ देखा—"कुछ कहना चाहते हो तुम?"

"अगर आप चाहें तो मैनेजर साहब और उस व्यक्ति के बीच हुई बातचीत को सुन सकते हैं।"

उछल पड़ा लखनपाल और हैरतभरी आंखों से गार्ड की तरफ देखने लगा—"क...क्या ऐसा हो सकता है?"

"सरकार ने जहां मूर्ति की सुरक्षा के लिए इतने तगड़े बंदोबस्त किये हैं वहां कुछ ऐसे बंदोबस्त भी किए हैं जिनके बारे में वो लोग भी नहीं जानते, जो मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में जानते हैं।"

"मैं—मैं कुछ समझा नहीं—तुम कहना क्या चाहते हो?"

"बेशक कुछ लोगों को मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों का पता है—लेकिन फिर भी सरकार ने उन पर पूरा भरोसा नहीं किया और उनकी निगरानी के साथ-साथ म्यूजियम की निगरानी के लिए हमें नियुक्त कर दिया—जिसका पता सिवाय हम लोगों के और किसी को भी नहीं, उनको भी नहीं जिन्हें मूर्ति के सुरक्षा प्रबंधों के बारे में पता हैं। हर उस व्यक्ति के पास नौकरों के रूप में दो-दो गार्ड हैं—लेकिन वे गार्ड एक तरह के उनके निगरान हैं—उसी तरह मैं और मेरा एक साथी मैनेजर साहब पर नजर रखे हुए थे। उनकी एक-एक हरकत पर हमारी निगाह होती है।"

"लेकिन तुम तो कह रहे थे कि तुम्हें उन दोनों के बीच हुई बातचीत के बारे में कुछ नहीं मालूम।"

"वो तो मैं अब भी कह रहा हूं।" भेदभरी मुस्कान मुस्कुराया—"हां अगर आप कल भी आते तो मैं आपको अवश्य ही बता देता कि उन दोनों के बीच क्या बात हुई थी।"

"वो कैसे?" हैरानी बढ़ती जा रही थी लखनपाल के चेहरे पर।

"दरअसल हमने कोठी के हर कमरे में ऐसा टेपरिकॉर्डर फिट किया हुआ है जो कमरे में गिरने वाली सुई की आवाज को भी कैद कर लेता है—हर हफ्ते हम उन कैसेटों को सुनते हैं—अगर कोई खबर काम की लगती है तो उसे ऊपर भेज देते हैं—और फिर कैसेटों को खाली करके पुनः टेप पर चढ़ाकर उसी स्थान पर छुपा देते हैं—आज अभी छः दिन हुए हैं और कल सप्ताह पूरा हो जाएगा—मगर चूंकि मूर्ति की चोरी हो चुकी है इसलिए जहां तक मेरा विचार है अब टेपरिकॉर्डर निकाल लेने में कोई हर्ज नहीं।

"तो निकालो न।" उत्तेजना से भरा हुआ लखनपाल का

स्वर—"हो सकता है उस कैसेट से हमें कोई काम की बात मालूम पड़ जाए।"

"म...मैं अभी कैसेट निकालकर लाता हूं।"

"जल्दी जाओ।" जैसे मरा जा रहा था लखनपाल उस कैसेट को सुनने के लिए।

थोड़ी देर बाद जब गार्ड वापस लौटा तो उसके हाथों में एक काफी बड़ा पहिया था जिसमें कि टेप लिपटी हुई थी—वह कैसेट थी।

आखिर हफ्ता भर चलनी थी वह कैसेट, तो उसकी रिबन की लम्बाई भी तो उसी हिसाब से होनी थी।

"आइए साहब!" लखनपाल के समीप आकर बोला गार्ड—"सर्वेन्ट क्वार्टर में चलते हैं, वहीं हमारा टेपरिकॉर्डर है—साथ ही दूसरे गार्ड को भी तो सूचना देनी है मुझे।"

"हां-हां बिल्कुल।" बोला लखनपाल और गार्ड के साथ कमरे से बाहर निकल गया।

जैसे-जैसे लखनपाल कैसेट सुनता जा रहा था—सारी बात उसके दिमाग में स्पष्ट होती जा रही थी—वह यह जान चुका था कि मूर्ति की चोरी उस बलराज ने की है जिसे कि अदालत में फांसी का हुक्म सुनाया जा चुका है—और ऐन उस दिन, जिस दिन उसे फांसी मिलने वाली थी कुछ लोगों की मदद से फरार हो गया—और फरार होते ही उसने अपना पहला कारनामा भी कर दिखाया।

अब तक तो उसने छः कत्ल भी किए थे—अब उसने मूर्ति की चोरी की—एक तरह से सरकार के घर में डाका डाला उसने।

कैसेट पूरी होते ही लखनपाल कुर्सी से खड़ा हुआ।

अब तो उसे कल का इंतजार था जब किसी अखबार के जरिये उसको पता लगाना था कि वे लाशें किस शहर के आदमियों की थीं?

अगर उसे यह पता चल गया तो बहुत जल्द बलराज की गर्दन उसके हाथों में होगी।

❑❑❑

बलराज गोगिया और अवतार सिंह के सामने वह व्यक्ति खड़ा था जिसका परिचय अवतार सिंह को अपना आदमी कहकर कराया था और उसका नाम विजय सिंह बताया था।

फ्रेंचकट दाढ़ी रखे विजय सिंह चश्मा लगाये हुए भगवान कृष्ण की उस मूर्ति को इस प्रकार देख रहा था जैसे उसे पुरानी वस्तुओं की अच्छी खासी जानकारी हो—जबकि असलियत में वह पुरातन कला की ए बी सी भी नहीं जानता था।

काफी देर मूर्ति को उलट-पुलट कर वह उसे परखता रहा फिर मूर्ति को मेज पर रखकर अवतार सिंह की तरफ देखते हुए बोला—"मूर्ति का पेट खोलने के लिए काफी वक्त लग सकता है।"

"कितना वक्त चाहिए तुम्हें?" अवतार सिंह अपनी बाईं आंख दबाते हुए बोला।

उसका इशारा समझ कर हौले से मुस्कुराया विजय सिंह—लेकिन तुरंत ही अपनी मुस्कान को उसने अपने भीतर ही समेट लिया और बोला—"कल सुबह तक मूर्ति का पेट खोल दूंगा मैं।"

जिस विश्वास से उसने बात की थी उसे सुनकर बलराज गोगिया भी विश्वास करने पर मजबूर हो गया कि वह वाकई मूर्ति के पेट में रखे उन हीरों को निकाल लेगा, जिन्हें उसका बाप उसके लिए छोड़ गया है। तभी राजवीर एक हाथ में फोन उठाएं कमरे में प्रविष्ट हुआ—"आपका फोन सरदार साहब!" कहते हुए फोन को उसने अवतार सिंह को दे दिया।

"हैलो—!" फोन को कान से लगाते हुए बोला अवतार सिंह—फिर बुरी तरह से उछल पड़ा और बलराज की तरफ देखने लगा।

उसे अपनी तरफ देखने पर बलराज गोगिया भी चौंका—लेकिन बोला कुछ नहीं वह।

"हां-हां...!" जोर से बोला अवतार सिंह—"क्या कहा चौधरी का पता चल गया है—कहां है वो...ठीक है...तुम तैयार रहना...नहीं-नहीं कोई उसे हाथ भी नहीं लगायेगा—वह बलराज का शिकार है...हां ठीक है...मैं बलराज गोगिया को भेज रहा हूं—तुम चौधरी पर नजर रखना...ठीक है...अभी भेज रहा हूं।"

और फोन को वापिस राजवीर की तरफ बढ़ा दिया। अवतार सिंह ने, जबकि उसकी आंखें बलराज के चेहरे पर टिकी हुई थीं।

"चौधरी को इस चोरी का पता चला गया है—और उसने कई नामी-गिरामी गुण्डों को बुलवा भेज दिया है—साथ ही उसे यह भी पता चल गया है कि वे हीरे मूर्ति में दफ्न हैं—कल सुबह के बाद वह किसी भी वक्त तुम पर हमला कर सकता है—बस उसके बुलाये किराये के गुण्डों के उसके पास पहुंचने की देर हैं।"

"अब कहां है वो?" बलराज गोगिया का लहजा सख्त होता चला गया—आंखों के सामने उसकी बहन की खून से लथपथ और बाप की कुचली हुई लाश घूम गई। प्रतिशोध की ज्वाला फिर से करवट बदल कर उठ खड़ी हुई—आंखों से चिंगारियां फूटने लगीं।

वह भूल गया कि वह एक भगोड़ा है—खून की प्यासी बनी पुलिस उसे जगह-जगह कुत्तों की तरह सूंघ रही है—वह यह भी भूल

गया कि अभी उसे अपने बाप की वसीयत पानी है।

उसकी आंखों के सामने तो बस एक ही चेहरा तैर रहा था—दुष्यन्त चौधरी का चेहरा। बलराज गोगिया की मुखमुद्रा देखकर ही अवतार सिंह समझ गया कि तीर बिल्कुल निशाने पर बैठा है। मन-ही-मन मुस्करा पड़ा वह—लेकिन ऊपर से अपने चेहरे को भावहीन बनाये रखा उसने।

"अपनी कोठी में बैठा है वो?" अवतार बोला—"सिर्फ दो आदमी हैं उसके पास—जबकि मेरे छः आदमी उसकी कोठी पर नजर रखे हुए हैं—बलराज गोगिया... ।" बलराज के मन में उठ रही ज्वाला को और ज्यादा हवा देता हुआ बोला अवतार—"चौधीर तेरा शिकार है अगर तुम कहो तो मैं अभी फोन करके यहीं बैठे हुए ही उसका काम तमाम करवा दूं—लेकिन मेरे ऐसा करने से तुम्हारा प्रतिशोध पूरा नहीं होगा।"

"तुमने ठीक किया अवतार सिंह—जैसे कोई दरिंदा गुर्रा उठा हो—"चौधरी मेरा शिकार है—उसकी मौत पर सिर्फ मेरा हक है—इसलिए खत्म भी उसे मैं ही करूंगा—यूं भी कल तक मुझे कोई काम नहीं—इसलिए इस वक्त का भरपूर फायदा उठाना चाहता हूं मैं।"

"अगर कहो तो मैं तुम्हारे साथ चलूं?"

"नहीं...बलराज गोगिया शिकार खुद करना जानता है। तुम बताओ उसकी कोठी कहां है?"

और अवतार सिंह ने उसे चौधरी की कोठी का पता दिया।

❑❑❑

"हा...हा...हा।"

कमरे में अवतार सिंह के ठहाके गूंज रहे थे—जबकि सामने खड़े राजवीर तथा विजय सिंह के होठों पर केवल मुस्कान तैर रही थी।

"देखा...कैसा बेवकूफ बनाया मैंने बलराज गोगिया को—हा-हा-हा—बेचारा जायेगा तो चौधरी को मारने—मगर वहां चौधरी के बजाय पुलिस उसके स्वागत में खड़ी होगी—हा-हा-हा।"

फिर अपने मुंह के उबल रहे ठहाकों को ब्रेक लगाई अवतार सिंह ने और राजवीर की तरफ देखते हुए बोला—"कहां फोन किया था तूने?"

"चण्डीगढ़ और यहां की सिटी पुलिस को—अब तक तो वह कोठी पुलिस से भर चुकी होगी—बलराज गोगिया का नाम सुनकर ही फोन उठाने वाले अधिकारी का स्वर इस कदर उत्तेजित हो गया

था कि ऐसा महसूस होता था जैसे बीस हजार रुपयों के लिए मरा जो रहा हो वह।"

"शाबास!"

"एक खबर और भी पता लगी है सरदार साहब।" राजवीर रहस्यभरे स्वर में बोला।

"क्या?"

"चण्डीगढ़ पुलिस को यह मालूम हो गया है कि मूर्ति बलराज ने चुराई है। कुछ क्षण पहले ही मुझे फोन पर यह सूचना मिली थी—और साथ ही यह भी पता चला है कि हरियाणा पुलिस का एक इंस्पैक्टर भी यहां आ पहुंचा है।"

"क...क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा अवतार सिंह—उसके चेहरे की रंगत एकदम से पीली पड़ गई।

"ओह!" उसके मुंह से निकला—"यह तो बहुत बुरा हुआ—अब पुलिस पहले उससे मूर्ति के बारे में पूछेगी—और बलराज गोगिया तो मेरा नाम लेने में एक क्षण भी नहीं लगायेगा—नहीं...!" एकदम उठ खड़ा हुआ वह अपने स्थान से—"अब बलराज गोगिया का जिंदा पुलिस के हाथ लगना हमारे लिए खतरनाक हो सकता है—उसे कोठी तक नहीं पहुंचने देना—बीच रास्ते में ही खत्म कर दो उसे।" किसी खूंखार भेड़िये की तरह गुर्रा पड़ा अवतार सिंह—"जाओ!"

राजवीर तुरंत ही कमरे के बाहर निकल गया।

❑❑❑

अवतार सिंह से मिली कार में बैठा हुआ बलराज गोगिया अपने लक्ष्य की तरफ जा रहा था—और उसका लक्ष्य था वह कोठी जिसका पता अवतार सिंह ने यह कहकर उसे दिया था कि उस कोठी में दुष्यन्त चौधरी बैठा है। दांतों पर दांत जमाये वह पल-प्रति पल एक्सीलेटर पर पैर को दबाते बढ़ाता जा रहा था। जल्द-से-जल्द वह अपने आखिरी शिकार को इस दुनिया से फना कर देना चाहता था।

अपने शिकार को खत्म करने की धुन उस पर इस कदर सवार थी कि उसे यह तक नहीं पता चला कि खतरा उसके सिर पर आ पहुंचा है। किसी और को मारने के बजाय खुद अपनी जान के लाले पड़ने वाले हैं उसे।

'धड़ाक!' एक तेज आवाज हुई और बलराज गोगिया को एक जबरदस्त झटका लगा—उसका सिर सामने विण्ड स्क्रीन से टकराते-टकराते बचा।

कार एक बार तो बुरी तरह से डगमगाई—लेकिन बलराज ने तुरन्त ही स्टेयरिंग पर अपना कन्ट्रोल कायम कर लिया। झटके से

उसने अपना पैर एक्सीलेटर से हटाया और ब्रेक पर जमा दिया।

और जैसे ही उसकी कार रुकी!

'रेट...रेट...रेट।' पीछे से गोलियों की जैसे बरसात शुरू हो गई—खनाक से पिछला शीशा टूट कर कई टुकड़ों में बदल गया।

बिजली की सी फुर्ती से बलराज गोगिया ने स्वयं को सीट के नीचे गिरा लिया—उसी के साथ ही उसका रिवॉल्वर उसके हाथ में चमकने लगा।

"पुलिस...!" उसके दिमाग में बस यही एक नाम गूंजा—। और उसी के साथ ही उसकी तमाम नसें तनती चली गईं—रिवॉल्वर पर पंजे की पकड़ सख्त होती चली गई।

पुलिस से बचकर निकल भागने का फैसला कर लिया था उसने।

अभी बलराज कोई एक्शन करने की सोच ही रहा था कि तभी दोनों खिड़कियों में दो-दो स्टेनगनों की नालें झांकने लगीं—और उन स्टेनगनों के पीछे खड़े अलग-अलग चेहरों में से एक चेहरे को देखकर उसका दिल उछलकर उसके हलक में आ अटका।

"त...तुम...!" फंसा स्वर निकला बलराज गोगिया के होठों से।

"हां...मैं...।" होठों पर जहरीली मुस्कान बिखेरे राजवीर किसी दरिंदे की तरह गुर्राया।

"ल...लेकिन तुम तो...।"

"सरदार साहब ने तुम्हें मारने को हुक्म सुनाया है—और मैं उनके हुक्म की तामील कर रहा हूं।"

बलराज समझ गया कि बहुत बड़ा धोखा खा गया है वह—। अवतार सिंह के दिल में उस खजाने के लिए बेईमानी आ गई है—पूरा-का-पूरा खजाना वह अकेला ही हड़पना चाहता है।

और वही काम किया उसने।

अपनी आंखें बन्द कर लीं—बस अब उसे इंतजार था तो सिर्फ स्टेनगनों के ट्रिगर दबने का और तभी!

'धांय-धांय-धांय-धांय—।'

एक-के-बाद-एक लगातार चार फायर हुए। उसी के साथ ही बलराज गोगिया ने चार अलग-अलग आवाजों में चार चीखें सुनीं जिनमें से एक आवाज उसकी जानी-पहचानी थी।

वह आवाज राजवीर की थी।

चौंक कर बलराज गोगिया ने अपनी आंखें खोलीं तो हैरत की परछाइयां उसके चेहरे पर नाचने लगीं।

चारों स्टेनगनें जो कि उस पर तनी हुई थीं गायब हो चुकी

थीं। किसी प्रकार अपनी हैरत पर काबू पाया उसने और बिजली की सी तेजी से उठकर कार से बाहर आ गया।

जिस दरवाजे से वह कार से बाहर निकला था—उस दरवाजे के बाहर उसे राजवीर और एक अन्य व्यक्ति की लाश के दर्शन हुए—। गोलियां उनके माथे पर लगी थीं—तभी तो सिर्फ एक ही गोली में उनका राम नाम सत्य हो गया था।

अपने उस मसीहा को देखने के लिए बलराज ने अपनी निगाहें इधर-उधर घुमाईं, जिसने ऐन वक्त पर आकर उसकी जान बचाई थी।

और जिस शख्स पर उसकी निगाहें टिकीं—वह उसके लिए नितांत अजनबी था।

ठिगने कद का वह लड़का जिसने हाथ में रिवॉल्वर पकड़ी हुई थी उसकी तरफ बढ़ रहा था।

वह सेर भर का छोकरा और कोई नहीं राघव था।

"त...तुमने इन्हें मारा...?" उसके पास आते ही बलराज गोगिया हैरानी से उसकी तरफ देखते हुए बोला।

"कोई शक...?" मुस्कुराया राघव।

"न...हीं...म...मैं तो...।"

"फिलहाल तो तुम यहां से निकलने की सोचो बलराज गोगिया, जो कुछ भी पूछना है बाद में पूछना, ज्यादा देर तक यहां खड़ा होना हमारे लिए खतरे का सबब बन सकता है।"

राघव के मुख से अपना नाम सुनकर बुरी तरह से चौंका बलराज गोगिया लेकिन शीघ्र ही उसने स्वयं पर काबू पाया और राघव को साथ लिये तेजी से एक तरफ चल पड़ा।

लगभग पंद्रह मिनट पैदल चलने के उपरान्त आखिर राघव बलराज गोगिया को लेकर एक संकरी गली में प्रविष्ट हो गया—गली के किनारों पर बनी नालियों के बाहर लगे गंदगी के ढेरों से उठ रही बदबू से बलराज की जैसे नाक फटने लगी थी, लेकिन उसे उस बदबू को बर्दाश्त करना था, सो किया।

सांस रोकने की कोशिश करता हुआ व गंदगी से बचने की कोशिश करता राघव के पीछे-पीछे चलता हुआ आगे बढ़ रहा था।

उस सेर भर के लड़के की फुर्ती देखकर मन-ही-मन बलराज गोगिया हैरान हुए बिना नहीं रह सका था—लेकिन अपनी हैरानी को उसने होठों पर लाने की जरूरत नहीं समझी थी, क्योंकि खुद उसके दिमाग में कई ऐसे प्रश्न कुलबुला रहे थे कि कुछ और पूछने को हो रहा था उससे।

करीब सौ कदम उस गंदी गली में चलने के उपरान्त आखिर

राघव एक बंद दरवाजे के सामने आकर ठिठक गया।

दरवाजे पर ताला झूल रहा था।

राघव ने मुस्कुराकर बलराज गोगिया की तरफ देखा और फिर जेब से चाबी निकालकर ताला खोला, कुण्डा खोला और अन्दर प्रवेश कर गया।

"आ जाओ।"

राघव की आवाज सुनकर बलराज गोगिया भी उसके पीछे-पीछे अन्दर कमरे में आ गया।

"बैठो–।" एक मैले-से बिस्तर की तरफ इशारा किया राघव ने।

बिस्तर के मैला होने पर बलराज गोगिया ने कोई नखरा नहीं दिखाया और उस पर बैठ गया। जबकि राघव उछल कर पास ही पड़े एक स्टूल पर बैठ गया।

"चाय-पानी तो बाद में पूछूंगा मैं तुम्हें–पहले तुम अन्दर दिमाग में उठ रहे प्रश्नों को कहकर अपने दिमाग के बोझ को हल्का कर लो–पूछो–क्या पूछना चाहते हो तुम?"

"तुम खुद ही बता दो सब कुछ कि तुम कौन हो–? मुझे क्यों बचाया–? तुम मुझे कैसे जानते हो वगैरह-वगैरह–।" बलराज गोगिया बोला–"तुम्हारे सब कुछ बता चुकने के पश्चात् अगर कोई प्रश्न शेष बच रहा तो मैं पूछ लूंगा।"

"ठीक है–" मुस्कुराया राघव–"मेरा नाम राघव है और मैं दुष्यन्त चौधरी के पास बतौर उसके बॉडीगार्ड के रूप में नौकरी करता था...।"

"क...क्या–!" उछल पड़ा बलराज गोगिया।

"अभी से इतना मत उछलो बलराज गोगिया–अभी तो तुम्हें एक बार नहीं बल्कि कई बार कई-कई फीट ऊंचा उछलना पड़ेगा–इतनी छोटी-सी बात पर उछलने की कोशिश मत करो।"

बलराज गोगिया हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा–जबकि राघव अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला–

"मैं एक पेशेवर कातिल हूं–लोगों को यमलोक पहुंचाने के बड़े-बड़े ठेके लिए हैं मैंने–दुष्यन्त चौधरी ने तेरे कत्ल का ठेका मुझे दिया–पूरे दो लाख में–और पेशगी के तौर पर एक लाख रुपया नकद मेरी हथेली पर रख दिया।"

बलराज गोगिया हैरानी से उसकी तरफ देख रहा था–जिस शख्स ने उसके कत्ल का ठेका लिया था उसी ने उसका जीवन बचाया–कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसके।

"शायद अब तक मैं तुम्हारा कत्ल कर चुका होता–" राघव

आगे बोला—"लेकिन तुम्हारी मां—सौतेली मां पुष्पा से मुझे जो मालूमात हासिल हुई उसे जानकर मैंने तुम्हारे कत्ल का इरादा स्थगित कर दिया।"

"त...तुम...पुष्पा से मिले थे—?"

"मैं तो उसका बहुत पुराना ग्राहक था—कई बार वह मेरे बिस्तर की रौनक बढ़ा चुकी है—लेकिन—अब वह इस लायक नहीं कि किसी की रात रंगीन कर सके—क्योंकि मैंने उसे वहां—" राघव ने अपनी उंगली छत की तरफ उठाई—"पहुंचा दिया है।"

"क...क्या—!...त...तुमने पुष्पा को मार डाला।" बलराज गोगिया का चेहरा एकदम तमतमा गया—आंखों में ज्वालामुखी के शोले आकर एकत्र होने लगे।

दिल किया कि अभी उठे और उस छटांक भर के छोकरे की गर्दन दबा दे।

वह शायद ऐसा कर भी देता—लेकिन उससे पहले ही राघव बोल पड़ा—"मैं जानता हूं इस वक्त तुम्हारे दिल पर क्या गुजर रही है। तुम्हारा दिल यही कह रहा होगा कि तुम मुझे खत्म कर दो—लेकिन जब तुम्हें पूरी बात मालूम होगी तो तुम मुझे शाबासी देते हुए कहोगे कि शाबास राघव—उस हरामजादी को मारकर बहुत अच्छा किया।"

बलराज गोगिया ने किसी प्रकार अपने अंदर उठ रहे तूफान पर काबू पाया और गुर्राते हुए बोला—"क्या कहना चाहते हो तुम?"

"बलराज गोगिया!" स्वर को गम्भीर बनाते हुए बोला राघव—"तुम्हें अभी तक यह नहीं मालूम पड़ा कि तुम्हारे साथ एक बहुत बड़ा खेल खेला जा रहा है—एक मोहरे की तरह तुम्हें आगे रखकर चालें चली जा रही हैं—और उसी नचाने वाले के इशारों पर चलते हुए तुमने जो किला फतह किया है उस पर सिर्फ उसी का हक है—तुम तो केवल एक मोहरे हो जिसे खेलने वाले ने जी जीत जाने के उपरांत मोहरा डिब्बे में बंद कर दिया।"

"साफ-साफ समझाओ—क्या कहना चाहते हो?"

एक लम्बी सांस छोड़ी राघव ने और बोला—"जिस दुष्यन्त चौधरी की जान के दुश्मन बने हुए हो तुम—वह अवतार सिंह का आदमी है।"

"न...हीं।" इतनी जोर से चौंका बलराज गोगिया कि चारपाई पर खड़ा हो गया।

"और ना ही दुष्यन्त चौधरी के पास कोई हीरे-वीरे हैं—यह सब तुम्हें अपनी चाल में फंसाने के लिए उड़ाया गया था।"

"त...तो फिर वो सब...?"

"और न ही तुम्हारा बाप तुम्हारे लिए कोई वसीयत छोड़ गया

है। तुम्हारे खिलाफ अवतार सिंह ने बहुत गहरा षड्यन्त्र रचा था जिसमें चौधरी के साथ-साथ पुष्पा और बलबीर पाल शाह भी शामिल थे—तुम्हें खजाने का लालच देकर अवतार सिंह उस मूर्ति को प्राप्त करना चाहता था जो कि उसने कर ली...।"

सब कुछ बताता चला गया राघव उसे, जो कि उसे पुष्पा से पता चला था।

और बलराज गोगिया—वह आंखें फाड़े राघव की तरफ देख रहा था—राघव की बातों पर जैसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था उसे।

"लगता है तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं आया?"

"त...तुमने बातें ही ऐसी सुनाई कि यकीन करने को दिल ही नहीं मान रहा।"

"तो फिर जाओ चौधरी की कोठी पर—वहां पुलिस की पूरी बटालियन तुम्हारे स्वागत के लिए तुम्हारा इंतजार कर रही है—तब तुम्हें यकीन आ जाएगा कि मैंने तुम्हें सही कहा था—और मेरी बातों को वह घटना भी सच्चा साबित करती है जो कि अभी कुछ देर पहले तुम्हारे साथ घटी थी—अगर मैं ठीक वक्त पर वहां न पहुंच जाता तो अब तक तुम ऊपर पहुंचकर पुष्पा से उसका हालचाल पूछ रहे होते—अगर मैं गलत नहीं कह रहा तो वे आदमी जो तुम्हें मारने आये थे अवश्य ही अवतार सिंह के होने चाहिएं।"

"हां...हां...।" बलराज गोगिया की आवाज जैसे किसी गहरे कुएं से आई "व...वे अवतार के ही आदमी थे।"

"फिर भी अगर तुम्हें विश्वास नहीं आ रहा तो चौधरी की कोठी पर जाकर तसल्ली कर सकते हो।"

"नहीं—" स्वर बदल गया बलराज गोगिया का—"मुझे तुम्हारी बातों पर पूरा यकीन हो गया है—जिस अंधेरे को मैं अब तक रोशनी समझता रहा—वह दरअसल अंधेरा ही था—रोशनी तो अब दिखाई दी है, मुझे जेल से फरार करवाना और फिर दुष्यन्त चौधरी को तब न मारने की सलाह देना—मुझे बातों के जाल में फंसाकर मेरे घर भेजना जहां पर कि मुझे पुष्पा की तस्वीर मिली और बलवीर पाल शाह का पता मिला—यह काम तो अवतार सिंह खुद कर सकता था—जबकि उसने सवयं को बेवकूफ दर्शाते हुए मुझे बेवकूफ बनाया—मुझे मोहरा बनाकर चालें चलीं उसने—और फिर जब मूर्ति की चोरी हो गई—मूर्ति अवतार के पास पहुंच गई तो उसने मुझे चौधरी को मारने की सलाह दे दी—ताकि मैं चौधरी को मारने जाऊं और पुलिस के हाथों पकड़ा जाऊं और अपने पुराने ठीये पर पहुंच जाऊं।" कहते-कहते बलराज गोगिया की आवाज में भयानकता का सुर भी

आने लगा था—"मगर अब...अब ऐसा नहीं होगा—अवतार सिंह—तेरी दुश्मनी मेरे साथ नई है—लेकिन मेरे बाप का भी हत्यारा है तू—मेरी बहन के साथ बलात्कार कर उसकी हत्या भी तेरे इशारे से ही हुई—अब चौधरी के साथ-साथ मुझे तुझसे भी अपना इंतकाम लेना है अवतार सिंह—और तुझसे जो इंतकाम मैं लूंगा—वह इंतकाम शायद मेरी जिंदगी का सबसे भयानक इंतकाम होगा।"

"इसके साथ-साथ तुम्हें उस मूर्ति को भी अवतार सिंह से हासिल करना है बलराज गोगिया जिस पर कि सिर्फ तुम्हारा ही हक बनता है—इसी मूर्ति के लिए ही तो अवतार सिंह ने तुम्हारे बाप की हत्या की थी—तुम्हारी बहन की इज्जत को उन दरिंदों ने चीथड़े-चीथड़े कर डाला था।"

"हां..." गुर्राया बलराज गोगिया—"अब वह मूर्ति अवतार के पास नहीं, बल्कि मेरे पास होगी—और साथ ही उन दोनों हरामजादों की जिन्दगी की डोर भी मैं खुद काटूंगा—लेकिन...।" एकाएक ही कुछ याद आया उसे—"तुमने तो मुझे मारने का ठेका लिया था—फिर मुझे बचाया क्यों?" राघव की तरफ घूरते हुए बोला बलराज गोगिया—"जबकि तुम्हें तो मुझे मार देना चाहिए था।"

राघव के होठों पर एक अर्थभरी मुस्कान थिरक उठी—"जरूर मार देता मैं तुम्हें—अगर मुझे पुष्पा से सारी बात को पता न चल जाता तो—उस स्थिति में मेरी नजर में तुम मेरे लिए दो लाख की हुण्डी थे—लेकिन जब मुझे तुम्हारी सारी कहानी का और तुम्हारे खिलाफ खेले जाने वाले खेल का पता चला तो मैं समझ गया कि बाकी के एक लाख रुपये मुझे नहीं मिलेंगे। एक कारण तो यह था तुम्हारी हत्या न करने का दूसरा करण तुम्हारी कहानी—मेरी निगाह में तुमने छः कत्ल करके कोई गुनाह नहीं था। जब उन हराम की औलादों ने तुम्हारे बाप की हत्या की—क्यों नहीं पकड़ा पुलिस ने उन्हें जबकि वह एक मौत की नहीं बल्कि सौ मौतों की सजा के हकदार थे। किसी बेबस लाचार औरत के साथ बलात्कार को मैं सबसे बड़ा जुर्म समझता हूं—तुमने तो फिर भी उन्हें आसान मौत बख्शी—तीसरा कारण मैं एक ऐसे दोस्त की तलाश में था जो मेरे दुःख-सुख को अपना दुःख-सुख समझें—मेरी दोस्ती को समझे—पुष्पा की बातों से मुझे लगा कि तुममें दोस्त बनने की, दोस्ती निभाने की वे सभी खासियतें हो सकती हैं—और आखिरी और सबसे बड़ा कारण यह था कि जिसकी जिन्दगी स्वयं भगवान ने नहीं छीनी ऐन फांसी के फंदे के नीचे से जिसके दुश्मनों ने उसे बचा लिया—उसे भला मैं कैसे मार सकता हूं।"

बलराज गोगिया ने उसकी बातों को...उसके जज्बातों को गौर

से सुना—एक पेशेवर कातिल के पीछे उसे एक-एक इंसान की शक्ल नजर आ रही थी जो कि वास्तव में इंसान था—जबकि समाज में इंसानी शक्ल का मुखौटा लगाए उसे अधिकतर भेड़िये ही नजर आये थे।

बलराज गोगिया ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और राघव के नन्हें हाथों को अपने हाथों में ले लिया—"बलराज गोगिया अपनी जुबान का पक्का है—वह जो भी वायदा करता है उसे हर हालत में पूरा करता है—मैं तुम्हारी दोस्ती कबूल करता हूं राघव—जिन्दगी के किसी भी मोड़ पर तुम मुझसे बढ़कर और किसी दोस्त को नहीं पाओगे—तुम्हारे सीने की तरफ बढ़ने वाली गोली मैं अपने सीने की तरफ मोड़ लूंगा।" कहते-कहते बलराज गोगिया का लहजा भावुकता से भर गया था—"जिन्दगी के जो भी पल बचे हैं उन पलों में मैं अपनी दोस्ती में दाग नहीं लगने दूंगा। सोच-विचार में समय नहीं गवाऊंगा।"

कहते हुए राघव ने बलराज का हाथ जोर से भींच लिया।

दो ऐसे व्यक्तियों का, ऐसी शख्सियतों का मिलन हो रहा था जिनमें से एक दुर्दांत हत्यारा था तो दूसरा मौत की सजा पाया जेल से फरार मुजरिम।

दोनों की ही जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं था कि कब मौत के क्रूर पंजे उन्हें जकड़ लें—लेकिन जिन्दगी रहने तक उन्होंने दोस्ती निभाने की कसम उठा ली थी।

कुछ देर तक कमरे का वातावरण बोझिल-सा बना रहा—आखिर राघव छलांग मारकर स्टूल से नीचे उतरा और बोला—"तुम बैठो—मैं चाय-पानी का बंदोबस्त करके आता हूं।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस हल्के से मुस्कुरा दिया।

प्रत्युत्तर में राघव भी मुस्कुराया और कमरे से बाहर निकलकर किचन की तरफ बढ़ गया।

"अब बताओ—"चाय का खाली कप नीचे फर्श पर रखते हुए पूछा राघव ने—"क्या इरादा है?"

"तुम क्या कहते हो?" बलराज गोगिया ने उसकी तरफ देखा।

"मेरा तो वही इरादा है जो तुम्हारा इरादा है।" राघव मुस्कुराया।

"और मेरा इरादा अवतार सिंह और चौधरी की लाशें बिछाने के साथ-साथ उस मूर्ति को प्राप्त करना है जिस पर असल हक मेरा ही बनता है—क्योंकि वह मूर्ति एक तरह से मैंने ही चुराई है—अवतार सिंह की तो सिर्फ पैसा और ताकत ही खर्च हुई है—मगर उस चोरी के पीछे प्लान तो मेरा ही था।"

"और पुलिस–उसके बारे में क्या कहते हो तुम?" बोला राघव–"पुलिस को यह पता लग ही चुका है कि तुम इस शहर में हो–और वह शिकारी कुत्तों की तरह जगह-जगह तुम्हें सूंघ रही होगी।"

"फिर भी मेरा इरादा इसी शहर में रहने का है–जब तक मैं अवतार सिंह और चौधरी को खत्म नहीं करूंगा यह शहर नहीं छोड़ूंगा।"

"ठीक है–"एक लम्बी सांस छोड़ी राघव ने–"जैसी तुम्हारी मर्जी।" कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

"तुम कहां चले?" उसे खड़ा होते देख चौंका बलराज गोगिया।

"तुम्हें जानबूझकर खतरे में नहीं धकेल सकता मैं–पुलिस और अवतार सिंह के आदमी तुम्हारी तलाश में हैं, इसलिए पहले मैं बाहर जाऊंगा–जाकर पता करूंगा कि अवतार और चौधरी कहां मिलेंगे–उसके पश्चात् ही हम उस पर हमला करने का प्लान बनायेंगे।"

ठीक ही तो कह रहा था राघव–सो बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला।

"अच्छा!" मुस्कुराया राघव–"मैं चलता हूं–पास वाला कमरा किचन बना रखा है मैंने–भूख लगे तो स्वयं ही कुछ बना कर खा लेना।"

"अपना ख्याल रखना।"

"मेरी फिक्र छोड़ो तुम–राघव पर हाथ डालने से पहले अवतार सिंह को सौ जन्म लेने पड़ेंगे।" मुस्कुराकर कहा राघव ने और कमरे से बाहर निकल गया।

❑❑❑

"क्या कहा!" बुरी तरह से चीख उठा अवतार सिंह–"राजवीर मारा गया?"

"हां सरदार साहब–!" उसके सामने खड़े उसके गुलाम जरनैल सिंह ने कहा–"बलराज गोगिया ने राजवीर के साथ-साथ उसके साथ गए तीनों व्यक्तियों को मार डाला और स्वयं फरार हो गया।"

"ओह–!" अवतार सिंह के मुंह से निकला–"यह तो बहुत बुरा हुआ–बलराज गोगिया का आजाद रहना हमारे लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकता है–और इस हालत में तो वह और भी ज्यादा खूंखार साबित होगा जब उसे पता चलेगा कि हम उसके दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन हैं–और इसका पता तो उसे चल ही चुका है–राजवीर और अन्य तीन का कत्ल करना इस बात की तरफ इंगित

करता है कि उसने जंग का बिगुल बजा दिया है।"

"मेरे लिए क्या हुक्म है सरदार साहब?" जरनैल सिंह बोला।

"पूरे लुधियाना में अपने आदमी फैला दो—जहां भी वह हरामजादा नजर आये गोली से उड़ा दो उसे—अब उसका ज्यादा देर तक जिन्दा रहना हमारे लिए बहुत बड़ा खतरा बन सकता है। पुलिस तो पता नहीं कब उसे पकड़ पायेगी अब—उससे पहले तुम्हें उसे खत्म कर देना है।"

"जी...बहुत अच्छा सरदार साहब।"

"और हां...", अवतार सिंह कुछ याद करते हुए बोला—"होटल चाँद में अपने नाम से एक केबिन बुक करवा लेना—अमेरिका से राबर्ट आ रहा है—शाम सात बजे उससे मीटिंग है मेरी।"

"जी...करवा दूंगा।"

"ध्यान रहे—" अवतार सिंह की आवाज में एकाएक ही गुर्राहट उभर आई—"तेरे सिवा किसी और को इस मीटिंग का पता नहीं चलना चाहिए।"

जरनैल सिंह का चेहरा एक क्षण के लिए पीला पड़ा—लेकिन शीघ्र ही उसने स्वयं को सम्भाल लिया।

"अ—आप बेफिक्र रहें सरदार साहब—किसी को कुछ नहीं पता चलेगा।"

"गुड..." मुस्कुराया अवतार सिंह—"अब जा—और जल्द-से-जल्द मुझे बलराज गोगिया की मौत की खबर लाकर सुना—अगर तूने ऐसा कमाल कर दिखाया तो राजवीर की जगह मैं तुझे सौंप दूंगा।"

खुशी से दिल धड़क उठा जरनैल सिंह का—"म—मैं बहुत जल्द बलराज की लाश आपके कदमों में ला पटकूंगा सरदार साहब।" पूरे जोश से भरा हुआ था उसका स्वर।

"शाबास—जा...इसी जोश के साथ अपने काम पर लग जा—जा अब।"

और जरनैल सिंह तुरंत ही कमरे से बाहर निकल गया।

❑❑❑

पांच बज गए—मगर अभी तक बलराज गोगिया चौधरी की कोठी पर नहीं पहुंचा था—पहुंचना तो दूर वह कोठी के आस-पास भी नहीं फटका था।

और लखनपाल—वह तो बलराज गोगिया की राहों में आंखें बिछाए इस तरह उसका इंतजार कर रहा था जैसे सुहागसेज पर बैठी कोई दुल्हन अपने पति का इंतजार कर रही होती है—और पति सारी रात उसके पास फटका तक न हो—इस हालत में जो हालत उस

दुल्हन की होती है—वही हाल लखनपाल का हो रहा था।

यह पता लगते ही वे पांचों लाशें लुधियाना के आदमियों की थीं, लखनपाल लुधियाना आ पहुंचा। यहां आते ही एक बहुत बड़ी खुशखबरी मिली उसे। सिटी थाने में प्रवेश करते ही उसे मालूम हुआ कि कोई गुमनाम फोन आया है जिसमें यह कहा गया है कि बलराज गोगिया दुष्यन्त चौधरी को कत्ल करने आ रहा है—यही खबर उसे वारयलैस द्वारा चण्डीगढ़ कंट्रोल रूम से भी मिली।

लखनपाल दल-बल के साथ चौधरी की कोठी में आ लियाँ। बड़ी बेसब्री से बलराज गोगिया के वहां पहुंचने की इंतजार करने लगा।

मगर सुबह से शाम हो गई—बलराज गोगिया नहीं आया। क्या वो गुमनाम काल झूठी थी? या बलराज गोगिया ने बेवकूफ बनाने के लिए फोन किया था कि उसे यहीं उलझाकर वह लुधियाना से फरार हो जाए।

अगर ऐसा था तो सचमुच ही बलराज गोगिया ने उसे बेवकूफ बना डाला था।

थक-हार कर सवा पांच बजे दो सिपाहियों को कोठी में छोड़कर बाकी के सिपाहियों के साथ वापिस सिटी थाने आ पहुंचा। बार-बार उसे अपने ऊपर खीझ आ रही थी कि केवल एक गुमनाम काल के ऊपर ही उसने अपना सारा ध्यान केन्द्रित किया—क्यों नहीं उसने पूरे शहर में मुखबिरों का जाल बिछा दिया। उस हालत में बलराज गोगिया का पता जल्द लग सकता था।

"खैर...!" स्वयं को ही तसल्ली देने वाले अन्दाज में वह मन-ही-मन बड़बड़ाया—"हो सकता है बलराज गोगिया अभी लुधियाना में हो।"

यही सोचकर उसने सिटी थाने के एस०एच०ओ० से पूरे शहर में मुखबिरों का जाल और पुलिस की गश्त लगाने की गुजारिश की जो कि तुरंत ही स्वीकार कर ली गई।

अब उसे इंतजार था तो उस घड़ी का जब कोई मुखबिर या पुलिसिया उससे आकर यह कहे कि बलराज फलां जगह पर छिपा हुआ है—और मूर्ति अभी भी उसी के पास है।

□□□

जरनैल सिंह पर निगाह पड़ते ही राघव की आंखों में एक अनोखी चमक आकर ठहर गई। उस वक्त जरनैल सिंह चाँद होटल से निकलकर सड़क के किनारे खड़ी अपनी कार की तरफ बढ़ रहा था।

जरनैल सिंह को राघव चौधरी के आदमी के रूप में भली-भांति

पहचानता था—और दुष्यन्त चौधरी अवतार सिंह का आदमी है, इसका पता उसे लग चुका था।

'अवतार सिंह के बारे में इससे कुछ मालूम हो सकता है।' मन-ही-मन सोचा उसने और वह भी जरनैल सिंह के पीछे-पीछे कार की तरफ बढ़ने लगा।

कार का दरवाजा खोलकर जैसे ही जरनैल सिंह ने ड्राईविंग सीट सम्भाली—बिजली की सी तेजी से दूसरी साईड का दरवाजा खुला। हवा के झोंके की तरह राघव कार में प्रविष्ट हुआ और जब तक जरनैल सिंह कुछ समझता राघव की रिवॉल्वर उसके कूल्हे से लग चुकी थी।

"खबरदार...!" जहर से भरा हुआ था राघव का स्वर—"तेरी जरा-सी भी गलत हरकत तेरे कूल्हों में सुराख कर सकती है।"

"क...कौन हो तुम...?" जरनैल सिंह ने सचमुच ही राघव को नहीं पहचाना था।

"राघव नाम है मेरा...।" दरिंदे की सी गुर्राहट निकली राघव के मुख से—"तेरा बाप अवतार सिंह बहुत अच्छी तरह से जानता है मुझे।"

"रा...घ...व।"

"लगता है पहचान गया है तू मुझे—अगर पहचान गया है तो यह भी जान गया होगा कि मैं गोली चलाने में ज्यादा देर नहीं लगाता—अक्खड़ दिमाग का आदमी हूं मैं—अगर फिर गया तो बस समझ ले तू गया काम से—इसलिए वही काम करना जो मैं कहूं—वर्ना मेरा भेजा फिर जाएगा।"

जरनैल ने बड़े जोर से थूक सटकी—आंखों में खौफ की परछाई तो राघव का परिचय जानकर ही नाचने लगी थी—पूरे अण्डरवर्ल्ड में सबसे बेरहम हत्यारे के रूप में जाना जाता था राघव—और आज तो उसके साक्षात दर्शन कर रहा था जरनैल सिंह।

"क...क्या चाहता है तू?" बड़ी मुश्किल से उसके मुख से निकला।

"गाड़ी स्टार्ट कर—और चला।"

और कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई जरनैल सिंह की—स्टार्ट की और गाड़ी आगे बढ़ा दी।

❑❑❑

उस बिस्तर पर जिस पर दोपहर को बलराज गोगिया बैठा हुआ था—उसी बिस्तर पर अब जरनैल सिंह बंधा हुआ था। आंखों में खौफ के साथ-साथ मौत के साक्षात दर्शन हो रहे थे उसको।

एक मौत से तो वह पहले ही टकरा चुका था—अब बलराज

गोगिया के रूप में दूसरी मौत उसके सामने खड़ी थी।

होटल चाँद से राघव जरनैल सिंह को सीधा यहीं लाया था। जरनैल सिंह को देखकर बलराज गोगिया चौंककर राघव की तरफ प्रश्नात्मक निगाहों से देखने लगा।

"अवतार का आदमी है यह—।" जरनैल सिंह को बिस्तर पर धक्का देते हुए बोला था राघव—फिर उसे उसी बिस्तर पर अच्छी तरह बांध दिया—तब बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए उसने कहा—"बाहर इस हरामी की कार खड़ी है—उसे जरा कुछ दूर छोड़ आऊं मैं—कहीं ऐसा न हो कि उस कार के जरिये पुलिस या अवतार सिंह हम तक पहुंच जाएं।"

और राघव वापिस बाहर निकल गया।

उसके जाने के कुछ देर बाद बलराज गोगिया जरनैल सिंह के पास आकर बिस्तर पर बैठ गया और बड़े ही प्यारभरे स्वर में बोला—

"क्या नाम है तेरा?"

"ज...जनरैल सिंह।" कांपता स्वर निकला उसके होठों से।

"देखो जनरैल सिंह—मेरी तेरे साथ तो कोई दुश्मनी नहीं—मेरी दुश्मनी तो तेरे सरदार अवतार सिंह से है—और दुश्मनी का बीज भी उसी हरामजादे ने बोया था।" राघव ने कहा—"अवतार का खास आदमी है—फिर तो तू उसके बारे में काफी कुछ जानता होगा—बता कहां मिल सकता है अवतार सिंह, मगर कोई ऐसी जगह बताना जहां वह कम से कम ताकत के साथ मिल सके।"

"म...मैं कुछ नहीं जानता गो...गोगिया साहब...म...मुझे अपने बच्चों की कसम, मैं कुछ नहीं जानता।"

"अब यह तो मैं जानता ही नहीं कि जिन बच्चों की कसम तू खा रहा है वो तेरे हैं या बाजू वाले पड़ोसी के, इसलिए कसम न खा और बता अवतार कहां मिलेगा?"

"म...मैं सचमुच नहीं जानता।"

"और चौधरी...उसके बारे में भी शायद कुछ नहीं जानता तू।" बलराज गोगिया का स्वर एकाएक ही सख्त होता चला गया।

थूक सटक कर रह गया जरनैल सिंह।

"मेरे पिछले कारनामों के बारे में शायद तू कुछ नहीं जानता जरनैल सिंह—छः कत्ल कर बैठा हूं मैं—और जिन छः के कत्ल मैंने किये हैं वे सभी तेरे बाप अवतार सिंह के आदमी थे—खास आदमी—मगर तेरा बाप मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाया—वो अब भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा—बहुत जल्द मेरे हाथों में हरामजादे की गर्दन होगी, बेशक तू मुझे न बता—अब मैं उसे फिर भी ढूंढ निकालूंगा—मगर तब तू वह दृश्य नहीं देख पायेगा जब मैं उसकी

गर्दन मरोड़ रहा हूंगा—क्योंकि तब तक तो तू दूसरा जन्म भी ले चुका होगा—बस राघव के आने की देर है—तेरा काम तमाम—और मेरे उसी खाते में एक और कत्ल जुड़ जायेगा।"

"न...ही...।" बुरी तरह कांप उठा जरनैल सिंह।

बलराज गोगिया ने अपनी जेब से रिवॉल्वर निकाली और जरनैल सिंह के माथे से सटाते हुए मुस्कुराया—"मैं अब तेरे से कोई प्रश्न नहीं पूछूंगा—जब तू जानता ही कुछ नहीं तो बतायेगा क्या—लेकिन अगर तू यहां से जिंदा निकल गया तो जाकर अवतार सिंह को हमारे बारे में जरूर बतायेगा। इसलिए तेरा जिंदा रहना हमारे लिए खतरनाक हो सकता है।"

"न...हीं...!" म...मुझे मत मारो।" रो ही पड़ा था जरनैल सिंह।

"अभी से क्यों भिनभिना रहा है—राघव के आने तक यह नाल सिर्फ तेरे माथे से सटी रहेगी—इधर उसने पैर अन्दर रखा—उधर मेरी उंगली हरकत में आ जाएगी।" एक जहरीली मुस्कान मुस्कुराया बलराज गोगिया—"हां—राघव के आने से पहले अगर तूने कोई गलत हरकत करने की कोशिश की तो हो सकता है मैं वक्त से पहले ही तेरा काम तमाम कर दूं—इस बीच तू सोच—कि तू कुछ जानता है या नहीं—हो सकता है तुझे याद आ जाए—अगर याद आ जाए तो बता देना—तब हो सकता है मैं तुझ पर तरस खाकर छोड़ दूं।"

कहकर बलराज गोगिया ने अपने फैले हुए होंठ और भी ज्यादा फैला दिये और जरनैल सिंह की आंखों में झांकने लगा।

हालांकि बलराज गोगिया ने अभी तक उसे एक थप्पड़ भी नहीं मारा था—लेकिन जिस रूप से वह उसे मानसिक रूप से टॉर्चर कर रहा था जरनैल सिंह के लिए असहनीय हो रहा था।

मौत उसके माथे से सटी थी—कभी भी बलराज गोगिया की उंगली हरकत में आ सकती थी—यह कार्य ही बार-बार जरनैल सिंह को मार रहा था।

तभी बाहर का दरवाजा खुलने की आवाज हुई।

बलराज गोगिया के होठों पर छाई मुस्कान में फैला जहर और भी गहरा हो गया—"अच्छा जरनैल सिंह—कहा-सुना माफ कर देना—विदा।"

"न...हीं...!" चीख उठा जरनैल सिंह—"गोली मत चलाना...म...मैं सब कुछ बताने को तैयार हूं।" सफलताभरी मुस्कान थिरक उठी बलराज गोगिया के होठों पर—"याद आ गया तुझे?"

"ह...हां...सरदार साहब की आज रॉबर्ट नाम के एक

अमरीकी से मीटिंग है—होटल चाँद में, मेरे नाम से केबिन नम्बर तीन बुक है—मीटिंग उसी केबिन में होनी है।''

''अवतार के साथ उसके बॉडीगार्डों के रूप में कितने आदमी होंगे?''

''इ...इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता—यह सरदार साहब की मर्जी पर निर्भर करता है।''

''और दुष्यन्त चौधरी?''

''उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता—मैं—मैं सच कहता हूं—यकीन मानो—मैं चौधरी के बारे में कुछ नहीं जानता, वह तो कल से ही लापता है—सरदार साहब ने पता नहीं उसे कहां भेज दिया है।''

''और वह मूर्ति...?''

''मैं...मैं मूर्ति के बारे में भी कुछ नहीं जानता—सरदार साहब के बारे में भी तभी बता पाया हूं कि उन्होंने मुझसे केबिन बुक करने को कहा था।''

बलराज गोगिया ने गर्दन मोड़कर अपने बराबर में आ खड़े हुए राघव की तरफ देखा जो कि अभी-अभी वहां पहुंचा था।

''लगता है यह इतना ही जानता है।'' बलराज गोगिया को अपनी तरफ देखते पाकर राघव बोल पड़ा।

''तो अब यह...?''

''अब पहले यह...।''

कहते हुए उस गुटके ने छलांग मारी और जरनैल सिंह की छाती पर आ सवार हुआ—और उसकी गर्दन अपने हाथों में ले ली।

''य...यह क्या कर रहे हो राघव?'' उसकी हरकत पर चौंक उठा था बलराज।

''इसकी जिन्दगी हमारे लिए मौत बन सकती है बलराज गोगिया—इस हरामजादे का मर जाना ही हमारे हित में होगा।''

''ल...लेकिन...?''

बलराज गोगिया ने कुछ कहना चाहा—मगर उससे पहले ही हल्की-सी कड़क की आवाज ने उसकी बात को पूरा नहीं होने दिया।

जरनैल सिंह की गर्दन की हड्डी तोड़ डाली थी राघव ने—आखिर एक पेशेवर हत्यारा था वह—खून करना तो उसका पेशा था...शुगल था—बहुत पुराना अनुभव भी रखता था वह।

अपने उसी अनुभव का एक छोटा-सा नमूना दिखाया था उसने बलराज गोगिया को—बलराज गोगिया ने उसे रोकने के लिए मुंह ही खोला था कि राघव ने जरनैल सिंह का काम तमाम कर दिया।

एक लम्बी सांस छोड़कर राघव उछलकर पुनः फर्श पर आ

खड़ा हुआ और मुस्कुराते हुए बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"इसका मरना हमारे लिए बहुत जरूरी था।"

"वो तो मैं भी जानता हूं—।" बलराज गोगिया भन्नाये अन्दाज में बोला—"लेकिन यहां इसे नहीं मारना था तुझे—मारना तो मैंने भी था इसे—मगर यहां नहीं बल्कि किसी और जगह पर। अब बोल क्या करेगा इस लाश का? कहां छिपायेगा इसे—कहां जाकर फेंकेगा इसे? यहीं छोड़ता है तो खुद हम बेघर हो जाएंगे—और अगर इसे कहीं फेंकने की सोचता है तो किसी की भी निगाह में आने का खौफ बना रहेगा, जबकि किसी और स्थान पर खत्म करने का हमें यह फायदा होता कि हमें इसे ठिकाने लगाने की जरूरत नहीं पड़ती।"

बलराज गोगिया की बात जैसे अब समझ में आई थी राघव के—तभी तो उसका चेहरा अफसोसजनक हो गया था—"सॉरी यार!" जैसे शर्मिन्दा हो रहा हो वह—"वैसे यार मैं भी तेरे जैसी सोचने की अक्ल रखता तो कुछ सोचकर अपना कद न लम्बा कर लेता।"

जिस अंदाज में उसने बात की थी—न चाहते हुए भी बलराज गोगिया के होठों पर मुस्कान रेंग गई—लेकिन तुरंत ही वह पुनः गम्भीर हो गया—"छोड़ इसे—इस लाश को यहीं छोड़—कोई और ठिकाना ढूंढ लेंगे हम—फिलहाल तो यह सोच कि अब क्या करना है हमें—अवतार सिंह का पता तो लग चुका है हमें—अब उसे खत्म कैसे करना है यह सोच—लेकिन उसे मारने से पहले हमें उससे वह मूर्ति हासिल करनी है—और जहां तक मेरा दिल कहता है, अवतार की रॉबर्ट नाम के उस विदेशी के साथ मीटिंग उसी मूर्ति को ही लेकर हो रही है।"

"तू तो जान ही गया है कि मैं दिमाग से बिल्कुल पैदल हूं—तुम बस मुझे यह बताओ कि मुझे क्या करना है?"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और राघव की तरफ देखते हुए बोला—"तुम तो इसी शहर के रहने वाले हो और तुम्हारा काम भी ऐसा है कि कई बड़े-बड़े क्रिमिनल को जानते होंगे तुम।"

"हां जानता हूं—तो...?"

"किसी ऐसे क्रिमिनल को भी जानते होंगे जिससे हमें भारी हथियार मसलन स्टेनगन, ब्रेनगन वगैरह हासिल हो जाएं।"

सुनकर राघव मुस्कुराया—"ए०के० सैंतालीस चलेगी?"

"अरे चलेगी क्या भागेगी—तुम्हारे पास है?"

"दो हैं मेरे पास।"

"दो...?" हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा बलराज गोगिया—"तुम्हारे पास कहां से आईं?"

"पिछला कुछ वक्त आतंकवादियों की सोहबत से गुजरा है—दो दोस्त भी मेरे आतंकवादी बन गए—मुझे भी उन्होंने आतंकवादी बनने की पेशकश की, जिसे मैंने ठुकरा दिया—मगर दोस्ती भला कहां छोड़ी जाती है—वे दोनों अक्सर मेरे पास आते रहते थे—जब भी आते ए०के० सैंतालीस उनके पास होती—और फिर एक दिन किसी लड़की के साथ रात गुजारने को राईफलें मेरे पास रखते हुए उन्होंने यह कहा कि लड़की के साथ रात गुजारने के पश्चात् सुबह आकर अपनी राईफलें ले जाएंगे—और वे ऐसे गए कि वापिस नहीं लौटे—दरअसल किसी मुखबिर ने पुलिस को उनके बारे में सूचित कर दिया था—बेचारे लड़की के पास पहुंचने के बजाय ऊपर पहुंच गए।"

"ओह!"

"बस तभी से वे मेरे पास हैं—फुल्ली लोडेड।"

"फिर तो तुम उन्हें चलाना भी जानते होंगे?"

"हां—मेरे दोस्तों ने ए०के० सैंतालीस को ऑपरेट करना सिखा दिया था मुझे—यूं भी कोई खास मुश्किल नहीं यह काम—बस ट्रिगर दबाओ और राईफल की नाल को निशाने की तरफ कर दो—नाल से गोलियां ऐसे निकलेंगी जैसे मधुमक्खियां अपना छत्ता छोड़कर निकलती हैं।"

"ठीक है—तो फिर निकालो उन राइफलों को—हमें सात बजे होटल चाँद पर हमला करना है—अवतार सिंह अवश्य ही मूर्ति को साथ लाया होगा रावर्ट को दिखाने के लिए—बस वहीं उसे खत्म कर हम मूर्ति उससे लेकर इस शहर को छोड़ देंगे—फिर मौका देखकर कोई अच्छा-सा ग्राहक ढूंढेंगे—और मूर्ति को औने-पौने भाव बेचकर विदेश चले जाएंगे।"

"नहीं..." बलराज गोगिया का लहजा एकदम से खूंखार हो गया—"उस हरामजादे को कैसे छोड़ सकता हूं मैं हिन्दुस्तान छोड़ने से पहले, उसका काम तमाम करना ही तो मेरा एक मात्र मकसद होगा—फिलहाल तो इस वक्त अवतार सिंह ही नजर आ रहा है मुझे—तू जा जल्दी से राइफ़लें लेकर आ।"

राघव तुरंत ही कमरे से बाहर निकलकर दाईं तरफ वाले कमरे में घुस गया।

थोड़ी देर बाद जब वह बाहर निकला तो उसके दोनों हाथों में एक-एक ए०के० सैंतालीस फंसी हुई थी।

बलराज गोगिया के पास आकर राघव ने एक राईफल बिस्तर पर रखी तथा दूसरी को दोनों हाथों में थामकर बलराज गोगिया को उसे चलाने का तरीका समझाने लगा।

तत्पश्चात् बलराज गोगिया ने राइफल स्वयं अपने हाथों में लेकर उसको देखा-परखा और फिर उसे बिस्तर पर रखते हुए बोला—"कम्बल वगैरह होंगे तेरे पास।"

"हां है—लेकिन कम्बलों का क्या करना है।"

"अरे भाई इस तरह सरेआम राईफलें लेकर निकलना बेवकूफी नहीं तो और क्या होगी—जिसको शक न भी पड़ना हो उसे भी शक पड़ेगा।"

"मैं अभी कम्बल भी ले आता हूं।" कहकर राघव पुनः बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद ही दोनों कम्बल ओढ़े हुए एवं टैक्सी में बैठे चाँद होटल की तरफ जा रहे थे।

ए०के० सैंतालीस राईफलें उनके कम्बलों के अन्दर उनके सीनों से लगी हुई थीं।

थम्जअप चौक पर पहुंचकर टैक्सी रुक गई।

बलराज गोगिया ने देखा लाल बत्ती हो रही थी।

एक लम्बी सांस छोड़कर बलराज गोगिया ने सीट की पुश्त से सिर टिकाया और आंखें बंद कर लीं, लेकिन तभी राघव के हाथ ने उसकी जांघ को झकझोर दिया।

चौंक कर बलराज गोगिया ने आंखें खोलीं और राघव की तरफ देखने लगा—"क्या है?"

"चौधरी...!" फुसफुसाया राघव और बलराज गोगिया के पीछे खिड़की से बाहर की तरफ इशारा किया। चौधरी का नाम सुनकर ही बलराज गोगिया की नसों में दौड़ रहा खून रफ्तार पकड़ने लगा। गर्दन घुमाकर उसने अपने पीछे देखा।

पास ही एक कार खड़ी थी—मारुति वैन—जिसकी ड्राईविंग सीट पर चौधरी बैठा हुआ बत्ती के हरी होने का इंतजार कर रहा था। स्टेयरिंग पर रखे उसके दोनों हाथ तबला बजाने की सूरत में थिरक रहे थे।

चौधरी को देखते ही बलराज गोगिया का चेहरा आग की तरह तपने लगा—कानों की लवें लाल हो उठीं—आंखों में जैसे ज्वालामुखी नाचने लगा।

"चौ...धरी...।" एक भयानक गुर्राहट निकली बलराज गोगिया के मुख से और दरवाजे की तरफ झपटा।

इधर अपना नाम सुनकर चौधरी ने चौंककर गर्दन उसकी तरफ मोड़ी।

और जैसे ही उसकी नजरें बलराज गोगिया से टकराईं—आंखों में मौत नाच उठी।

उसकी कार के आगे अन्य गाड़ियां भी खड़ी थीं—इसलिए वह

कार के द्वारा वहां से भाग नहीं सकता था—और मौत थी कि टैक्सी का दरवाजा खोल चुकी थी।

स्वयं को बचाने के लिए चौधरी ने तुरंत ही कार का दरवाजा खोला और बाहर छलांग लगाकर पूरी रफ्तार से भाग खड़ा हुआ। उसे भागते देख बलराज गोगिया भी उसके पीछे भागा—लेकिन चौधरी गाड़ियों की भीड़ में पता नहीं कहां खो गया।

चीते की तरह एवं तेज दहाड़ निकली बलराज गोगिया के मुख से और उसी के साथ ही उसने अपना कम्बल उतार फेंका।

ए०के० सैंतालीस उसके हाथों में चमकने लगी।

राईफल देखकर वातावरण में कई चीखें उबल पड़ीं—मगर उस वक्त खून सवार था—चीखें जैसे उसे सुनाई ही नहीं दे रही थीं।

एक ऊंची छलांग मारी उसने और एक कार की छत पर आ खड़ा हुआ—और फिर कारों की छतों को ही रास्ता बनाता हुआ बलराज गोगिया तेजी से उस दिशा की तरफ छलांगें मारने लगा जिधर कि उसने चौधरी को गुम होते हुए देखा था।

शीघ्र ही उसकी नजरों ने चौधरी को ढूंढ निकाला—उस वक्त वह ट्रक के नीचे घुसने की कोशिश कर रहा था।

"चौधरी ऽ ऽ ऽ ऽ!" दहाड़ उठा बलराज गोगिया—"आज तू मेरे कहर से नहीं बच पायेगा—आज तेरी मौत निश्चित है।"

और छलांग लगा दी बलराज गोगिया ने।

कारों तथा अन्य गाड़ियों में बैठे लोगों की लगातार चीखें उबल रही थीं—और उन्हीं चीखों में एक चौंकाहटभरी आवाज भी उभरी—"गोगिया।"

"अरे...यह...यह तो बलराज गोगिया है जिस पर बीस हजार का इनाम है।"

आवाज बलराज गोगिया के भी कानों से टकराई—मगर उसने उस पर गौर नहीं किया—उसे तो उस वक्त सिर्फ चौधरी ही सूझ रहा था।

छलांग मारकर वह ट्रक के समीप पहुंचा—नीचे घुस गया और दूसरी तरफ से बाहर निकलकर पुनः एक कार पर चढ़ गया।

और तभी!

रेड लाईट ग्रीन में तब्दील हो गई।

चीखो-पुकार के बीच गाड़ियां आगे बढ़ने लगीं। वह कार जिस पर कि बलराज गोगिया खड़ा हुआ था उसने भी हल्का-सा झटका खाया और आगे रेंगने लगी।

स्वयं को गिरने से बचाने के लिए बलराज गोगिया ने अपना

संतुलन बनाया और अपनी निगाहें फिर चौधरी को ढूंढने में लगा दीं।

इस बार चौधरी उसे फुटपाथ पर चढ़ता नजर आया।

"चौधरी...!" पुनः दहाड़ा बलराज गोगिया और छलांग मार कर सड़क पर आ फुटपाथ की तरफ भागा। फुटपाथ तक पहुंचने का रास्ता उसके लिए खुद-ब-खुद बनता चला गया। कई गाड़ियां जो आगे बढ़ रही थीं और तेज होकर आगे बढ़ गईं—जो उनके पीछे थीं—उनके पहिये वहीं जाम हो गये।

फुटपाथ पर पहुंचते ही बलराज गोगिया ने कुछ दूरी पर भाग रहे चौधरी की तरफ राइफल तान दी—"रुक जा चौधरी—कायरों की तरह पीठ पर गोली खाने की बजाय बहादुरों की मौत मर—।"

लेकिन चौधरी नहीं रुका।

दांत पर दांत जमाये बलराज गोगिया ने और ट्रिगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...।' कई गोलियां एक साथ चौधरी की तरफ लपकीं और उसकी टांगों में जा धंसीं। हलाल हो रहे भैंसे की तरह डकराता हुआ चौधरी नीचे सड़क पर आ गिरा—और उसी के साथ ही वातावरण में पुनः कई चीखें उबल पड़ीं।

चौधरी ने खड़े होने की कोशिश की—मगर टांगें तो नकारा ही चुकी थीं।

किसी शेर की तरह चलता हुआ बलराज गोगिया चौधरी के सिर पर आ खड़ा हुआ—"मौत से भागने की कोशिश कर रहा था हरामजादे—!" भेड़िये की तरह गुर्राया बलराज गोगिया—"कब तक भागता—आज नहीं तो कल तुझे मेरे हाथों से मरना ही था।"

"न...हीं...म...मुझे माफ कर दे बलराज गोगिया...म...मैंने जो कुछ भी किया, अवतार सिंह के कहने पर किया।"

"अगर अवतार तुझे तेरी मां के साथ बलात्कार करने को कहता तो क्या तू करता—बोल हरामजादे—क्या तू अपनी मां के साथ बलात्कार करता?"

अपने हाथों के सहारे पीछे घिसटने की कोशिश करते चौधरी के मुंह से बोल नहीं फूटा—"तेरी खामोशी कह रही है कुत्ते कि तू ऐसा कभी नहीं करता—मेरी बहन तो पराई थी—इसलिए तूने उसकी इज्जत खराब करने में एक पल भी नहीं लगायी—अपनी उसी बहन की लाश के सिर पर हाथ रखकर मैंने कसम खाई थी कुत्ते कि मैं उसकी इज्जत खराब करने वालों को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा—और इस काम में तो रब भी मेरा साथ दे रहा है—तभी तो उसने मुझे तुम लोगों के ही द्वारा जेल से फरार करवाया था।"

"न...मुझे माफ कर दे बलराज गोगिया...तू...जो चाहेगा मैं तुझे दूंगा।"

"तो ला...मेरी बहन मुझे वापिस लौटा दे कुत्ते—बोल लौटा सकता है मेरी बहन को?"

"व...वो...वो तो मर चुकी है...तू...तू...मुझसे चाहे दौलत ले ले—मगर मेरी जान बख्श दे।"

"तेरी जान तो अब भगवान भी नहीं बचा सकता हरामजादे।" कहते हुए उसके चेहरे पर अंगारे तैरने लगे।

राईफ़ल की नाल को उसने आगे किया और चौधरी के मुंह में घुसेड़ दी—"बहुत किस्मत वाला है तू हरामजादे जो तुझे आसान मौत मिल रही है—वर्ना तू कहीं और मिलता तो तेरा बहुत बुरा हाल होता—जा तो मैं तेरे बाप अवतार के पास रहा था—मगर तेरी मौत उससे पहले लिखी हुई थी तभी तो तू रास्ते में मिल गया। जा...ऊपर जाकर मेरी बहन से माफी मांगना कुत्ते।"

बात खत्म करते ही बलराज गोगिया ने ट्रिगर दबा दिया।

नाल चौधरी के मुंह में घुसी हुई थी—सो उसके मुंह ने साईलेंसर का काम किया—मगर जब साईलेंसर फटा तो—

'धड़ाम।' एक तेज आवाज हुई और चौधरी के पूरे चेहरे के परखच्चे उड़ गए।

एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और आकाश की तरफ देखने लगा—जैसे अपनी बहन से कह रहा हो कि उसने तमाम गुनाहगारों को खत्म कर दिया है।

"बलराज गोगिया...भागो पुलिस...!"

तभी राघव की तेज आवाज सुनकर चौंक कर बलराज गोगिया ने पीछे मुड़कर देखा—काफी दूरी से उसे सायरन बजाती पुलिस की दो जिप्सियां आती नजर आईं।

तुरंत ही उसका जिस्म हरकत में आया और वह राघव की तरफ भाग खड़ा हुआ, जो कि एक कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा उसी की तरफ देख रहा था।

बलराज गोगिया के पास यह सोचने के लिए वक्त नहीं था कि राघव ने वह कार कैसे प्राप्त की—फटाक से उसने कार का दरवाजा खोला और राघव के बराबर में आ बैठा।

अगले ही पल तोप से छूटे गोले की तरह कार भाग निकली वहां से।

एक तेज झटका लगा बलराज गोगिया को—लेकिन तुरंत ही उसने स्वयं को सम्भाल लिया और सामने देखने लगा।

राघव नाम का वह सेर भर का छोकरा कमाल की ड्राइविंग

कर रहा था—कई बार बलराज गोगिया को ऐसा लगा कि एक्सीडेंट होने वाला है—लेकिन राघव बड़ी सफाई से कार को एक्सीडेंट होने से बचा जाता।

❑❑❑

जब तक लखनपाल वहां पहुंचता तब तक बलराज गोगिया पता नहीं कहां-का-कहां पहुंच चुका था।

लखनपाल सिटी थाने के एस०एच०ओ० के साथ बैठा बलराज गोगिया के बारे में ही बात कर रहा था, जब फोन की घण्टी घनघना उठी थी।

"हैलो—सिटी पुलिस स्टेशन।" एस०एच०ओ० ने फोन उठा कर माऊथपीस में कहा।

"हैलो—थम्जअप चौक पर एक आदमी किसी चौधरी नाम के आदमी को मारने जा रहा है—उसके पास ए०के० सैंतालीस राईफल है—जल्दी पहुंचिये।"

"हैलो...आप कौन बोल रहे हैं?"

मगर तब तक उधर से फोन कट चुका था—फोन करने वाला शायद अपने बारे में कुछ नहीं बताना चाहता था। फोन रखकर तुरंत ही खड़ा हो गया एस०एच०ओ०, जो कि इंस्पैक्टर रैंक का था।

"उसे जल्दबाजी में उठते देख लखनपाल चौंक कर उसकी तरफ देखने लगा—"क्या बात है? किसका फोन था?"

इंस्पैक्टर ने लखनपाल को फोन के बारे में बताया—और बोला—"पता नहीं हमारे पहुंचने तक कातिल अपना काम करके जा चुका हो—फिर भी हमें जल्द-से-जल्द वहां पहुंचना है।"

"मैं भी चलूं।"

"यह तो आपकी इच्छा पर है।" इंस्पैक्टर अपनी कैप पहनते हुए बोला—"मैं क्या कह सकता हूं।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।" कहते हुए लखनपाल भी खड़ा हो गया।

और जब तक वे वहां पहुंचते—काम हो चुका था। दुष्यन्त चौधरी के चेहरे के परखच्चे उड़ चुके थे। चेहरा फट जाने के कारण ही लखनपाल सिटी थाने का इंस्पैक्टर उसे पहचान नहीं पाया था।

लखनपाल ने चौधरी की लाश का भरपूर मुआयना किया और लाश की तरफ ही देखते हुए इंस्पैक्टर बोला—"लाश की हालत बता रही है कि मकतूल ने कातिल से बचने में काफी भागदौड़ की—लेकिन कातिल ने मकतूल की टांगों पर गोलियां मारकर उसे नीचे गिरा दिया—और फिर मकतूल के मुंह में राईफल की नाल डालकर ट्रिगर दबा दिया जिसके कारण मकतूल का चेहरा छिन्न-भिन्न हो गया।"

"न...मुझे माफ कर दे बलराज गोगिया...तू...जो चाहेगा मैं तुझे दूंगा।"

"तो ला...मेरी बहन मुझे वापिस लौटा दे कुत्ते—बोल लौटा सकता है मेरी बहन को?"

"व...वो...वो तो मर चुकी है...तू...तू...मुझसे चाहे दौलत ले ले—मगर मेरी जान बख्श दे।"

"तेरी जान तो अब भगवान भी नहीं बचा सकता हरामजादे।" कहते हुए उसके चेहरे पर अंगारे तैरने लगे।

राईफल की नाल को उसने आगे किया और चौधरी के मुंह में घुसेड़ दी—"बहुत किस्मत वाला है तू हरामजादे जो तुझे आसान मौत मिल रही है—वर्ना तू कहीं और मिलता तो तेरा बहुत बुरा हाल होता—जा तो मैं तेरे बाप अवतार के पास रहा था—मगर तेरी मौत उससे पहले लिखी हुई थी तभी तो तू रास्ते में मिल गया। जा...ऊपर जाकर मेरी बहन से माफी मांगना कुत्ते।"

बात खत्म करते ही बलराज गोगिया ने ट्रिगर दबा दिया।

नाल चौधरी के मुंह में घुसी हुई थी—सो उसके मुंह ने साईलेंसर का काम किया—मगर जब साईलेंसर फटा तो—

'धड़ाम।' एक तेज आवाज हुई और चौधरी के पूरे चेहरे के परखच्चे उड़ गए।

एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और आकाश की तरफ देखने लगा—जैसे अपनी बहन से कह रहा हो कि उसने तमाम गुनाहगारों को खत्म कर दिया है।

"बलराज गोगिया...भागो पुलिस...!"

तभी राघव की तेज आवाज सुनकर चौंक कर बलराज गोगिया ने पीछे मुड़कर देखा—काफी दूरी से उसे सायरन बजाती पुलिस की दो जिप्सियां आती नजर आईं।

तुरंत ही उसका जिस्म हरकत में आया और वह राघव की तरफ भाग खड़ा हुआ, जो कि एक कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा उसी की तरफ देख रहा था।

बलराज गोगिया के पास यह सोचने के लिए वक्त नहीं था कि राघव ने वह कार कैसे प्राप्त की—फटाक से उसने कार का दरवाजा खोला और राघव के बराबर में आ बैठा।

अगले ही पल तोप से छूटे गोले की तरह कार भाग निकली वहां से।

एक तेज झटका लगा बलराज गोगिया को—लेकिन तुरंत ही उसने स्वयं को सम्भाल लिया और सामने देखने लगा।

राघव नाम का वह सेर भर का छोकरा कमाल की ड्राइविंग

कर रहा था—कई बार बलराज गोगिया को ऐसा लगा कि एक्सीडेंट होने वाला है—लेकिन राघव बड़ी सफाई से कार को एक्सीडेंट होने से बचा जाता।

❑❑❑

जब तक लखनपाल वहां पहुंचता तब तक बलराज गोगिया पता नहीं कहां-का-कहां पहुंच चुका था।

लखनपाल सिटी थाने के एस०एच०ओ० के साथ बैठा बलराज गोगिया के बारे में ही बात कर रहा था, जब फोन की घण्टी घनघना उठी थी।

"हैलो—सिटी पुलिस स्टेशन।" एस०एच०ओ० ने फोन उठा कर माऊथपीस में कहा।

"हैलो—थम्जअप चौक पर एक आदमी किसी चौधरी नाम के आदमी को मारने जा रहा है—उसके पास ए०के० सैंतालीस राईफल है—जल्दी पहुंचिये।"

"हैलो...आप कौन बोल रहे हैं?"

मगर तब तक उधर से फोन कट चुका था—फोन करने वाला शायद अपने बारे में कुछ नहीं बताना चाहता था। फोन रखकर तुरंत ही खड़ा हो गया एस०एच०ओ०, जो कि इंस्पैक्टर रैंक का था।

"उसे जल्दबाजी में उठते देख लखनपाल चौंक कर उसकी तरफ देखने लगा—"क्या बात है? किसका फोन था?"

इंस्पैक्टर ने लखनपाल को फोन के बारें में बताया—और बोला—"पता नहीं हमारे पहुंचने तक कातिल अपना काम करके जा चुका हो—फिर भी हमें जल्द-से-जल्द वहां पहुंचना है।"

"मैं भी चलूं।"

"यह तो आपकी इच्छा पर है।" इंस्पैक्टर अपनी कैप पहनते हुए बोला—"मैं क्या कह सकता हूं।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।" कहते हुए लखनपाल भी खड़ा हो गया।

और जब तक वे वहां पहुंचते—काम हो चुका था। दुष्यन्त चौधरी के चेहरे के परखच्चे उड़ चुके थे। चेहरा फट जाने के कारण ही लखनपाल सिटी थाने का इंस्पैक्टर उसे पहचान नहीं पाया था।

लखनपाल ने चौधरी की लाश का भरपूर मुआयना किया और लाश की तरफ ही देखते हुए इंस्पैक्टर बोला—"लाश की हालत बता रही है कि मकतूल ने कातिल से बचने में काफी भागदौड़ की—लेकिन कातिल ने मकतूल की टांगों पर गोलियां मारकर उसे नीचे गिरा दिया—और फिर मकतूल के मुंह में राईफल की नाल डालकर ट्रिगर दबा दिया जिसके कारण मकतूल का चेहरा छिन्न-भिन्न हो गया।"

"आप ठीक कह रहे हैं।" इंस्पैक्टर बोला—"मेरे विचार से आपसे बिल्कुल मिलते हैं—लेकिन अब यह कैसे जाना जाए कि इसका कातिल कौन था?"

"इतने लोगों के सामने कातिल ने इसका कत्ल किया है— ।" लखनपाल बोला—"आखिर कोई तो उसे पहचानता होगा, नहीं पहचानता तो हुलिया तो बता देगा—आप पूछिये तो सही।"

इंस्पैक्टर ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"जिस प्रकार चौधरी का कत्ल हुआ है उसे देखकर तो... ।"

"क...क्या कहा...चौधरी...!" बुरी तरह से चौंक उठा लखनपाल।

उसे चौंकते देख इंस्पैक्टर भी चौंक उठा—"आप चौंके क्यों?"

"क—कहीं यह वही दुष्यन्त चौधरी तो नहीं जिसकी जान के पीछे बलराज गोगिया पड़ा हुआ था।" सुनकर उछल पड़ा इंस्पैक्टर और गौर से लाश को देखने लगा। और फिर एकाएक ही चीख उठा वह—"हां...यह...वह दुष्यन्त चौधरी ही है...मैं इसे पहचान गया हूं... ।"

"त—तो फिर इसका कत्ल अवश्य ही बलराज गोगिया ने ही किया है।" कहते हुए लखनपाल की आंखों में एक तेज चमक आकर ठहर गई—"मतलब बलराज गोगिया अभी लुधियाना में ही है—और अभी-अभी दुष्यन्त चौधरी का कत्ल करके गया है।"

"ह...हां...उस गुमनाम कॉल में भी यही कहा गया था कि बलराज गोगिया चौधरी को मारने उसकी कोठी आ रहा है—और हमने उसे पकड़ने के लिए कोठी में अपना जाल बिछा दिया।"

"लेकिन बलराज गोगिया को किसी तरह से यह मालूम हो गया कि उसके स्वागत के लिए पुलिस पहले से ही वहां खड़ी है तो उसने अपना इरादा स्थगित कर दिया—उस वक्त अगर चौधरी हमारी ही पनाह में होता तो किसी भी हालत में उसे स्वयं से दूर न करते—और हमारी पनाह न लेने का नतीजा इसे भुगतना पड़ गया—बलराज गोगिया ने चौधरी को ढूंढ निकाला—और इसे मारकर फरार हो गया।"

"आपकी बात बिल्कुल ठीक है—फिर भी हमें लोगों से पूछ कर तसल्ली कर लेनी चाहिए कि इसे मारने वाला बलराज गोगिया ही था या कोई और—हो सकता है इसका कत्ल किसी और ने किया हो और हम यही समझ बैठे हों कि इसका कातिल बलराज ही है।"

"बेशक पूछिये आप—लेकिन मेरा विश्वास है कि कातिल बलराज गोगिया ही है—जिस भयानक ढंग से चौधरी की हत्या हुई है वैसा ढंग बलराज जैसा दरिंदा ही अपना सकता है।"

इंस्पैक्टर ने अपने आस-पास खड़ी भीड़ की तरफ देखा और कातिल के बारे में पूछने लगा।

"वह बलराज गोगिया था साहब!" तभी भीड़ में से एक व्यक्ति आगे आते हुए बोला।

इंस्पैक्टर ने उसकी तरफ देखा उसके पास आकर बोला—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह बलराज गोगिया ही था?"

"अखबारों में उसकी तस्वीर छपी है—और सरकार ने उस पर बीस हजार का इनाम भी रखा है—उसी तस्वीर के दम पर मैंने झट से उसे पहचान लिया।"

"क्या काम करते हो तुम?"

पहले तो हड़बड़ाया वह आदमी, लेकिन तुरन्त ही सम्भल भी गया—"फोटोग्राफर हूं।"

"हूं...तभी तुमने उसे पहचान लिया।" मुस्कुराया इंस्पैक्टर—"खैर...यह बता सकते हो वह कत्ल करके किस तरफ गया है?"

"उ...उसके साथ एक ठिगना-सा व्यक्ति भी था।" फोटोग्राफर बोला—"उसी के साथ एक कार में बैठकर वह इस दिशा की तरफ भागा था—उस वक्त आपकी गाड़ी थोड़ी दूर पर थी।"

"यानि वह यहां से अभी कुछ देर पहले ही फरार हुआ हैं।"

"जी...जी हां।"

तब तक लखनपाल भी वहां आ पहुंचा था—अगला सवाल उसने किया फोटोग्राफर से—"उस ठिगने आदमी को जानते हो तुम?"

"न...हीं।"

"कितना कद था उसका?"

फोटोग्राफर ने लखनपाल की तरफ देखा—लेकिन बोला कुछ नहीं।

लखनपाल समझ गया कि वह उसके ठिगने कद के कारण कुछ कहने से घबरा रहा है।

मुस्कुराया वह—और बोला—"यह तो बता सकते हो कि वह मुझसे भी ठिगना था या नहीं?"

"अ—आपसे छोटा कद था उसका साहब।"

लखनपाल ने इंस्पैक्टर की तरफ देखा—"ऐसा कोई क्राईमर है आपकी नजर में जो मुझसे भी ठिगना हो?"

"एक आदमी है मेरी नजर में—" बोला इंस्पैक्टर—"राघव नाम है उसका—पेशेवर हत्यारा है—लेकिन पुलिस के हत्थे आज तक

नहीं चढ़ा। लेकिन मेरा यह मानने को दिल नहीं कर रहा कि बलराज गोगिया के साथ वही हो सकता है।"

"राघव काफी लम्बे अर्से से यहीं लुधियाना में ही रहता है—ऐसे में बलराज गोगिया के साथ उसकी दोस्ती वह भी आनन-फानन में कैसे हो सकती है...अवश्य ही वह कोई और होगा।"

लखनपाल के होठों पर एक अर्थभरी मुस्कान थिरक उठी—"रण्डी को रण्डवे ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ती और नहीं रण्डवों को रण्डी को ढूंढने की जरूरत पड़ती है—फिर भी दोनों का मिलाप हो जाता है।" एक लम्बी सांस छोड़ी इंस्पैक्टर ने और बोला—"आप ठीक कह रहे हैं—हो सकता है ऐसा ही हो—लेकिन एक बात है—अब यह केस केवल मेरा नहीं बल्कि आपका भी हो गया है—जिस बलराज गोगिया की आपको जरूरत है उसी ने चौधरी को कत्ल कर दिया है—अब पता नहीं और कौन-सा गुल खिलाने वाला है—लेकिन इससे पहले कि वह कोई और गुल खिलाये—हमें उसे गिरफ्तार कर लेना है।"

"और साथ ही उससे उस मूर्ति को भी बरामद करना है जिसके कारण खासतौर पर मैं बलराज गोगिया के पीछे पड़ा हुआ हूं।" अपने स्वर में रहस्य का घूंट लाते हुए बोला लखनपाल।

❑❑❑

"चौधरी का कत्ल हो गया है।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा निरंजन—"य...यह आप क्या कह रहे हैं बॉस?"

"बलराज गोगिया ने खत्म कर दिया है उसे—वह भी सरेआम बीच चौक में।" इकबाल का लहजा खौफ से भरा हुआ था।

"फिर तो उसके साठ करोड़ के हीरों पर हम आसानी से हाथ मार सकते हैं।"

"हीरे-वीरे कुछ नहीं हैं बेवकूफ!" बोला इकबाल—"यह सब अवतार की चाल का हिस्सा था—जिस मूर्ति को बलराज गोगिया ने चण्डीगढ़ से चुराया है उसी मूर्ति के लिए ही अवतार ने यह खेल खेला था।"

बुरी तरह से चौंक उठा निरंजन—"अ...आप कहना क्या चाहते हैं बॉस—मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।"

इकबाल ने एक लम्बी सांस छोड़ी, कहने लगा—"समझ में तो मेरी भी कुछ नहीं आया था—इसका पता मुझे कल ही लगा है—दरअसल चौधरी भी अवतार का ही आदमी था—और बलराज गोगिया को चोरी के लिए प्रेरित करने के लिए अवतार ने जानबूझकर यह हवा उड़ाई कि चौधरी के पास साठ करोड़ के हीरे हैं—चूंकि

बलराज गोगिया चौधरी के खून का प्यासा था—आखिर उसने उसके बाप की हत्या की थी—अपने साथियों के साथ उसकी बहन के साथ सामूहिक बलात्कार किया था—जो कि बलराज की नजरों में सबसे बड़ा संगीन जुर्म था—और उसने चौधरी के सभी छः साथियों को मार डाला—लेकिन चौधरी को नहीं मार पाया वह, उससे पहले ही वह पुलिस के हाथों पकड़ा गया।"

सब कुछ बताता चला गया इकबाल उसे।

और निरंजन—वह आंखें फाड़े इकबाल की तरफ देख रहा था—आंखों में हैरानी के भाव उमड़ रहे थे उसकी।

"य...यह सब...।" इकबाल की बात खत्म होते ही बोला निरंजन—"आपको कैसे पता चला?" बड़ी मुश्किल से अवतार के किले में सेंध लगा पाया हूं—तभी तो यह सारी जानकारी मिली।" गम्भीर स्वर में बोला इकबाल—"शुक्र मनाओ कि अवतार का दिमाग मूर्ति में उलझा हुआ था वर्ना जो नुकसान हमने उसे पहुंचाया था—उसके हिसाब से तो वह हमें फौरन खत्म कर देता—हमारी मौत उसके हाथों में तब और भी आसान हो गई थी जब हम चौधरी की पनाह में गए थे—जबकि चौधरी भी अवतार का ही आदमी था—यह तो हमारी किस्मत अच्छी कि अवतार का अभी हमें खत्म करने का इरादा नहीं बना था।"

"यह इरादा अब भी तो बन सकता है।"

"लेकिन अब हम सचेत हैं—हमें सारे खेल का पता चल चुका है—हम अपनी हिफाजत के बारे में सोच सकते हैं। ऊपर से बलराज गोगिया का भी अपने विरुद्ध खेले गए खेल का पता चल चुका है—सो फिलहाल तो अवतार पहले बलराज गोगिया से स्वयं बचाने की कोशिश करेगा—अगर बच गया तो फिर हमारी तरफ ध्यान देगा—और तब तक तो हम पता नहीं कहां-के-कहां पहुंच चुके होंगे।"

"य—यानि भागने की सोच रहे हैं आप।"

"वक्त का तकाजा तो यही कहता है कि फौरन ही यह शहर छोड़ दो—जिन्दगी रही तो पुनः अपनी ताकत बना लेंगे।"

❑❑❑

वह गोरा-चिट्टा गैंडे जैसा भारी-भरकम शक्ल का विदेशी नजर आने वाला व्यक्ति राबर्ट था—और जो इस वक्त होटल चाँद के केबिन नम्बर तीन में अवतार सिंह के सामने बैठा हुआ था। दोनों के बीच पड़ी मेज पर शराब की बोतल और दो गिलास जिनमें कि शराब भरी हुई थी रखे थे। साथ में एक प्लेट में तला हुआ मांस पड़ा था जिसे बड़े ही करीने से उठाकर अवतार सिंह मुंह में डाल रहा था।

"अब जरा उस मूर्ति के भी दर्शन कराओ अवतार सिंह–!" राबर्ट अमेरिकन इंगलिश में बोला।

"जरूर।" मुस्कुराया अवतार सिंह और अपने दाईं तरफ रखे सूटकेस को उठाकर अपने घुटनों पर रखकर उसे खोल दिया।

बीच में भगवान कृष्ण की सोने की बनी वह पांच हजार वर्ष पुरानी मूर्ति पड़ी थी।

अवतार सिंह ने मूर्ति सूटकेस से बाहर निकाली और मेज पर रख दी।

मूर्ति पर नजर पड़ते ही राबर्ट की आंखों में एक तेज चमक जाग उठी–झपट कर उसने मूर्ति को उठाया और उसे उलट-पलट कर परखने लगा।

"अच्छी तरह से देख लो राबर्ट–हर तरफ से परख लो–पूरे पांच हजार साल पुरानी है यह।" राबर्ट ने मूर्ति को कुछ देर परखने के पश्चात् वापिस मेज पर रखा और अपना बैग उठा लिया–

"परख लिया?" अवतार सिंह भी अपना बैग उठाते हुए बोला।

"हां–मूर्ति वही है जो मैंने तुमसे मांगी थी।"

"शुक्र है...।" मुस्कुराया अवतार सिंह–"वर्ना दूसरे विदेशी तो किसी भी हिन्दुस्तानी को बेवकूफ बनाने में अपने आप को बहुत बड़ा तजुर्बेकार समझते हैं।"

"नहीं...मूर्ति बिल्कुल असली है–बताओ–क्या लोगे मूर्ति का?"

"वही जो मार्केट रेट है।"

"मार्केट रेट तो दो अरब इण्डियन रुपया है।"

"हां...।"

"मगर वह मूर्ति तो चोरी की है।"

"तो फिर क्या हुआ–है तो असली न।"

"लेकिन चोरी की मूर्ति का स्मग्ल करके अमेरिका ले जाना वहुत बड़ा जोखिमभरा काम है।"

"तो...?" अवतार सिंह ने उसे घूरा।

"मैं इसके एक अरब इण्डियन रुपया दे सकता हूं–वह भी गोल्ड की सूरत में।"

"एक अरव–!" हैरानी से उसकी तरफ देखा अवतार सिंह ने–"यानि आधी कीमत।"

"चोरी के माल की कीमत ऐसे ही मिलती है।"

मुस्कुरा पड़ा अवतार सिंह–एक जहरीली मुस्कान–"लगता है तुम भी दूसरे विदेशियों की तरह मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश

कर रहे हो—लेकिन मैं बेवकूफ नहीं—मूर्ति चोरी की है इसलिए मैं इसके डेढ़ अरब ले लूंगा—अगर डेढ़ अरब दे सकते हो तो बोलो—वर्ना मैं कोई दूसरा ग्राहक ढूंढ लूंगा—ग्राहकों की कमी नहीं है मेरे पास—यह तो तुम्हारे साथ पुराने लिंक हैं इसलिए पहले तुम्हें दे रहा हूं—आगे तुम्हारी मर्जी।"

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी राबर्ट ने—"मैं डेढ़ अरब देने को तैयार हूं—लेकिन मेरी भी एक शर्त होगी।"

डेढ़ अरब का नाम सुनकर ही अवतार सिंह का कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा—चेहरे की चमक एकदम से कई गुना तेज हो गई।

उसने राबर्ट को यूं ही ठस्का मार दिया था—वर्ना वह तो मूर्ति एक अरब में ही दे देता। सो तुरंत ही बोल पड़ा वह—

"क्या शर्त है तुम्हारी...?"

और—इससे पहले कि राबर्ट अपनी शर्त सुना पाता—

'तड़—तड़—तड़।'

गोलियों की आवाज सुनकर दोनों एक साथ उछल पड़े—और फटी-फटी आंखों से एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"य...यह तो गोलियों की आवाजें हैं...।" राबर्ट का फंसा-फंसा स्वर उभरा।

"हां...।" बड़ी मुश्किल से अवतार सिंह के होठों से निकला—डेढ़ अरब की मूर्ति उसके पास थी—बाहर गोलियां चल रही थीं—ऐसे में बड़े-से-बड़ा दिल-गुर्दे वाला भी घबरा जाता है।

वही हाल अवतार सिंह का हो रहा था।

तुरंत ही उसने मूर्ति को उठाया—लेकिन इससे पहले कि वह मूर्ति को वापिस सूटकेस में डाल पाता...।

❑❑❑

चाँद होटल पहुंचने से पहले ही राघव ने कार रोक दी और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला—"बस यहां पर उतर जाना चाहिए हमें—वो सामने—" उसने कुछ दूर बने चौक की तरफ इशारा किया—"चौक के दाईं तरफ दस कदम पर होटल चाँद है।"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और अपनी तरफ का दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

तब तक राघव भी बाहर आ चुका था।

ए०के० सैंतालीस को बलराज गोगिया ने अपनी शर्ट के अन्दर डाला और चौक की तरफ बढ़ने लगा—चूंकि राघव के पास उसका कम्बल था सो उसने अभी भी कम्बल ओढ़कर ए०के० सैंतालीस अपने सीने से लगा ली और बलराज गोगिया के पीछे-पीछे चल पड़ा।

होटल के समीप पहुंचकर बलराज गोगिया ठिठका—मुड़कर राघव की तरफ देखा और गम्भीर स्वर में बोला—"अन्दर अवतार केबिन नम्बर तीन में है—पता नहीं होटल में उसके गार्डों के रूप में कितने आदती हैं—अगर उनका पता चल जाए तो अवतार सिंह पर हाथ डालना आसान हो जाएगा।"

"इसका पता एक मिनट में लगा सकता है।" मुस्कुराते हुए बोला राघव।

"कैसे?" बलराज गोगिया चौंक कर उसकी तरफ देखने लगा।

"तुम बस मेरे पीछे छिपकर रहना और हॉल में फैले लोगों पर निगाह रखना—उसके आदमी तुम्हें स्वयं ही नजर आ जाएंगे।"

"मगर तुम करोगे क्या—कहीं कोई बेवकूफीभरा कदम न उठा लेना कि सारे किये-कराये पर पानी फिर जाए।"

"फिक्र मत करो—ऐसा कुछ नहीं होगा—बेशक अक्ल से कोरा हूं मैं—मगर इतना कोरा भी नहीं कि बनता काम बिगाड़ दूं।"

"तो फिर मैं पहले से ही हॉल में प्रवेश कर जाता हूं—इस प्रकार मैं हॉल में बैठे लोगों पर आसानी से नजर रख सकूंगा। मेरे हॉल में पहुंचने के पश्चात् तुम अपनी चाल चल देना।"

"ठीक है—तुम जाओ...मगर जरा ध्यान से—कहीं ऐसा न हो कि अवतार के आदमी तुम्हें पहचान लें।" मुस्कुराया बलराज गोगिया—"मैं ध्यान रखूंगा।"

और वह होटल के मेन गेट की तरफ बढ़ गया जहां पर कि एक लम्बा-तगड़ा पठान सिर झुकाकर आने वालों का अभिवादन कर रहा था।

बलराज गोगिया के सामने भी उसने सिर झुकाया और शीशे का दरवाजा खोल दिया।

सिर को नीचे झुकाए हुए धड़कते दिल से बलराज गोगिया अन्दर प्रवेश कर गया। मन-ही-मन वह भगवान का धन्यवाद कर रहा था कि दरबान की नजर उसके बेढंगे लग रहे पेट पर नहीं पड़ी—वर्ना अवश्य ही वह इसका कारण पूछता—और तब बलराज को फंसते देर नहीं लगती। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

बलराज गोगिया आराम से अन्दर हॉल में प्रवेश कर गया और दाईं तरफ कोने में थोड़े अंधेरे में रखी एक टेबल की तरफ बढ़ गया।

अभी वह ठीक से कुर्सी पर बैठ भी नहीं पाया था कि तभी—

'तड़—तड़—तड़।' गेट पर गोलियों की आवाज के साथ-साथ दरबान की चीख गूंज उठी—और इससे पहले कि हॉल में बैठे लोगों का ध्यान गेट की तरफ जाता—राघव भूत की तरह गेट पर प्रकट हुआ।

हाथों में थमी ए०के० सैंतालीस की नाल का रुख हॉल की तरफ था।

"खबरदार!" शेर की मानिंद दहाड़ा वह सेर भर का छोकरा—"अगर किसी ने भी गलत हरकत करने की कोशिश की तो अपनी मौत का जिम्मेवार वह खुद होगा—मुझे तुम लोगों से कोई दुश्मनी नहीं—दुश्मनी है तो उससे जो कि केबिन नम्बर तीन में बैठा है।"

केबिन नम्बर तीन का नाम राघव ने जानबूझ कर लिया था—ताकि हॉल में बैठे अवतार सिंह के आदमी समझ जाएं कि उन्हें अब हरकत में आना है।

राघव की युक्ति काम कर गई थी। बीच में पड़ी मेजों में से दो मेजों पर बैठे आदमियों में हल्की-सी हलचल हुई—उनके हाथ धीरे-धीरें उनकी जेबों की तरफ रेंग रहे थे—जेबों से होकर उनके हाथ बाहर निकले तो वो अपने साथ रिवॉल्वरें खींच लाये थे।

हॉल में बैठे अन्य व्यक्तियों की तरह उनका ध्यान भी सिर्फ राघव की तरफ था। लेकिन राघव का ध्यान उनकी तरफ नहीं था—और ऐसे मौके को वे भला कैसे छोड़ सकते थे!

उस मौके का फायदा उठाने के लिए अभी वे अपने हाथों को राघव की तरफ तान भी नहीं पाये की कि तभी—'तड़—तड़—तड़—।'

गोलियों की बौछार हॉल के दायें कोने से आई और उन सभी को लील गई।

भयानक चीखें मारते हुए वे सभी नीचे जा गिरे—कुछ तो कुर्सियों का भी कबाड़ा कर गए।

केबिन नम्बर तीन के सामने सिर्फ एक पल के लिए ठिठका बलराज गोगिया और फिर अपने पैर की जबरदस्त ठोकर दरवाजे पर रसीद कर दी।

'फटाक' से दरवाजा खुला और पीछे दीवार से जा टकराया।

उस वक्त केबिन के अन्दर अबतार सिंह मूर्ति को सूटकेस में रखने जा रहा था।

दरवाजा खुलते ही उसने चौंक कर दरवाजे की तरफ देखा। हाथों में राईफल पकड़े बलराज को सामने खड़ा देखा, उसकी आंखों में मौत नाच उठी।

"ब...ल...राज...!"

"बलराज़ गोगिया बोल हरामजादे—!" शेर की तरह गुर्राया बलराज गोगिया—"तू क्या समझता था मुझे खत्म करके तू मूर्ति को हासिल कर लेगा—कुत्ते की औलाद—तेरे सारे खेल का पता चला चुका है मुझे, और अब तो तू दोहरी मौत का हकदार बन गया है।"

"द...देखो बलराज...जो हुआ उसे भूल जाओ...आओ बैठो...म–मैं तुम्हें बराबर का हकदार बनाने को तैयार हूं।"

"अब तो मैं पूरी मूर्ति का हकदार बनूंगा हरामजादे–!" एक जहरीली मुस्कान मुस्कुराया बलराज गोगिया।

"ठ...ठीक है–त...तुम पूरी मूर्ति ही रख लो...।"

कहते हुए उसने मूर्ति को उठाया और बलराज गोगिया की तरफ बढ़ा दिया।

बस...यहीं पर खता खा गया बलराज गोगिया–मूर्ति को लेने के लिए जैसे ही उसने हाथ आगे बढ़ाया–अवतार ने एक ईंट की तरह मूर्ति उस पर दे मारी।

मूर्ति सीधा बलराज गोगिया के सीने से जा टकराई और नीचे गिर गई।

बुरी तरह से लड़खड़ाया बलराज गोगिया–स्वयं पर संतुलन कायम नहीं रख पाया वह और नीचे गिर गया, उसी के साथ ही अवतार ने उस पर छलांग लगा दी और सीधा उस पर आ गिरा।

ए०के० सैंतालीस तो बलराज गोगिया के हाथों में थी–मगर अवतार उसे इतना मौका नहीं दे रहा था–एक हाथ से नाल को पकड़े अवतार तड़ातड़ बलराज के चेहरे पर घूंसे बरसाने लगा।

और बलराज गोगिया–अनोखी स्थिति में फंस गया था।

राईफल को वह छोड़ नहीं सकता था–और राईफल पकड़े वह उसका कुछ बिगाड़ नहीं पा रहा था–अवतार सिंह का मुकाबला करने के लिए पहले उसे अपने हाथों को आजाद करना पड़ता–और ऐसा करने के लिए उसे राईफल छोड़नी पड़ती।

इधर अवतार के मुक्के हथौड़े की तरह उसके चेहरे पर बरस रहे थे, दांतों से नाक से खून बहने लगा बलराज गोगिया के।

तभी बलराज गोगिया ने पीछे से अपना घुटना चलाया। घुटना सीधा अवतार की पीठ से टकराया और वह डकराता हुआ आगे को उलट गया।

बस इतना मौका बहुत था बलराज गोगिया के लिए–अपने जिस्म को तेज झटका दिया उसने और अवतार को एक तरफ गिरा कर खड़ा हो गया।

अब बारी अवतार सिंह के पिटने की थी–और उसे मारने के लिए बलराज गोगिया ने ए०के० सैंतालीस के लोहे के बट का प्रयोग किया।

अवतार सिंह की दर्दभरी चीखें पूरे हॉल में गूंजने लगीं।

लहूलुहान कर डाला उसने अवतार के पूरे चेहरे को। कई जगह से उसकी चमड़ी फाड़ दी बलराज ने। अभी पता नहीं बलराज गोगिया

अवतार सिंह को और कितना मारता—लेकिन राघव की आवाज सुनकर उसे अपना इरादा त्याग देना पड़ा।

"बलराज पुलिस...!" राघव की तेज आवाज सुनकर बलराज गोगिया ने अपना चलता हुआ हाथ रोक दिया।

ए०के० सैंतालीस की नाल सीधी की और अवतार के सीने से टिका दी।

"न...हीं बलराज—म...मुझे मत मारो...।" बुरी तरह से गिड़गिड़ा उठा अवतार सिंह।

मगर बलराज गोगिया ने उसकी गिड़गिड़ाहट पर कोई तरस नहीं खाया और ट्रिगर दबा दिया।

'तड़—तड़' करता हुआ ए०के० सैंतालीस का सारा बारूद अवतार सिंह के सीने में जा समाया।

"तुझसे फिर मिलूंगा विदेशी खरीददार!" राईफल को एक तरफ फेंकते हुए बलराज गोगिया ने राबर्ट से कहा और झपट कर मूर्ति को उठाया और गेट की तरफ छलांग मार दी, जहां पर कि राघव खड़ा हुआ था।

बलराज गोगिया के पास आते ही राघव ने एक तरफ दौड़ लगा दी। बलराज गेगिया ने भी उसके पीछे-पीछे दौड़ लगा दी—पुलिस को जीपों से उतरते हुए देख चुका था वह।

उधर लखनपाल की नजर भी भाग रहे बलराज गोगिया और राघव पर पड़ चुकी थी।

अभी कुछ देर पहले ही सिटी थाने में फोन आया था चाँद होटल के मैनेजर का कि बलराज गोगिया होटल में अपने एक साथी के साथ कत्लेआम मचा रहा है।

सो तुरंत ही लखनपाल सिटी थाने के इंस्पैक्टर के साथ चाँद होटल के लिए रवाना हो गया। बलराज गोगिया को भागते देख चीख उठा लखनपाल—"बलराज गोगिया भाग रहा है इंस्पैक्टर...मूर्ति उसके हाथ में ही है। उसे रोको...।"

चीखने के साथ ही लखनपाल ने बलराज गोगिया तथा राघव के पीछे दौड़ लगा दी, इसके साथ ही उसने अपना रिवॉल्वर भी निकाल लिया।

ठिगने लखनपाल की फुर्ती देखकर एक बार तो इंस्पैक्टर भी हैरान रह गया—लेकिन जब वह सम्भला तो वह भी उसके पीछे भागा।

पीछे-पीछे पुलिस के कई जवान भी थे।

"रुक जाओ बलराज गोगिया!—" उसके पीछे भागता हुआ लखनपाल दहाड़ा—"देश की इस अमूल्य धरोहर को तुम यूं ही हजम नहीं कर पाओगे।"

लेकिन बलराज गोगिया नहीं रुका—वह जानता था कि रुकना उसके लिए मौत का सवब बन जाएगा।

सो उसने अपनी चाल और भी तेज कर दी।

"रुक जाओ बलराज गोगिया!" लखनपाल पुनः दहाड़ा—"वर्ना मैं गोली चला दूंगा।"

बलराज गोगिया तब भी नहीं रुका।

और तभी!

'धांय—।' एक जोरदार धमाका हुआ।

बलराज गोगिया को ऐसा लगा जैसे कोई अंगारा उसकी हथेली में आ लगा हो।

एक तेज झटका लगा उसके हाथ को और मूर्ति उसके हाथ से निकलकर सड़क पर आ गिरी।

मूर्ति को उठाने के लिए बलराज गोगिया झुका भी।

मगर तभी लखनपाल के रिवॉल्वर ने दोबारा आग उगल दी।

गोली बलराज गोगिया के कान को हवा देती हुई निकल गई।

हताश होकर उसने मूर्ति को उठाने का इरादा त्याग दिया और आगे की तरफ छलांग मार दी।

"बलराज...!"

तभी राघव की आवाज बलराज गोगिया के कानों से टकराई।

भागते हुए ही बलराज गोगिया ने आवाज की दिशा की तरफ देखा। राघव जा रही एक बस के पीछे भाग रहा था।

जिन्दगी को जीने की ललक ने बलराज गोगिया के जिस्म में एक नई शक्ति पैदा कर दी—और उसने दुगनी रफ्तार से बस की तरफ दौड़ लगा दी।

और शीघ्र ही वह राघव के पीछे-पीछे बस के पीछे बनी सीढ़ी को पकड़कर उस पर चढ़ गया। पुलिस से तो बच गया था वह मगर भगवान कृष्ण की दो अरब मूर्ति के हाथ से निकल जाने का उसे बहुत अफसोस हो रहा था।

❑❑❑

"क्या बात है ड्राईवर साहब—बस क्यों रोक दी?"

बस के ड्राईवर ने गर्दन सवारियों की तरफ घुमाई और बोला—"जाम लगा हुआ है।"

कहकर उसने कुछ दूर खड़े एक आदमी को जो कि शक्ल से ही ट्रक ड्राईवर नजर आता था को अपने पास बुलाया—"क्या बात है भाई—आगे एक्सीडेंट हो गया है क्या—?" उसके पास आते ही बस ड्राईवर ने पूछा।

"अरे नहीं भाई—चैकिंग चल रही है।" नीचे खड़ा आदमी

बोला—"परसों चण्डीगढ़ में जो मूर्ति चोरी हुई थी न—उसी सिलसिले में चैकिंग चल रही है।"

"लेकिन मूर्ति तो वापिस मिल गई है—मैंने आज सुबह पढ़ा है अखबार में।"

"लेकिन मूर्ति चोर तो भाग निकला था न।" वह बोला—"उसी के लिए नाकाबंदी की हुई है।"

ड्राईवर की सीट के ऐन पीछे बैठे बलराज गोगिया का कलेजा जोरों से धड़क उठा। नीचे खड़े व्यक्ति की बात सुनकर—आंखों में खौफ के साये मंडराने लगे।

यानि उसकी तलाश पूरी सरगर्मी से की जा रही है—और यह जो नाकाबंदी हुई है, वह भी उसी को ढूंढने के लिए की गई है।

मन-ही-मन भगवान को याद किया उसने और अपनी सीट के पीछे दो सीटें छोड़कर तीसरी सीट पर नजर डाली। राघव बैठा था वहां जो कि उसी की तरफ देख रहा था।

तभी तो नजरें मिलते ही उसने उसे आंख से इशारा कर दिया।

"बलराज गोगिया नाम ही है न उस चोर का—?" तभी ड्राईवर की आवाज उसके कानों में पड़ी—ड्राईवर नीचे खड़े आदमी से बात कर रहा था।

"हां—पट्ठे ने क्या दिमाग पाया है—सरकार की नाक के नीचे से इतने तगड़े सुरक्षा प्रबन्धों के बावजूद भी उसने किस आसानी से मूर्ति को चुरा लिया था!"

बलराज गोगिया चुपचाप अपने स्थान से उठा और दरवाजे से नीचे उतर गया। चूंकि कुछ अन्य सवारियां भी नीचे उतर आई थीं, इसलिए किसी को उस पर संदेह नहीं हुआ।

उसके पीछे-पीछे राघव भी नीचे उतर आया और किनारे पर लगे वृक्षों की तरफ पेशाब करने के बहाने बढ़ने लगा—उसके साथ-साथ बलराज गोगिया भी वहां उसके साथ खड़ा हो गया और पैंट की जिप खोलकर पेशाब करने लगा।

"यह पुलिस तो तुम्हारी फिराक में है बलराज—।" राघव सामने देखते हुए बोला।

"हां।"

"फिर क्या कहता है तू?"

"जाहिर है कि पुलिस के बस में प्रवेश करते ही तू पकड़ा जाएगा। मेरे बनिस्पत पुलिस तुझे खोजने में ज्यादा जोर लगा रही है—क्योंकि वह जानती है कि तेरे पकड़े जाते ही मैं भी उसके हाथ आ जाऊंगा।"

"आगे बढ़।" कुछ सोचकर फुसफुसाया बलराज गोगिया।

"आगे?" चौंका राघव—"आगे किधर?"

"सामने खेत है उन्हीं में घुसते हुए हम नाका पार करेंगे—और आगे जाकर नई बस पकड़ लेंगे।"

"और अगर पुलिस की नजर हम पर पड़ गई तो?"

"पुलिस की नजर तो यूं भी हम पर पड़नी है। मगर इस रास्ते से नाका पार करने में हो सकता है हम बच जाएं।"

राघव ने अपने पास यह देखने के लिए गर्दन घुमाई कि कोई उन्हें देख तो नहीं रहा—फिर बलराज गोगिया की तरफ चोर नजरों से देखते हुए बोला—"हर किसी की निगाह नाके की तरफ है।"

तुरंत ही बलराज गोगिया ने पैंट की जिप बन्द की और नीचे उतरकर खेतों की तरफ बढ़ने लगा। राघव अभी भी अपने स्थान पर पेशाब करने वाली मुद्रा में खड़ा था।

"ओये—किधर जा रहा है?" तभी पीछे से आवाज आई।

बलराज गोगिया ने गर्दन घुमाई—उसकी बस के दरवाजे में खड़ा एक सब-इंस्पेक्टर उसे ही कह रहा था।

बलराज का चेहरा देखते ही चौंक उठा सब-इंस्पैक्टर—तुरंत ही उसने खिड़की से छलांग लगाई और रिवॉल्वर निकाल लिया।

"राघव भाग।" एकदम से चिल्लाया बलराज गोगिया और खेतों की तरफ छलांग लगा दी।

राघव भी पूरी शक्ति से बलराज के पीछे भागा।

'धांय' तभी पीछे से सब-इंस्पैक्टर ने गोली चला दी—लेकिन गोली उन तक पहुंचने से पहले ही दम तोड़ गई—गोली की रेंज से बाहर थे दोनों।

मगर गोली की आवाज ने नाके पर खड़े पुलिसियों का ध्यान अपनी तरफ जरूर खींच लिया था।

"रुक जाओ बलराज गोगिया—अब तुम पुलिस से नहीं बच सकते।"

पीछे से सब-इंस्पैक्टर की गरजदार आवाज आई।

मगर रुकने के स्थान पर बलराज गोगिया ने अपनी गति को और तेज कर दिया। भागते हुए ही उसने पीछे मुड़कर देखा—आठ-दस पुलिस वाले उसके पीछे भाग रहे थे।

तभी रेलगाड़ी की सीटी की आवाज सुनकर बलराज तथा उसके साथ भाग रहे राघव की निगाहें आवाज की दिशा में घूमी—मालगाड़ी आ रही थी—लेकिन वे दोनों अभी लाईनों से काफी दूर थे।

"तेज भाग राघव!" बलराज गोगिया चीखा—"ट्रेन को पकड़कर ही हम बच सकते हैं।"

दोनों बिजली की सी गति से लाईनों की तरफ भागने लगे। रास्ता हालांकि खराब था—खेतों की पगडंडियों पर भागना पड़ रहा था उन्हें—मगर फिर भी वे पूरी गति से भाग रहे थे। उधर मालगाड़ी धड़धड़ाती हुई आगे आती जा रही थी। पीछे पुलिस वाले क्षण-प्रति-क्षण नजदीक पहुंच रहे थे।

लेकिन फिर भी वे लाईनों के पास पहुंच गए। ट्रेन अभी उन तक नहीं पहुंची थी।

सो दोनों लाईनों के बराबर गाड़ी के जाने वाली दिशा की तरफ भागने लगे—ऐसा उन्होंने इसलिए किया था कि तेज गति से चलती ट्रेन को पकड़ सकें।

धाड़-धाड़ करता हुआ इंजन उनके पास से गुजर गया—और फिर एक-एक करके डिब्बे उनके बराबर से गुजरने लगे।

बलराज गोगिया ने भागते हुए ही एक डिब्बे को पकड़ा और उसके साथ लटक गया।

उसने राघव की तरफ देखा—उसके पीछे-पीछे वह भी ट्रेन से लटक गया था।

जिस वैगन को उन्होंने पकड़ा था—वह कोयले से भरी हुई थी। दोनों फुर्ती से उस पर चढ़े ओर कोयलों पर लेट गए।

ऐन उसी वक्त एक साथ कई गोलियां वैगन की बॉडी से टकराईं।

मगर अब वे सेफ थे।

बुरी तरह से हांफते हुए बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा। दोनों की निगाहें मिलीं और होठों पर मुस्कान नाचने लगी।

बाल-बाल बचे थे वे।

❑❑❑

पांच-छः किलोमीटर दूर पहुंचकर ट्रेन की गति धीमी होने लगी। बलराज गोगिया ने वैगन में से सिर निकालकर बाहर झांका।

कोई स्टेशन आ रहा था।

उसने गर्दन नीची की और राघव की तरफ देखते हुए बोला—''गाड़ी रुकने वाली है—और हो सकता है पुलिस हमें पकड़ने के लिए घेरा डाल चुकी हो। हमें यहीं उतर जाना चाहिए।''

''ठीक है उतरो।'' राघव बोला और खड़ा हो गया।

चलती हुई गाड़ी से दोनों नीचे उतरे और एक तरफ दौड़ लगा दी। करीब आध-पौन किलोमीटर चलकर वे दोनों हाईवे पर पहुंचे और वहीं से एक आटो रिक्शा पकड़कर बस अड्डे की तरफ रवाना हो गए।

"राजपुरा शहर है यह।" राघव एक दुकान पर लगे न्यून बोर्ड को पढ़ते हुए बोला।

"कहीं यहां भी तो पुलिस...?"

"उम्मीद तो नहीं—मगर आगे क्या कहा जा सकता है—बस एक बार गंगा नगर पहुंच जाएं—फिर काम आसान हो जाएगा।"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और आंखें बंद कर लीं।

बस अड्डे पर उतरकर दोनों ने गंगा नगर जाने वाली बस का पता मालूम किया—पता लगा कि बस तैयार खड़ी है। वह वापिस बलराज के पास पहुंचा और उसे लेकर बस में सवार हो गया।

करीब पांच मिनट बाद जब बस चली तो एक लम्बी सांस छोड़कर बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा—"एक बार पंजाब की सीमा से बाहर निकल जाऊं—फिर कोई खतरा नहीं होगा।" वह फुसफुसाया।

मुस्कुराया राघव—"अगर तेरी किस्मत में जिंदगी है तो पूरी दुनिया की फौज भी तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"

"ठीक कहता है तू—अगर भगवान ने जिन्दगी बख्शी है तो मुझे कुछ नहीं हो सकता।"

❑❑❑

रात के साढ़े दस बजे बलराज गोगिया और राघव गंगा नगर के बस अड्डे पर उतरे।

बाहर आकर बलराज गोगिया ने रिक्शे वाले को आवाज देनी चाही—लेकिन उससे पहले ही राघव बोल पड़ा—

"रहने दे—हम पैदल ही चलते हैं—कोई खास दूर नहीं है गंगा सिंह चौक।"

राघव उसे लेकर सड़क के किनारे चलने लगा।

"आदमी तेरे विश्वास का है न?" चलते हुए पूछा बलराज ने—"कहीं ऐसा न हो कि इनाम के लालच में हमें पुलिस के हाथ सौंप दें।"

"फिक्र मत कर यार—बन्ने सिंह को मैं पिछले पंद्रह साल से जानता हूं—बेशक एक नम्बर का हरामी है वह लेकिन यारमार नहीं—तेरे को भारत से बाहर निकालने का भी वह बंदोबस्त कर देगा।"

"बस एक बार विदेश पहुंच जाऊं—फिर बाकी की जिन्दगी चैनो-अमन से गुजारूंगा।" बोला बलराज गोगिया।

करीब पंद्रह मिनट बाद ही दोनों गंगा सिंह चौक पहुंच गये। चौक के बीचों-बीच गंगानगर के संस्थापक श्री गंगाराम की विशाल

प्रतिमा लगी हुई थी। रात का अंधेरा उस काली प्रतिमा को अपने अंदर छुपाने की कोशिश जरूर कर रहा था—लेकिन एक परछाई के रूप में प्रतिमा अपना अस्तित्व बरकरार रखे हुए थी। बलराज को लिए राघव बाईं तरफ वाली सड़क पर मुड़ा और कुछ दूर आगे बाईं तरफ एक गली में प्रवेश कर गया।

गली के सबसे अन्त में पहुंचकर राघव एक दरवाजे के सामने ठिठका और बलराज गोगिया की तरफ देखा—

"यही है बन्ने सिंह का मकान—ताला नहीं लगा हुआ—मतलब वह घर में ही है।"

"तो बुला उसे।"

राघव ने दरवाजे पर दस्तक दी और खड़ा होकर दस्तक की प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगा।

शीघ्र ही अन्दर से आवाज आई—"कौन है?"

"मैं हूं—राघव—दरवाजा खोल बन्ने सिंह।"

फौरन खुला दरवाजा और उसमें से गन्ने की तरह पतला और लम्बा लेकिन सख्त चेहरे वाला आदमी नमूदार हुआ। वह बन्ने सिंह ही था।

"राघव—मेरे यार!" बन्ने सिंह ने अपनी बांहें फैला दीं।

तुरंत ही राघव उछला और उसकी छाती से जोंक की तरह चिपट कर बेतहाशा उसका मुंह चूमने लगा।

"अ-र-र एक ही बार में सब कुछ कर डालेगा।" हड़बड़ाया बन्ने सिंह। राघव उछल कर पुनः जमीन पर खड़ा हो गया।

"बड़े दिनों बाद यार की याद आई।" बोला बन्ने सिंह—और तभी उसकी नजर बलराज पर पड़ी—

"ये कौन साहब हैं?"

"अन्दर चल—बताता हूं।" राघव उसे धकेलता हुआ बोला।

"ओह हां।" बन्ने सिंह स्वयं ही एक तरफ हट गया।

राघव के पीछे-पीछे चलता हुआ बलराज गोगिया भी अन्दर दाखिल हो गया। बन्ने सिंह ने दरवाजा बन्द किया और दोनों को लेकर अपने बैडरूम में आ गया।

बैडरूम क्या था—अच्छा खासा कबाड़खाना था—कोई भी चीज सलीके से नहीं पड़ी थी—बस केवल एक बिस्तर ही ऐसा था जिसे साफ-सुथरा और सलीके से बिछा कहा जा सकता था।

"बैठो।" तभी बोला बन्ने सिंह।

दोनों पलंग पर बैठ गए।

उनके बैठते ही बलराज गोगिया का चेहरा बन्ने सिंह की तरफ हुआ—और उसी क्षण उछल पड़ा बन्ने सिंह।

"त–तुम–बलराज हो–बलराज गोगिया।"

हैरानी से मुंह खुले रह गए बलराज गोगिया और राघव के। बलराज का तो कलेजा ही धड़कने लगा था।

"त–तुम जानते हो मुझे?" फंसे-फंसे स्वर में बोला बलराज।

"तुम्हारी शक्ल देखकर पहचाना–दो ही दिनों में तुम पूरे पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और राजस्थान में मशहूर हो गए हो–जो कारनामा तुमने अंजाम दिया–उसने तो अण्डरवर्ल्ड में तुम्हें हीरो बना दिया है–चारों राज्यों के हर पुलिस स्टेशन में तुम्हारी फोटो के साथ तुम्हें गिरफ्तार करने की अपील पहुंच चुकी है।"

"ओह!"

"और अभी थोड़ी देर पहले टी०वी० न्यूज में भी तुम्हारे दर्शन कर चुका हूं–जिस तरह से तुमने पुलिस की नाकाबंदी को तोड़ा है–समाचारों में सुन चुका हूं।"

बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा।

"तुम्हारे साथ किसी ठिगने का भी जिक्र था–मगर उस वक्त मेरे दिमाग में भी नहीं था कि वह मेरा यार राघव हो सकता है–मगर तुम्हारी सूरत देखते ही मैं सब कुछ समझ गया–मगर तुम!" उसने राघव की तरफ देखा–"बलराज गोगिया के सम्पर्क में कैसे आये?"

राघव ने बिना किसी लाग-लपेट के सब कुछ बता दिया–अपनी बात बताकर वह आगे बोला–

"मैं तेरे पास एक काम से आया हूं बन्ने।"

"अरे दो काम बोल यार।" मुस्कराया बन्ने सिंह।

राघव एक पल के लिए हिचका–फिर कहने लगा–"तू यह तो जान ही चुका है यार कि पंजाब की तथा हरियाणा की पुलिस मेरे यार के पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई है–और तू यह भी जान चुका है कि बलराज मेरा वैसा ही यार है जैसे तू है।"

"साफ-साफ कह क्या कहना चाहता है?"

"बलराज विदेश जाना चाहता है।"

"क्या?" बुरी तरह से चौंका बन्ने सिंह–और आंखें फाड़कर बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा।

"हां–।" उसे अपनी तरफ देखते देख बोला बलराज–"अब तक मैंने जो भी जुर्म किया–जितने भी खून किये–उनमें मेरी मर्जी नहीं थी–मगर चूंकि अब मेरे साथी पर खूनी तथा चोर का लेबल लग चुका है–और पुलिस मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई है–सो अपनी बाकी की जिन्दगी में किसी अन्य देश में रहकर ही चैन से गुजार सकता हूं–यहां भारत में तो पुलिस मुझे टिककर रहने नहीं देगी–राघव ने तुम्हारा नाम सुझाया कि तुम मुझे विदेश भेज सकते

हो—सो हम दोनों तुम्हारे पास आ गए।"

बन्ने सिंह कुछ देर तक सोचपूर्ण मुद्रा में बैठा रहा—फिर बोला—"जाना कहां चाहते हो?"

"कहीं भी हिन्दुस्तान के बाहर।"

"दुबई जाओगे?"

"जरूर जाऊंगा—।" तुरंत ही बोला बलराज।

"तीन दिन बाद यहां से गुप्त रूप से एक दल पाकिस्तान की सीमा पार करेगा—यहां से समुद्री जहाज द्वारा दुबई।"

"क्या उससे पहले नहीं हो सकता यह काम?"

"नहीं।" बोला बन्ने सिंह—"लोगों को विदेश पहुंचाने का धंधा करने वाले लोगों में से एक को जानता हूं मैं—मैं बात करूंगा उससे।"

बलराज गोगिया ने असहाय भाव से राघव की तरफ देखा।

"घबराओ नहीं।" उसके देखने के भाव को समझते हुए बोला बन्ने सिंह—"राघव का यार मेरा यार—यहां तुम्हें किसी तरह की कोई कमी नहीं होगी—और न ही कोई खतरा है।"

"तो फिर कुछ पीने-पिलाने का बंदोबस्त कर।"

"बंदोबस्त तो हर वक्त रहता है मेरे पास।" मुस्कराते हुए बोला बन्ने सिंह और उठकर खड़ा हो गया।

❑❑❑

सुबह का निकला हुआ बन्ने सिंह दोपहर साढ़े बारह बजे वापिस आया—अपने साथ वह डिब्बाबन्द भोजन भी ले आया था।

"पता किया?" उसके कुर्सी पर बैठते ही पूछा राघव ने।

"हां।" खाने-पीने का सामान मेज पर सजाते हुए बोला बन्ने सिंह—"उसी के पास से ही होकर आ रहा हूं मैं।"

"फिर क्या बोला वो?"

"परसों दस आदमी मुल्क के बाहर भेज रहा है वह—मैंने उससे कहा कि मेरा भी एक आदमी बाहर भेज दे—उसने फौरन हामी भर ली, मगर—।" कहते-कहते चुप हो गया बन्ने सिंह।

"मगर क्या?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"हरामजादा सत्तर हजार मांग रहा है।"

"ओह!" बलराज का मुंह लटक गया।

"मैंने अपनी दोस्ती का वास्ता भी दिया—लेकिन टस-से-मस नहीं हुआ।" वह बोला—"बिजनेस अपनी जगह दोस्ती अपनी जगह—एक धेला भी कम करने को राजी नहीं हुआ।"

बलराज गोगिया ने असहाय भाव से राघव की तरफ देखा—जैसे पूछ रहा हो कि अब क्या किया जाए?

"मेरे पास सिर्फ पंद्रह हजार हैं–।" राघव की तरफ देखते हुये बोला बन्ने सिंह–"पांच-सात और इधर-उधर से इकट्ठे कर लूंगा–।"

"रहने दे यार–तूने कह दिया इतना ही बहुत है हमारे लिए।"

"लेकिन बलराज गोगिया को विदेश भेजना भी तो जरूरी है–यहां पर तो हर वक्त इसके पकड़े जाने का खतरा बना रहेगा–और यह तो बलराज भी खूब समझता है कि पकड़े जाते ही इसे सीधा फांसी के फंदे पर झुला दिया जाएगा–यूं भी यह फांसी घर से भागा हुआ मुजरिम है–और सरकार की तरफ से भी इसे जिन्दा या मुर्दा पकड़े जाने की अपील जारी की गई है।"

"छोड़ो यह सब–।" तभी बलराज गोगिया बीच में बोल पड़ा–"यह बताओ कि अगली रवानगी कब होगी?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता–दो महीने भी लग सकते हैं–चार भी लग सकते हैं–क्योंकि दस आदमियों से कम लेकर जाता नहीं वह–और इतने आदमी इकट्ठा होने में वक्त का क्या पता लगाया जा सकता है।"

बलराज गोगिया के चेहरे पर निराशा तैरने लगी।

उसके चेहरे को देखकर राघव ने उसकी जांघ पर हाथ मारा–"हौसला कर यार–तू तो हिम्मत हार बैठा।"

फीकी मुस्कान मुस्कुराया बलराज गोगिया–"ऐसी बात नहीं यार–मैं तो यह सोच रहा हूं कि तब तक बन्ने सिंह पर बोझ बने रहना क्या अच्छा लगेगा?"

"तू परसों ही जाएगा।"

बुरी तरह से उछल पड़ा बलराज गोगिया–"परसों कैसे जा सकता हूं मैं जबकि जाने के लिए सत्तर हजार रुपये चाहियें।"

"हिम्मत पैदा कर–सत्तर हजार की तो औकात ही क्या है।"

"इस वक्त बहुत बड़ी औकात है यार–सत्तर हजार मोल है मेरी जिन्दगी का।" बलराज बोला–"लेकिन तू ऐसा कैसे कह रहा है?"

राघव एक क्षण के लिए ठिठका–फिर बोला–"अगर हम किसी ऐसी आसामी को ढूंढ लें जिससे हमें सत्तर-अस्सी हजार मिल सकता हो तो तुम्हारे जाने का बंदोबस्त हो जाएगा।"

"य...यानि चोरी?" बलराज गोगिया की आंखें फैलीं।

"तो इसमें हर्ज ही क्या है–?" बन्ने सिंह बोल पड़ा–"इसे तुम अपनी जिन्दगी का आखिरी पाप समझकर भूल जाना–और विदेश जाकर अमनचैन से अपनी जिंदगी गुजारना।"

"ल...लेकिन।"

"तुम्हारी परसों की रवानगी के लिए एक चोरी तो जरूरी है यार।"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और हारे स्वर में बन्ने सिंह की तरफ देखते हुए बोला–

"तुम ठीक कहते हो। विदेश भागने के लिए मुझे एक चोरी तो जरूर करनी पड़ेगी।"

"बन्ने!" तभी राघव बन्ने सिंह से सम्बोधित हुआ–"तू तो इसी शहर में रहता है–अभी खाना खा और निकल जा–शाम तक किसी शिकार का पता लगाकर आ–जिससे हमें कम से कम एक लाख रुपया प्राप्त हो सके।"

"फिक्र मत करो–मैं शाम से पहले ही पता लगा आऊंगा।" कहते हुए बन्ने सिंह की आंखों में एक अनोखी चमक नाचने लगी थी।

और फिर तीनों खाना खाने बैठ गए।

❑❑❑

"यह आदमी मुझे सही नहीं लगता।"

बलराज गोगिया की बात सुनकर राघव हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा। उस वक्त बन्ने सिंह शिकार की तलाश में निकल चुका था–और अब बन्ने सिंह के घर में वही दोनों ही रह गए थे।

"कैसी बात करता है यार तू–पिछले पंद्रह सालों से मैं जानता हूं इसे। तू क्या समझता है बन्ने सिंह तुझे पुलिस को सौंप देगा?"

"मैंने ऐसा नहीं कहा?"

"तो फिर क्या कह रहा है।"

"यही कि यह आदमी यारी के लायक नहीं, चेहरे से ही नम्बर एक का हरामी नजर आ रहा है।"

"वो तो मैंने पहले भी कहा था–बन्ने सिंह हरामी जरूर है यारमार नहीं।"

"यह आदमी यारमारी भी कर सकता है।"

"अगर ऐसा कर सकता होता तो अपनी जमा पूंजी हमें सौंपने को तैयार न होता।"

प्रत्युत्तर में बोलने की बजाय मुस्कुरा पड़ा बलराज गोगिया–जैसे इस वक्त वह उसकी बात का जवाब न देना चाहता हो।

"तू मुस्कुरा क्यों रहा है?"

"यूं ही–तू बता–काम क्या करता है बन्ने सिंह?"

"हेरा-फेरी–इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट।" मुस्कुराया राघव–"सीमा

पार का माल यहां बेचता है और यहां से सीमा पार माल भेजता है।"

"फिर तो इसका पाकिस्तान आना-जाना लगा रहता होगा।"

"नहीं—अगर ऐसा होता तो इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का बिजनेस खुद कर रहा होता—यह तो मात्र उसका एक कारिंदा है।"

"यानि किसी स्मग्लर का खास आदमी है।"

"हां।"

"और खास आदमी होने के बावजूद भी वह अपने बॉस से कहकर मुझे पाकिस्तान नहीं भिजवा सकता।"

सुनकर चौंका राघव और बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"इसका मतलब तो यह हुआ कि अगर मैं तुझे चोरी करने का सुझाव नहीं देता तो बन्ने सिंह वही सुझाव तुझे दे देता।"

"हो सकता है इससे भी तगड़ा सुझाव देता कोई—मगर देता जरूर—और इस सुझाव में वह अपना फायदा पहले सोचता।"

"फिर तो वो अब भी अपना फायदा जरूर सोचेगा।"

"बिल्कुल ऐसा ही होगा—और देख लेना जो भी शिकार ढूंढ कर लाएगा—काफी तगड़ा होगा ताकि बहती गंगा में वह भी डुबकी लगाकर धन्य हो जाए।"

"मेरा दिल नहीं मानता।"

"तेरा यार जो ठहरा—अभी तक तुझे चोट जो नहीं लगी—यूं तो तेरा-उसका वास्ता ज्यादा बार नहीं पड़ा होगा—और जब भी पड़ा होगा उसे तुझमें कोई मुनाफा नजर नहीं आया होगा—जबकि मुझे देखते ही वह कूद कर इस नतीजे पर पहुंच गया होगा कि अगर मैं करोड़ों की मूर्ति चुराने की कुव्वत रखता हूं तो फिर उसके लिए भी काफी कुछ कर सकता हूं।"

कहकर बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और आगे बोला—

"फिर भी मैं चोरी करूंगा—मैं यही समझ लूंगा कि अपनी मेहनत और मुझे बाहर भेजने की फीस ली है उसने।"

"ल...लेकिन यार—।"

"बस यार—अब कोई और बात कर।"

"क्या बात करूं?"

"यही कि जब मैं दुबई चला जाऊंगा तो मुझे याद करेगा कि नहीं—मुझसे मिलने आया करेगा न?" प्रत्युत्तर में बोला कुछ नहीं राघव—एक गम्भीर मुस्कान उसके होठों पर आ गई—चेहरा भारी नजर आने लगा। आंखों के कोर गीले होने लगे थे।

□□□

"तो वह बलराज है।"

"हां जी।"

"बलराज गोगिया?"

"उसने अपने मुंह से इकरार किया है कि वह बलराज गोगिया ही है।"

बलराज गोगिया का कहना गलत नहीं था। बन्ने सिंह वाकई हरामी किस्म की नस्ल का इंसान था। इस वक्त बड़ी-बड़ी मूंछों तथा भारी चेहरे वाले, शक्ल से ही राजस्थानी नजर आने वाले अमर सिंह राठौर के सामने बैठा था। अण्डरवर्ल्ड में राठौर का काफी दबदबा था। दस साल पहले वह छोटी-मोटी स्मगलिंग करने के साथ-साथ हर वह काम करता था जो कि एक टुच्चा बदमाश करता है। किसी की टांग तोड़नी हो—बांह तोड़नी हो—कत्ल करना हो—इन सबका ठेका लेता था राठौर और फिर उन्हें ठोकता था।

लेकिन जब से उसने नारकाटिक्स के धंधे में कदम रखा—वह इन छोटे-मोटे धंधों से परहेज करने लगा—अब तो वह मोटे ठेके ही पकड़ता था—छोटे-मोटे ठेके तो उसके प्यादे ही ठोक देते थे।

राठौर के मोहरों में वजीर से नीचे तथा प्यादों से ऊपर घोड़े की हैसियत थी बन्ने सिंह की।

हवा के झोंके से हिल जाने वाला बन्ने सिंह जिस्म से बेशक कमजोर लगता था लेकिन बला कि शक्ति थी उसमें और तिकड़म भिड़ाने में तो राठौर भी उसका सानी नहीं था—और उसके हरामीपन से तो राठौर भी वाकिफ था—शायद यही कारण था कि उसे उसके गैंग में वजीर की हैसियत नहीं मिली।

राठौर ने अपनी दाईं मूंछ के कोर को हल्का उमेठा और बोला—"तो बलराज गोगिया विदेश भागना चाहता है।"

"हां—।" बोला बन्ने सिंह—।" मैंने फौरन हांमी भर दी कि मैं उसे दुबई पहुंचा दूंगा—लेकिन फिर मैंने यह कहा कि इसके लिए सत्तर हजार रुपयों की जरूरत है—बस वहीं उसकी मां मर गई। और इससे पहले कि मैं कोई सुझाव दे पाता—राघव ने कह दिया कि वह एक लाख की चोरी करेगा—वर्ना मैं तो उसे सीधा आपके पास ही लाता—मजबूरन मुझे भी हां करनी पड़ी। वर्ना मैं तो उसे आपके पास लाने वाला था हुजूर।"

"और उस हां में तुझे अपना फायदा भी नजर आया?" राठौर ने आंखें तरेरीं।

"न...नहीं हुजूर—म—मुझे भला क्या फायदा होगा?" हड़बड़ा गया बन्ने सिंह।

"बक मत—तेरी हरामजदगी को खूब जानता हूं मैं—तेरे वश में होता तो अपनी मां के पेट से कूद कर किसी और औरत के पेट में जा घुसता—तूने सोचा होगा कि बलराज गोगिया को कोई ऐसा शिकार ढूंढकर दोगे जो उसे एक लाख देने के साथ-साथ आठ-दस लाख तुझे भी दे दे—अरे हरामी की औलाद कम से कम मेरे से आकर बात तो करता।"

"आया तो हूं आपके पास।"

"अब आया है—पहले क्या अपनी मां के यार से मिलने गया था—या उसे बताने गया था कि बलराज आ गया है। उससे पहले मुझे कहा होता—फिर हम दोनों मिलकर कोई स्कीम बनाते—बलराज गोगिया के जरिये कोई मोटा नावां पीटने की तिकड़म भिड़ाते—फिर उसे विदेश भेज देते।"

"व—वो तो अब भी हो सकता है हुजूर।"

"कैसे—कैसे हो सकता है?"

और बन्ने सिंह उसे बताने लगा।

घूरकर देखा राठौर ने उसे—"यानि अपनी हरामजदगी से बाज नहीं आयेगा तू।"

"वो क्या है हुजूर—बलराज गोगिया की कृपा से छोटा-मोटा मकान मैं भी ले लूंगा।"

"क्यों, शादी करवाने जा रहा है तू?"

बन्ने सिंह ने खींसें निपोर दीं।

"अपनी मां के साथ?"

गैस निकले गुब्बारे की तरह फुस हो गया बन्ने सिंह—राठौर में सबसे बड़ी कमी यही नजर आती थी उसे कि वह हर वक्त उसी की मां के पीछे पड़ा रहता था—कोई भी बात होती राठौर उसकी मां की ऐसी-तैसी कर देता—अगर उसकी मां अब तक जिंदा होती तो जितनी बार राठौर ने अपनी जुबान से उसकी शादी की उसके यारों की बात की और वो सच होती तो गंगानगर में शायद ही कोई ऐसा घर बचता जिसमें उसकी मां का खसम या यार न होता। मन-ही-मन बन्ने सिंह भगवान का शुक्र मना रहा था कि वक्त रहते उसकी मां मर गई—वर्ना उसे तो पूरे गंगानगर को अपना बाप कहना पड़ता।

"अबे हराम के जने, अगर तेरा काम करते हुए ही वह पुलिस के हत्थे चढ़ गया तो?"

"ए—ऐसा नहीं हो सकता।" हड़बड़ाया बन्ने सिंह।

"क्यों नहीं हो सकता?" आंखें तरेरीं राठौर ने—"क्या उसके

पास कोई जादुई चिराग है, जिसे घिसते ही जिन्न पैदा होगा जिसे वह चोरी करने का हुक्म देगा?"

"उसने इतनी बड़ी चोरी की—वह भी पूरी कामयाबी से।"

"एक कारनामा अंजाम देने से कोई तजुर्बेकार नहीं बन जाता—हत्याओं के मामले में वह जरूर, कुछ तजुर्बा रखता है—लेकिन चोरी तो उसने पहली ही की थी।"

"और उसी में कामयाब हो गया—इतने पुख्ता प्रबंधों के बीच से मूर्ति को चुराना किसी अनाड़ी का काम नहीं हो सकता हुजूर।"

"हो सकता है उस वक्त उसकी किस्मत साथ दे रही हो—और वह कामयाब हो गया।"

"तो क्या मैं इतना मनहूस हूं कि मेरे मामले में किस्मत उसका साथ नहीं देगी।"

राठौर ने खा जाने वाली निगाहों से उसे घूरा—बुरी तरह से बौखला गया बन्ने सिंह—आंखें स्वयं ही नीची हो गईं।

"यानि तूने बलराज गोगिया से चोरी करवाने की पक्की ठान ली है?" वह गुर्राया।

बन्ने सिंह कुछ नहीं बोला—बस राठौर पर नजर डालकर पुनः झुका ली।

"जाकर अपनी मर्जी—लेकिन इतना याद रख अगर तू पुलिस के हत्थे चढ़ गया तो मैं तुझे छुड़वाने के लिए कुछ नहीं करूंगा।"

"क—कैसी बात करते हैं आप हुजूर—आप कहें तो मैं उसे सीधा आपके पास ले आऊं।"

"नहीं—अब तू पहले अपना काम करवा ले—अगर तूने अपना काम नहीं करवाया तो बाद में अपना हरामीपना दिखाने से बाज नहीं आयेगा।"

"लगता है हुजूर को विश्वास नहीं रहा मुझ पर।"

"अब चापलूसी बन्द कर और दफा हो जा—तेरे काम करवाने से पता चल जाएगा कि पिछली चोरी में वह इत्तफाक से कामयाब हुआ था या उसके दिमाग ने अपना कमाल दिखाया था। एक ही बार जादू दिखा देने से कोई भगवान नहीं बन जाता। बार-बार करतब दिखाने पड़ते हैं—तभी जादूगर अपना प्रभाव जमा सकता है।"

बन्ने सिंह हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा—कैसा था उसका बॉस—कुछ समझ नहीं आ रहा था—अभी-अभी तो उसे उसका काम करवाने से मना कर रहा था और अब उसे कहकर बलराज गोगिया की परीक्षा करवा रहा है।

कुछ समझ नहीं पा रहा था वह कि राठौर के मन में क्या है?

लेकिन इतना जरूर तय था कि अगर वह हरामजादा है तो

राठौर उससे हजार गुणा बड़ा हरामजादा है--अगर उसकी मां ने तो एक ही गैर मर्द से सम्बंध बनाकर उसे पैदा किया था तो राठौर की मां ने हर रोज एक मर्द बदला होगा।

यह बात दिल में तो जरूर सोच सकता था वह--लेकिन मुंह से कहने की जुर्रत नहीं कर सकता था।

सो मन-ही-मन राठौर को हजारों गालियां बकते हुए उठा और बाहर निकल गया।

❑❑❑

शाम को साढ़े छः बजे बन्ने सिंह अपने घर पहुंचा। बलराज गोगिया और राघव उसे अपना इंतजार करते हुए मिले।

"शिकार ढूंढा?" राघव उसे देखते ही बोला।

"हां--मिला भी--।" बन्ने सिंह पलंग पर बैठते हुए बोला--"कोतवाली के पास ही चौक है--उस चौक से बाईं तरफ आगे जाने पर एक पार्क है उसके ऐन सामने विकास भाटिया की कोठी है--मैंने पता लगाया कि उसकी तिजोरी में हर वक्त दो-चार लाख रुपये पड़े रहते हैं।"

"घर में और कौन-कौन हैं उनके?" बलराज गोगिया गम्भीर मुद्रा में बोला।

"पत्नी और दो जवान लड़कों के अलावा एक पोती है--जो कि सबसे बड़े लड़के की लड़की है। बड़े लड़के की पत्नी की अपनी गली के दो लड़कों के साथ आश्नाई थी--इसका पता जब उसके पति को लगा तो उसने उसे रोका भी--लेकिन बीवी नहीं मानी और फिर एक दिन जब उस लड़के ने दोनों आशिकों को आपत्तिजनक अवस्था में बिस्तर पर कबड्डी खेलते देखा तो उसका खून खौल उठा और वह अपनी पत्नी के आशिक पर टूट पड़ा--अपने यार की धुनाई होते देख उसकी पत्नी को गुस्सा आ गया और वह अपने यार का साथ देती हुई अपने पति पर टूट पड़ी। फलस्वरूप पति की मौत हो गई और दोनों यार पकड़े गए--इस वक्त वे दोनों जेल की हवा खा रहे हैं। अपने लड़के की एकमात्र निशानी को उसके दादा यानि विकास भाटिया ने अपने पास रख लिया है--और अब वह उसी में अपने लड़के को ढूंढता रहता है।"

"इनके अलावा और कौन है घर में?" उसके चुप होते ही बलराज गोगिया ने अगला प्रश्न पूछा।

"इनके अलावा तीन नौकर हैं--और तीनों ही रात में भी उसके घर में ही रहते हैं।" बन्ने सिंह बोला।

"मकान या कोठी कैसी बनी हुई है?"

"एक बन्द संदूक की तरह।" बन्ने सिंह ने जवाब

दिया—"सिर्फ प्रवेश द्वार से ही कोठी में प्रवेश किया जा सकता है।"

"यानि और कोई रास्ता नहीं प्रवेश करने का?"

"नहीं।"

"तो फिर कोई और शिकार ढूंढ—।" बोल पड़ा राघव—"अपने यार के लिए मैं कोई बड़ा रिस्क नहीं लेना चाहता—कोठी बन्द डिब्बे की तरह है—घर में आठ मैम्बर हैं—पास ही कोतवाली है—अगर सभी चिल्ला पड़े तो पूरे गंगानगर में जाग हो जाएगी—और कोतवाली में तो सभी पुलिस वाले उछल ही पड़ेंगे।"

"कैसी बात करता है यार तू—।" बन्ने सिंह चापलूसी वाले अंदाज में बोला—"अपना बलराज कोठी में प्रवेश करने का रास्ता ढूंढ ही लेगा।"

"नहीं—मैं बलराज को इतना बड़ा रिस्क नहीं लेने दूंगा।" गुर्राया राघव—"तू कोई ऐसा शिकार ताड़ जिसके पास लाख रुपया हो और वह उन लाख रुपयों के साथ अपने घर या कहीं और जा रहा हो, ताकि उसे रास्ते में ही रोक कर रकम छीनी जा सके।"

"ल—लेकिन ऐसा शिकार ढूंढने में तो देर लग सकती है।"

"तू जल्दी ढूंढ—यार।"

"अब चुप कर राघव—।" बलराज गोगिया उसकी बात काटते हुए बोला—फिर बन्ने सिंह की तरफ देखते हुए बोला—"बन्ने सिंह—तूने हमें अपने घर में पनाह दी—छुपाया—हमें खिलाया-पिलाया—इसलिए हमारा भी फर्ज बनता है कि तुझे भी कुछ दें।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"समझ जाओगे।" अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराया बलराज गोगिया—"तू उस लड़की के बारे में बता जो भाटिया की पोती है।"

"उसका क्या करोगे तुम?" हौले से चौंका वह।

"कुछ भी करूं—तू उसका रंग, रूप, उम्र, कहां पढ़ती है बताओ?"

"अगर तुम्हारा इरादा उसकी पोती को अगवा करने का है तो भूल कर भी ऐसा न सोचना, उसे अगवा कर नहीं पाओगे तुम।"

"क्यों? क्या भाटिया ने उसके लिए बॉडीगार्ड नियुक्त कर रखे हैं?"

"ऐसा ही समझ लो—बोला बन्ने सिंह—।" अन्य बच्चियों के साथ वह लड़की भी वैन में घर से स्कूल जाती है—और वहां से वापिस भी वैन में ही आती है—अगर वैन को उड़ाने की सोचोगे तो कई मासूम बच्चियां भी खत्म हो जाएंगी—और जिस स्कूल में वह पढ़ती है वह पुलिस लाईन में है—यानि पुलिस कॉम्पलेक्स

में—और वहां से बच्ची को गायब करना एकदम नामुमकिन है।"

"वाह!" व्यंगभरे अंदाज़ में ताली बजाई राघव ने—"क्या शिकार ढूंढा है मेरे यार ने—हर तरफ खतरा-ही-खतरा—फंसने के पूरे चांस।"

"राघव...!" बलराज ने घूरा उसे—"तुझसे चुप नहीं रहा जाता।"

राघव खा जाने वाली आंखों से बन्ने सिंह को घूरने लगा।

"तू बता बन्ने!"—बलराज ने बन्ने सिंह की तरफ गर्दन घुमाई—"उस लड़की के बारे में बता।"

"लड़की का नाम रेणु है—उम्र करीब आठ साल है—थर्ड स्टैन्डर्ड में पढ़ती है, बाकी सब तो तुम्हें बता ही चुका हूं।"

कहकर बन्ने सिंह उसकी तरफ देखने लगा।

और फिर बलराज गोगिया बन्ने सिंह से अन्य बातें पूछने लगा जो कि भाटिया और उसकी पोती के बारे में ही थीं।

❑❑❑

अगले दिन सुबह साढ़े आठ बजे ही बलराज गोगिया विकास भाटिया की बन्द डिब्बे की तरह बनी कोठी के सामने पहुंचा—राघव तथा बन्ने सिंह उसके साथ ही थे।

"तुम दोनों तैयार हो न?" उसने दोनों की तरफ देखा।

"बिल्कुल तैयार हैं।" बन्ने सिंह बोल पड़ा।

"मेरा कहना मान यार—अब भी अपना इरादा बदल दे—कुछ रोज़ बाद सही, जल्दी के लिए तू इतना बड़ा रिस्क मत उठा।" राघव के स्वर में विनती थी।

मुस्कुराया बलराज गोगिया और राघव की पीठ थपथपाते हुए बोला—"तू चिंता मत कर—मुझे कुछ नहीं होगा।"

"लेकिन यार...।"

"कहा न कुछ नहीं होगा मुझे—तुम बस वह करना जो तुम्हें कहा गया है।"

राघव के चेहरे पर मायूसी तैर गई।

तीनों इस वक्त कोठी के सामने पार्क में बैठे बातें कर रहे थे। स्कूली बच्चे कंधों पर भारी बैग उठाए अपने-अपने स्कूलों में जा रहे थे कुछ अपने मां-बाप के साथ चल रहे थे।

ठीक साढ़े आठ बजे भाटिया की कोठी के सामने वैन रुकी और साथ ही वैन का हॉर्न बज उठा।

यह स्कूल की वैन थी।

"बन्ने!" तुरंत ही बोला बलराज—"जाकर नम्बर देख वैन का—स्कूल का नाम भी लिखा होगा—ड्राईवर की सूरत भी याद करके आ।"

तुरंत ही बन्ने सिंह उठा और पार्क में बाहर निकल गया।

"यह हरामजादा तो तुझे फंसाने का पूरा बन्दोबस्त किए बैठा है–।" बन्ने सिंह के जाते ही राघव ने जहर उगला।

"हरामी की औलाद ने शिकार भी ढूंढा तो कैसा ढूंढा।"

"शिकार तो इसकी निगाह में और भी होंगे–लेकिन सबसे मोटा शिकार यही देखा इसने–ऊपर से मेरे हीरो बन जाने का प्रभाव–बन्ने इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि नावां पीटना है तो सिर्फ यही मौका है–मुझे ढाल बनाकर कर दो वार–फंसूंगा तो मैं फंसूंगा, उसे क्या?"

"सचमुच यह हरामी तो यारमार निकला–जबकि मैं तो इसे सिर्फ हरामी ही समझता था।"

"जो भी है...बन्ने हमारे आड़े वक्त में काम आया है–बेशक उसका स्वार्थ उसके सिर चढ़कर बोल रहा है–फिर भी इसने हमें आश्रय तो दिया।"

"इससे अच्छा तो हम किसी रंडी के कोठे पर छिप जाते तो अच्छा होता।"

"बशर्ते कि रण्डी मुझे विदेश भेजने का बंदोबस्त भी कर सकती तो।"

पहलू बदलकर रह गया राघव।

तभी बन्ने सिंह वापिस आ गया।

"आर०जे०एल० 8489"–उसने बैठते हुए वैन का नम्बर बताया–"वैन पर 'नलवा पुलिस स्कूल' लिखा है।"

बलराज गोगिया की नजरें वैन की तरफ उठ गईं, जिसकी तरफ प्यारी गुड़िया-सी बच्ची सफेद ड्रैस पहने कंधे पर बैग लटकाये बढ़ रही थी, कोठी के दरवाजे में एक अधेड़ आदमी चश्मा लगाए खड़ा था।

"यही विकास भाटिया है?" दरवाजे में खड़े आदमी की तरफ इशारा किया बन्ने सिंह ने।

"हां।"

बलराज गोगिया वैन की तरफ देखने लगा, जिसका दरवाजा अब बन्द हो गया था।

तभी वैन एक झटके से आगे बढ़ी और वहां से चली गई।

वैन के जाते ही बलराज गोगिया ने बन्ने सिंह की तरफ देखा–"तुझे पक्का भरोसा है कि वैन पंद्रह मिनट में स्कूल पहुंच जाएगी?"

"पन्द्रह मिनट से एक-दो मिनट पहले ही पहुंचेगी, क्योंकि स्कूल ठीक पौने नौ बजे लग जाता है।" बन्ने सिंह बोला।

बलराज खड़ा हो गया और बोला–"बीस मिनट बाद तुम्हें

अपना काम कर देना है।"

"मैं समझ गया—काम हो जाएगा।" राघव बोला।

"जरा होशियारी से—तुम्हारी जरा-सी भी गलती मुझे सीधा फांसी के फंदे तक पहुंचा सकती है।"

"मेरी तरफ से कोई गलती नहीं होगी।" कहते हुए राघव भी खड़ा हो गया।

राघव के साथ-साथ बन्ने सिंह भी खड़ा हो गया और राघव से बोला—"नजदीक ही पब्लिक बूथ है।"

"तो फिर चल—हम उधर चलते हैं।"

राघव और बन्ने सिंह दोनों पार्क से बाहर निकले और एक दिशा में चल पड़े।

जबकि पांच मिनट और वहीं रहकर बलराज गोगिया भाटिया के मकान की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे के करीब पहुंचकर बलराज गोगिया ने बैल पुश पर उंगली रखी और दबाव डाल दिया।

शीघ्र ही दरवाजा खुला और एक अधेड़ औरत दरवाजे में प्रकट हुई। बलराज गोगिया उसकी शक्ल तथा उसकी उम्र देखते ही समझ गया कि वह विकास भाटिया की पत्नी है।

"कहिये!" उस औरत ने जो कि भाटिया की पत्नी ही थी बलराज की तरफ देखते हुए कहा।

"जी मेरा नाम बलराज गोगिया है और मैं दिल्ली से आया हूं—भाटिया साहब से मिलना चाहता हूं।" बड़ी शालीनता से बोला बलराज गोगिया।

जिस शालीनता से बलराज गोगिया ने बात की थी उससे और दिल्ली के नाम से ही भाटिया की पत्नी एक तरफ हट गई—

"वे नहा रहे हैं—आप अन्दर आईए।"

बलराज गोगिया मन-ही-मन मुस्कुराया और अन्दर प्रवेश कर गया। भाटिया की पत्नी ने दरवाजा बन्द किया कुण्डा लगाया और बलराज को लिए ड्राइंगरूम में आ गई।

"बैठिये...वे अभी आते होंगे।"

"धन्यवाद!" कहते हुए बलराज गोगिया सोफे पर बैठ गया।

भाटिया की पत्नी बाहर निकल गई।

बलराज ने अपनी कलाई घड़ी में वक्त देखा—ठीक पौने नौ बज चुके थे। यानि पांच मिनट बाद राघव तथा बन्ने सिंह ने अपना काम कर देना था।

बलराज गोगिया स्वयं ही मुस्कुराया और ड्राइंगरूम का जायजा लेने लगा—जिस ढंग से ड्राइंगरूम सजा हुआ था उस हिसाब से

भाटिया को काफी मालदार आसामी होना चाहिए था।

तभी एक नौकर हाथों में ट्रे उठाये हुए अन्दर आया और ट्रे को सैन्टर टेबल पर रखकर वापिस चला गया।

चाय की केतली के अलावा दो कप पड़े थे ट्रे में।

नौकर के जाते ही भाटिया अपने बालों को तौलिये से साफ करता हुआ अन्दर दाखिल हुआ।

"बैठिये-बैठिये।" बलराज गोगिया को खड़ा होने की कोशिश करते देख उसे बैठने का इशारा करते हुए बोला भाटिया और स्वयं भी उसके सामने एक अन्य सोफे पर बैठ गया।

"फरमाईये...कैसे आना हुआ?" केतली से दोनों कपों में चाय डालते हुए पूछा भाटिया ने।

रहस्यमयी मुस्कान मुस्कुराया बलराज गोगिया—"लगता है आपने मुझे पहचाना नहीं?"

गर्दन उठाकर गौर से देखने लगा भाटिया उसे, लेकिन उसके चेहरे से कहीं से भी नहीं लग रहा था कि उसने उसे पहचाना हो।

"राजमल कम्पनी से आये हो?" उसने अंदाजा लगाते हुए कहा।

"जी नहीं।"

"तो फिर?" चाय का कप बलराज की तरफ बढ़ाते हुए पूछा उसने।

"मेरी अपनी कम्पनी है।"

"अच्छा! तो ऑर्डर बुक करने आये हो।"

भाटिया सचमुच बलराज गोगिया को कोई बिजनेसमैन ही समझ रहा था।

"जी नहीं पेमेंट लेने आया हूं।" कहकर चाय का घूंट मारने लगा बलराज।

बुरी तरह से चौंक उठा विकास भाटिया और हैरानी से बलराज गोगिया को देखने लगा।

मुस्कुराया बलराज गोगिया—"लगता है आपने मुझे सचमुच नहीं पहचाना—चलो मैं ही पहचान कराये देता हूं।"

कहकर बलराज गोगिया ने चाय का आखिरी घूंट भरा और कप को मेज पर रखकर भाटिया की तरफ देखते हुए बोला—"मेरा नाम बलराज है बलराज गोगिया—टी०वी० पर अखबारों में मेरी फोटो भी छप चुकी है। बलराज गोगिया ने देखा कि भाटिया के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं—आंखों में खौफ नाचने लगा था।

"लगता है पहचान लिया है आपने मुझे।" अपनी मुस्कान को जहरीला बनाते हुए बोला बलराज गोगिया।

"क–क्या चाहते हो तुम?" कांपता स्वर निकला भाटिया के मुख से।

"ज्यादा लालच नहीं मुझे भाटिया साहब–मुझे दो लाख रुपयों की सख्त जरूरत है–ताकि विदेश में भाग सकूं मैं और वो दो लाख रुपये आप देंगे मुझे।"

सुनते ही भड़क उठा भाटिया–"दो लाख की बजाए जेल की हवा खिलाऊंगा मैं तुझे–अभी पुलिस को फोन करता हूं मैं।"

कहते हुए वह फोन की तरफ बढ़ा–मगर उससे पहले ही फोन की घण्टी घनघना उठी।

बलराज गोगिया मुस्कुराया और बोला–"जरूर बुलाओ पुलिस को–बीस हजार का इनाम है मेरे सिर पर वह भी जिंदा या मुर्दा पकड़ने का–वह बीस हजार भी आपको मिलेगा–लेकिन उससे पहले आप जरा फोन तो सुन लीजिए–हो सकता है आपकी राय बदल जाए और आप मुझे शराफत से दो लाख रुपये देकर पूरी इज्जत से यहां से विदा करें।"

भाटिया के चेहरे की रंगत पुनः फीकी पड़ गई। फोन के पास पहुंचकर उसने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला–"हैलो–विकास भाटिया बोल रहा हूं।"

"भाटिया साहब, मैं नलवा स्कूल का प्रिंसीपल बोल रहा हूं–उधर से आवाज आई–"आपकी पोती रेणु को कुछ गुण्डे उठाकर ले गए हैं।"

"क्या!" बुरी तरह से उछल पड़ा भाटिया–साथ ही उसकी आंखों में खौफ और आश्चर्य के भाव नाचने लगे।

"पुलिस कॉम्पलेक्स में से अगवा कर लिया गया रेणु को?"

"जी नहीं–रास्ते में वैन रुकवाकर गुण्डों ने रेणु का अपहरण किया अभी-अभी ड्राईवर ने बताया है मुझे।"

"कैसे?" भाटिया का कलेजा धाड़-धाड़ बजने लगा था।

"रास्ते में एक गुण्डा मुर्दा बनकर सड़क पर लेट गया सो मजबूरन ड्राईवर को वैन रोकनी पड़ी और जैसे ही वैन रुकी आसपास से आठ-दस गुण्डे जो कि पहले से ही वहां पर छुपे हुये थे निकले और वैन को घेर लिया–सभी के हाथों में रिवॉल्वरें थीं–इसलिए ड्राईवर कुछ भी कर पाने की स्थिति में नहीं था–गुण्डों ने वैन का दरवाजा खोला और आपकी पोती रेणु को उठाकर ले गए।"

"नहीं...।" भाटिया के चेहरे पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं।

"वैसे हमने पुलिस को सूचित कर दिया है–अगर आपके पास भी गुण्डों का कोई मैसेज आये तो आप फौरन पुलिस को सूचित कर दीजिएगा।"

भाटिया ने खौफभरी आंखों से बलराज गोगिया की तरफ देखा जिसके होंठों पर जहरीली मुस्कान नाच रही थी।

गुण्डों का मैसेज तो नहीं—उनका प्रतिनिधि वहां पहले से ही पहुंच गया था।

भाटिया ने कांपते हाथों से फोन रखा और बलराज की तरफ देखते हुए बोला—"म...मेरी पोती कहां है?"

"क्या बात है पुलिस को फोन नहीं करना?" व्यंगभरे अंदाज में बोला बलराज गोगिया—"वैसे अगर चाहो तो शोर मचाकर मुझे पकड़वा सकते हो—मैं अकेला हूं मेरे पास हथियार भी नहीं—ऐसे में तुम्हारे घर के सदस्य भी मुझ पर काबू कर सकते हैं और तुम बीस हजार का इनाम भी पा सकते हो।"

"मेरी पोती कहां है?" बुरी तरह से कांप रहा था भाटिया का स्वर।

"क्यों—क्या तुम्हें बताया नहीं मेरे साथी ने, अभी फोन पर बताया तो होगा तुम्हें?"

"फोन स्कूल से आया था—तेरे साथियों ने मेरी पोती का अपहरण कर लिया है।"

"और कत्ल भी कर देंगे।" हिंसक स्वर में बोला बलराज गोगिया।

"न—हीं!" कांप उठा भाटिया—"तुम ऐसा नहीं कर सकते—।"

"मैं करूंगा भी नहीं—क्योंकि छोटे-मोटे केस मेरे साथी निपटा देते हैं। मैं तो मोटे केस में हाथ डालता हूं—जैसे चण्डीगढ़ वाला केस।"

भाटिया के हाथ-पैर फूलने लगे।

"क—क्या चाहते हो तुम...?"

इससे पहले कि बलराज गोगिया कुछ कहता—फोन की घण्टी पुनः बज उठी।

"तुम्हारा फोन—।" मुस्कराया बलराज।

भाटिया ने रूमाल निकालकर अपने चेहरे के पसीने को पोंछा और रिसीवर उठाकर बोला—"हैलो!"

"तुम्हारी पोती हमारे कब्जे में है भाटिया—।" उधर से क्रूरता भरा स्वर भाटिया के कान से टकराया—"और हमारा आदमी तुम तक पहुंच गया होगा—उसे फौरन जो वह चाहता है देकर चलता करो वर्ना ठीक साढ़े नौ बजे तुम्हारी पोती की लाश पार्सल के रूप में तुम्हारे घर पर भिजवा दी जाएगी।"

"नहीं...नहीं...तुम ऐसा नहीं करोगे।" एकदम से चींख उठा भाटिया।

लेकिन तब तक उधर से फोन कट चुका था।

भाटिया ने फोन का रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए रो पड़ा—"म—मेरी बच्ची को छोड़ दो, तुम्हें जो चाहिए मैं देने के लिए तैयार हूं।"

"तो फौरन अपनी तिजोरी खोलो और दो लाख रुपया मेरी झोली में डाल दो।"

"द...दो लाख!"

"पूरे दो लाख...जल्दी करो भाटिया साहब—नौ बज चुके हैं केवल आधा घण्टा रह गया है।"

"म...मैं देता हूं—पूरे दो लाख देता हूं।"

कहते हुए भाटिया कांपती हुई टांगों के सहारे चलता हुआ ड्राइंगरूम से बाहर निकल गया।

शीघ्र ही भाटिया दो लाख रुपयों के साथ वापिस लौटा। पांच-पांच सौ की चार गड्डियां मेज पर रख दीं उसने और हाथ जोड़कर रो पड़ा—

"मेरी पोती मुझे वापिस ला दो बलराज गोगिया जी—मेरी पोती मुझे वापिस ला दो।"

उसकी शक्ल और गिड़गिड़ाहट देखकर एक बार तो बलराज गोगिया का दिल किया कि वह खाली हाथ ही वहां से वापिस चला जाए—लेकिन फिर दिल को मजबूत किया उसने—नोटों को जेबों के हवाले किया और खड़ा होते हुए बोला—"तुम्हारी रेणु बहुत जल्द स्कूल पहुंचा दी जाएगी।"

"लेकिन...।"

"घबराओ नहीं—बलराज गोगिया जो कह देता है वही होता है। तुम्हारी पोती को कुछ नहीं होगा—बशर्ते कि अगर तुमने कोई शरारत न की तो।"

"म—मैं कुछ नहीं करूंगा।"

"तो फिर थोड़ी देर बाद स्कूल फोन करके पता कर लेना और तब तक पता करते रहना तब तक कि तुम्हें यह पता न चल जाए कि रेणु ठीक-ठाक स्कूल पहुंच गई है।"

कहकर नाटकीय अंदाज में उसे सलाम किया और मुस्कुराया—"बंदा चला दुबई के लिए।"

और बलराज गोगिया निकल गया।

विकास भाटिया अवाक्-सा मुंह खोले बलराज को कमरे से बाहर निकलते देखता रहा—और जब बलराज चला गया तो वह

धड़ाम से सोफे पर गिरा और फफक-फफक कर रोने लगा।

उसके रोने की आवाज सुनकर उसकी पत्नी वहां पहुंच गई।

"क्या हुआ? रो क्यों रहे हैं आप?"

और भाटिया ने रेणु के अपहरण की बात उसे कह सुनाई।

भाटिया की पत्नी का इतना सुनना ही था कि वह जोर-जोर से रोने लगी—और शीघ्र ही वह बात घर के साथ-साथ पूरे मौहल्ले में फैल गई।

अड़ोस-पड़ोस के लोग उसके घर इकट्ठा होने लगे—हर कोई बलराज गोगिया के बारे में ही पूछ रहा था।

तभी एक पड़ोसी आगे बढ़ा और भाटिया के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला—"आप स्कूल फोन तो कीजिए—हो सकता है रेणु वहां पहुंच गई हो।"

रेणु के गम में भाटिया फोन तक करना भूल गया था—पड़ोसी के याद कराते ही वह उठा और स्कूल के नम्बर डायल करने लगा।

"हैलो...।" उधर से आवाज आते ही बोला भाटिया—"मैं विकास भाटिया बोल रहा हूं—मेरी पोती स्कूल पहुंची कि नहीं?"

"वह तो सुबह ही पहुंच गई थी।" उधर से आवाज आई।

"क्या!" बुरी तरह चौंका भाटिया—"वो दूसरे बच्चों के साथ स्कूल पहुंची थी?"

"हां...लेकिन आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं—क्या बात है? आपकी आवाज घबराई हुई क्यों है?"

"आ...आप कौन साहब बोल रहे हैं?"

"मैं स्कूल का प्रिसींपल बोल रहा हूं।"

"आपने कुछ देर पहले मुझे फोन किया था?"

"कैसी बातें कर रहे हैं आप—मैंने आपको कोई फोन नहीं किया।"

"ओह नो।" भाटिया के मुंह से निकला।

वह समझ गया कि बलराज गोगिया उसे बेवकूफ बनाकर दो लाख की चपत लगा गया है। उसके आदमी ने प्रिंसीपल बनकर उसे फोन करके झूठी खबर दी थी और वह चकमे में आ गया।

"हैलो...।" तभी प्रिंसीपल की आवाज भाटिया के कान से टकराई—"खैरियत तो है?"

"ज...जी हां...सब खैरियत है।"

कहकर भाटिया ने फोन का पलंजर दबाया और कोतवाली के नम्बर डायल करने लगा।

अब उसके दिमाग में बस एक ही सूरत घूम रही थी।

बलराज गोगिया की सूरत।

□□□

"क्या नाम बताया था तुमने उसका?"

"बलराज गोगिया।"

इंस्पैक्टर रावत ने इश्तिहार निकाला और उसे खोलकर भाटिया के सामने बिछाते हुए बोला—"यह बलराज गोगिया का फोटो है—क्या यही आया था तुम्हारे पास?"

"हां...यही आया था।"—भाटिया इश्तिहार पर छपी बलराज की फोटो को घूरते हुए बोला—"सिर्फ इतना है कि फोटो में इसकी दाढ़ी है जबकि मेरे पास घर पर बिना दाढ़ी के आया था।"

"बिल्कुल पक्का?"

"मैं कोई भूल नहीं कर रहा इसे पहचानने में—यही हरामजादा मुझे दो लाख की चपत लगाकर गया है—।" पूरे आत्मविश्वास से बोला विकास भाटिया—"हरामजादा मुझसे कह रहा था कि उसे दो लाख की सख्त जरूरत है विदेश जाना चाहता है।"

इंस्पैक्टर रावत ने एक लम्बी सांस छोड़ी। इश्तिहार को तय करके पास खड़े सिपाही को पकड़ाया और फिर दूसरी बातें पूछने लगा।

तत्पश्चात् वह उठा और बोला—"इत्मिनान रखिये भाटिया साहब, बहुत जल्द न केवल बलराज गोगिया पकड़ा जाएगा बल्कि आपको आपका दो लाख रुपया भी मिल जाएगा।"

कहकर वह वापिस मुड़ा और भाटिया के मकान से बाहर निकल गया।

□□□

दो लाख रुपया पलंग पर पड़ा था—उसके दोनों तरफ राघव और बन्ने सिंह बैठे थे। जबकि पास रखी कुर्सी पर बलराज गोगिया विराजमान था।

बन्ने सिंह तो नोटों को ऐसे देख रहा था जैसे आंखों ही आंखों में वह उन्हें गायब कर देगा।

आखिर उसने नोटों पर से निगाहें हटाईं और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला—

"तूने कमाल कर दिया यार—हींग लगाई न फिटकरी और रंग ही रंग—क्या दिमाग पाया है तूने!"

मुस्कुराया बलराज गोगिया—"यह मेरे दिमाग की करामात नहीं थी बन्ने—मेरे नाम की दहशत थी—बलराज गोगिया के नाम ने ही भाटिया के दिमाग में इतना आतंक भर दिया था कि वह मेरी बात को सच मान बैठा और दो लाख रुपये दे दिये। वर्ना अगर मेरी जगह तू होता और यही तरीका इस्तेमाल करता तो शर्तिया इस

वक्त तू लॉकअप में होता—या पुलिस तुझे नंगा करके चमड़े के पट्टे से पीट रही होती।"

"ठीक कहा तूने—।" बोला बन्ने सिंह—"लेकिन यार अपने नाम की कुछ तो इज्जत रखनी थी—दो की जगह दस भी मांगता तो भाटिया इन्कार नहीं करता।"

"बिल्कुल न करता—लेकिन किसी मजलूम को दुःख देने की मेरी आदत नहीं—यहां तो मुझे जरूरत थी इसलिए मुझे मजबूरी में यह काम करना पड़ा वर्ना मैं इस काम को हरगिज न करता—और फिर मुझे तो केवल सत्तर हजार की जरूरत थी फिर भी मैंने दो लाख मांगे—और तू दस लाख की बात कर रहा है।"

बन्ने सिंह के मुंह से बोल नहीं फूटा—कहता तो क्या कहता—कुछ कहता तो यारमार कहलाता। बलराज गोगिया उसके मन के भावों को बाखूबी समझ रहा था—मन-ही-मन मुस्कुराया वह और फिर हाथ आगे बढ़ाकर तीन गड्डियां उठाकर बन्ने सिंह की तरफ बढ़ा दीं।

"इसे अपने पास रख बन्ने!" वह बोला—"सत्तर हजार उस आदमी को दे देना जिसने मुझे विदेश भेजना है। बाकी के तू रख लेना।"

"और ये बाकी के पचास हजार?" बन्ने सिंह ने पलंग पर पड़ी पचास हजार की गड्डी की तरफ देखा।

बलराज गोगिया ने गड्डी उठाई और राघव की गोद में रख दी—"मेरे यार के काम आयेगी।"

"नहीं...।" तुरंत ही गड्डी उठाकर बलराज गोगिया की गोद में रख दी राघव ने—"इन रुपयों की तुझे मुझसे ज्यादा जरूरत है, तू रख इसे।"

"मेरे किसी काम की नहीं भारतीय करेंसी—क्योंकि विदेश में तो मुझे उसी देश की करेंसी से काम चलाना होगा।"

"नहीं...मैं नहीं रखूंगा।"

"अब नखरे मत दिखा—।" गड्डी पुनः राघव की गोद में रखते हुए प्यार से झिड़का उसने—"चुपचाप रख ले इन्हें।"

इस बार राघव कुछ नहीं बोल पाया।

बलराज गोगिया ने बन्ने सिंह की तरफ गर्दन घुमाई—"कब जाएगा तू उसके पास?"

"आज ही।" तुरंत बोला बन्ने सिंह—"कल रात की रवानगी है न सो पैसा तो आज ही जमा करा दूंगा मैं।"

मन-ही-मन वह बलराज गोगिया को हजारों गालिया निकाल रहा था जिसने बिना किसी बात के पचास हजार रुपये राघव को

दे दिये थे। उसकी नज़रें अभी भी उन पचास हजार पर टिकी हुई थीं जो कि अभी भी राघव की गोद में पड़े हुये थे।

❑❑❑

गंगानगर कोतवाली में इस वक्त स्वयं कमिश्नर मीटिंग की अध्यक्षता कर रहे थे। मीटिंग का विषय था बलराज़ गोगिया की गिरफ्तारी।

भाटिया से बलराज गोगिया की बाबत जानकारी मिलते ही इंस्पैक्टर रावत ने तुरंत ही अपने आला अफसरों को सूचित कर दिया।

आनन-फानन में ही कोतवाली में आला अफसरों का ज़मघट लग गया।

कमिश्नर ने रावत से पहले पूरी रिपोर्ट ली—फिर इंस्पैक्टर बोले—

"बलराज गोगिया को पकड़ने के लिए फौरी तौर पर तुमने कोई एक्शन लिया है।"

"मुखबिरों को सूचित कर दिया है मैंने सर!" रावत खड़ा होकर सम्मानपूर्वक बोला—"साथ ही बी०एस०एफ० को भी सूचित कर दिया है कि बलराज गोगिया विदेश भागने की कोशिश में है इसलिए उसे पकड़ने के लिए पूरी सतर्कता बरती जाये।"

"गुड...।" बोले कमिश्नर। फिर वहां मौजूद अफसरों की तरफ देखते हुए कहने लगे—"बलराज गोगिया एक बहुत ही चालाक और मास्टर माईंड अपराधी है—जिस ढंग से उसने चंडीगढ़ में अरबों की मूर्ति चुराई उससे उसके दिमाग की ताकत का पता चलता है—आनन-फानन ही स्कीम बना लेने में माहिर है वह। जुर्म के पन्नों पर उसने अपने सिर्फ एक ही कारनामे से अपना नाम सबसे पहले पन्ने पर लिखवा लिया है। बेशक इंस्पेक्टर रावत ने बलराज गोगिया को गिरफ्तार करने के लिए सीमा सुरक्षाबल को सूचित कर दिया है—पूरे ज़िले में मुखबिरों का जाल फैला दिया है—लेकिन वह मास्टर माईंड अपराधी बलराज गोगिया भी अच्छी तरह से जानता होगा कि भाटिया से उसके चालाकीपन का पता लगते ही पुलिस उसके पीछे पड़ जायेगी—और ऐसे अपराधी यह भी जानते हैं कि पुलिस अपराधी तक किन-किन तरीकों से पहुंचने के रास्ते बनाती है—उन रास्तों के बारे में वह मास्टर माईंड बलराज गोगिया भी जानता होगा।

इसलिए इन तरीकों के अलावा ऐसा कोई तरीका भी खोजा जाना चाहिये जिसे बलराज गोगिया भी न समझ पाये और जब तक वह समझे पुलिस के हाथ उसकी गर्दन को पकड़ चुके हों।

बलराज गोगिया की तलाश चार राज्यों को है—और इस वक्त

उसे गिरफ्तार करने या खत्म करने का सुनहरी मौका गंगानगर पुलिस के हाथों में है—अगर गंगानगर पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती है, तो हर तरफ से हमें इज्जत की निगाहों से देखा जाएगा—जो काम पंजाब पुलिस नहीं कर सकी—वह हम करेंगे। अपनी इज्जत अपने रुतबे—अपनी शान को बढ़ाने उसमें चार चाँद लगाने का यह बहुत ही शानदार मौका लगा है हमारे हाथ—हमें इस मौके को किसी भी सूरत में गंवाना नहीं चाहिए।" कहकर कमिश्नर चुप हुए—सांस ली और अपनी निगाहें वहां मौजूद अफसरों पर फिराते हुए आगे बोले—"इसलिए आप सभी अपने-अपने सुझाव पेश कीजिए—ताकि बलराज गोगिया को जल्द-से-जल्द गिरफ्तार किया जा सके।"

कहकर वे वहां मौजूद अफसरों की सूरतें देखने लगे।

"सर...!"

कमिश्नर की गर्दन घूमी—एस०पी० अपने स्थान पर खड़े थे।

"आप कुछ कहना चाहते हैं?"

"यस सर!"

"कहिए!"

"सर...!" एस०पी० ने कहना शुरू किया—"जब तक बलराज गोगिया गंगानगर में रहेगा—मेरा मतलब है जब तक बलराज गोगिया विदेश नहीं भाग जाता तब तक वह यहीं गंगानगर में ही रहेगा—हमें सबसे पहले यह सोचना चाहिए कि वह गंगानगर में कहां हो सकता है।"

"आपने कुछ सोचा?"

"जी हां—ऐसे अपराधी को केवल अपराधी के घर में ही पनाह मिल सकती है—इसलिए मेरा विचार है कि गंगानगर के समस्त अपराधियों को फौरन गिरफ्तार करके उनसे पूछताछ करनी चाहिए—ऐसा करने से बलराज गोगिया का पता शीघ्र लग जायेगा।"

"ल...लेकिन सर...तभी रावत अपने स्थान पर खड़ा होता हुआ बोला—"इस तरह से तो बलराज गोगिया सतर्क हो जाएगा—और वह फौरन कोई दूसरा ठिकाना ढूंढ लेगा।"

एस०पी० ने फाड़ खाने वाली निगाहों से रावत को देखा। जिसने उसके सुझाव को बुरी तरह से काट डाला था। उसके इस प्रकार देखने से रावत बुरी तरह से हड़बड़ाया—"सर...म:..मुझे बोलना नहीं चाहिए था?"

"नहीं!" तभी कमिश्नर बीच में बोल पड़े—"तुमने बिल्कुल ठीक कहा इंस्पेक्टर—एस०पी० की गलती को बताकर तुमने कुछ भी बुरा नहीं किया।"

रावत का चेहरा खिल उठा—"थ—थैंक्यू सर!"

"वैसे एस०पी० ने यह बिल्कुल ठीक कहा है कि बलराज गोगिया को कोई अपराधी ही पनाह दे सकता है।"

"सर...अगर...!" रावत कुछ सोचकर बोला—"अपराधियों को गिरफ्तार करने की बजाय उन पर अचानक रेड डाली जाए तो कैसा रहे—इस प्रकार बलराज गोगिया को भागने का या कहीं और छुपने का मौका भी नहीं मिलेगा। रेड डालने का हमें एक और फायदा यह भी होगा कि हमें यह भी मालूम पड़ जाएगा कि कौन-सा अपराधी कितने पानी में है।"

"वैरी गुड।" आंखें चमकने लगीं कमिश्नर की—"हमें तुम्हारी बात, तुम्हारा सुझाव पसन्द आया।"

"थैंक्यू सर!"

"मैं अभी आसपास के शहरों से और ज्यादा फोर्स मंगवाने का आदेश जारी करता हूं—साथ ही यहां पुलिस लाईन से भी पूरी फ़ोर्स को तुम्हारे सुपुर्द करता हूं—इस ऑपरेशन का संचालन तुम ही करोगे इंस्पेक्टर।"

रावत के लिए यह बहुत बड़ी इज्जत थी—एक-दो दिन के लिए ही सही वह गंगानगर पुलिस का मुखिया बन गया था।

और यह इज्जत...यह रुतबा कम नहीं था उसके लिए।

❑❑❑

राठौर ने बड़े मन्त्रमुग्ध भाव से बन्ने सिंह के मुख से बलराज गोगिया की कथा सुनी और फिर उसकी तारीफ करते हुए बोला—"साला वाकई दिमाग का धनी है—खोपड़ी है कि स्कीम बनाने की फैक्ट्री—और जो भी स्कीम निकालता है आई०एस०आई० मार्का होती है—सिर्फ दो रुपये का फोन का खर्चा हुआ और दो लाख कमा लिए। यह हमारे लिए सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी साबित हो सकता है। बन्ने—इस जैसे दिमाग को तो हमारे गैंग में होना चाहिए।"

"लेकिन हुजूर, वह तो हिन्दुस्तान छोड़ने को उतावला हुआ जा रहा है। इसी काम के लिए तो मैं घर से निकला हूं।"

"तू वापिस जा उसके पास–।" राठौर उसे समझाते हुए बोला—"और उससे कह कि उसका विदेश जाने का बन्दोबस्त कर आया हूं—और कल रात को वह तैयार रहे। बाकी सब मैं सम्भाल लूंगा।"

"जैसी आपकी आज्ञा।" कहकर बन्ने सिंह खड़ा हो गया—"मैं अभी उसके पास जाता हूं और जैसा आपने कहा है वैसा करता हूं।"

कहकर बन्ने सिंह जैसे ही पलटने को हुआ—फोन की घण्टी घनघना उठी।

राठौर ने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए माऊथपीस में बोला—"हैलो।"

"मैं बोल रहा हूं राठौर साहब, नेगी।" उधर से आवाज आयी।

सुनकर चौंका राठौर—नेगी को वह अच्छी तरह से जानता था। सब-इंस्पेक्टर था वह कोतवाली में और उसके लिए मुखबिरी करता था। बदले में राठौर भी उसकी जेब को कभी ठण्डी नहीं होने देता था।

"कहो नेगी, कोई खास बात है क्या?" गम्भीर स्वर में पूछा राठौर ने।

"अपना सारा नाजायज माल इधर-उधर कर लीजिए हुजूर।"

"क्यों, क्या इंटरपोल की रेड पड़ने वाली है?"

"नहीं, पुलिस की रेड पड़ने वाली है।"

"क्या!" उछल पड़ा राठौर—"मेरी कोठी में पुलिस की रेड पड़ने वाली है?"

"सिर्फ आपके घर ही नहीं—हर उस अपराधी के घर रेड पड़नी शुरू हो गई है जो पुलिस की निगाह में हैं।"

"ऐसा किसलिए कर रही है पुलिस?"

"बलराज गोगिया के लिए।" उधर से सब-इंस्पेक्टर नेगी की आवाज आई—"आज सुबह ही पुलिस को पता चला कि बलराज गोगिया गंगानगर में है।" नेगी उसे भाटिया की कहानी सुनाने लगा जो कि अभी कुछ देर पहले वह बन्ने सिंह के मुख से सुन चुका था—फिर आगे बोला—"उसी की गिरफ्तारी के लिए ही ऐसा किया जा रहा है—हर अपराधी के घर की तलाशी ली जा रही है।"

राठौर हैरान—"लेकिन बलराज गोगिया को ढूंढने के लिए मुजरिमों के घरों की तलाशी क्यों ली जा रही है?"

"पुलिस का ऐसा विचार है कि बलराज गोगिया को अवश्य ही किसी अपराधी ने पनाह दी है—इसलिए ऐसा किया जा रहा है।"

फिर कुछ रुककर उधर से पूछा गया—

"कहीं बलराज गोगिया आपकी शरण में तो नहीं राठौर साहब?"

"कैसी बेवकूफीभरी बातें कर रहा है तू!" भड़कने वाले अंदाज में गुर्राया राठौर—"अगर वह मेरे पास होता तो मैं उसे केवल दो लाख रुपये लूटने के लिए कहता।"

"खैर जो भी है—मुझे आपको सूचना देनी थी दे दी—अब आगे आप जानें आपका काम।"

"ठीक किया तूने नेगी—शाम को तेरी फीस तेरे पास पहुंच जाएगी।"

कहकर राठौर ने फोन रखा और बन्ने सिंह की तरफ देखने लगा, जो कि राठौर के मुंह से बलराज का नाम सुनकर ठिठक गया था।

राठौर ने उसे सारी बात बताई और बोला—"बलराज गोगिया का इंतजाम कहीं और कर बन्ने सिंह—और फौरन अपने घर पहुंच—कहीं ऐसा न हो कि उसका इंतजाम होने से पहले ही वह गिरफ्तार हो जाए।"

"मैं अभी जाता हूं हुजूर!"

बोला बन्ने सिंह और तुरंत ही बाहर निकल गया।

जबकि राठौर ने दोबारा फोन उठा लिया और अपने कारिंदों को अपना गैरकानूनी माल कहीं और शिफ्ट करने के आदेश देने लगा।

❑❑❑

बन्ने सिंह को घबराई हुई हालत में वापिस लौटते देख बलराज गोगिया का कलेजा बैठने लगा—वह यही समझा कि बन्ने सिंह यही कहेगा कि काम नहीं बना या विदेश भेजने वाले एजेंट ने अपना रेट बढ़ा दिया है।

"क्या हुआ?" पूछ लिया उसने—"मुंह क्यों लटका हुआ है तेरा? क्या एजेंट की मां मर गई या किसी और खसम के साथ भाग गई?"

"कुछ भी नहीं हुआ!" हड़बड़ाते हुए बोला बन्ने सिंह।

"तो फिर मुंह क्यों लटका रखा है?" राघव ने पूछा।

"पुलिस को तुम्हारी ख़बर लग चुकी है कि तुम गंगानगर में हो।"

"वो तो लगनी ही थी—भाटिया ने इन्फॉर्म किया होगा—क्योंकि तेरे अलावा गंगानगर में केवल वो ही जानता है कि मैं यहां हूं।"

"पुलिस तुम्हारी खोज में कुत्तों की तरह लगी हुई है—ऐसे जैसे किसी लीडर का अपहरण हो गया हो और पुलिस उसे खोज रही हो—बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चला रखा है पुलिस ने और किसी भी क्षण पुलिस यहां आ सकती है।"

"ओह!" बलराज गोगिया के चेहरे पर पहली बार खौफ के लक्षण उभरे।

पता नहीं ऐसी क्या बात थी कि पुलिस के नाम से ही डर जाता था बलराज।

"अगर पुलिस यहां आ गई तो फिर तुम्हारा पकड़ा जाना

लाजिमी है।" बन्ने सिंह आगे बोला।

"दुबई का क्या प्रोग्राम बनाकर आया है तू?" राघव ने उसे घूरा।

"काम हो गया है कल रात साढ़े बारह बजे हमें गंगानगर के पास बसे गांव खेड़ा में पहुंचना है, बाकी आगे का काम एजेंट का है।" बन्ने सिंह ने जवाब दिया—"वह तुम्हें रात के अंधेरे में सरहद पार करवा देगा, उससे आगे का दूसरा एजेंट तुम्हें दुबई के लिए शिप में सवार करवा देगा।"

"यानि कल रात साढ़े बारह बजे तक हमें हर हालत में पुलिस की निगाहों से बचकर रहना है।" बलराज गोगिया बोला।

"हां।"

"तो फिर तू ही सोच क्या किया जाए, तू तो यहीं का रहने वाला है और फिर मेरा यार भी है?"—राघव ने कहा—"तू जरूर कोई ऐसी जगह जानता होगा जहां हम लोग पूरी निश्चिंतता से रह सकें।"

"जगह तो है—लेकिन दिक्कत यह है कि तुम्हें वहां तक पहुंचाऊं कैसे? अगर रास्ते में पुलिस की निगाह तुम पर पड़ गई तो मैं जिंदगीभर खुद को माफ नहीं कर पाऊंगा।" फिल्मी अंदाज में डायलॉग मारा बन्ने सिंह ने।

राघव ने बलराज गोगिया की तरफ देखा—"यह तो बहुत दिक्कत वाली बात हो गई यार।"—वह बोला—"किनारे के करीब पहुंचकर कश्ती डगमगाने लगी है और उसके डूबने का खतरा पैदा हो गया है।"

"कुछ सोचने दे यार!" बलराज गोगिया बोला—"इस तरह आखिरी वक्त पर अगर हिम्मत हार बैठा तो फिर मौत से नहीं बच पाऊंगा।"

राघव चुप कर गया और बड़े ध्यान से उसकी तरफ देखने लगा।

बन्ने सिंह की निगाहें भी उसी पर टिकी हुई थीं। जबकि बलराज गोगिया अपने बचाव का रास्ता खोज रहा था।

कुछ देर सोचते रहने के उपरांत उसने बन्ने सिंह की तरफ देखते हुए पूछा—

"जाना कहां है?"

"ज्यादा दूर नहीं जाना सिर्फ पौन किलोमीटर दूर है वह ठिकाना।"

"जगह एकदम सेफ है न?"

"एकदम सेफ है।" बन्ने सिंह हाथ नचाते हुए बोला—"बस

दिक्कत है, तो वहां तक पहुंचने की।"

"बुर्के।"

"बुर्के क्या?" चौंका बन्ने सिंह।

"हम बुर्का पहनकर वहां जायेंगे—वह भी रिक्शा पर—तू जल्दी से दो बुर्कों का इंतजाम कर।"

"अगर पुलिस ने रास्ते में रोक लिया तो?"

"फंसे तो यहां भी हुए हैं—तब भी फंस गए तो कम से कम मलाल तो नहीं रहेगा कि हमने अपने बचाव के लिए कुछ किया ही नहीं—बस तू जल्दी से दो बुर्कों का इन्तजाम कर।"

बन्ने सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"तुम्हारे लिए तो इंतजाम हो जाएगा—मगर राघव के साईज का बुर्का...!" उसने राघव के बिलांद भर के शरीर पर नजरें घुमाईं।

"तू मेरी फिक्र छोड़।" उसकी बात का मतलब समझते हुए बोला राघव—"तू केवल बलराज गोगिया के लिए बुर्के का वंदोबस्त कर।"

"और तू?" बलराज गोगिया ने प्रश्नात्मक निगाहों से उसे देखा।

"मैंने कहा न मेरी फिक्र मत करो—मैं कैसे भी वहां पहुंच जाऊंगा।"

"लेकिन...।"

"अमा यार...तू घबरा नहीं, कुछ नहीं होगा मुझे—मैं तुम्हारे से पहले वहां पहुंच जाऊंगा।" कहकर उसने बन्ने सिंह की तरफ देखा—"तू अभी तक यहीं खड़ा है गया नहीं?"

"कहीं जाने की जरूरत नहीं—बुर्का घर में ही है।"

"तो फिर निकालकर ला न, यहां खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहा है।"

तुरंत ही उठा बन्ने सिंह और भीतरी कमरे में चला गया—कुछ देर बाद जब वह वापिस लौटा तो उसके हाथों में एक बुर्का था।

बुर्का हालांकि काफी छोटा था—लेकिन हालात को देखते हुए बलराज गोगिया ने उसे तुरंत सलैक्ट कर दिया।

"कोई जनाना सलवार भी है तेरे पास?" बुर्का पहने हुए ही पूछा उसने बन्ने सिंह से।

"सलवार?" —चौंका बन्ने सिंह—"सलवार का क्या करना है?"

"अरे भाई बुर्का छोटा है—नीचे से पैंट नजर आएगी तो देखने वाला फौरन समझ जाएगा कि बुर्के में कोई औरत नहीं मर्द छुपा हुआ है।"

"ओह! हां है—मेरी मरहूम बीवी की कई सलवारें पड़ी हैं—लेकिन उसका कद तुझसे छोटा था—।"

"कोई बात नहीं—मैं काम चला लूंगा।" बोला बलराज—"तू ला तो।"

बन्ने सिंह पुनः भीतर गया और तीन सलवारें ले आया।

बलराज गोगिया ने अपनी पैंट उतारी और सलवार पहनने लगा।

चूंकि सलवार काफी छोटी थी इसलिए उसे टखनों तक लाने के लिए उसे सलवार को काफी नीचा बांधना पड़ा—सलवार बांध कर उसने कमरे में चलकर देखा—चलने में दिक्कत होने के साथ-साथ बलराज गोगिया को बार-बार ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सलवार अभी नीचे गिर पड़ेगी।

मगर वक्त की जरूरत कह रही थी कि उसे सलवार और ऊपर करके नहीं पहननी।

तत्पश्चात् बलराज गोगिया ने बन्ने सिंह की घर में प्रयोग होने वाली हवाई चप्पलें पहनीं और बन्ने सिंह बोला—"मेरे बूट और जुराबें तथा पैंट तुम्हारे पास रहेंगे—और तू मेरे से अगली रिक्शा पर बैठकर जाएगा—मैं अकेला ही रिक्शे पर जाऊंगा।"

"और राघव?" बन्ने सिंह ने राघव के बारे में पूछा।

"इसे भी तू अपने साथ बिठा लेना।"

"तो फिर चलें?" बोल पड़ा राघव।

"हां चलो।" कहकर बलराज गोगिया ने चेहरे को पर्दे के पीछे छिपा लिया।

सबसे पहले बन्ने सिंह ही बाहर निकला—दरवाजे से बाहर गर्दन निकालकर उसने गली में दायें-बायें झांका फिर हाथ के इशारे से उसने बलराज गोगिया और राघव को रास्ता साफ होने का सिगनल दिया और स्वयं भी बाहर आ गया।

बलराज गोगिया और राघव बाहर आ गए।

"तुम दरवाजा बन्द करके ताला लगाओ—मैं रिक्शा ढूंढ़ता हूं।" बुर्के में छुपे हुए बलराज गोगिया ने कहा और उसके जवाब का इन्तजार किये बिना गली के छोर की तरफ बढ़ने लगा।

अभी वह गली से बाहर निकलकर मेन रोड़ पर पहुंचा ही था कि तभी एकाएक ही उसके पास पहियों के घिसटने की चीख उभरी।

बुरी तरह से उछल पड़ा बलराज गोगिया और आवाज की दिशा में देखा।

अगले ही क्षण उसके चेहरे पर खौफ मंडराने लगा—पर्दे के पीछे छिपा चेहरा एकदम से रंगहीन होकर पसीना छोड़ने लगा। दिल

की धड़कन सुपर फास्ट ट्रेन को भी मात देने लगी।

पुलिस की जिप्सी रुकी थी उसके पीछे जिसमें धाड़-धाड़ करते सात पुलिसिये नीचे उतर आये थे।

"इसी गली में घर है बन्ने सिंह का।" तभी एक पुलिसिया गली के अन्दर की तरफ इशारा करते हुए बोला—और सारे पुलसिये उसकी बगल से होते हुए गली में प्रवेश कर गये।

राहत की एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज ने और अपने कदम आगे बढा दिये।

बाल-बाल बचा था वह—अगर उसने उस वक्त पर बुर्के को न पहना होता तो पुलिस को गली में प्रवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती—शायद गिरफ्तार भी न करती उसे पुलिस और यहीं पर गोलियों से भून देती।

मन-ही-मन ऊपरवाले का धन्यवाद किया उसने और श्री गंगाराम चौक पहुंचकर बन्ने सिंह तथा राघव का इन्तजार करने लगा।

बन्ने सिंह से ज्यादा फ़िक्र उसे राघव की थी जो इस वक्त उसकी जान बना हुआ था—कद का बेशक छोटा था वह लेकिन दिल की ऊंचाई इतनी थी कि दूसरा छोर ही नजर नहीं आ रहा था। और फिर राघव के पकड़े जाने पर उसके भी फंसने के पूरे-पूरे चांस थे, क्योंकि पुलिस को मालूम था कि बलराज के साथ एक छोटे कद का आदमी भी फरार है जो कि बलराज का ही साथी है।

"हे भगवान! मेरे यार की मदद करना।" मन-ही-मन बुदबुदा उठा बलराज।

❑❑❑

पुलिस को देखते ही बन्ने सिंह के हाथ-पांव फूल गए—चेहरे की रंगत एकदम से स्याह पड़ गई।

राघव का हाल भी लगभग उसी जैसा था—लेकिन फिर भी उसने स्वयं पर काबू पाया हुआ था। अपने होशो-हवास गुम नहीं होने दिये थे उसने।

तुरंत ही उसने कुछ सोचा और फिर हौले से बड़बड़ाया—"अपनी घड़ी देख बन्ने और मुझे वक्त बता—पुलिस पूछे तो कह देना कि तू मुझे नहीं जानता—यही कहना कि मैं केवल वक्त जानने के लिए तेरे पास रुका था।"

"लेकिन...।" हड़बड़ा गया बन्ने सिंह।

"जल्दी कर।" सख्त स्वर में गुर्राया राघव।

बन्ने सिंह ने अपनी कलाई को ऊपर उठाया—"सात बजने वाले हैं।" वह बोला।

राघव ने गर्दन सीधी की और अपनी तरफ बढ़ रही पुलिस की तरफ लापरवाही से बढ़ने लगा—अपने अन्दर के भावों को उसने अंदर ही छिपा लिया था—उसके चेहरे को देखकर कहीं से भी ऐसा आभास नहीं हो रहा था कि उसे पुलिस की आमद का खौफ सता रहा है।

पुलिसियों के उसके नजदीक पहुंचते-पहुंचते लाख कोशिशों के बावजूद भी वह अपनी बढ़ती हुई धड़कन को काबू में नहीं रख पाया।

जैसे ही राघव ने पुलिस से कतराकर आगे निकलना चाहा!

"ठहरो।" रौबदार आवाज उसके कानों से टकराई।

बुरी तरह से चिंहुक उठा राघव—उसने गर्दन मोड़कर उस पुलिसिये की तरफ देखा जिसने उसे आवाज लगाई थी।

वह पुलिसिया और कोई नहीं इंस्पेक्टर रावत था। जो उसे सख्त निगाहों से घूर रहा था।

"तुम लोग जाकर बन्ने सिंह को सम्भालो—हरामजादा भागने की कोशिश करे तो गोली मार देना।"

अपने मातहतों को आदेश देते हुए वह राघव की तरफ बढ़ने लगा।

सिपाही बन्ने सिंह की तरफ बढ़ गये।

रावत की बात सुनकर ही राघव समझ गया कि वह इंस्पेक्टर बहुत ही कड़क मिजाज का है।

रावत उसके पास पहुंचा—"क्या नाम है तेरा?" पूछा उसने।

राघव से बात करने के लिये उसे अपनी नजरें जमीन में गड़ानी पड़ रही थीं—उसके घुटनों से थोड़ा ऊपर आ रहा था राघव।

राघव ने गर्दन आसमान की तरफ करने वाले अंदाज में रावत की तरफ देखा—"राजकुमार।" उसने झूठ बोल दिया—क्योंकि वह जानता था कि राघव का नाम सुनते ही वह रिवॉल्वर निकाल लेगा।

"बन्ने सिंह के पास क्यों खड़ा था?"

"बन्ने सिंह—?" राघव ने हैरानी जताई—"कौन बन्ने सिंह?"

रावत खा जाने वाली निगाहों से उसकी तरफ घूरने लगा—लेकिन राघव ने अपने चेहरे पर कोई भी भाव नहीं आने दिया।

"हरामजादे—वो बन्ने सिंह है।" काट खाने वाले अन्दाज में गुर्राया रावत—साथ ही उसकी खोपड़ी पकड़कर बन्ने सिंह की तरफ कर दी, जो कि अब सिपाहियों द्वारा पकड़ा जा चुका था।

"मैं नहीं जानता उसे।" राघव अपनी खोपड़ी को उसके पंजों से छुड़ाने की कोशिश करते बोला।

"तो फिर वहां खड़ा क्यों था उसके पास—अपनी मां का श्राद्ध

करवाना था क्या उससे?"

"तमीज से बात कीजिए इंस्पेक्टर!" स्वर को कठोर बनाया राघव ने—"आप खामोखाह एक आदमी को परेशान कर रहे हैं—और उसे गालियां भी निकाल रहे हैं। मैं उसे नहीं जानता—मैं तो केवल वक्त जानने के लिए रुका था उसके पास, उसने वक्त बताया बस बात खत्म।"

रावत का दिल किया कि अभी हाथ घुमाये और उसे चक्कर-घिन्नी की तरह घुमा दे। लेकिन ऐसा किया नहीं उसने, बस आग उगलती निगाहों से उसे घूरने लगा।

"अब मैं जाऊं या कुछ और पूछना है आपको?" उसके देखने की परवाह न करते हुए पूछा राघव ने।

"कहां रहता है तू?"

इस प्रश्न की उम्मीद नहीं थी उसे—तभी तो एकदम से हड़बड़ा गया वह।

उसकी हड़बड़ाहट देखकर रावत की निगाहों में संदेह के कीड़े गिजबिजाने लगे—"बतायां नहीं तूने—कहां रहता है तू?"

"प—पटेल चौक?" आवाज भी ठीक ढंग से नहीं निकल पाई उससे।

हरिसिंह!" तुरंत ही रावत ने एक सिपाही को आवाज दी।

तुरंत ही हरिसिंह नाम का पहलवान जिस्म का मालिक कांस्टेबल उसके पास पहुंचा।

"इस ठिगने को पकड़ ले।"

झपट्टा मारा हरिसिंह ने और राघव को एक खिलौने की तरह उठा लिया। राघव अगर चाहता तो अब भी वहां से भाग सकता था—हरिसिंह नामक वह कांस्टेबल उसके दो वारों को भी नहीं झेल सकता था—। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया—क्योंकि तब पुलिस समझ जाती कि वह ही वह ठिगना है जो बलराज गोगिया का साथी है—और इस तरह बलराज गोगिया का भी पकड़ा जाना लाजिमी हो जाना था।

सो डरने की लाजवाब एक्टिंग करते हुए वह हरिसिंह के हाथों में छटपटाने लगा—साथ ही चीखने लगा—

"य—यह सब क्या है? क्यों पकड़ा गया है मुझे? क्या किया है मैंने?"

रावत ने रहस्यमयी मुस्कान होठों पर बिखेरी और राघव की आंखों में झांकते हुए बोला—"पुलिस केवल लोगों को ही नहीं पकड़ती—बल्कि जनता की सेवा भी करती है—पटेल चौक यहां से काफी दूर है और खुदा की कृपा से आपका कद काफी छोटा है ऐसे

में आपको अपने घर पर पहुंचने में काफी देर लग जाएगी—आप थक भी जायेंगे इसलिए मैंने यह फैसला किया है कि आपको अपनी जिप्सी में बिठाकर आपके घर पहुंचा दूं—और आप पुलिस को ही भला-बुरा कह रहे हैं।

"मैं खुद ही चला जाऊंगा—मुझे पैदल चलने की आदत है।"

"लेकिन मैं तुम्हें पैदल नहीं जाने दूंगा।"

"यह ज्यादती है।"

"तुम इसे ज्यादती समझ सकते हो।"

"म—मैं तुम्हारी शिकायत करूंगा।"

"किस से?" व्यंगपूर्ण स्वर में बोला रावत—"बलराज गोगिया से करोगे शिकायत?"

बुरी तरह से बौखलाया राघव—"क—कौन बलराज?"

"तेरा यार—तेरा हमदम—हमप्याला—हमनिवाला—तेरा सब कुछ।"

"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि तुम क्या कह रहे हो? मैं किसी बलराज को नहीं जानता।"

"नहीं जानता तो जान जाएगा।"

"क्या मतलब?"

"मतलब की सिर्फ एक ही बात बताता हूं—" रहस्यपूर्ण अंदाज में मुस्कुराया रावत—"कि गंगानगर में पटेल चौक है ही नहीं।"

सुनते ही मां मर गई राघव की—झूठ भी बोला तो सोचकर नहीं बोला उसने।

"इसे काबू में रखना हरिसिंह—अगर यह भाग गया तो समझ ले तेरी खैर नहीं।"

"आप इत्मिनान रखिए सर—मेरी पकड़ से तो हाथी भी नहीं निकल सकता—इसकी तो औकात ही क्या है।" कहते हुए हरिसिंह ने अपने हाथों से राघव के बदन को हल्का-सा दबा दिया।

कुछ सोचकर राघव ने स्वयं ही अपना बदन ढीला छोड़ दिया—लेकिन मन-ही-मन उसने तय कर लिया था कि वह पुलिस को बलराज के बारे में कुछ नहीं बतायेगा—बस कल रात तक ही उसे सब्र करना था—फिर बलराज किसी दूसरे देश पहुंच जाएगा—तब वह पुलिस से फरार होने की कोई जुगत भिड़ायेगा।

पहली बार व्यंगभरी मुस्कान उभरी राघव के होठों पर—लेकिन मुंह से बोला कुछ नहीं वह।

"हँस ले—मुस्कुरा ले—जी भरकर मुस्कुरा ले—मगर थाने पहुंचने तक ही मुस्कुरा सकता है तू—उसके पश्चात् तो चीखें उगलेंगी तेरे होठों से।"

राघव की मुस्कुराहट और भी तेज हो गई।

तिलमिला उठा रावत—जी तो किया कि अभी उसे हरिसिंह से छीनकर जमीन पर पटक दे।

लेकिन अपने संयम को खोया नहीं उसने और उधर बढ़ गया जिधर कि बन्ने सिंह पुलिसियों की पकड़ में छटपटा रहा था।

बन्ने सिंह के नजदीक पहुंचते ही उसने बिना किसी योजना के दो-तीन झापड़ रसीद कर दिये उसके चेहरे पर।

चीख उठा बन्ने सिंह—साथ ही उसके होठों से खून बहने लगा। रावत के पहले ही थप्पड़ से उसका होंठ फट चुका था।

"बलराज गोगिया कहां है बन्ने?" सीधा सवाल पूछा उसने।

बुरी तरह से बौखला उठा बन्ने सिंह—"क—कौन बलराज?"

"बलराज गोगिया।"

"मैं—मैं नहीं जानता बलराज गोगिया को।"

"झूठ मत बोल हरामजादे—मुझे पता लग चुका है कि बलराज गोगिया को तूने ही पनाह दी हुई है।"

"अ—आप मेरे घर की तलाशी ले लीजिए साहब! म—मैं सच कहता हूं मैं किसी बलराज गोगिया को नहीं जानता।" अपने घर की चाबियां उसकी तरफ करते हुए गिड़गिड़ाया बन्ने सिंह।

झपटने वाले अंदाज में रावत ने उससे चाबियां लीं और उसके घर का ताला खोलकर कुण्डा खोल दिया।

उसके साथ ही उसने रिवॉल्वर निकालकर अपने हाथ में ले ली। किसी भी सम्भावित खतरे से निपटने को तैयार उसने बूट की ठोकर से दरवाजा खोला और उसके साथ ही अन्दर छलांग लगा दी।

जमीन पर पैर रखते ही रावत फुर्ती से वापस पलटा।

लेकिन दरवाजे के पीछे कोई नहीं था। लेकिन अपनी सतर्कता को बरकरार रखा उसने और सिपाहियों को अन्दर आने का आदेश दनदना दिया।

तुरन्त ही चार सिपाही अन्दर आ गए।

और फिर शुरू हुआ बन्ने सिंह के घर की तलाशी का दौर। बलराज गोगिया की खोज वहां ऐसे की जा रही थी जैसे भुस के ढेर में सुई ढूंढ रहे हों वे। तकिये के नीचे—पलंग के नीचे—ट्रंक खोलकर—मेज की दराजों को खोलकर बलराज को इस प्रकार ढूंढा जा रहा था जैसे उन्हें शक हो कि बलराज अपना आकार छोटा करने का जादू जानता है—और वह छोटे आकार में तकिये के नीचे छुप गया हो—दराज में घुस गया हो या ट्रंक में बैठा आराम कर रहा हो।

बलराज गोगिया को वहां न पाकर रावत के चेहरे पर निराशा

छा गई—लेकिन हिम्मत अभी भी बरकरार थी उसकी—और उसे भरोसा था कि बहुत जल्द वह बलराज गोगिया को ढूंढ लेगा। बलराज गोगिया तक पहुंचने का रास्ता था उसके पास।

राघव और बन्ने सिंह!

उनको इन्टैरोगेट करके वह बलराज गोगिया का पता लगा सकता था।

सो अपने मातहतों के साथ वह बाहर निकला और एक सिपाही को ताला लगाने को कहकर बन्ने सिंह के पास आ गया।

तभी उसकी निगाह बन्ने सिंह को जकड़े हुए सिपाही के हाथ में पकड़े थैले पर पड़ी।

"यह थैला इसी का है सर।" तुरंत ही बोला सिपाही।

"क्या है इसमें देख तो?" रावत बोला, साथ ही रिवॉल्वर बन्ने सिंह पर तान दी और गुर्राया—"तू कोई गलत हरकत नहीं करेगा।"

एक पैंट, एक जोड़ी बूट और जुराबें—यही था थैले में—।

"यह क्या है?" रावत ने बन्ने सिंह की तरफ घूरा।

"पैंट और बूट हैं।"

"सो तो हैं—लेकिन किसके हैं?"

"मेरे हैं।"

कुछ सोचकर रावत ने रिवॉल्वर होलस्टर में रखी और बोला—"कोतवाली पहुंचकर पहनकर दिखाना—अगर तुझे पैंट और जूते पूरे आ गए तो मैं मान जाऊंगा कि यह पैंट तेरी है और जूते भी तेरे हैं। लेकिन अगर तुझे पैंट या जूते पूरे नहीं आये तो—।" एकदम कहर बरसने लगा रावत की आंखों में—"फिर समझ ले तेरी क्या हालत होगी।"

उसकी कहर बरपाती आंखें देखकर ही बन्ने सिंह के होश फाख्ता होने लगे।

❑❑❑

बन्ने सिंह और राघव को गिरफ्तार हुए बलराज गोगिया ने गली से निकलते ही देख लिया था। सो फौरन ही उसने वहां से हट जाना ही बेहतर समझा और पास से निकलती रिक्शा को रुकने का इशारा किया।

रिक्शा के पहिए घूमते ही बलराज गोगिया ने गर्दन घुमाकर राघव की तरफ देखा। पुलिसियों से घिरा राघव जिप्सी में सवार हो रहा था। पीछे-पीछे बन्ने सिंह भी था।

राघव के बारे में उसे पूरा विश्वास था कि पुलिस चाहे कितनी ही डिग्रियां उस पर प्रयोग कर ले वह पुलिस को उसका पता नहीं बताने वाला।

लेकिन बन्ने सिंह पर उसे विश्वास नहीं था—वह जल्दी भी टूट सकता था और देर से भी—मगर टूट सकता था—और उसका टूटना बलराज गोगिया के लिए खतरनाक ही होना था। पहले तो बलराज का दिल किया कि वह गंगानगर ही छोड़कर भाग जाए—मगर तुरंत ही उसे अपने फैसले को त्यागना पड़ा—क्योंकि अवश्य ही पुलिस ने बाहर निकलने के तमाम रास्तों पर नाकाबंदी कर रखी होगी—और फिर उसका यार भी तो गिरफ्तार था।

सो उसने यही फैसला किया कि कल शाम से पहले-पहले हर हालत में राघव को पुलिस के चंगुल से आजाद करवाना है—और साथ ही उसे सकुशल गंगानगर से बाहर भेजना है, ताकि हिन्दुस्तान छोड़ते वक्त उसके दिल में यह मलाल न रहे कि उसने यारमारी की है।

भगत सिंह चौक पर उतरकर उसने पांच रुपये का नोट निकालकर रिक्शे वाले को थमाया और बाईं तरफ जाने वाली सड़क पर बढ़ने लगा।

बन्ने सिंह ने उसको इसी सड़क की पांचवीं कोठी में पहुंचने को कहा था और पूरा विश्वास दिलाया था कि वह यहां कल रात तक बेखौफ रह सकता है।

बलराज गोगिया सड़क के किनारे बनी कोठियों की गिनती करता हुआ पांचवीं कोठी के सामने रुक गया।

वह एक दोमंजिला सफेद पत्थरों की बनी बहुत ही शानदार, कोठी थी।

कोठी के मेन गेट पर ठिठका बलराज।

गेट खुला हुआ था और आसपास कोई नजर नहीं आ रहा था।

कुछ पल वहीं ठिठका रहा वह—फिर उसने अपने कदम आगे बढ़ा दिये।

ड्राईव-वे पार करता हुआ बलराज गोगिया कोठी के दरवाजे के करीब ठिठका—फिर बरामदे में लगे स्विचबोर्ड में लगे स्विचों की तरफ देखा।

एक स्विच पर बैल छपी हुई थी। उसने उसी बटन को दबा दिया।

शीघ्र ही दरवाजा खुला और जिस लड़की को बलराज ने दरवाजे में खड़ी देखा उसे देखकर ही गश आने लगा उसे।

लड़की क्या थी कयामत थी कयामत!

छोटी-सी गुलाबी टाप उसके भारी वक्षों को सम्भालने में नाकाम साबित हो रही थी—टाप के खुले गले में से उसके गुलाबी वक्ष बाहर को उलटते नजर आ रहे थे।

वक्षों से हटकर बलराज गोगिया की निगाहें लड़की की टांगों पर पड़ीं। इतनी छोटी स्कर्ट पहन रखी थी उसने कि उसकी पूरी की पूरी टांगें नुमायां हो रही थीं—मांसल गोरी टांगें कि देखने वाला यही माने कि सारी उम्र उन टांगों से ही अपने गालों को रगड़ता रहे।

एक तरफ से लड़की ने अपने अंग ही ढांप रखे थे—वर्ना बाकी हर तरफ से तो वह अपनी खूबसूरती को नुमायां कर रही थी।

चूंकि बलराज गोगिया का चेहरा बुर्के के पीछे छिपा हुआ था इसलिए लड़की उसकी निगाहों का पीछा नहीं कर पाई।

"किससे मिलना है?" लड़की बोली।

जितनी खूबसूरत उसकी बॉडी थी—उसका बदन था—उतनी ही कठोर उसकी आवाज थी।

ऐसे जैसे शोरूम से निकली गाड़ी के साईलैंसर की बांसुरी निकाल दी गई हो।

उसकी खूबसूरती के जाल से चौंक कर निकला बलराज गोगिया और लड़की के चेहरे की तरफ देखने लगा—साथ ही वह कशमकश में पड़ गया कि वह उस पर अपनी असलियत जाहिर करे या न करे।

"कौन हो तुम? तुम बोलती क्यों नहीं? गूंगी हो क्या?" लड़की का लहजा तेज हो गया।

बलराज गोगिया ने निर्णय लिया कि उसे अपनी असलियत बता ही देनी चाहिए। सो उसने अपने चेहरे पर किया पर्दा पीछे उलट दिया।

बुर्के में से किसी औरत के स्थान पर मर्द को देखकर लड़की चकित रह गई—एक क्षण के लिए उसका रंग बदला—लेकिन अगले ही क्षण उसके कोमल खूबसूरत चेहरे पर सख्ती उभर आई।

"कौन हो तुम?" खूबसूरत होंठों से हिंसक स्वर निकलता बड़ा अटपटा लग रहा था।

"बलराज...बलराज गोगिया।" मुस्कुराया बलराज—"बन्ने सिंह को तो जानती ही होंगी तुम?"

"त–तुम!" लड़की के नेत्र फैल गए—"बलराज हो?"

"बिल्कुल—ऊपर से लेकर नीचे तक सिंगल बलराज हूं।"

"अन्दर आ जाओ।" कहने के साथ ही वह एक तरफ हट गई।

बलराज गोगिया अन्दर दाखिल हो गया—लड़की ने दरवाजा बन्द करके सिटकनी चढ़ाई और बलराज को लेकर वह सजे हुए ड्राइंगरूम में आ गई।

जिस ढंग से लड़की ने सम्बोधित किया था और जिस तरह से उसके कठोर व्यवहार में एकदम नर्माई आ गई थी उससे बलराज गोगिया को समझते देर नहीं लगी कि लड़की उसके बारे में सब कुछ जानती है और उसे बताने वाला बन्ने सिंह के अलावा और कौन हो सकता था।

इससे बलराज गोगिया इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि लड़की अवश्य ही बन्ने सिंह की परमानैन्ट माशूका है—सही ढंग से बोला जाए तो रखैल है—लेकिन बन्ने सिंह की शक्ल देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह लड़की उसकी रखैल है—या कुछ और है।

"बैठो।" दाईं तरफ पड़े कीमती सोफे की तरफ इशारा किया लड़की ने—"मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने-पीने को लाती हूं।"

बलराज गोगिया सोफे पर बैठ गया।

लड़की ड्राइंगरूम से बाहर निकल गई—मगर शीघ्र ही वापस भी लौट आई—हाथों में ट्रे उठाए हुए जिसमें स्काच की आधी भरी हुई बोतल के साथ दो गिलास पड़े थे तथा साथ में एक प्लेट में ड्राईफ्रूट्स थे।

ट्रे को सैन्टर मेज पर रखकर उसने सामान को मेज पर सजाया और फिर खाली ट्रे को मेज के नीचे सरकाकर बलराज के सामने वाले सोफे पर बैठ गई।

"बुर्का उतार दो—यहां किसी बात का डर नहीं।" वह बोली।

बलराज गोगिया ने बुर्का उतार दिया—लेकिन बुर्का उतारते वक्त उसकी सलवार भी ढ़लक कर उसी जांघों तक आ गई।

फौरन झुका बलराज गोगिया और सलवार को ऊपर बांध लिया—अब उसे सलवार के ऊंची हो जाने का डर नहीं था। सलवार बांधते वक्त उसने साफ देखा कि लड़की उसकी मांसल जांघों को बहुत गौर से देख रही थी।

बलराज गोगिया पुनः सोफे पर बैठ गया तो जाकर लड़की की तन्द्रा टूटी—हल्के से चौंक कर उसने बलराज की तरफ देखा—फिर अर्थपूर्ण ढंग से मुस्करा पड़ी।

"तुम सलवार पहनते हो?"

"नहीं।" बलराज गोगिया भी मुस्कराया—"पहननी पड़ गई।" कहकर उसने बताया कि उसे सलवार क्यों पहननी पड़ी।

"मैं तुम्हारे लिए पैंट लाती हूं।" लड़की उठते हुए बोली—"नहीं सूट ही ले आती हूं।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—लड़की पुनः भीतरी कमरे में चली गई।

बलराज गोगिया मन-ही-मन यह सोचकर हैरान हो रहा था

कि अभी तक उसने बन्ने सिंह के बारे में क्यों नहीं पूछा जबकि वह उसकी मार्फत यहां पहुंचा था?

क्या लड़की को बन्ने सिंह की गिरफ्तारी का पता चल चुका था—या उसे पूछना ही याद नहीं रहा था? तभी लड़की पुनः कमरे में दाखिल हुई—हाथों में पैंट और शर्ट उठाये हुये।

पैंट-शर्ट को उसने बलराज की गोद में डाला और एक कोने की तरफ इशारा करते हुए बोली—"वह बाथरूम है—जाकर बदल लो—अगर कपड़े छोटे हों तो एडजैस्ट कर लेना।"

बलराज गोगिया ने जोड़ा उठाया और बाथरूम में चला गया।

कुछ देर बाद जब वह वापस लौटा तो लड़की ठगी-सी उसी को निहारने लगी।

उस सूट में बलराज गोगिया किसी राजकुमार से कम नजर नहीं आ रहा था।

"वाह! लड़की के मुख से अपने आप ही निकल गया—"बहुत हैंडसम नजर आ रहे हो।"

"थैंक्यू!" हल्के-से मुस्कराते हुए बोला बलराज और उसके सामने सोफे पर बैठ गया। बैठते ही उसकी निगाहें लड़की के टाप की तरफ गईं, जिसमें से लड़की की कालोनी तक साफ नजर आ रही थी—बस पर्दा था तो एक छोटे-से कपड़े का पर्दा था।

बलराज गोगिया की आंखों का पीछा करते हुए जब लड़की की निगाहें अपनी ऊपर सरक गई स्कर्ट पर पड़ीं तो उसने फौरन उसे नीचे कर लिया साथ ही अपनी टांगों को आपस में जोड़ लिया।

हौले से मुस्कराया बलराज और नजरें उठाकर लड़की की तरफ देखते हुए बोला—"मेरा नाम तो तुम जान ही चुकी हो—अपने बारे में कुछ नहीं बताया तुमने?" लड़की आगे को झुकी और बोतल का ढक्कन खोलकर गिलासों में स्काच भरने लगी। बलराज की निगाहें एक बार फिर भटक गईं—लड़की के खुले गले की टाप में से उसके वक्ष बाहर उलटने को इस कदर आतुर हो रहे थे जैसे उन्होंने कैद में न रहने का ऐलान कर दिया हो।

बलराज गोगिया की नजरों को भांप चुकी थी वह—लेकिन उसने सीधा होने का कोई उपक्रम नहीं किया और पैग बनाकर एक पैग बलराज की तरफ बढ़ा दिया।

हौले से हड़बड़ाते हुए बलराज गोगिया ने पैग थामा और बोला—"तुमने अपना नाम नहीं बताया।"

"मेरा नाम मिनी है।" मुस्कराते हुए मिनी ने अपना पैग उठाते हुए कहा।

"बन्ने सिंह से तुम्हारा क्या रिश्ता है?"

"व्यापार का।"

"व्यापार का?" चौंका बलराज।

"बिल्कुल–।" बड़ी अदा से मुस्कराई मिनी–"जो व्यापार वह करता है वही मैं करती हूं, फर्क सिर्फ इतना है कि वह पुलिस की नजरों में आ चुका है–और मैं अभी नहीं आई।"

"यह व्यापार तुम–अपने लिए ही करती हो या कोई साथी भी है तुम्हारा?"

मिनी पुनः मुस्कराई–"तुम्हारा पैग अभी भी ज्यों-का-त्यों है।"

बलराज गोगिया समझ गया कि उसकी बात का जवाब नहीं देना चाहती वह। सो उसने पैग होठों से लगाया और एक ही सांस में खाली करके मेज पर रख दिया। ड्राईफ्रूट के कुछ दाने उठाकर मुंह में डाले और उन्हें चबाते हुए बोला–

"तुमने बन्ने सिंह के बारे में कुछ नहीं पूछा?"

"पूछना कैसा–वह अभी कुछ ही देर में पहुंच जाएगा यहां।"

"वह गिरफ्तार हो चुका है।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ी मिनी।

बलराज गोगिया ने उसके चेहरे का जायजा लिया–लेकिन वह अंदाजा नहीं लगा पाया कि वह सचमुच चौंकी है या चौंकने का नाटक कर रही है?

"कैसे हुए वह गिरफ्तार?" हैरानी से अपनी आंखें चौड़ी करते हुआ पूछा उसने। उसके चेहरे पर अभी भी अविश्वास के भाव फैले हुए थे।

बलराज गोगिया ने उसे बताया–साथ ही राघव के बारे में भी बताया कि वह भी गिरफ्तार हो चुका था।

"वाकई तुम बड़े लक्की मैन हो–।" मिनी बोली–"फांसी के फंदे से बचे फिर आखिरी वक्त पर जब तुम मूर्ति लेकर भाग रहे थे तब इंस्पेक्टर की गोली से बचे–बेशक मूर्ति तुम्हारे हाथ से छिटक कर गिर गई थी मगर तुम्हारी जान बच गई–फिर जब तुम पंजाब से बाहर निकल रहे थे तब पुलिस की नाकाबंदी को तोड़कर बचे और अब गंगानगर की पुलिस के हाथों आते-आते बचे। क्रिकेट में तो एक बार जीवनदान मिल जाने से खिलाड़ी सैंचुरी बना डालता है–और तुम्हें तो चार बार जीवनदान मिला है–उस हिसाब से तो तुम्हें कम से कम चार सैंचुरियां मारनी चाहिएं–जबकि अभी तो तुमने कुछ ही स्कोर बनाया है–मेरा मतलब उन चोरियों से है जो तुमने की हैं।"

"मैंने जितने भी अपराध किये उसमें मेरी अपनी मर्जी कहीं नहीं थी–सब कुछ मजबूरी में किया मैंने–यूं समझ लो कि होता

चला गया—पहले छः कत्ल मैंने अपनी बहन और बाप का बदला लेने के लिए किये—फिर मूर्ति की चोरी भी उसी इंतकाम की ही एक कड़ी थी—भाटिया से दो लाख मैंने इसलिए लिए क्योंकि मैं हिन्दुस्तान से बाहर जाना चाहता था—ताकि अपनी जिन्दगी अमन-चैन से गुजार सकूं।"

"फिर भी तुमने जो भी कारनामें अंजाम दिये—वह तारीफी थे—दिमाग की कारस्तानियों से लबालब भरे हुए थे।"

"छोड़ो इसे—।" शायद अपनी तारीफ अच्छी नहीं लगी बलराज गोगिया को—सो वह पुनः पहली बात पर आते हुए बोला—"यह बताओ अब बन्ने और राघव का क्या करना है?"

"उनके बारे में सोचकर तुम्हें हलकान होने की क्या जरूरत है।" मुस्कुराई मिनी—"आज रात और कल का दिन तुम यहां सेफ हो—फिर कल रात को तुम यहां से कूच कर जाओगे।"

"मगर उस एजेंट के पास तो मुझे बन्ने ने ही ले जाना है।"

"उसकी चिंता छोड़ो—एजेंट के पास मैं ले जाऊंगी तुम्हें।"

"तुम?" आंखें फाड़ी बलराज गोगिया ने।

"तुम भूल रहे हो बलराज गोगिया कि मैं भी वही बिजनेस करती हूं जो बन्ने करता है—और बन्ने मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ बता चुका है।"

"लेकिन राघव... ।" चिन्तामय था बलराज गोगिया का स्वर।

"जब जा रहे हो तो फिर क्या राघव क्या बन्ने—सड़ने दो उन्हें जेल में...लटकने दो फांसी पर।"

बलराज ने घूरकर उसकी तरफ देखा—"यह तुम मुझ पर व्यंग्य कर रही हो या मुझे समझा रही हो?"

"समझा रही हूं मैं तुम्हें—हमारा व्यापार ही ऐसा है बलराज गोगिया कि जिससे खतरा हो उसे गोली से उड़ा दो—इस व्यापार में रिश्ते-नाते, दोस्ती—यारी कुछ मायने नहीं रखता—इसमें सिर्फ अपने स्वार्थ को देखा जाता है—अपने फायदे की फिक्र की जाती है—तुम्हारा फायदा भी इसे में है कि तुम राघव और बन्ने को भूल जाओ और यहां से चले जाओ।"

"मैडम—!" बलराज गोगिया का स्वर एकदम ही सख्त हो गया—"मैं तुम्हारी तरह व्यापारी नहीं हूं—और न ही अभी मेरा ऐसा कोई व्यापार करने का विचार है—तुम्हारे धंधे में अपने स्वार्थ को जरूर देखा जाता होगा—लेकिन बलराज गोगिया अपने स्वार्थ से बढ़कर अपनी दोस्ती को देखता है—अपने ऊसूलों को देखता है—और बलराज गोगिया का एक ऊसूल और भी है कि जिसका खाओ उसके लिए जान भी देनी पड़े तो पीछे न हटो—बन्ने सिंह

ने मुझे आश्रय दिया—पुलिस की निगाह में आने से बचाया—राघव मेरा जिगरी दोस्त है—उन्हें फंसा हुआ छोड़कर मैं कैसे जा सकता हूं—जबकि वो तो मेरे ही कारण ही गिरफ्तार हुए हैं।"

सुनकर मिनी की आंखों में हल्की-सी चमक उभरी—फिर गायब हो गई।

"फिर क्या सोचा है तुमने?" उसने पूछा।

"कल शाम से पहले-पहले दोनों को रिहा करवाकर गंगानगर से बाहर भेजकर ही मैं हिन्दुस्तान की सरहद पार करूंगा।"

मुस्कराहट फैल गई मिनी के होठों पर—"तुम्हारे जैसे जीदार लोगों को बहुत पसंद करती हूं मैं।" वह बोली।

बलराज कुछ नहीं बोला।

"लेकिन तुम अकेले उन दोनों को कैसे आजाद करवा पाओगे?" मिनी पुनः बोली।

"क्यों?" बलराज गोगिया ने उसे घूरा—"क्या तुम मेरा साथ नहीं दोगी?"

"तुम्हारा साथ तो मैं उम्र भर देने को तैयार हूं।" कहते हुए एक मादक अंगड़ाई ली उसने।

उसका इशारा समझ हड़बड़ा गया बलराज गोगिया—"म—मेरा मतलब है उन दोनों को आजाद करवाने में तुम मेरा साथ नहीं दोगी?"

"जरूर दे सकती हूं—।" पुनः गम्भीरता ओढ़ते हुए बोली मिनी—"मगर फिर भी हम दोनों उन्हें आजाद नहीं करवा पायेंगे जबकि हमें यह तक मालूम नहीं कि वे दोनों कहां हैं—उनकी निगरानी पर कितने सिपाही खड़े हैं—किसी थाने में हैं भी या नहीं।"

बलराज ने उसके गुलाबी उभारों पर नजरें जमाईं—फिर उसकी टांगों को देखा और बोला—"एक औरत तो बहुत कुछ कर सकती है—अगर वह तुम्हारी तरह हसीन हो तो सब कुछ कर सकती है।"

बुरी तरह से चौंकी मिनी—"तुम यह कहना चाहते हो कि मैं पता लगाऊं कि राघव और बन्ने सिंह कहां हैं?"

"तुम ऐसा कर सकती हो।"

"लेकिन मैं ऐसा करूंगी नहीं—क्योंकि इससे मेरा भी पुलिस की निगाह में आ जाने का खतरा है—और मैं ऐसा नहीं चाहती—अब तुम इसे मेरा स्वार्थ कहो या कुछ और कहो—मैं ऐसा हरगिज नहीं करूंगी।"

"ओह!" बलराज गोगिया का चेहरा लटक गया।

"हां—अगर तुम चाहो तो मैं अपने बॉस से बात कर सकती हूं।"

"तुम्हारा बॉस?" बलराज गोगिया चौंका।

"वह बन्ने का भी बॉस है—हम दोनों उसी के लिए काम कर रहे हैं।"

"क्या वो मेरी मदद करने को मान जाएगा?"

"बात करने में क्या हर्ज है?"

"हर्ज तो बहुत है—मेरी असलियत जानते ही वह मुझे पुलिस को सौंप सकता है।"

"उसकी जिम्मेदारी मैं लेती हूं।" बोली मिनी—"ऐसा कुछ नहीं होगा—अगर बॉस तुम्हारी मदद करने को तैयार न भी हुए तो भी वे तुम्हारे रास्ते की रुकावट नहीं बनेंगे।"

"ठीक है करो बात अपने बॉस से।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज।

मिनी के चेहरे पर सफलताभरी चमक उभर आई—फौरन उठी वह और कोने में स्टूल पर रखे फोन की तरफ बढ़ गई। जबकि बलराज गोगिया अपने लिए नया पैग तैयार करने लगा।

❑❑❑

राठौर बड़ी फराखदिली से बलराज गोगिया से मिला और फिर अपना परिचय देने के उपरांत बोला—

"तुम्हारे यहां पहुंचने का पता तो मुझे कल ही लग गया था जब तुमने भाटिया से दो लाख ठगे थे—लेकिन उस वक्त मुझे मालूम नहीं था कि तुम मेरे ही सिपहसालार के यहां पनाह लिये हुए हो—मैंने अपने आदमियों को तुम्हारी खोज में लगा दिया था।"

"क्यों?" बलराज गोगिया सोफे पर बैठते हुए बोला।

"अरे भाई—अपनी बिरादरी के हो तुम—और पुलिस तुम्हारे पीछे लगी हुई है—ऐसे में क्या हमारा फर्ज नहीं बनता कि तुम्हें पुलिस के शिकंजे से बचायें?"

मुस्कान उभर आई बलराज गोगिया के होठों पर—आज के दौर में बाप भी बेटे की इमदाद करता है तो उसके पीछे उसका स्वार्थ छुपा होता है—और अण्डरवर्ल्ड में तो जगह-जगह स्वार्थ छुपा हुआ है—हर कदम पर धोखा—एक-दूसरे को खत्म कर ऊपर चढ़ने की होड़ लगी रहती है—अवतार सिंह ने भी तो बचाया था उसे—ऐन तब जब वह फांसी पर लटकाया जाने वाला था—मगर क्या कहानी गढ़ी हरामजादे ने कि मूर्ति में करोड़ों के हीरे हैं जो कि उसके बाप की अमानत है और यही लालच देकर उसने मूर्ति चोरी करवाई—अवश्य ही राठौर का भी कोई न कोई स्वार्थ उसके सिर चढ़कर बोल रहा है।

वह स्वार्थ क्या है पूछने की जरूरत नहीं समझी बलराज गोगिया ने—उसे तो इस वक्त बस राघव की चिंता थी।

"मैंने गलत तो नहीं कहा बलराज गोगिया?" बलराज गोगिया को मुस्कुराते देखकर हलका-सा हड़बड़ाया राठौर।

"नहीं, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो—वक्त पर बिरादरी भाई ही एक-दूसरे की मदद कर सकता है।"

"बिल्कुल ठीक कहा तुमने।"—राठौर का चेहरा खिल उठा—"बताओ क्या मदद कर सकता हूं मैं तुम्हारी?"

बलराज गोगिया ने उसे राघव और बन्ने सिंह की गिरफ्तारी के बाबत बताया और आगे बोला—

"कल रात से पहले-पहले मैं उन्हें हर हालत में हवालात से या जहां भी वे हैं आजाद करवाना चाहता हूं—क्योंकि कल रात ही मैं हमेशा-हमेशा के लिए हिन्दुस्तान छोड़ देना चाहता हूं।"

"जबकि तुम्हें यह भी मालूम नहीं कि वे कहां हैं, किस हाल में हैं।"

"हां।"

"फिर तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।"—विचारपूर्ण ढंग से बोला राठौर—"अगर मैं पुलिस में मौजूद अपने मुखबिरों से सम्बंध बनाता भी हूं तो भी कल शाम से पहले उनका पता नहीं चल पायेगा।"

"ओह!" बलराज गोगिया के चेहरे पर निराशा उभर आई।

"मैंने तो पहले भी तुम्हें समझाया था बलराज गोगिया कि—।"

तभी मिनी बीच में बोल पड़ी—"तुम अपना प्रोग्राम कायम रखो—सड़ने दो उन्हें जेल में। तुम्हें इससे क्या?"

बलराज की आंखें एकाएक ही दहक उठीं—"मैंने तुम्हें पहले भी बताया था कि मैं यारमार नहीं हूं।"

"लेकिन इस तरह तो तुम सरहद पार नहीं कर पाओगे।"

"न सही।" गुर्राहट उबलीं बलराज गोगिया के होठों से—"अगर मेरी मौत इसी जमीन पर लिखी है तो कौन रोक सकता है—और अगर मेरा विदेश में कुशलता से पहुंच जाना भगवान को मंजूर है तो जब तक मैं यहां हूं मेरा बाल भी बांका नहीं हो सकता। पुलिस की तो क्या पूरी फौज की गोलियां मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।"

"तो फिर?" राठौर ने पूछा।

"मैं यहीं रहूंगा—राघव और बन्ने को आजाद करवाकर ही मैं हिन्दुस्तान छोड़ूंगा।"

"तुम्हारा सत्तर हजार डूब जाएगा।" मिनी बोली।

"मैं समझ लूंगा कि वह रुपया मेरी किस्मत में नहीं था।"

बलराज गोगिया की बात सुनकर राठौर के होठों पर जहरीली मुस्कान थिरक उठी।

"फंसा।" मन-ही-मन बुदबुदाया वह लेकिन ऊपरी तौर पर एकदम गम्भीर था वह—तुरंत ही बोला—"मगर मदद की कोई उम्मीद नहीं रखना बलराज।"

उछल पड़ा बलराज गोगिया और हैरतभरी निगाहों से उसे देखने लगा—"ले...किन अभी तो तुमने कहा था कि अपना बिरादरी भाई होने के नाते तुम मेरी मदद करना चाहते हो—अपने आदमियों को भी तुमने मेरी तलाश में लगा रखा था।"

"बिल्कुल कहा था—लेकिन इमदाद का मतलब यह नहीं था कि तुम्हारी खातिर में पुलिस की निगाहों में आ जाऊं—इधर मैंने राघव और बन्ने को आजाद करवाने में तुम्हारी मदद की उधर पुलिस झट इस नतीजे पर पहुंच जाएगी कि बलराज मेरी पनाह में है—इतना बड़ा रिस्क मैं यूं ही बिरादरी भाई के लिए नहीं उठा सकता।"

सब कुछ समझ गया बलराज—राठौर अपना कोई मतलब निकालने के लिए उस पर जाल फेंक रहा था।

खूब समझ रहा था वह—लेकिन राघव की खातिर उसने उसके जाल में फंसना कबूल कर लिया था।

"क्या चाहते हो तुम?"

"काम के बदले काम।" रहस्यपूर्ण अंदाज से मुस्कराया राठौर—"राघव तथा बन्ने को पुलिस की गिरफ्त से आजाद करवाने के बदले तुम्हें मेरा एक काम करना पड़ेगा।"

"कैसा काम?"

"जाहिर है कि गलत ही होगा।"

"लेकिन काम का पता तो चले?"

"काम बताने से पहले तुम्हें काम करने का वायदा करना पड़ेगा।"

"और अपना काम हो जाने के पश्चात् अगर मैं वायदा तोड़ दूं तो?"

"मैं जानता हूं कि तुम ऐसा नहीं कर पाओगे—तुम्हारी नेचर को समझ गया हूं मैं—जो आदमी अपने दोस्त को रिहा करवाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल सकता है—वह वायदाखिलाफी नहीं कर सकता।"

बलराज गोगिया निरूत्तर हो गया।

"बोलो—करते हो वायदा?"

"कोई चोरी करनी है?"

"पहले वायदा।" अपनी मुस्कान और तेज कर दी राठौर ने।

बलराज गोगिया ने लम्बी सांस छोड़ी—"वायदा किया—अब बोलो क्या काम करवाना चाहते हो तुम मुझसे?"

सुनकर आंखें चमक उठीं राठौर की—तुरन्त ही उसने हाथ बढ़ाकर बलराज का हाथ पकड़ा और उसे अपनत्वभरे ढंग से दबाते हुए बोला—"मैं कल शाम तक दोनों का पता लगवा लूंगा।"

"ल...लेकिन काम?"

"उसके बारे में बाद में बात करेंगे—पहले तुम्हारा काम हो जाने दो।"

कहकर उसने मिनी की तरफ देखा और बोला—"बलराज अपना खास आदमी है—और खास आदमी का ख्याल भी खास ढंग से रखा जाता है।"

मिनी के होठों पर मुस्कान थिरकने लगी—"आप निश्चिंत रहें बॉस—बलराज का पूरा-पूरा ध्यान रखूंगी मैं।" कहते हुए बलराज गोगिया को देखने लगी।

बात खत्म करते ही उसने अपनी बाईं आंख दबा दी।

एकदम से हड़बड़ा गया बलराज गोगिया—पहले तो उसका दिल किया कि राठौर से कह दे कि ऐसी बाजारू औरतों को वह मुंह नहीं लगाता—लेकिन राघव के ख्याल ने उसे कड़वा घूंट भरने को मजबूर कर दिया था।

❑❑❑

रात के करीब दस बजे राठौर वहां से वापिस गया। उसके जाते ही मिनी उठी और कोठी के मेन गेट का दरवाजा बन्द करके वापिस कोठी में आ गई—कोठी का दरवाजा भी बन्द किया—उसने मिटकनी चढ़ाई और ड्राइंगरूम में आकर बलराज के सामने बैठती हुई बोली—

"नींद आ रही हो तो बैडरूम से चलें।" कहते हुए उसके होठों पर अर्थभरी मुस्कान थिरकने लगी थी। बलराज गोगिया उसकी मुस्कराहट और उसकी आंखों में नाच रहे लाल-लाल डोरों को देखते ही समझ गया कि मिनी जल्दी ही गर्म हो जाने वाली लड़की है।

कुछ सोचकर वह मुस्कराया और खड़ा हो गया—"चलो—बैडरूम में चलकर ही बातें करते हैं।"

मिनी का चेहरा खिल उठा।

दोनों बैडरूम में आ गए।

बलराज गोगिया ने बैडरूम का निरीक्षण किया—बैडरूम क्या था जैसे स्वर्ग का कोई कमरा चुराकर उस स्थान पर रख दिया गया हो। राजाओं-महाराजाओं के दौर की तरह एक तरह से ख्वाबगाह बना रखा था बैडरूम को। डीलक्स साईज का डबल बैड भी उसी ढंग से बना हुआ था जैसे राजाओं के वक्त का होता था।

"कैसा लगा मेरा बैडरूम?" मिनी बलराज गोगिया की आंखों

में झांकते हुए गर्व से मुस्कराई।

बलराज गोगिया को बैडरूम देखते हुए वह यही समझी थी कि वह काफी प्रभावित हो रहा है।

बलराज गोगिया ने मिनी की तरफ देखा और उसका हाथ पकड़कर वह डबलबैड पर आ बैठा। प्यार से उसने मिनी के गालों को अपने हाथों में लिया और उसकी निगाहें अपने सामने करते हुए बोला—"एक बात बताऊं मिनी?"

बलराज गोगिया के सख्त हाथों का स्पर्श ही मिनी के तन-बदन में आग लगा गया—"ब...ताओ।" आवाज थरथरा उठी थी उसकी।

बलराज गोगिया ने हल्का-सा झटका देकर उसे अपनी गोद में गिरा लिया और उसके जिस्म पर हाथ फेरते हुए बोला—"तुम वाकई खूबसूरत हो।"

मिनी के अंदर जैसे कोई ज्वालामुखी खौलने लगा—आंखों की लाली इस कदर बढ़ गई जैसे सारा लावा उसी से बाहर उड़ेल देगी।

स...सांस सूखने लगी मिनी की।

"बिल्कुल।"—उसके जिस्म की पैमाईश करते हुए बोला बलराज गोगिया—"तभी तो राठौर ने तुझे इतनी शानदार कोठी दी है—तुझे देखते ही मैं समझ गया था कि तुम बन्ने जैसे बॉस के साथ फिट नहीं बैठ सकती—और जब राठौर को देखा तो मैं समझ गया कि तुम केवल उसी को खुश करती हो। सच कह रहा हूं न मैं?"

"ह...हां—यह कोठी बॉस की ही है ल...लेकिन प्लीज—और कोई बात न करो मुझसे—मैं तप रही हूं—मेरे अंदर आग के तूफान चल रहे हैं—पहले उन तूफानों को शांत करो बलराज—फिर...फिर बात करेंगे।"

बलराज गोगिया मुस्कराया और उसने मिनी को पलंग पर लिटा दिया और स्वयं भी उसके ऊपर छाने लगा।

"मिनी!" बलराज गोगिया उसके कानों के पास फुसफुसाया—"कल तक तुम कहां रहती थीं?"

एकदम से चौंक उठी मिनी—"य...यह क्या कह रहे हो तुम?"

"वही जो सच है—तुम आज ही यहां आई हो। मेरे यहां आने की खबर राठौर को कल की नहीं बल्कि परसों की है। बन्ने उसका प्यादा है और बलराज गोगिया के आने की खबर वह अपने राजा को न दे—ऐसा कैसे हो सकता है?"

"म...मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा तुम क्या कह रहे हो?"

"लड़कियां झूठ बोलती अच्छी नहीं लगतीं मुझे। सच-सच बताओ—मुझे अपने जाल में फंसाने के लिए ही राठौर ने जाल बुना था न?"

सुनकर आंखें चमक उठीं राठौर की—तुरन्त ही उसने हाथ बढ़ाकर बलराज का हाथ पकड़ा और उसे अपनत्वभरे ढंग से दबाते हुए बोला—"मैं कल शाम तक दोनों का पता लगवा लूंगा।"

"ल...लेकिन काम?"

"उसके बारे में बाद में बात करेंगे—पहले तुम्हारा काम हो जाने दो।"

कहकर उसने मिनी की तरफ देखा और बोला—"बलराज अपना खास आदमी है—और खास आदमी का ख्याल भी खास ढंग से रखा जाता है।"

मिनी के होठों पर मुस्कान थिरकने लगी—"आप निश्चिंत रहें बॉस—बलराज का पूरा-पूरा ध्यान रखूंगी मैं।" कहते हुए बलराज गोगिया को देखने लगी।

बात खत्म करते ही उसने अपनी बाईं आंख दबा दी।

एकदम से हड़बड़ा गया बलराज गोगिया—पहले तो उसका दिल किया कि राठौर से कह दे कि ऐसी बाजारू औरतों को वह मुंह नहीं लगाता—लेकिन राघव के ख्याल ने उसे कड़वा घूंट भरने को मजबूर कर दिया था।

❑❑❑

रात के करीब दस बजे राठौर वहां से वापिस गया। उसके जाते ही मिनी उठी और कोठी के मेन गेट का दरवाजा बन्द करके वापिस कोठी में आ गई—कोठी का दरवाजा भी बंद किया—उसने मिटकनी चढ़ाई और ड्राइंगरूम में आकर बलराज के सामने बैठती हुई बोली—

"नींद आ रही हो तो बैडरूम से चलें।" कहते हुए उसके होठों पर अर्थभरी मुस्कान थिरकने लगी थी। बलराज गोगिया उसकी मुस्कराहट और उसकी आंखों में नाच रहे लाल-लाल डोरों को देखते ही समझ गया कि मिनी जल्दी ही गर्म हो जाने वाली लड़की है।

कुछ सोचकर वह मुस्कराया और खड़ा हो गया—"चलो—बैडरूम में चलकर ही बातें करते हैं।"

मिनी का चेहरा खिल उठा।

दोनों बैडरूम में आ गए।

बलराज गोगिया ने बैडरूम का निरीक्षण किया—बैडरूम क्या था जैसे स्वर्ग का कोई कमरा चुराकर उस स्थान पर रख दिया गया हो। राजाओं-महाराजाओं के दौर की तरह एक तरह से ख्वाबगाह बना रखा था बैडरूम को। डीलक्स साईज का डबल बैड भी उसी ढंग से बना हुआ था जैसे राजाओं के वक्त का होता था।

"कैसा लगा मेरा बैडरूम?" मिनी बलराज गोगिया की आंखों

में झांकते हुए गर्व से मुस्कराई।

बलराज गोगिया को बैडरूम देखते हुए वह यही समझी थी कि वह काफी प्रभावित हो रहा है।

बलराज गोगिया ने मिनी की तरफ देखा और उसका हाथ पकड़कर वह डबलबैड पर आ बैठा। प्यार से उसने मिनी के गालों को अपने हाथों में लिया और उसकी निगाहें अपने सामने करते हुए बोला—"एक बात बताऊं मिनी?"

बलराज गोगिया के सख्त हाथों का स्पर्श ही मिनी के तन-बदन में आग लगा गया—"ब...ताओ।" आवाज थरथरा उठी थी उसकी।

बलराज गोगिया ने हल्का-सा झटका देकर उसे अपनी गोद में गिरा लिया और उसके जिस्म पर हाथ फेरते हुए बोला—"तुम वाकई खूबसूरत हो।"

मिनी के अंदर जैसे कोई ज्वालामुखी खौलने लगा—आंखों की लाली इस कदर बढ़ गई जैसे सारा लावा उसी से बाहर उड़ेल देगी।

स...सांस सूखने लगी मिनी की।

"बिल्कुल।"—उसके जिस्म की पैमाईश करते हुए बोला बलराज गोगिया—"तभी तो राठौर ने तुझे इतनी शानदार कोठी दी है—तुझे देखते ही मैं समझ गया था कि तुम बन्ने जैसे बॉस के साथ फिट नहीं बैठ सकती—और जब राठौर को देखा तो मैं समझ गया कि तुम केवल उसी को खुश करती हो। सच कह रहा हूं न मैं?"

"ह...हां—यह कोठी बॉस की ही है ल...लेकिन प्लीज—और कोई बात न करो मुझसे—मैं तप रही हूं—मेरे अंदर आग के तूफान चल रहे हैं—पहले उन तूफानों को शांत करो बलराज—फिर...फिर बात करेंगे।"

बलराज गोगिया मुस्कराया और उसने मिनी को पलंग पर लिटा दिया और स्वयं भी उसके ऊपर छाने लगा।

"मिनी!" बलराज गोगिया उसके कानों के पास फुसफुसाया—"कल तक तुम कहां रहती थीं?"

एकदम से चौंक उठी मिनी—"य...यह क्या कह रहे हो तुम?"

"वही जो सच है—तुम आज ही यहां आई हो। मेरे यहां आने की खबर राठौर को कल की नहीं बल्कि परसों की है। बन्ने उसका प्यादा है और बलराज गोगिया के आने की खबर वह अपने राजा को न दे—ऐसा कैसे हो सकता है?"

"म...मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा तुम क्या कह रहे हो?"

"लड़कियां झूठ बोलती अच्छी नहीं लगतीं मुझे। सच-सच बताओ—मुझे अपने जाल में फंसाने के लिए ही राठौर ने जाल बुना था न?"

कांप उठी मिनी उसकी बात सुनकर—"मैं कुछ नहीं जानती—सच कहती हूं।"

"तो फिर क्या जानती हो?"

"यही कि बॉस ने मुझे हुक्म दिया और मैं यहां चली आई—बाकी सब बॉस जानते हैं—मुझे तो उन्होंने केवल इतना कहा था कि बलराज गोगिया यहां आये तो उसे अपने रूपजाल में फंसाना है मुझे, मगर—।"

"मगर क्या?"

"तुम्हारा इस प्रकार मेरे से दूर हट जाना यही बताता है कि तुम वो शख्स नहीं जो लड़कियों को देखते ही दुम हिलाने लगते हैं।"

"बिल्कुल ठीक कहा तूने—मैं वो नहीं जो लड़कियों के पीछे दुम हिलाता फिरूं—क्योंकि औरत का एक रूप देख चुका हूं मैं, जब वो दगाबाजी करती है तो अपने सबसे प्यारे यार को भी डुबोने से बाज नहीं आती।"

कहते हुए बलराज गोगिया की आंखों के आगे वह नजारा घूमने लगा जब उसकी बचपन की प्रेमिका ने उसे धोखा दिया था और उसके बदले में उसने उसे गोली से उड़ा दिया था।

"लगता है गहरी चोट खाये हुए हो।" उसके चेहरे को देखते हुए बोली मिंनी—"लेकिन तुम्हारी उस चोट को भुला दूंगी मैं—औरत को देखने का नजरिया बदल जाएगा तुम्हारा।" कहकर उसने बलराज गोगिया को बांहों में भर लिया।

बलराज गोगिया ने भी उससे कुछ और न पूछने का निश्चय कर लिया—क्योंकि वह जान गया था कि राठौर और बन्ने ने उससे अपना उल्लू सीधा करने के लिए ही राघव को गिरफ्तार कराया है—उसे उन पर शक न हो इसलिए बन्ने भी जानबूझकर गिरफ्तार हुआ है। सो बलराज गोगिया ने भी अपनी बांहों को मिनी की पीठ पर लपेटा और जोर से अपने साथ भींच लिया।

"आह!" मिनी के मुंह से मीठी सिसकारी निकल गई।

❑❑❑

पुलिस लाईन का वह खास कमरा था जिसमें राघव और बन्ने सिंह छत के साथ बंधी रस्सी से उल्टे लटके हुए थे। उनके दोनों पैर रस्सियों से मजबूती से बंधे हुए थे।

राघव तथा बन्ने सिंह के नीले पड़ चुके चेहरों को देखकर ही पता लग रहा था कि अभी हाल ही में उनकी काफी धुनाई हुई है। लेकिन इतनी धुनाई हो जाने के बावजूद भी अभी उनकी जुबान नहीं खुली थी। उनके पास खड़े रावत के चेहरे पर छाई झुंझलाहट साफ देखी जा सकती थी। लेकिन आंखों में छाये दृढ़ निश्चय से

पता चल रहा था कि वह उनसे उगलवाकर ही रहेगा कि बलराज कहां है?

रावत इस वक्त राघव के पास खड़ा था।

"तो तू राघव नहीं राजकुमार है।" उसके मुख से गुर्राहट उबली।

"ह...हां।"—बड़ी मुश्किल से बोल पाया वह—"मैं... राजकुमार हूं।"

"तेरा बलराज गोगिया से कोई रिश्ता नहीं।"

"मैं बलराज गोगिया को नहीं जानता।"

"तेरी जेब में से पचास हजार रुपये मिले हैं।" गुर्राया रावत—"बाकी के डेढ़ लाख कहां हैं, जो तुम लोगों ने भाटिया से ठगे थे?"

"मैं किसी भाटिया को नहीं जानता।"

"और वो पचास हजार रुपये?" रावत ने घूरा उसे।

"मेरी जेब में सिर्फ दो हजार रुपये थे—।" राघव अपने दांतों को भींचते हुए बोला—"बाकी के रुपये तुम लोगों ने हमें फंसाने के लिए मेरी जेब में रखे होंगे।"

रावत का पारा एकदम से हाई हो गया—झपटकर उसने राघव के बालों को मुट्ठी में जकड़ लिया और जोर से झटका दिया—

"हरामजादे—पुलिस पर इल्जाम लगाता है।" दहाड़ा वह—"कहता है कि पचास हजार हमने तेरी जेब में डाले हैं।" राघव के चेहरे पर पीड़ा की रेखाएं दौड़ने लगीं—आंखें सख्ती से बंद हो गईं।

"ह...हां—।" पीड़ाभरा स्वर निकला उसके होठों से—"त...तुम लोग जानबूझकर मुझे फंसा रहे हों—मेरी जेब में सिर्फ दो हजार थे।"

"फिर तो तूने यह भी नहीं कहा होगा कि तू पटेल चौक में रहता है?"

"म...मैंने कब कहा कि मैं पटेल चौक में रहता हूं?"

रावत का चेहरा कानों तक लाल हो गया। अपनी कही बात से साफ मुकर गया था राघव। अगले ही पल टूट पड़ा वह राघव पर—लातों-घूंसों की बारिश होने लगी उस पर।

कमरा राघव की चीखों से गूंजने लगा।

लेकिन रावत रुका नहीं—राघव की चीखों ने उसके हाथों-पैरों में और भी तेजी ला दी थी—और फिर राघव की चीखें यकायक ही शांत ही पड़ गईं।

वह बेहोश हो चुका था।

"हरामजादा—।" बड़बड़ाते हुए रावत ने अपने हाथों को रोक दिया—"जितना जमीन के ऊपर है उससे दस गुणा नीचे है—छोटा-सा कद है और सहनशक्ति को देखो साले की कि लाख कोशिशों के

बावजूद भी नहीं टूट रहा—पता नहीं बेहोश कैसे हो गया जबकि पहले इससे भी ज्यादा मार खाकर भी बेहोश नहीं हुआ था।"

फिर उसने अपने पीछे खड़े दो हवलदारों को इशारा किया और बोला—"नीचे उतारो हरामजादे को और होश में लाओ—मैं इस हरामजादे से निपटता हूं।"

कहकर वह अपनी आग उगलती आंखों से बन्ने सिंह को घूरने लगा।

दोनों हवलदार तुरंत ही आगे बढ़े और राघव के बंधन खोलकर उसे जमीन पर लिटा दिया।

रावत बन्ने सिंह के सामने पहुंचा और उसकी आंखों में झांकने लगा।

उसकी आंखों को देखकर बन्ने सिंह का पूरा वजूद कांपने लगा—अब तक रावत ने उसकी जितनी ठुकाई की थी उतनी तो उसने आज तक कुल मिलाकर भी नहीं खाई थी पुलिस से।

और अब रावत के तेवर बता रहे थे कि वह उसका तीयां-पांचा एक कर देगा।

"बोल वे हरामजादे—क्या बोलता है तू—?" भेड़िये की सी गुर्राहट उभरी रावत के मुख से—"वह पैंट और बूट तेरे थे?"

थूक निगलने की कोशिश की बन्ने सिंह ने मगर उल्टा लटका होने की वजह से वह ऐसा भी नहीं कर पाया—आंखों में खौफ के भाव लिए वह रावत के चेहरे को देखने लगा।

"पैंट लम्बाई में छोटी थी तुझे—।" उसे चुप देख रावत आगे बोला—"तेरे गन्ने जैसे जिस्म पर तो ऐसे लग रही थी जैसे बांस पर रजाई का गिलाफ ओढ़ा दिया गया हो—तेरी जैसी दो कमर उस पैंट की कमर में समा जाए और तू कहता है पैंट तेरी थी।"

बन्ने सिंह के गले की घण्टी पुनः उछली।

"और वे बूट भी तेरे नहीं थे—।" रावत आगे बोला—"तुझे खुले थे कम से कम डेढ़ नम्बर खुले थे।"

"म...मैंने झूठ बोला था साहब—वह पैंट और बूट मेरे नहीं थे।" कांपते हुए बोला बन्ने सिंह।

"तो किसके थे?"

पूछते हुए रावत की आंखों में हल्की-सी चमक उभर आई—वह यही समझा कि बन्ने टूट गया है और अब वह यही जवाब देगा कि पैंट और बूट बलराज के थे।

"म...मैंने चोरी की थी साहब।"

सुनकर रावत का पारा एकदम से चढ़ गया—आंखों में कहर बरसने लगा।

"हरामजादे—!" दहाड़ उठा वह—"मुझसे मसखरी करता है। तूने चोरी की थी—झूठ बोलता है हरामी की औलाद।"

बात पूरी करने के साथ ही रावत टूट पड़ा बन्ने सिंह पर—लात-घूंसे बरसाते हुए वह यह नहीं देख रहा था कि वे कहां लग रहे हैं?

कमरा बन्ने सिंह की चीखों से गूंजने लगा।

लेकिन रावत की गति में कोई कमी नहीं आई—जितना बन्ने सिंह चीखता—रावत के हाथों की गति उतनी ही तेज हो जाती।

आखिर टूट ही गया बन्ने सिंह।

"ठहरो...म...मैं सब कुछ बताने को तैयार हूं।" चीखते हुए ही बोला वह।

रावत के हाथों को ब्रेक लगे और उसने अपनी खूनी निगाहें उस पर गड़ाते हुए गुर्राकर पूछा—

"तू बतायेगा?"

"हां...म...मैं सब कुछ बताऊंगा।" कराहते हुए बोला बन्ने सिंह।

"बलराज गोगिया के बारे में बतायेगा।"

"बलराज गोगिया के बारे में बताऊंगा।"

"तू जानता है उसे?"

"ज...जानता हूं।"

"इसे जानता है?" रावत ने बेहोश पड़े राघव की तरफ इशारा किया जिसे दोनों हवलदार होश में लाने की कोशिश कर रहे थे।

"ज...जानता हूं।"

"कौन है यह?"

"र...रा...घव।"

"बलराज गोगिया का साथी राघव?"

"ह...हां...।"

"बलराज गोगिया के बारे में जानता है...?"

"प...पा...नी...।" होठों पर जुबान फेरी बन्ने सिंह ने।

"पानी बाद में—पहले मेरे सवालों का जवाब दे।" हिंसक स्वर में गुर्राया रावत—"बलराज के बारे में जानता है?"

"ज...जानता हूं।" बड़ी मुश्किल से कह पाया बन्ने सिंह।

"कहां है वह? किस स्थान पर छिपा हुआ है?" अपने चेहरे को बन्ने के चेहरे के पास ले जाते हुए आशापूर्ण स्वर में पूछा।

यह प्रश्न पूछने के साथ ही रावत के अपने कलेजे की धड़कन में बढ़ोत्तरी हो गई थी।

उधर दोनों हवलदारों का ध्यान भी उसकी तरफ हो गया

था—बलराज के बारे में जानने को वे भी काफी उत्सुक नजर आ रहे थे।

ठीक उसी वक्त बेहोश पड़े हुए राघव की आंखें झटके से खुलीं।

और इसके पहले कि बन्ने सिंह की जुबान खुलती—उसका जिस्म रबड़ के बबुये की तरह उछला और सीधा बन्ने सिंह से जा टकराया।

हड़बड़ाहट में रावत का चेहरा एकदम से पीछे हो गया।

और जब तक रावत सम्भलता राघव की बाजू नाग की तरह बन्ने सिंह की गर्दन से लिपट गई।

"हरामजादे...मेरे यार का पता बताता है तू—तू यारी के काबिल नहीं—और जो यारी के काबिल नहीं वह जीने के भी काबिल नहीं।"

उसकी गर्दन अपनी बाजू से लपेटे राघव का बाकी जिस्म नीचे लटका हुआ था जिसके कारण बन्ने सिंह की सांस टूटने लगी थी।

इधर राघव के इरादे समझते ही राघव जोर से चीखा—"छुड़ाओ इसे बन्ने सिंह को—यह हरामजादा इसे मारना चाहता है।"

दोनों हवलदार जैसे सोते से उठे—तेजी से उसकी तरफ झपटे वे—उनके साथ-साथ रावत भी राघव की तरफ झपटा।

तीनों जिन्न की तरह चिपट गए राघव से और उससे बन्ने सिंह को छुड़ाने की कोशिश करने लगे।

लेकिन राघव की पकड़ इतनी ढीली नहीं थी—दांतों पर दांत जमाए वह अपनी पकड़ को और अधिक मजबूत करने लगा।

रावत के साथ-साथ दोनों हवलदार पसीने से नहा उठे—मगर बन्ने सिंह की गर्दन नहीं छुड़ा पाये।

तभी रावत कोने में पड़े मोटे डण्डे की तरफ झपटा और उसे उठा लिया।

गुस्से से विफरता वह वापिस आया और तड़ातड़ राघव की पीठ पर डण्डे बरसाने लगा।

लेकिन राघव ने अपनी पकड़ ढीली नहीं होने दी।

गला घुटने से बन्ने सिंह की आंखें कटोरों से बाहर उलटने लगीं—मुंह भाड़ की तरह खुल गया और उसमें से जुबान इस प्रकार बाहर निकलने लगी जैसे कोई कुत्ता हांफ रहा हो।

"हरामजादे...छोड़ दे इसे—वर्ना इसी डण्डे से मैं तेरी हड्डियां चूरा-चूरा कर दूंगा।" डण्डा उसकी पीठ पर बुरी बेदर्दी से बरसाते हुए दहाड़ा रावत।

लेकिन राघव ने अपनी पकड़ ढीली नहीं की—उल्टे और

मजबूती आ गई उसकी पकड़ में।

और फिर!

एकाएक ही राघव ने अपनी बाजू को जबरदस्त झटका दिया।

उसी के साथ ही फड़फड़ाता बन्ने सिंह एकदम शांत हो गया।

बन्ने सिंह की सांस टूटते ही राघव की आंखों में एक अजीब-सी चमक उभर आई—उसने अपनी बाजू को बन्ने सिंह की गर्दन से हटाया और जोर-जोर से ठहाके लगाने लगा—

"हा...हा...हा...।"

इधर रावत के चेहरे पर मायूसी उभर आई—मंजिल के करीब पहुंच चुका था वह—लेकिन ऐन वक्त पर आकर राघव ने उसे मंजिल से कोसों दूर फेंक दिया था।

अपनी असफलता का गुस्सा वह राघव पर उतारने लगा—तड़ातड़ डण्डे बरसने लगे उसके जिस्म पर, मगर चीखने की बजाए राघव अट्टहास उगल रहा था अपने मुख से।

"हा...हा...हा...अब तू मेरे यार का कुछ नहीं बिगाड़ सकता इंस्पेक्टर—उसे कभी नहीं पकड़ पायेगा तू...हा...हा...हा।"

राघव के ठहाकों ने रावत का जुनून इस कदर बढ़ा दिया कि उसने दोनों हवलदारों को भी उसे ठोकने पर लगा दिया।

अब राघव की हालत उस फुटबॉल की तरह हो रही थी जिसे तीन तरफ से ठोकरें लग रही थीं—।

बर्दाश्त की भी कोई हद होती है।

राघव के साथ भी ऐसा हुआ।

उसके ठहाके अब चीखों में तब्दील हो चुके थे।

और चीखें भी ज्यादा देर तक नहीं निकाल पाया वह। वह बेहोश हो चुका था।

सचमुच का बेहोश।

❑❑❑

राठौर के साथ एक पुलिसिये को कमरे में प्रवेश करते देख बुरी तरह से चौंका बलराज गोगिया—उसके साथ ही उसके चेहरे की रंगत स्याह पड़ गई।

उसकी उड़ी हुई रंगत को देखकर मुस्कराया राठौर और उसके सामने सोफे पर बैठते हुए बोला—"घबराओ नहीं—यह सब-इंस्पेक्टर उसी तालाब की मछली है जिसका मैं मगरमच्छ हूं—और तुम इस वक्त मगरमच्छ के संरक्षण में हो—मछली से डरने की जरूरत नहीं तुम्हें।"

बलराज गोगिया कुछ आश्वस्त हुआ।

"इसका नाम नेगी है।"

सब-इंस्पेक्टर नेगी ने बड़ी गर्मजोशी से बलराज से हाथ मिलाया। प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया भी मुस्कराया—फिर अपना हाथ उसके हाथ से निकालते हुए राठौर से बोला—

"तुम तो जानते ही हो राठौर कि डॉक्टरों ने मुझे पुलिस से दूर रहने से मना किया हुआ है—फिर भी तुम इसे यहां लाये।"

"इसलिए कि नेगी जानता है कि राघव कहां है?" मुस्कुराते हुआ बोला राठौर।

"कहां है राघव?" बलराज गोगिया ने नेगी की तरफ देखा।

"पुलिस लाईन में बने टॉर्चर रूम में।" नेगी बोला।

"और बन्ने?"

"ऊपर।" नेगी ने उंगली छत की तरफ उठाई।

"क्या?" बुरी तरह से उछला बलराज।

"राघव ने इंस्पैक्टर रावत के सामने ही बन्ने सिंह को उस वक्त मार डाला जब वह रात को तुम्हारे बारे में बताने जा रहा था।"

"ओह!" बलराज गोगिया के मुख से निकला—"फिर तो राघव पर बहुत अधिक टॉर्चर किया होगा रावत ने।"

"तब से अब तक चार बार बेहोश हो चुका है—जिस्म का नक्शा बदलकर रख दिया है रावत ने—कोई अंग ऐसा नहीं छोड़ा उसने जहां पर नील न पड़ा हो।"

एकाएक ही बलराज गोगिया की आंखें सुलग उठीं—"अगर मेरे यार को कुछ हो गया तो बलराज पुलिस का सबसे बड़ा दुश्मन बन जाएगा—जहां भी पुलिसिया देखेगा उसे खत्म कर देगा।" उसके मुख से इंसान की नहीं किसी दरिंदे की गुर्राहट उबल रही थी।

अपनी सुर्ख आंखों को उसने नेगी पर केंद्रित किया और बोला—"गंगानगर का सबसे बड़ा अफसर कौन है।"

"पुलिस कमिश्नर भटनागर।" तुरंत ही बोला नेगी।

"उसके घर में कौन-कौन हैं?"

"बीवी और दो बच्चे—दोनों ही बच्चे मंसूरी में पढ़ते हैं।" कहकर नेगी कुछ सोचकर बोला—"अगर तुम्हारा इरादा कमिश्नर साहब को किडनैप करने का है तो वो इरादा त्याग दो—क्योंकि कमिश्नर के साथ ए०के० सैंतालिस से लैस हर वक्त दस कमांडोज होते हैं—किडनैप तो दूर तुम उनके पास भी नहीं पहुंच पाओगे।"

"मैंने अभी अपना इरादा नहीं बताया तुझे।" गुर्राया बलराज गोगिया—"जो पूछ रहा हूं सिर्फ उसका जवाब दो।"

नेगी चुप रह गया।

"ऑफिस कब जाता है कमिश्नर?"

"सुबह दस बजे वे ऑफिस के लिए रवाना होते हैं—फिर शाम

पांच बजे तक वहीं रहते हैं—ठीक पांच बजे अपनी ड्यूटी समाप्त कर वे वापस लौट आते हैं।"

"घर कब पहुंचता है वो?"

"सवा पांच।"

"यानि पंद्रह मिनट लग जाते हैं उसे घर पहुंचने में—उस हिसाब से तो उसकी कोठी ऑफिस से कम से कम सात-आठ किलोमीटर होनी चाहिए।"

"सात किलोमीटर दूर है।"

"कमिश्नर के जाने के बाद कोठी की निगरानी में कौन-कौन तैनात होता है?"

नेगी कुछ पल सोचता रहा—फिर कहने लगा—

"गेट पर एक संतरी के अलावा वायरलैस रूम में एक सिपाही होता है—तथा एक टेलीफोन ऑपरेटर होता है—उन तीनों के अलावा एक और सिपाही होता है जो कि घर के कामकाज में लगा होता है।"

"जैसे इधर का सामान उधर रखना—मेहमान के लिए चाय वगैरह लाना वगैरह-वगैरह।"

"हां।" बोला नेगी—"लेकिन तुम करना क्या चाहते हो?"

बलराज गोगिया ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और राठौर की तरफ देखते हुए बोला—"इसे इसका इनाम देकर रुख्सत करो।"

एक लम्बी सांस छोड़कर राठौर ने जेब से दो हजार रुपये निकाले और नेगी की तरफ बढ़ा दिये।

"राठौर साहब वो—।"

"कुछ और चाहिए?" काट खाने वाले अंदाज में गुर्राया राठौर।

"न...नहीं...और कुछ नहीं चाहिए।"

"तो फिर वो-वो क्या लगा रखी है?"

"राठौर साहब—मेरी बीवी परसों की मायके गई है—अकेला सोता हूं तो बोरियत होने लगती है।"

राठौर ने घूर कर उसकी तरफ देखा—"सचमुच बड़ा हरामखोर है तू।"

नेगी ने दांत दिखा दिये।

"रा...रात को तेरा पहलू गर्म करने के लिए लड़की पहुंच जाएगी।"

"राठौर साहब—वो मिनी—।"

"वो बलराज गोगिया के लिए बुक है—।"

"नहीं-नहीं।"—तुरंत ही बोल पड़ा बलराज गोगिया—"मुझे कोई एतराज नहीं—यूं भी मेरा दिल अपने काम की तरफ ज्यादा है—लड़की तो जब चाहो आ जाएगी—मगर राघव... ।"

"ठीक है।"—एक लम्बी सांस छोड़ी राठौर ने—"मिनी पहुंच जाएगी तेरे पास।"

नेगी की बांछें खिल गईं।

राठौर का लाख-लाख धन्यवाद करता हुआ वह खड़ा हो गया—और फिर बलराज गोगिया से हाथ मिलाकर चला गया।

❑❑❑

"नेगी को यहां लाकर तुमने ठीक नहीं किया राठौर।"

नेगी के वहां से जाते ही बोला बलराज गोगिया।

"क्यों?" राठौर बोला—"क्यों अच्छा नहीं किया?"

"वह पुलिस वाला है—और तुम तो जानते ही हो कि पुलिस कुत्ते की तरह मेरी तलाश में लगी हुई है।"

मुस्कराया राठौर—"लगता है पुलिस का खौफ तेरे दिमाग में कुछ ज्यादा ही बैठा हुआ है—मैंने पहले भी तुझे कहा था कि नेगी मात्र एक मामूली मछली है—वह मेरे खिलाफ नहीं जा सकता। और फिर जो बात तुम उससे कर सकते थे मैं नहीं कर सकता था।"

कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

"कहां जा रहे हो?" बलराज गोगिया ने उसे उठते देखा तो पूछ लिया।

"वक्त देख रहे हो—डिनर भी तो करना है— ।" अपनी कलाई उसके सामने करते हुए बोला राठौर—"और डिनर से पहले दो-चार पैग न मार लूं तो खाना खाया ही नहीं जाता।"

"ओह!"

राठौर पिछले कमरे की तरफ चला गया।

थोड़ी देर बाद वह वापिस लौटा तो वह स्वयं एक ट्रॉली को धकेल रहा था। ट्रॉली पर पीने का सारा सामान पड़ा था।

ट्रॉली का सैन्टर टेबल के साथ लगाकर वह सारा सामान मेज पर सजाते हुए बोला—

"मिनी कब की गई है?"

"तुम्हारे जाने से थोड़ी देर पहले ही गई थी।"

"फिर तो उसे देर लगेगी—रेस्टोरैंट थोड़ी दूर पर है—ऊपर से डिनर तैयार करवाने में भी वक्त लगेगा।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला।

सारा सामान टेबल पर लगाकर राठौर स्वयं भी सोफे पर बैठ गया और अपना तथा बलराज का पैग तैयार करते हुए बोला—

"राघव के बारे में क्या सोचा है?"

"सोचना क्या है—हर हालत में छुड़ाना है उसे।"

"सो तो है।"—पैग उठाकर बलराज गोगिया को दिया राठौर ने—"लेकिन कैसे छुड़ाना है—यह भी सोचा है?"

"सोच लिया है।" कहते हुए बलराज गोगिया ने पैग थाम लिया और उसे अपने होठों से लगा लिया।

"कैसे छुड़ाओगे? कमिश्नर का अपहरण करोगे?"

बलराज गोगिया ने पैग खाली किया और गिलास मेज पर रखते हुए बोला—"ऐसी बेवकूफी नहीं करूंगा मैं—कमिश्नर का अपहरण होते ही पूरी पुलिस चौकस हो जाएगी—और अपने फर्ज का अलाप रागते हुए वह राघव पर और भी जुल्म करना शुरू कर देगी।"

"तो फिर?" पैग अपने होठों की तरफ बढ़ाते हुए पूछा राठौर ने।

बलराज गोगिया ने बताया तो राठौर की आंखें फटने लगीं। होठों से लगने से पहले ही गिलास रुक गया।

"बहुत बड़ा रिस्क लोगे तुम ऐसा करके।" वह बोला—"इसमें तुम्हारी जान सचमुच जा सकती है।"

"मैं तो सिर्फ एक ही बार मरूंगा—लेकिन मेरा यार तो बार-बार मर रहा है—उसे छुड़ाने के लिए तो मैं इससे बड़ा भी रिस्क उठा सकता हूं।"

"ल...लेकिन।"

"घबराओ नहीं राठौर—मुझे कुछ नहीं होगा—जो वायदा मैंने तुमसे किया है उसे पूरा करके ही रहूंगा मैं।"

बलराज गोगिया द्वारा अपनी बात पूरे आत्मविश्वास द्वारा कहे जाने के बावजूद भी राठौर को तसल्ली नहीं हुई—मगर फिर भी उसे उसकी बात माननी तो थी ही।

सो पैग होठों से लगाया उसने और एक ही सांस में गटागट खाली कर गया।

खाली पैग मेज पर रखकर वह पुनः अपना तथा बलराज का पैग तैयार करने लगा।

"ठीक है—जैसी तुम्हारी मर्जी—बोलो मुझसे क्या चाहते हो?" बोतल को मेज पर रखते हुए पूछा उसने।

"आठ-दस बम—एक रिमोट कन्ट्रोल—और तुम्हारे कुछ हथियारबन्द आदमी।"

"कितने आदमी?"

"पांच से काम चल जाएगा—और सभी के पास स्टेनगनें होनी चाहिएं।"

"काम हो जाएगा।"

"कल सुबह दस बजे से पहले होना चाहिए—क्योंकि दस बजे कमिश्नर ऑफिस के लिए रवाना हो जाता है।"

"हो जाएगा।"

कहते हुए राठौर ने अपना पैग उठा लिया।

उसके चेहरे से साफ नजर आ रहा था कि जो तरीका वह राघव को छुड़ाने के लिए अपनाने जा रहा है—उससे वह नाखुश था।

❑❑❑

सुबह साढ़े नौ बजे ही राठौर पांच आदमियों के साथ बलराज गोगिया के पास पहुंच गया।

बलराज ने बारी-बारी से पांचों का जायजा लिया। पांचों ही आदमी शक्लो-सूरत से दरिंदे नजर आ रहे थे। राठौर ने पांचों का परिचय ओम सिंह, कृष्ण जाखड़, सन्तोष, कालिया तथा रामचन्द्र के नाम से कराया, फिर बोला—"शक्लों से ही देख रहे हो कि कितने खतरनाक है ये लोग। मेरे गैंग में सबसे खूंखार आदमियों में से यह पांच हैं—तुम्हारा हर कदम पर साथ देंगे ये—तुम्हारे एक इशारे पर अपनी जान की परवाह किये बिना आग में भी कूद जाएंगे।"

सुनकर बलराज गोगिया मुस्कराया—"मुझे ऐसे ही आदमियों की जरूरत थी।" कहकर उसने राठौर से पूछा—

"तुमने इन्हें काम समझा दिया है?"

"थोड़ा-बहुत समझाया है—बाकी तुम समझा दो।"

"मैं सारा ही समझाये देता हूं।"

कहकर वह पांचों को समझाने लगा कि उन्हें क्या करना है।

उसके बात करने के साथ-साथ पांचों अपने सिरों को इस प्रकार हिला रहे थे जैसे उसकी बात उनकी समझ में आ रही हो। बलराज ने अच्छी तरह समझाकर उनसे पूछा—"समझ गए क्या करना है तुम्हें?"

"समझ गए।" पांचों एक साथ बोले।

"कमिश्नर के घर धावा बोलना है—इसलिए सोच-विचार कर लो, कहीं ऐसा न हो दुम दबाते नजर आओ वहां पर।"

"हमारी फिक्र छोड़ो—हम भागने वालों में से नहीं—कदम आगे बढ़ाकर पीछे हटाना हमारी फितरत में नहीं।"

कालिया के होठों से गुर्राहटपूर्ण स्वर निकला।

"ठीक है।" बोला बलराज गोगिया और अपनी घड़ी को देखते हुए बोला—"पौने दस बज रहे हैं।"—उसने पुनः पांचों की तरफ देखा—"ठीक दस बजे हम यहां से रवाना हो जाएंगे।

पांचों ने एक बार फिर सहमति से सिर हिला दिया।

□□□

ठीक दस बजे कमिश्नर साहब की कोठी का फाटक खुला और एक-एक करके तीन गाड़ियां बाहर निकलीं। सबसे आगे जिप्सी थी—उसके पीछे काली एम्बेसडर जिसके नम्बर पर लगी प्लेट पर पीतल के अक्षरों में 'कमिश्नर' लिखा चमचमा रहा था—एम्बेसडर के पीछे एक और जिप्सी थी।

दोनों जिप्सियों में ए०के० सैंतालिस से लैस चार-चार कमांडो बैठे हुए थे—तथा दो कमांडो उसी एम्बेसडर में थे जिसमें कि कमिश्नर साहब थे।

तीनो गाड़ियों का काफिला आगे बढ़ा—और उसी के साथ ही पीछे से कोठी का फाटक बन्द हो गया।

फाटक के दाईं तरफ एक बूथ बना हुआ था जिसमें राईफल कंधे पर लादे एक संतरी खड़ा था जो कि कमिश्नर साहब के जाते ही बीड़ी निकालकर उसे सुलगा रहा था।

मेन फाटक के बाईं तरफ एक और छोटा रास्ता था जो कि एक बड़े कमरे के दरवाजे तक जा रहा था—वह दरवाजा फरियादी के आने-जाने के लिए बनाया गया था—और वह बड़ा कमरा भी फरियादी के लिए जिसमें पड़ी कुर्सियों पर बैठकर वे अपना नम्बर आने की प्रतीक्षा करते थे।

उस बड़े कमरे के साथ सटा हुआ था कमिश्नर साहब का ऑफिस।

अपने ऑफिस से छुट्टी करके जब वे घर जाते थे तो उसी कमरे में बैठकर फरियादी की फरियाद सुनते थे।

ऑफिस के पीछे उनकी कोठी थी जिसमें उनकी बीवी और अन्य पुलिस वाले थे।

ऑफिस के बराबर में टेलीफोन ऑपरेटर का कमरा था जिसमें वायरलैस भी लगा हुआ था।

कमिश्नर साहब को गए हुए करीब दस मिनट बीत चुके थे जब कम्बलों को ओढ़े हुए छः आदमी वहां पहुंचे।

सन्तरी के बूथ के पास ठिठक गए सभी।

वे छहों जो कि बलराज और उसके साथी थे ठिठक कर एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"संतोष—!" तभी फुसफुसाया बलराज गोगिया—"जाकर सन्तरी को सम्भाल।"

तुरंत ही संतोष आगे बढ़ा और संतरी के बूथ के पास पहुंच गया।

एक कम्बलधारी को अपने सामने देख संतरी चौंका—बीड़ी

का धुआं मुंह से उगलते हुए वह बोला—"साहब ऑफिस चले गए हैं।"

लेकिन संतोष बोला कुछ नहीं—उसने अपना कम्बल उतारा और स्टेनगन संतरी पर तान दी।

"खबरदार!"—दरिंदे की मानिंद गुर्राया संतोष—"अगर खैरियत चाहता है तो चुप रहना—वर्ना स्टेनगन की सारी गोलियां तेरे सीने में उतार दूंगा।"

संतरी की उंगलियों में फंसी बीड़ी स्टेनगन देखते ही गिर पड़ी थी—और उसकी वार्निंग सुनकर तो उसकी आंखों के सामने मौत नाचने लगी थी।

"क...कौन हो तुम?"

"वर्दी उतार।"

हिचकिचाया संतरी।

"मैं ट्रिगर दबाने जा रहा हूं।" संतोष की आंखों में दरिंदगी नाचने लगी।

और फिर अक्समात् ही संतोष की स्टेनगन लहराई और उसका लोहे का बट 'तड़ाक' से संतरी की खोपड़ी से जा टकराया।

बेचारा समझ भी नहीं पाया और बेहोशी के गर्त में समाने लगा। उसके घुटने मुड़े और वह वहीं बूथ में ही पसर गया।

संतोष ने एक नजर बेहोश पड़े संतरी पर डाली—फिर स्टेनगन को राईफल के साथ टिकाकर जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उतारने लगा।

कुछ ही देर में वह संतरी की वर्दी पहने उसका स्थान लिए खड़ा था।

इधर बलराज गोगिया अन्य चारों के साथ फाटक के साथ जा रहे रास्ते पर चलते हुए उस कमरे में जा पहुंचे जो कि फरियादियों के लिए बनाया गया था।

कमरे में पहुंचते ही बलराज गोगिया समेत सभी ने कम्बल उतार फेंके—और कम्बलों के नीचे से वे सभी हाथों में स्टेनगन लिए खड़े दिखाई दिये।

"ओम!" बलराज गोगिया ने ओम प्रकाश की तरफ देखा।

"वायरलैस रूम में जाओ।"

तुरंत ही ओम उधर बढ़ गया—और बलराज गोगिया बाकी तीनों के साथ कमिश्नर के ऑफिस में प्रवेश कर गया।

एक स्टेनगनधारी को देखते ही वायरलैस ऑपरेटर बुरी तरह से उछल पड़ा—और इससे पहले कि वह कोई हरकत करता!

ओम ने स्टेनगन का बट पूरी ताकत से उसकी खोपड़ी पर दे मारा।

कराह भी नहीं पाया वह और धड़ाम से नीचे आ गिरा।

वह बेहोश हो चुका था।

इसी तरह शेष तीनों ने भी अन्दर मौजूद अन्य नौकरों तथा सिपाहियों को आसानी से काबू कर लिया।

तब बलराज उधर बढ़ा जिधर कमिश्नर की बी ी के होने का अंदाजा था। वह जगह बैडरूम थी जिसमें उसे कमि नर की बीवी कोई मैगजीन पढ़ती नजर आई।

एक अजनबी को अपने बैडरूम में प्रवेश करते देख बुरी तरह से उछल पड़ी वह।

"क...कौन हो तुम?"

बलराज गोगिया मुस्कुराया और अपनी शर्ट के बटन खोलने लगा।

कमिश्नर की बीवी के होठों से चीख निकल गई। फटी-फटी आंखों से वह बलराज के जिस्म पर बंधे आठ बमों को देख रही थी जो कि एक महीन तार द्वारा आपस में कनैक्टड थे।

"य...यह क्या है?"

"देख नहीं रही—बम है ये—और एक बम पूरी क़ोठी को उड़ाने की काबलियत रखता है।"

उसका पूरा वजूद कांप उठा—चेहरा पसीने की धारायें छोड़ने लगा।

उसकी डरी हुई हालत देखकर आनन्दित होता हुआ बलराज बोला—"इस कोठी में तेरे सब नौकर मेरे आदमियों की गिरफ्त में हैं—चाहो तो किसी को भी आवाज़ देकर बुला सकती हो।"

मिसेज भटनागर के होंठ कांप कर रह गए।

"अब बोल—बैठेगी ना मेरी गोद में।" मुस्कराते हुए बलराज गोगिया उसकी तरफ बढ़ा, साथ ही पैंट की जेब में हाथ डालकर रिमोट कंट्रोल निकाल लिया।

"नहीं...गिड़गिड़ा उठी वह—"म...मेरे पास मत आना...मुझे मत छूना।"

लेकिन बलराज गोगिया तो पलंग पर बैठ चुका था—मिसेज भटनागर से कोई छेड़खानी या जबरदस्ती करने की कोशिश नहीं की उसने। उसने रिमोट को उसकी आंखों के सामने नचाया और बोला—

"यह रिमोट कन्ट्रोल है—कमिश्नर की बीवी हो जानती होंगी—इसका बटन दबाते ही मेरे साथ-साथ तुम भी मांस के लोथड़ों में तब्दील होकर बिखर जाओगी।"

"न...नहीं।"

"इसलिए अगर तुम चाहती हो कि मैं बटन न दबाऊं तो आराम से मेरी गोद में बैठ जाओ।" आखिरी शब्द कहते हुए बलराज गोगिया के स्वर में हल्की-सी गुर्राहट उभर आई थी।

जान किसे प्यारी नहीं होती—वह उठी और कांपती टांगों से चलती हुई बलराज की गोद में आ बैठी।

"शाबास!" प्यार से उसके उभारों पर अपना बायां हाथ फेरते हुए मुस्कराया बलराज—"अब अपना नाम बताओ।"

"स...सीमा भटनागर।" कांपते हुए जवाब दिया उसने।

"सीमा...अगर हम दोनों साथ-साथ इस दुनिया से कूच कर जाएं तो कितना मजा आयेगा!"

सीमा के होठ कांप कर रह गए, जैसे वह कुछ बोलना चाह रही हो मगर आवाज उसका साथ नहीं दे रही हो।"

बलराज ने पलंग के सिरहाने पर एक स्टूल पर रखे फोन की तरफ इशारा किया—फोन उठा ला।"

कांपती हुई सीमा उठी और फोन उठाकर पुनः बलराज की गोद में आ बैठी।

"अपने पति को फोन कर—।" एकाएक ही बलराज की आवाज में गुर्राहट उबल पड़ी—"और उसे बता कि तू इस वक्त किस स्थिति में है?"

सीमा की कांपती उंगलियों ने कुछ नम्बर पुश किये—और फिर वह रिसीवर कान से लगाए उधर से आवाज आने का इंतजार करने लगी।

"हैलो—।" उधर से टेलीफोन ऑपरेटर की आवाज सीमा के कान से टकराई।

"म...मैं सीमा बोल रही हूं—मिसेज भटनागर।"

"ओह मेम साहब—मैं अभी साहब को सूचित करता हूं।"

तभी कमिश्नर की आवाज सीमा के कान से टकराई—"हैलो सीमा—क्या बात है फोन क्यों किया?"

"ब...बलराज गो...गिया।" सीमा के मुख से अस्पष्ट कांपता स्वर निकला।

"क्या?" उधर से चौंकता स्वर उभरा। फिर कुछ देर की चुप्पी के पश्चात् पुनः कमिश्नर की आवाज उभरी—"कहां से बोल रही हो तुम—?"

"कोठी से।"

"कोठी से?" उधर से हैरानीभरा स्वर उभरा।

ठीक उसी क्षण बलराज गोगिया ने सीमा के हाथों से रिसीवर झपट लिया और अपने कान से लगाते हुए गुर्राया—

8KV

"मैं बलराज बोल रहा हूं कमिश्नर।"

"ब...बलराज गोगिया?"

"हां...बलराज गोगिया—और इस वक्त तेरी कोठी पर मेरा कब्जा है—कोठी का एक-एक आदमी यहां तक कि संतरी भी मेरे कब्जे में हैं—।"

"नहीं।"

"और तेरी खूबसूरत बीवी इस वक्त मेरी गोद में बैठी है।"

"क्या चाहते हो तुम?"

"राघव—।" बोला बलराज गोगिया—"मुझे मेरा यार राघव चाहिये—बिल्कुल ठीक-ठाक एकदम चौकस।"

"ल...लेकिन।"

"मैं कोई बहाना नहीं सुनूंगा कमिश्नर—!" एकदम से गुर्रा पड़ा वलराज—"अगर तुझे अपनी बीवी से प्यार है—अपने मातहतों से प्यार है तो फौरन राघव को लेकर अपनी कोठी पर पहुंच जाओ—वर्ना इन सभी की मौत के जिम्मेदार तुम अकेले होगे।"

उधर से चुप्पी छा गई।

बलराज गोगिया समझ रहा था कि कमिश्नर सोच रहा है—तो उसने बोलने की चेष्टा नहीं की।

"म...मैं आ रहा हूं...।"

"राघव को साथ लेकर आना होगा तुझे।"

"लेकिन इस तरह तो मेरे साथ पूरी फोर्स आ जाएगी।"

"तू बेशक पूरी फौज को साथ ले आना—उसकी परवाह नहीं मुझे—मगर मुझे राघव चाहिए—एकदम चौकस—और मैं यहां पर सिर्फ आधा घण्टा इंतजार करूंगा तेरा—उसके पश्चात् मैं जिम्मेवार नहीं हूंगा।"

"म...मैं आधे घण्टे से पहले पहुंच जाऊंगा।" कमिश्नर की आवाज बुरी तरह से कांप रही थी।

सुनकर बलराज गोगिया के होठों पर विजयी मुस्कान थिरक उठी। उसने क्रेडिल पर रिसीवर को टिकाया और फोन को पलंग पर रख दिया।

❑❑❑

उस वक्त राघव को ताजा-ताजा होश आया था जब कमिश्नर भटनागर वहां पहुंचे।

कमिश्नर को अपने सामने देखकर बुरी तरह से हड़बड़ा गया रावत। हाथ में पकड़े डण्डे को उसने अपनी बगल में दबाया और जोरदार सैल्यूट दाग दिया।

तत्पश्चात् उसने कराह रहे राघव की तरफ इशारा किया और

बोला—"राघव की सहनशक्ति कमजोर पड़ती जा रही है सर—अबकी बार यह टूट जाएगा—और बता देगा कि बलराज गोगिया कहां छिपा है?"

कमिश्नर साहब का चेहरा उतर गया—"उससे पूछने की जरूरत नहीं इंस्पेक्टर।"

"क्योंकि मैं जानता हूं बलराज गोगिया कहां है!"

सुनकर जहां रावत उछल पड़ा—वहीं राघव भी बुरी तरह से चौंक पड़ा—साथ ही उसके कलेजे की धड़कन तेज होने लगी—मन में बुरे-भले अंदेशे पनपने लगे।

"अ...आप जानते हैं सर?" हैरानी में डूबा था रावत का स्वर।

"हां...।" कमिश्नर साहब का स्वर थर्रा रहा था—"वह मेरी कोठी में है और...।"

सब कुछ बताते चले गए वे।

"ओह नो।"

"उसने राघव को मांगा है।"

"ल...लेकिन सर...!"

"अगर सवाल सिर्फ मेरी पत्नी का होता तो शायद मैं अपनी पत्नी को फर्ज पर कुर्बान कर देता—लेकिन मेरे मातहत भी उसके कब्जे में हैं—एक जान के लिए मैं कई जानें कुर्बान नहीं कर सकता।"

"ल...लेकिन सर...!"

"राघव को ले जाने की तैयारी करो—।" सहसा ही कमिश्नर का लहजा आदेशपर्ण हो गया—"हमें आधे घण्टे में हर हालत में अपनी कोठी पहुंचना है और आधे घण्टे में से दस मिनट निकल चुके हैं—सो हरी अप।"

"य...यस सर!" बुरी तरह से हड़बड़ा गया रावत।

"और सुनो—!" तभी कमिश्नर आगे बोले—"बलराज ने यह भी कहा है कि बेशक हम पूरी फोर्स के साथ वहां पहुंच सकते हैं—इसलिए तुम पूरी तैयारी के साथ राघव को लेकर वहां पहुंचना—और जैसे ही वह कोठी से बाहर निकले—उसे गोलियों से भून डालना।"

"हा...हा...हा...।" तभी राघव एकदम उठकर हँस पड़ा।

दोनों चौंक कर उसकी तरफ देखने लगे।

"बलराज गोगिया को बेवकूफ मत समझो तुम लोग—।" उन्हें अपनी तरफ देखते हुए बोला राघव—"वह जानता था कि अगर वह ऐसा न कहता तो भी तुम लोग बाज आने वाले नहीं थे—इसलिए

उसने इसका भी इंतजाम पहले से ही कर लिया होगा कि पुलिस तो क्या फौज भी उसका कुछ न बिगाड़ पाये।''

"तेरी तो मैं... ।" गुस्से में रावत उसकी तरफ झपटा।

लेकिन तभी चीख उठा राघव—"अब की बार मेरे जिस्म पर पड़ा एक भी डण्डा तुझे भारी पड़ सकता है इंस्पेक्टर, इसलिए सोच-समझकर हाथ उठाना।''

"रुक जाओ इंस्पेक्टर—राघव को हाथ भी नहीं लगाओगे तुम—।" तभी पीछे से कमिश्नर का आदेश भी गूंज उठा। रावत का हाथ जहां-का-तहां रुक गया—आंखों से भाले-बर्छियां चलाता हुआ वह राघव को घूरने लगा। प्रत्युत्तर में राघव बोला कुछ नहीं बस मुस्कुरा पड़ा। बेशक इस वक्त उसका जिस्म पके हुए फोड़े की तरह दुख रहा था—लेकिन अपनी रिहाई की बात सुनकर वह उस दर्द को भूल गया था।

❑❑❑

जैसे गंगानगर की तमाम पुलिस कमिश्नर की कोठी पर पहुंच गई थी। जहां देखो खाकी वर्दी वाले ही नजर आ रहे थे।

कोठी का फाटक बलराज गोगिया ने पहले ही खुलवा दिया था, ताकि कमिश्नर के आने पर किसी को फाटक खोलने के लिए जाना न पड़े।

पुलिस फोर्स हालांकि पहले पहुंच चुकी थी मगर कमिश्नर की तरफ से पुलिस को आदेश था कि कोई भी कोठी के अन्दर न जाए, बाहर से घेरा डाल लिया जाए।

सो किसी को फाटक पार करने की भी हिम्मत नहीं हुई—और आदेशानुसार कोठी को चारों तरफ से घेर लिया गया।

आधा घण्टा होने में अभी एक-आध मिनट बाकी रहा था जब कमिश्नर अपने कारों के काफिले के साथ फाटक के अन्दर प्रविष्ट हुआ। उनके कमांडोज के अतिरिक्त और भी कई ऑफिसर तथा पुलिसिये थे कमिश्नर के साथ और हर कमांडोज—हर पुलिसिये को यही आदेश मिला हुआ था कि इशारा मिलते ही बलराज को गोलियों से भून दें।

कोठी में प्रवेश करते ही कमिश्नर को जबरदस्त झटका लगा जब उन्होंने ड्राइंगरूम में सीमा को बलराज गोगिया की गोद में बैठे देखा।

बलराज गोगिया के आस-पास उसके बॉडीगार्डों की सूरत में उसके पांचों साथी खड़े थे जिनकी स्टेनगनें कमिश्नर की तरफ ही तनी हुई थीं।

"आओ कमिश्नर—!" कमिश्नर को देखते ही बलराज

गोगिया जहरीली मुस्कान के साथ बोला—"मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।"

"त...तुम बलराज गोगिया हो?"

"बलराज गोगिया।" बलराज गोगिया मुस्कुराया—"बिल्कुल ठीक वक्त पर पहुंचे हो तुम—वर्ना मैं तो इस रिमोट का बटन दबाने जा रहा था—और उसके साथ ही मेरे साथ-साथ तेरी यह खूबसूरत बीवी भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जाती।"

बलराज गोगिया ने सीमा के गालों पर हाथ फेरा।

"हाथ मत लगाओ सीमा को—।" एकदम से दहाड़ उठे कमिश्नर।

"लगता है फोन पर मेरी बात का विश्वास नहीं हुआ था तुझे—विश्वास न हो तो सीमा से पूछ लो—क्यों सीमा क्या कहती हो तुम—?"

विवशता से सीमा की आंखों से आंसू बहने लगे। अपने मुंह से कैसे कहे वह अपने पति को कि एक गैर मर्द ने उसके उभारों को भींचा था।

"दोबारा हाथ डालकर दिखाऊं कमिश्नर?" सीमा को चुप देख बोला बलराज।

"कमीने—!" अपमान से सुलग उठा कमिश्नर—"मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

"मैं जानता हूं—।" जहरीली मुस्कान मुस्कुराया बलराज गोगिया—"लेकिन इस वक्त तो तुम सब मेरे रहमो-करम पर हो। मेरे जिस्म पर बंधे इन बमों को देख रहे हो न—एक-एक बम इतना शक्तिशाली है कि पूरी कोठी की ईंट-ईंट बिखेर सकता है—और इस वक्त तुम सब कोठी में हो—तुम्हारी तमाम फोर्स कोठी में है—यानि गंगानगर की पूरी पुलिस मेरी बंधक है। हा...हा...हा।"

केवल कमिश्नर ही क्यों—उसके साथ खड़े उनके कमांडोज भी बुरी तरह से कांप उठे।

सचमुच बलराज गोगिया ने यूं ही उसे पूरी फोर्स के साथ आने को नहीं कह दिया था। पहले तो कुछ ही आदमी तथा कमिश्नर की बीवी बंधक थी—लेकिन अब तो पूरी पुलिस ही उसकी बंधक बन गई थी।

"राघव कहां है?" आखिर असली बात पर आते हुए गुर्राया बलराज।

कमिश्नर ने अपने कमांडोज की तरफ देखा—"राघव को ले आओ।" उनकी आवाज से ही लग रहा था कि वे बहुत ज्यादा मजबूर हैं।

शीघ्र ही दोनों कमांडोज राघव को साथ लेकर वापिस कमरे में पहुंचे।

बलराज गोगिया को देखते ही अपना सारा दर्द भूल गया राघव—उसका चेहरा खिल उठा—और वह बलराज की तरफ लपका।

"बलराज गोगिया मेरे यार!"

लेकिन इससे पहले कि वह उस तक पहुंचता—बलराज ने उसे रोक दिया—

"मेरे पास मत आना राघव—मेरे जिस्म पर बम बंधे हैं।"

राघव के पैर वहीं ठिठक गए और वह आंखें फाड़े उसके जिस्म पर बंधे बमों को देखने लगा—सहसा ही उसकी आंखें भर आईं—"य...यह तूने क्या किया मेरे यार...मेरी खातिर...।"

"बस-बस...अब और ड्रामेबाजी मत कर—।" उसे बीच में ही टोकते हुए मुस्कराया बलराज गोगिया।

प्रत्युत्तर में राघव भी मुस्कुराया—फिर जैसे उसकी नजरें अब पड़ी हों सीमा पर। वह सीमा को घूरता हुआ बोला—"यह कौन है?"

"कैसी है?" बलराज गोगिया अर्थभरे ढंग से मुस्कुराया।

"पटाखा है साली—।" कहते हुए सीमा को आंख मार दी उसने।

बुरी तरह से बौखला गई सीमा राघव की इस हरकत पर।

"कमिश्नर की बीवी है।" बलराज गोगिया मुस्कुराया—"फांसी पर चढ़वा देगी।" कहते हुए उसने कमिश्नर की तरफ देखा जो विवशता से अपने होठों को चबा रहे थे।

राघव ने आगे बढ़कर सीमा के गालों पर हाथ फिराया फिर बोला—"अगर यह फांसी पर चढ़ाने का हुक्म दे दे, तो मैं खुशी-खुशी फंदा अपने गले में डाल लूंगा।"

"सुना कमिश्नर—!" बलराज ने कमिश्नर की तरफ देखा—"मेरा यार तेरी बीवी पर फिदा हो गया है—अब इसे हमें कुछ दूर छोड़ने हमारे साथ जाना पड़ेगा—और साथ में तू भी जाएगा।"

"द...देखो—।" सीमा की हालत देखकर कमिश्नर आग में जले जा रहे थे—"त...तुम सीमा को छोड़ दो—मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।"

"नहीं।" एकदम से गुर्राहट उबल पड़ी बलराज गोगिया के होठों से—"सीमा भी हमारे साथ जाएगी—चल इधर आ।"

कमिश्नर की आंखें खौफ से भर गईं—मौत का ख्याल भी आदमी को कंपा देता है—और यहां तो मौत उन्हें आवाज देकर बुला रही थी।

बेबस हो गए थे वे बलराज गोगिया की आज्ञा का पालन करने के लिए।

उनके बलराज गोगिया के पास आते ही बलराज के साथी साथियों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया, ताकि कोई भी दुस्साहसी कमांडो कोई ऐसा हरकत न कर पाये।

बलराज गोगिया ने अपने नजदीक खड़े राघव की तरफ देखा—"तू ठीक है न राघव?"

"बिल्कुल।" मुस्कुराया राघव।

"चल सकता है न?"

"दौड़ भी सकता हूं।"

"तो फिर चलें?" मुस्कुराते हुए पूछा बलराज ने।

"चलो।" राघव ने कहा और साथ ही अपने छोटे कदम आगे बढ़ा दिये।

अपने साथियों से घिरा बलराज गोगिया राघव, कमिश्नर और उनकी पत्नी के साथ कमरे से बाहर निकल आया।

बाहर का नजारा देखते ही आंखें आश्चर्य से भर गईं बलराज की।

पुलिसियों की फौज खड़ी थी वहां—और इस प्रकार हथियार पकड़े हुए थी कि बस ट्रेगर दबने की देर रह गई थी—।

"अरे वाह कमिश्नर! तूने तो सचमुच पूरे गंगानगर की पुलिस को यहां इकट्ठा कर लिया है।" एक हाथ से कमिश्नर के कंधे थपकता हुआ बोला बलराज।

"बाहर तो इससे भी ज्यादा पुलिस है।" राघव बोल पड़ा।

सुनकर बलराज गोगिया की मुस्कान और भी तेज हो गई—"मुझे तुमसे ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नहीं थी। वह बोला—"मैं तो यही समझा था कि तुम अकलमन्दी दिखाते हुए केवल कुछ ही पुलिसियों के साथ यहां आओगे—मगर तुमने तो पूरी फोर्स को ही इकट्ठा कर लिया।"

कमिश्नर हैरानी से उसकी तरफ देखने लगे—जैसे पूछ रहे हों, कि उन्होंने ऐसा करके क्या बेवकूफी की है?

इससे पहले कि बलराज कमिश्नर को बताता कि उसने क्या बेवकूफी की है, राघव दहाड़ उठा—

"तुम्हारा कमिश्नर और उसकी पत्नी हमारी कैद में है—।" वह बाहर खड़े पुलिसियों को सम्बोधित कर रहा था—"सिर्फ ये दोनों ही नहीं बल्कि तुम सब हमारी कैद में हो—मेरे यार के जिस्म पर बंधा एक-एक बम तुम सभी के चीथड़े उड़ा देने के लिए काफी है।"

सभी को जैसे सांप सूंघ गया—आंखें बलराज गोगिया के जिस्म पर बंधे बमों की तरफ उठ गईं, जो कि सीमा के गले में बांहें डाले

मुस्कुरा रहा था। हाथ में पकड़ा रिमोट वह पुलिसियों को भी दिखा रहा था।

"इसलिए अगर तुम।" राघव आगे कहने लगा—"चाहते हो कि तुम लोगों के चीथड़े न उड़ें—तुम्हारे कमिश्नर का बाल भी बांका न हो तो कोई भी हमारा पीछा करने की जुर्रत न करे—वर्ना अपनी और कमिश्नर तथा उसकी पत्नी की मौत के साथ-साथ और भी कई बेगुनाहों की मौत का वही जिम्मेदार होगा।"

कोई कुछ नहीं बोला।

तभी राघव की नजरें रावत पर पड़ीं, जो कि खूनी निगाहों से उसे घूर रहा था।

रावत को देखते ही राघव घेरे से निकलकर आगे बढ़ा और रावत के सामने आकर खड़ा हो गया—

"इंस्पेक्टर रावत!" अपने स्वर को हिंसक बनाते हुए गुर्राया राघव—"लुधियाना में ही मैंने आज तक जितने कत्ल किये हैं तूने तो उतने मुजरिम भी नहीं पकड़े होंगे—मेरे जिस्म पर पड़ा तेरा एक-एक डण्डा याद रखूंगा मैं—अब की बार तो जा रहा हूं—लेकिन याद रखना—अगली बार जब भी हमारी मुलाकात होगी वह तेरी जिन्दगी की आखिरी मुलाकात होगी—क्योंकि उसके पश्चात् तू चिता की आग में फेंक दिया जाएगा। बहुत ही भयानक मौत मारूंगा मैं तुझे हरामजादे! अपने जिस्म पर पड़ी एक-एक चोट का हिसाब लूंगा मैं तुझसे।"

रावत ने अपने होंठ सख्ती से भींच लिए। विवशता उसके चेहरे पर नाचती साफ नजर आ रही थी।

"मेरे हाथ की पकड़ तो तूने परख ही ली है रावत, जब मैंने बन्ने सिंह को मारा था तो तुम तीन जने भी उसे नहीं बचा पाये।" राघव उसकी विवशता को देख खुश होते हुए बोला—"अगली बार भी ऐसा होगा—फर्क सिर्फ इतना होगा कि अगली बार गर्दन तेरी होगी।"

"यह तो वक्त ही बतायेगा राघव, कि गर्दन किसकी होगी और पंजा किसका होगा।" स्वयं को रोक नहीं पाया रावत सो बोल पड़ा।

राघव ने एक व्यंगभरी मुस्कान फेंकी और बड़ी शान से चलता हुआ वापिस बलराज के पास आ गया।

"कमिश्नर!" राघव के अपने पास आते ही बलराज गोगिया कमिश्नर से बोला—"अपने कुत्तों को बोल कि हमारा पीछा करने की कोशिश न की जाए।"

कमिश्नर मजबूर थे—उन्हें वह ऑर्डर देना पड़ा, जो बलराज

उनके बलराज गोगिया के पास आते ही बलराज के पांचों साथियों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया, ताकि कोई भी दुस्साहसी कमांडो कोई बेजा हरकत न कर पाये।

बलराज गोगिया ने अपने नजदीक खड़े राघव की तरफ देखा—"तू ठीक है न राघव?"

"बिल्कुल।" मुस्कुराया राघव।

"चल सकता है न?"

"दौड़ भी सकता हूं।"

"तो फिर चलें?" मुस्कुराते हुए पूछा बलराज ने।

"चलो।" राघव ने कहा और साथ ही अपने छोटे कदम आगे बढ़ा दिये।

अपने साथियों से घिरा बलराज गोगिया राघव, कमिश्नर और उनकी पत्नी के साथ कमरे से बाहर निकल आया।

बाहर का नजारा देखते ही आंखें आश्चर्य से भर गईं बलराज की।

पुलिसियों की फौज खड़ी थी वहां—और इस प्रकार हथियार पकड़े हुए थी कि बस ट्रेगर दबने की देर रह गई थी—।

"अरे वाह कमिश्नर! तूने तो सचमुच पूरे गंगानगर की पुलिस को यहां इकट्ठा कर लिया है।" एक हाथ से कमिश्नर के कंधे थपकता हुआ बोला बलराज।

"बाहर तो इससे भी ज्यादा पुलिस है।" राघव बोल पड़ा।

सुनकर बलराज गोगिया की मुस्कान और भी तेज हो गई—"मुझे तुमसे ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नहीं थी। वह बोला—"मैं तो यही समझा था कि तुम अकलमन्दी दिखाते हुए केवल कुछ ही पुलिसियों के साथ यहां आओगे—मगर तुमने तो पूरी फोर्स को ही इकट्ठा कर लिया।"

कमिश्नर हैरानी से उसकी तरफ देखने लगे—जैसे पूछ रहे हों कि उन्होंने ऐसा करके क्या बेवकूफी की है?

इससे पहले कि बलराज कमिश्नर को बताता कि उसने क्या बेवकूफी की है, राघव दहाड़ उठा—

"तुम्हारा कमिश्नर और उसकी पत्नी हमारी कैद में है—।" वह बाहर खड़े पुलिसियों को सम्बोधित कर रहा था—"सिर्फ ये दोनों ही नहीं बल्कि तुम सब हमारी कैद में हो—मेरे यार के जिस्म पर बंधा एक-एक बम तुम सभी के चीथड़े उड़ा देने के लिए काफी है।"

सभी को जैसे सांप सूंघ गया—आंखें बलराज गोगिया के जिस्म पर बंधे बमों की तरफ उठ गईं, जो कि सीमा के गले में बांहें डाले

मुस्कुरा रहा था। हाथ में पकड़ा रिमोट वह पुलिसियों को भी दिखा रहा था।

"इसलिए अगर तुम। राघव आगे कहने लगा—"चाहते हो कि तुम लोगों के चीथड़े न उड़ें—तुम्हारे कमिश्नर का बाल भी बांका न हो तो कोई भी हमारा पीछा करने की जुर्रत न करे—वर्ना अपनी और कमिश्नर तथा उसकी पत्नी की मौत के साथ-साथ और भी कई बेगुनाहों की मौत का वही जिम्मेदार होगा।"

कोई कुछ नहीं बोला।

तभी राघव की नजरें रावत पर पड़ीं, जो कि खूनी निगाहों से उसे घूर रहा था।

रावत को देखते ही राघव घेरे से निकलकर आगे बढ़ा और रावत के सामने आकर खड़ा हो गया—

"इंस्पेक्टर रावत!" अपने स्वर को हिंसक बनाते हुए गुर्राया राघव—"लुधियाना में ही मैंने आज तक जितने कत्ल किये हैं तूने तो उतने मुजरिम भी नहीं पकड़े होंगे—मेरे जिस्म पर पड़ा तेरा एक-एक डण्डा याद रखूंगा मैं—अब की बार तो जा रहा हूं—लेकिन याद रखना—अगली बार जब भी हमारी मुलाकात होगी वह तेरी जिन्दगी की आखिरी मुलाकात होगी—क्योंकि उसके पश्चात् तू चिता की आग में फैंक दिया जाएगा। बहुत ही भयानक मौत मारूंगा मैं तुझे हरामजादे! अपने जिस्म पर पड़ी एक-एक चोट का हिसाब लूंगा मैं तुझसे।"

रावत ने अपने होंठ सख्ती से भींच लिए। विवशता उसके चेहरे पर नाचती साफ नजर आ रही थी।

"मेरे हाथ की पकड़ तो तूने परख ही ली है रावत, जब मैंने बन्ने सिंह को मारा था तो तुम तीन जने भी उसे नहीं बचा पाये।" राघव उसकी विवशता को देख खुश होते हुए बोला—"अगली बार भी ऐसा होगा—फर्क सिर्फ इतना होगा कि अगली बार गर्दन तेरी होगी।"

"यह तो वक्त ही बतायेगा राघव, कि गर्दन किसकी होगी और पंजा किसका होगा।" स्वयं को रोक नहीं पाया रावत सो बोल पड़ा।

राघव ने एक व्यंगभरी मुस्कान फैंकी और बड़ी शान से चलता हुआ वापिस बलराज के पास आ गया।

"कमिश्नर!" राघव के अपने पास आते ही बलराज गोगिया कमिश्नर से बोला—"अपने कुत्तों को बोल कि हमारा पीछा करने की कोशिश न की जाए।"

कमिश्नर मजबूर थे—उन्हें वह ऑर्डर देना पड़ा, जो बलराज

ने देने को कहा था।

"कोई भी हमारे पीछे न आये।" वे बोले।

"अब चल।"

कहकर बलराज गोगिया ड्राईव-वे की तरफ बढ़ने लगा जिधर कारें और जिप्सियों की लाईन खड़ी हुई थी।

कमिश्नर सीमा तथा अपने तमाम साथियों के साथ बलराज गोगिया कमिश्नर की काली एम्बेसडर में समा गया।

स्टेयरिंग संतोष ने सम्भाल लिया था।

"गाड़ी पूरी रफ्तार से भगानी है संतोष—यूं समझ आज तेरी ड्राईविंग की परीक्षा है।"

"बेफिक्र रहो।" संतोष इग्निशन में चाबी घुमाते हुए बोला—"मेरे जैसी ड्राईविंग पूरे पुलिस विभाग का कोई भी दक्ष ड्राईवर नहीं कर पायेगा।"

कार स्टार्ट कर उसने बैक की और अन्य कारों, जिप्सियों से बचाता हुआ फाटक की तरफ बढ़ने लगा।

पीछे खड़ी तमाम फोर्स उस मुजरिम को अपनी आंखों के सामने भागते हुए देख रही थी जिसे जिन्दा या मुर्दा पकड़ने का सरकार ने ऐलान किया हुआ था।

फाटक से बाहर आते ही संतोष ने एक्सीलेटर पर अपना पैर दबाकर पूरा दबाव डाल दिया।

उसी के साथ ही कार तोप से छूटे गोले की तरह भाग निकली।

"कमिश्नर!" बलराज गोगिया ने अपने बराबर बैठे कमिश्नर की तरफ देखा—"अगर तू पूरी फोर्स को अपनी कोठी पर इकट्ठा करने की बजाय गंगानगर में फैला देता तो हम किसी भी हालत में न बच पाते—लेकिन तूने सारी फोर्स अपनी कोठी पर ही लगा दी—अब हमारा पीछा करने के लिए या हम पर नजर रखने के लिए कोई भी पुलिसिया नहीं बचा।"

कहकर उसने मुस्कराकर आंख मारी और आगे बोला—"देखा—कितनी बड़ी बेवकूफी की थी तुमने।"

कमिश्नर कुछ नहीं बोले—बस कसमसाकर रह गए।

काफी दूर चलकर एक सुनसान जगह बलराज ने संतोष को कहकर कार रुकवाई और फिर कमिश्नर से बोला—"चल नीचे उतर।"

कमिश्नर ने अपनी पत्नी सीमा की तरफ देखा जो कि व्याकुल निगाहों से कमिश्नर की तरफ देख रही थी—"घबरा नहीं—इसे कुछ नहीं होगा—बस कुछ दूर जाकर इसे भी छोड़ दिया जायेगा।"

"ल...लेकिन।"

"तू लेकिन कहने की स्थिति में नहीं है कमिश्नर—अगर तू चाहता है कि तेरी बीवी सही-सलामत तेरे पास पहुंचे तो चुपचाप नीचे उतर जा।"

कमिश्नर ने बड़ी मुश्किल से थूक निगली और नीचे उतर गया।

उसके नीचे उतरते ही कार को एक तेज झटका लगा और आगे बढ़ गई।

"अपना रूमाल निकाल जाखड़।" तभी बलराज, कृष्ण जाखड़ से बोला।

जाखड़ ने तुरंत ही रूमाल निकालकर बलराज गोगिया को थमा दिया।

बलराज गोगिया ने रिमोट जाखड़ को पकड़ाया और सीमा की तरफ देखते हुए बोला—"अपनी आंखें बंद कर जानी—क्योंकि अब तुम्हारा आंखें खोले रखना हमारे लिए खतरनाक हो सकता है।"

सीमा को आंखें बंद करनी पड़ीं। बलराज ने रूमाल उसकी आंखों पर कस के बांध दिया।

"ड्राईविंग जानती हो?" उसने पूछा।

"ह...हां।" सीमा बोली—"ल...लेकिन आंखों पर तो—।"

"मैं जानता हूं कि तू किसी जादूगर की बेटी नहीं जो कि आंखों पर पट्टी बांधकर कार चला सके।" मुस्कराया बलराज गोगिया—"मैं तो इसलिए कह रहा हूं कि वापिसी में तुझे पैदल न चलना पड़े।"

सीमा कुछ नहीं बोली।

थोड़ी दूर चलकर बलराज ने संतोष को कहकर पुनः कार रुकवाई और बोला—"स्टेयरिंग छोड़कर नीचे उतर जाओ।"

संतोष नीचे उतर गया—संतोष के साथ-साथ बलराज गोगिया ने शेष चारों को भी नीचे उतार दिया।

"राघव...तुम स्टेयरिंग सम्भालो।" उनके नीचे उतरते ही बोला बलराज।

तुरंत ही राघव स्टेयरिंग के पीछे बैठ गया।

स्टेयरिंग के पीछे बैठा राघव ऐसा लग रहा था जैसे कोई बच्चा कार चलाने की कोशिश कर रहा हो।

बलराज गोगिया ने बाहर खड़े अपने साथियों की तरफ देखा—"जाओ तुम लोग, तुम्हारा काम खत्म।"

कहकर उसने राघव की तरफ देखा—"गाड़ी आगे बढ़ाओ राघव।"

राघव ने कार आगे बढ़ा दी।

तब बलराज गोगिया ने अपने जिस्म के बम उतारे और उन्हें सीट के नीचे रख दिया और खामोशी से [illegible] गया।

करीब तीन-चार किलोमीटर चलने के पश्चात् उसने राघव से कहकर कार रुकवाई और फिर सीमा की आंखों से रूमाल उतार दिया।

आंखें मिचमिचाती हुई सीमा उसकी तरफ देखने लगी।

"सीट के नीचे देख।"

सीमा ने सीट के नीचे देखा—और फिर भयभीत नजरों से बलराज की तरफ देखने लगी।

"बम नजर आये?"

बड़ी जोरों से उछली सीमा—आंखों में छाया खौफ और भी गहरा हो गया।

"इन बमों का रिमोट मेरे पास ही रहेगा।" बेहद हिंसक स्वर में गुर्राया बलराज—इसलिए चुपचाप बिना कोई शरारत किये स्टेयरिंग सम्भालो और वापिस चली जाओ—और अगर रास्ते में तूने कोई शरारत की तो मैं यहीं खड़े-खड़े तुम्हारे परखच्चे उड़ा दूंगा।"

सीमा का जिस्म तेज फुरफुरी लेकर रह गया।

तत्पश्चात् बलराज गोगिया और राघव नीचे उतर आये—और कांपती हुई सीमा स्टेयरिंग के पीछे बैठ गई।

सीमा अभी थोड़ी दूर ही गई होगी कि बलराज राघव को लेकर साथ वाली गली में घुस गया।

तीन गलियां पार करने के पश्चात् वह उस सड़क पर आ गया जिस पर कि वह कोठी थी जिसमें उसने पनाह ले रखी थी।

तेज कदमों से चलता हुआ बलराज गोगिया राघव के साथ उस कोठी के फाटक के पास पहुंचा—और उसे धकेल कर अन्दर प्रवेश कर गया।

❑❑❑

"तू हिन्दुस्तान छोड़कर गया क्यों नहीं?"

"कैसे जाता?" मुस्कराया बलराज—"अगर तू मेरी खातिर बन्ने सिंह को खत्म कर सकता है तो फिर मैं तुझे दगा देकर कैसे जा सकता था?" कहकर एक लम्बी सांस छोड़ी बलराज गोगिया ने और आगे बोला—"लगता है कुदरत ने अभी एक अपराध और करवाने के मूड में मुझे यहां रोक लिया था।"

"तुझे बन्ने के कत्ल का पता चल गया था?" हैरानी से पूछा राघव ने।

"पुलिस में भी कई ऐसे लोग छिपे हैं जो अपराधियों के गुलाम होते हैं।"

"ओह!" राघव के मुख से निकल गया—जैसे वह सब कुछ समझ गया हो।

मिनी हाथों में ट्रे उठाये कमरे में पहुंची जिसमें खाने-पीने का सामान पड़ा था।

"कामयाबी मुबारक हो बलराज गोगिया।" वह बोली—और पास आकर झुकी और ट्रे सैन्टर टेबल पर रखने लगी।

झुकते वक्त उसकी स्कर्ट के खुले गले से झांकते उसके गुलाबी उरोज बाहर उलटने को आतुर नजर आने लगे थे।

और राघव—वह फटी-फटी आंखों से उन गुलाबी उरोजों को देखता हुआ होठों पर जीभ फेरने लगा।

मिनी ने राघव की तरफ देखा और मुस्कराते हुए बोली—"देख तो ऐसे रहे हो जैसे आंखों ही आंखों में निगल जाओगे—और कद-बुत से तो ऐसे लग रहा है जैसे पहली दौड़ में ही पिछड़ जाओगे।"

उसकी बात सुनकर पहले तो हड़बड़ा गया राघव—लेकिन आखिरी शब्दों में चैलेंज था मिनी के, सो ताव आ गया उसे।

मिनी के वक्षों से निगाह हटाई उसने और बोला—"राघव आज तक हर चैलेंज में जीता है मैडम, इसलिए चैलेंज मत देना—वर्ना मैं अपने यार के भी यहां होने की परवाह नहीं करूंगा।"

मिनी बोली कुछ नहीं—बस मुस्करा पड़ी। सोफे पर बैठकर उसने दोनों के लिए पैग बनाये और दोनों की तरफ बढ़ा दिये।

शराब की इस वक्त सख्त जरूरत थी राघव को—सो उसने एक ही सांस में गिलास खाली किया और खाली गिलास मेज पर रखकर बोतल उठाकर उसे मुंह से लगा लिया और गटागट पीने लगा।

पहली बार मिनी के चेहरे पर आश्चर्य के लक्षण उभरे—हैरत-भरी आंखों से वह राघव को देख रही थी, जो स्काच को ऐसे पी रहा था जैसे पानी पी रहा हो।

बोतल जितना कद नहीं था—और पूरी बोतल डकार गया वह।

बोतल खाली करके राघव ने मेज पर रखी और मुस्कराते हुए मिनी की तरफ देखते हुए बोला—"और पड़ी है?"

मिनी तो जैसे गूंगी-बहरी हो गई थी—राघव की बात को जैसे सुना ही नहीं उसने—बस फटी-फटी आंखों से उसे देखती रही।

उसकी हालत देखकर राघव के होठों पर मुस्कान थिरक उठी—ऐ मैडम...मैं तुमसे कह रहा हूं।" मिनी की आंखों के आगे चुटकी बजाते हुए बोला वह।

बुरी तरह से चिंहुक उठी मिनी।

"मेरे यार का पैग खाली हो रहा है।" मिनी को होश में आया देखकर बोला वह।

"म...मैं और लाती हूं।" बुरी तरह से हड़बड़ाती हुई मिनी उठी और अन्दर चली गई।

राघव ने मुस्कराकर बलराज गोगिया की तरफ देखा—"साली मुझे चैलेंज करती है—पहला नमूना देखकर ही हवा सरक गई—तब पता नहीं क्या हालत होगी जब मेरे पास होगी।"

"तुझे चाहिए?" मुस्कराया बलराज गोगिया।

"मिल जाएगी?" आंखें चमकाते हुए बोला राघव।

"तू बोल—मिनी पसंद है तुझे?"

"काम चला ही लूंगा।" राघव बोला।

"मैं कह दूंगा मिनी से।"

"थैंक्यू!" बोला राघव—फिर असली बात पर आते हुए बोला—"तू अपनी सुना—कब जा रहा है तू विदेश?"

बलराज गोगिया ने लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"फिलहाल तो नहीं जा रहा।"

"क्या मतलब?" राघव के चेहरे पर हैरत उभर आई—"अब मैं आजाद हो चुका हूं फिर भी...?"

"किसी को दिया वायदा पूरा करना है।"

"वायदा है?" चौंका राघव—"कैसा वायदा?"

प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया ने सब कुछ कह सुनाया—फिर आगे बोला—

"राठौर दोपहर को यहां आयेगा—तब तक तुम भी आराम कर लो।"

"तूने पूछा नहीं काम के बारे में?" उसकी बात अनसुनी करते हुआ पूछा राघव ने।

"पूछा था—कहने लगा—पहले मैं राघव को आजाद करवा लूं फिर काम बतायेगा।"

"फिर तो अवश्य ही वह कोई खतरनाक काम बतायेगा।"

"देखेंगे।" मुस्कराया बलराज गोगिया—"यूं भी जब तेरे जैसा यार साथ हो तो फिर क्या मुश्किल, क्या आसान—सब बराबर है।"

तभी मिनी स्काच की नई बोतल लिए कमरे में प्रविष्ट हुई।

❑❑❑

शाम चार बजे राठौर उस कोठी में पहुंचा।

जिस वक्त वह बलराज गोगिया के पास पहुंचा—राघव सो रहा था।

बलराज गोगिया ने राघव को उठाया। आंखें मिचमचाते हुए राघव उठा और राठौर को देखने लगा।

"राठौर।" बलराज गोगिया ने राठौर की तरफ इशारा किया—"इसी की मदद से मैं तुम्हें आजाद करवा पाया हूं।"

"ओह!" राघव के मुंह से निकला—तुरंत ही उसने अपना हाथ

आगे किया और राठौर का हाथ थामकर ऊपर नीचे हिलाने लगा।

"जान बचाने का शुक्रिया मिस्टर राठौर।"

राठौर बोला कुछ नहीं बस हौले-हौले मुस्कराने लगा।

"तुम तो दोपहर को आने वाले थे?" तभी बलराज गोगिया ने सवाल किया।

राठौर ने राघव के हाथ से अपना हाथ अलग किया और बोला—"शहर का जायजा ले रहा था।"

"फिर?"

"पूरे जोरो-शोरों से तुम दोनों की तलाश चल रही है—पुलिस की जिप्सियां शहर की सड़कों पर इस तरह भाग रही हैं जैसे युद्ध का माहौल बन गया हो।"

"कमिश्नर की बीवी का क्या बना?" राघव ने पूछा।

"वह कुशलता से कोठी पहुंच गई है—लेकिन तुमने—।" राठौर ने बलराज की तरफ देखा—"कमिश्नर की बीवी से जो हरकत की थी उससे कमिश्नर बहुत भरा हुआ है।"

"मैंने...मैंने क्या हरकत की थी?" अन्जान बनते हुए मुस्कराया बलराज गोगिया।

"उसके बलाऊज में हाथ नहीं डाला था।" अर्थभरी मुस्कान के साथ बोला राठौर।

"वो तो मैंने कमिश्नर के दिल में ज्यादा खौफ भरने के उद्देश्य से किया था।"

"किया तो था।"

"सो तो किया था।" बलराज गोगिया मुस्कराते हुए बोला।

"वैसे दाद देनी पड़ेगी तुम्हारे हौसले और दिमाग की जो तुम इतनी फोर्स के बीच में से अपने यार को आजाद करवा लाये।"

"छोड़ो उसे।" बलराज गोगिया बात का रुख बदलते हुए बोला—"मेरा काम हो गया—राघव आजाद हो गया है—अब तुम बोलो—तुम क्या चाहते हो?"

राठौर के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी।

हाथ बढ़ाकर उसने बलराज की पीठ थपकी और खड़ा हो गया—"माहौल को ठण्डा हो लेने दो—फिर बताऊंगा कि मैं क्या काम करवाना चाहता हूं—तब तक यहीं इसी कोठी में आराम करो—मिनी तो यहां है ही—कहो तो किसी दूसरी को भेज दूं।"

"नहीं—एक ही बहुत है।"—बलराज गोगिया बोला—"मेरे यार के दिल में बस गई है मिनी।"—बलराज ने मिनी की तरफ देख मुस्कराते हुए कहा—"और मुझे जरूरत नहीं।"

"ठीक है—अगर जरूरत हो तो मिनी को कह देना—वह मुझे फोन कर देगी।"

"ठीक है।"

कुछ इधर-उधर की बातें करने के पश्चात् राठौर यह कहकर चला गया कि वहां पर उसका ज्यादा देर रुकना उनके लिए खतरनाक हो सकता है।

❑❑❑

"काम हो जाएगा न राठौर साहब?"

"बिल्कुल हो जाएगा—बस यूं समझ लो हो गया।"

राठौर अपने सामने बैठे उस लाला सरीखे आदमी को देखते हुए मुस्कराया।

शक्ल से ही लाला नजर आने वाला वह व्यक्ति रामलाल जुनेजा था—गंगानगर ज़िले में बहुत ही पैसे वाले आदमियों में लाला का नाम सबसे ऊपर आता था।

जुनेजा के साथ एक और शख्स बैठा था जो कि दुबला-पतला तथा दब्बू किस्म का इंसान था—उसका नाम मनोहर था।

"काम कौन करेगा राठौर साहब?" मनोहर बोला।

"है एक मर्द का बच्चा जो इस काम को आसानी से सिरे चढ़ा लेगा।"

"कहीं ऐसा न हो राठौर साहब कि आपका मर्द का बच्चा असफल होकर पकड़ा जाए और हमें बाकी की जिन्दगी जेल के सींखचों के पीछे गुजारनी पड़े।"

"मेरा तो दिल डर रहा है कि कहीं ऐसा करके हम कोई गलती तो नहीं कर रहे।" मनोहर का स्वर कांप रहा था।

"पच्चीस करोड़ का मामला है—रिस्क तो उठाना ही पड़ेगा भाई।" जुनेजा मनोहर से बोला।

"सो तो ठीक है—लेकिन—।"—फिर एकाएक ही जैसे उसे कुछ सूझा—उसने राठौर की तरफ देखा—"राठौर साहब!" वह बोला—"पिछले तीन दिनों से गंगानगर में बलराज गोगिया की बड़ी धूम मची हुई है। मैंने अखबारों में पढ़ा था कि उसने करोड़ों की मूर्ति को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच से उड़ाया था—अ...आप उसे ढूंढ़िये—वह अवश्य ही हमारे काम को अंजाम दे देगा।"

राठौर के होठों पर तैर रही मुस्कान और तेज हो गई—"मनोहर लाल—वह मर्द का बच्चा बलराज गोगिया ही है—वही तुम्हारा काम करेगा।"

सुनकर पहले तो दोनों बुरी तरह से उछल पड़े—लेकिन अगले ही क्षण उनकी बांछें खिल गईं।

"फिर तो समझ लो बन गया काम—बलराज गोगिया का नाम ही सफलता की गारंटी है।" मनोहर आंखें चमकाते हुए बोला—"जिस ढंग से उसने चंडीगढ़ में मूर्ति चुराई—फिर यहां भाटिया से दो लाख ठगे और पूरे गंगानगर की पुलिस के सामने अपने दोस्त राघव को ले गया—उस हिसाब से तो वह पच्चीस करोड़ भी पार कर लेगा।"

"बिल्कुल कर लेगा।"—राठौर मुस्कराया—"राठौर कभी छोटे-मोटे टुच्चे बन्दे पर हाथ नहीं डालता।"

"लेकिन वह है कहां?" जुनेजा इधर-उधर देखते हुए बोला।

"जहां भी है एकदम चौकस है—एक-दो दिन जरा माहौल ठण्डा हो ले—तुम्हारा काम हो जाएगा लेकिन...।"

"लेकिन क्या—?" दोनों के मुख से एक साथ निकला।

"पच्चीस में से पंद्रह मेरा होगा।" आवाज में रहस्य का पुट लाते हुए बोला राठौर।

उछल पड़े दोनों और फटी-फटी आंखों से उसकी तरफ देखने लगे।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं राठौर साहब—पहले तो आपने दस करोड़ मांगा था।"

"उस वक्त बलराज गोगिया मेरे साथ नहीं था—पांच करोड़ बलराज के मांग रहा हूं—आखिर उसे भी तो हिस्सा देना है कि नहीं।"

"लेकिन—।"

"बस।" एकाएक ही स्वर हिंसक हो गया राठौर का—"अगर तुम्हें मंजूर हो तो बोलो—वर्ना बाहर जाने का रास्ता खुला है—लेकिन उस हालत में तुम्हें एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी।"

राठौर की आवाज की भयानकता ने ही मनोहर और जुनेजा की सांसें खुश्क कर दीं—चेहरे पर खौफ नाचने लगा।

"ह...हमें मंजूर है—हम...दस करोड़ में ही गुजारा कर लेंगे।" कांपता हुआ मनोहर बोला।

"हां...म...मनोहर ठीक कह रहा है राठौर साहब—दस करोड़ की कोई रकम कम होती है—ह...हमें सौदा मंजूर है। आप काम शुरू कीजिए।"

राठौर के होठों पर एक जहरीली मुस्कान थिरकने लगी—पन्द्रह करोड़ की चमक उसकी आंखों में नाचने लगी थी।

"ठीक है।"—वह बोला—"परसों यहीं आ जाना तुम—और बलराज के समक्ष बात कर लेना।"

"आप भी उसे बता देना।"—जुनेजा बोला—"ताकि हमसे बात करने से पहले वह अच्छी प्रकार जान ले कि उसे हमसे क्या कुछ जानना है, पूछना है।"

"मैं बात कर लूंगा।"

कहकर राठौर खड़ा हो गया।

❑❑❑

तीसरे दिन सुबह दस बजे राठौर बलराज गोगिया के पास पहुंच गया। उस वक्त बलराज गोगिया और राघव नाश्ता कर रहे थे।

राठौर को देखते ही बलराज गोगिया मुस्कराया और बोला—

"माहौल कैसा है बाहर का?"

"पहले से काफी ठण्डा पड़ गया है।"—उसके सामने बैठते हुये बोला राठौर—"पुलिस यही समझ रही है कि तुम राघव के साथ गंगानगर से फरार हो गए हो—फिर भी इस उम्मीद पर है कि हो सकता है तुम अभी यहीं इसी शहर में छिपे हो। तुम्हारी तलाश की जा रही है—मगर तलाश में वो जोश नहीं जो पहले था।"

बलराज ने कॉफी का मग उठाया और उसे चुसक कर बोला—"मेरी तलाश में क्या-क्या किया पुलिस ने?"

"बड़े-बड़े मुजरिमों के घरों की—गोदामों की तलाशी ली।"

"फिर तो तुम्हारी भी तलाशी हुई होगी?" राघव बोला।

"बिल्कुल हुई थी—मगर बलराज गोगिया मेरे पास होता तो ही पुलिस को मिलता—इस वक्त तुम जहां पर हो—वह जगह एक आदमी की है जो कि शहर से बाहर गया हुआ है—और घर की चाबियां मुझे सौंप गया है—और पुलिस सपने में भी नहीं सोच सकती कि तुम यहां हो सकते हो।"

कहकर उसने मिनी की तरफ देखा जो कि अभी-अभी कमरे में प्रविष्ट हुई थी—मिनी को देखकर चौंका वह—उसके चेहरे से ही नजर आ रहा था जैसे बुरी तरह से थकी हुई हो।

"क्या बात है फ्रेश नहीं हुई अभी तक?" राठौर ने पूछा।

"दो बार नहा चुकी हूं—मगर इस बिलांद भर के छोकरे ने दो ही रातों में मेरी ऐसी-तैसी फेर दी—अगर आप आज न आते तो कसम से मैं यह कोठी छोड़कर चली जाती—बाद में बेशक आप मुझे गोली मार देते।"

राघव को खा जाने वाली नजरों से देखती हुई वह रूआंसे स्वर में बोली।

"खैर छोड़ो इसे।"—तभी बलराज गोगिया कॉफी का खाली मग मेज पर रखते हुए बोला—"यह बातें बाद में भी होती रहेंगी—अब जरा काम की बातकर ली जाए।"

मिनी चुप हो गई।

राघव ने अपना काफी का मग उठाया और उसे चुसकने लगा।

"मेरे लिए भी कॉफी बना ला मिनी।" तभी राठौर मिनी से बोला।

मिनी कॉफी लेने के लिए किचन की तरफ चली गई।

"अब बताओ राठौर।"—मिनी के जाते ही बलराज गोगिया बोला।

"तुम्हारे लिए काम तैयार है।" बोला राठौर।

"काम बताओ।"

"कॉफी आ जाने दो फिर बताता हूं—सुबह का नाश्ता नहीं किया अभी।"

कुछ देर बाद ही कॉफी चुसकते हुए उसने बलराज से कहा—"चोरी करनी है।"

"वो तो मैं पहले ही जानता था।"—मुस्कराया बलराज गोगिया— "क्योंकि किसी का कत्ल करना तो तुम्हारे जैसे गैंगस्टर के बायें हाथ का खेल है—तुम यह बताओ चोरी किस चीज की करनी है?"

"पच्चीस करोड़ रुपये की।"

"पच्चीस करोड़।"—हैरानी उभर आई बलराज की आंखों में—"वे भी रुपये।"

"बिल्कुल।"

"जानते हो पच्चीस करोड़ की नकद राशि कितनी जगह घेरेगी?"

"एक वैगन तो भर ही जायेगा नोटों से।"

"किसी बैंक को लूटना है?" तभी राघव बोल पड़ा जो कि अपना मग खाली मेज पर रख रहा था।

"नहीं।"

"तो फिर ऐसा कौन बेवकूफ है जो पच्चीस करोड़ रुपये की राशि घर में रखे हुए है?"

मुस्कराया राठौर और कॉफी का आखिरी घूंट भरकर खाली मग मेज पर रखते हुए बोला—

"मैं तुम्हें तफसील से समझाता हूं—इस तरह बात तुम्हारे दिमाग में अच्छी तरह बैठ जाएगी।"

"वही तो सुनना चाहते हैं हम।"

❑❑❑

कुछ देर सोचने के उपरांत राठौर ने बलराज गोगिया की तरफ देखा—फिर पूछा—"लॉटरी के बारे में क्या जानते हो तुम?"

"लॉटरी?" चौंककर बलराज उसकी तरफ देखने लगा।

वही लॉटरी—एक नम्बर वाली—जिसका जादू आजकल के हर बच्चे, बूढ़े के सिर चढ़कर बोल रहा है।"

"हां।" समझने वाले अन्दाज में बोला बलराज—"यह ऐसी

घिनौनी गेम है जिसमें घर-के-घर तबाह हो रहे हैं—शराब पीकर तो आदमी शाम तक सौ-दो-सौ का ही नुकसान करता है—लेकिन यह तो ऐसा जुआ है कि एक ही बार में आदमी कोठियों से उठकर सड़क पर आ खड़ा होता है। मैंने अपने पूर्व के कई दोस्तों से बात भी की कि उसने लॉटरी में क्या कमाया—मगर हर कोई बोला कि उसने सिर्फ गंवाया है।''

''बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम—लेकिन लॉटरी के बारे में अभी तुम्हारी जानकारी अधूरी है—जैसे इसमें निकलने वाले आखिरी नम्बर को ही ले लो जोकि लॉटरी का सबसे महत्वपूर्ण अंक होता है—उसके बारे में ऐसा होता है कि यह नंबर पहले से ही निर्धारित किया होता है—बड़े-बड़े सट्टेबाजों के साथ मिलकर नम्बर फिक्स कर दिया जाता है और सट्टेबाज उस नम्बर को मार्किट से साफ करा देते हैं—यानि पैसा निकला तो आम आदमी की जेब से—और गया कहां—कुछ सट्टेबाजों की जेब में—कुछ नम्बर निकालने वाले अफसरों की जेब में—कुछ सरकार की जेब में।''

''बिल्कुल।'' बलराज गोगिया ने हांमी में सिर हिलाया।

''लेकिन सरकार के पास यह पैसा एकदम से रोज-के-रोज नहीं पहुंचता।''

''तो कैसे पहुंचता है?''

''काफी समय बाद...पूरे एक महीने बाद पहुंचता है।''

''तब तक पैसा कहां रहता है?''

''ऑर्गेनाईजर के पास।'' जवाब दिया राठौर ने—''जो लॉटरियों का ऑर्गेनाईजर होता है—वह सरकार से लॉटरी लेकर आगे बेच देता है—लेकिन लॉटरियों की पेमेंट एक महीने बाद करता है।''

''तो?''

''तो यह कि लॉटरियों के दो ऑर्गेनाईजर गंगानगर में हैं—मनोहर लाल और रामलाल जुनेजा।''—राठौर बोला—''परसों उनका महीना पूरा हो रहा है—परसों तक की लॉटरियों की कीमत मिलाकर उन्हें सरकार को पच्चीस करोड़ की पेमेंट देनी है।''

''और तुम चाहते हो कि पेमेंट सरकार के पास न जाकर तुम्हारे पास पहुंचे।''

''मैं ही नहीं दोनों पार्टनर भी यही चाहते हैं।''

''यानि सरकार से मिलने वाले कमीशन से उनका पेट नहीं भरा तो सरकार का ही पेट फाड़ने की ठान ली।''

''ऐसा ही समझ लो।'' गम्भीर स्वर में बोला राठौर।

''तुम्हें उसमें से क्या मिलेगा?'' राघव पहली बार बीच में बोला।

"पंद्रह करोड़।"

"और हमारा हिस्सा?" बेशर्मी से मुस्कराया राघव।

"क्या मतलब?" चौंक कर राठौर उसे घूरने लगा।

"मैंने कोई अंग्रेजी नहीं बोली—शुद्ध हिन्दुस्तानी में बात की है मैंने।"

"राघव!" बलराज गोगिया इस तरह बोला जैसे राघव की बात से खफा हो गया हो—"मैंने राठौर को काम करने का वायदा किया हुआ है।"

"ठीक है, राठौर ने हम पर अहसान किया है—लेकिन राठौर को खुद भी तो सोचना चाहिए कि अहसान की कितनी बड़ी कीमत ले रहा है।"

"राघव ठीक कह रहा है बलराज गोगिया।"—तभी राठौर बोल पड़ा—"तुम्हें तुम्हारे हिस्से के अढ़ाई करोड़ रुपये मिल जाएंगे।"

"यह हुई न बात।" आंखें चमकाते हुए बोला राघव।

अढ़ाई करोड़ के नाम से ही वह हवा में उड़ने लगा था।

"रुपया कहां पड़ा है?" कुछ देर चुप रहने के पश्चात् पूछा बलराज ने।

राठौर ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"मैं नहीं जानता।"

"क्या?" चौंक कर उसे देखने लगा बलराज—"तुम नहीं जानते कि रुपया कहां है?"

"मैं सचमुच नहीं जानता।"

"तो फिर चुरायेंगे क्या? धनिया।" राघव भड़क उठा।

"मेरी बात तो सुनो।"—राठौर राघव को शांत रहने का इशारा करते हुए बोला—"रुपये का पता दोनों पार्टनरों जुनेजा और मनोहर को है—वही दोनों बतायेंगे तुम्हें कि रुपया कहां है—कितनी सुरक्षा में पड़ा है?"

"ओह!" मुस्कराया बलराज गोगिया—"तो उन्होंने इस डर से तुम्हें पहले नहीं बताया कि कहीं तुम वक्त से पहले ही हाथ साफ न कर लो।"

"बिल्कुल ऐसा ही लगता है मुझे।"

"खैर—!" लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज गोगिया—कहां मिलेंगे वे...यहीं...?

"नहीं—शाम को तुम्हें लेने मेरी कार आयेगी वह तुम्हें मेरे पास पहुंचा देंगी।"

"ठीक है—।" कहा बलराज गोगिया ने और राघव की तरफ देखने लगा।

❑❑❑

"कुछ पता लगा बलराज गोगिया का?"

"नो सर—!" रावत बोला—"गंगानगर के हर अपराधी को खोजने के बावजूद भी बलराज और राघव का पता नहीं लगा।"

सुनकर कमिश्नर की आंखें सोचपूर्ण मुद्रा में सिकुड़ गईं—"कहीं वह सरहद पार तो नहीं कर गया?" वे बोले—"ऐसा लगता तो नहीं सर, जिस ढंग से पूरे गंगानगर की सीमाओं पर नाकाबंदी की गई है—उससे उसके गंगानगर से ही निकलने के चांस ना के बराबर हैं।"

"फिर तो उसे अभी भी गंगानगर में ही होना चाहिये।"

"मेरी भी यही सोच है सर, कि वह अभी यहीं है—लेकिन कहां छुपा है इसका पता नहीं चल रहा—डोर-टू-डोर तलाशी ली नहीं जा सकती—हो सकता है वह किसी सफेदपोश की पनाह में छुपा हो।"

"वह जहां भी छुपा है उसे ढूंढो—। हरामजादे ने पूरी पुलिस की नाक काट डाली और पुलिस उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी—इतनी फोर्स होने के बावजूद भी वह छाती को फुलाये गर्दन अकड़ाये टहलता हुआ निकल गया।"

रावत जानता था—कि कमिश्नर को पुलिस की नाक कटने का इतना दुःख नहीं जितना अपनी बीवी की हुई बेइज्जती का है—जिसके उरोजों को बलराज गोगिया ने उसके दो कमांडो के सामने दबाया था—जिसे वह सबकी आंखों के सामने गले में बांह डालकर ले गया था।

"अपना अभियान तेज करो इंस्पेक्टर—!" कहरभरे स्वर में दहाड़े कमिश्नर—"मुझे बलराज चाहिये बलराज। कोई उपाय ढूंढो—अगर सफल न हो तो अगला उपाय ढूंढो—कैसा भी तरीका अपनाओ—मगर मुझे वह हरामजादा चाहिये—जिन्दा या मुर्दा—।"

"सर...!" तभी कुछ सोचकर बोला रावत—"अगर बलराज गोगिया की एक साथ कई तस्वीरें शहर के हर बाजार—गली-मौहल्ले में चिपका दी जाएं और साथ ही उस पर इनाम रख दिया जाए तो मेरा ख्याल है इससे बलराज का पता जल्दी चल जाएगा।"

"कुछ भी करो—मगर मुझे बलराज गोगिया चाहिये।"

"यस सर।" हड़बड़ाते हुए बोला रावत।

"और हां...।" कुछ सोचते हुए बोले कमिश्नर—"उन पांचों हरामजादों को भी ढूंढो—जो बलराज के साथ थे—बलराज गोगिया की अपेक्षा वे जल्दी हाथ लग सकते हैं—अगर वे मिल गए तो बलराज भी मिल जाएगा।"

"यस सर!" तत्परता से बोला रावत—"मैं अभी वायरलैस

पर कन्ट्रोल रूम को सूचित कर दूंगा।"

"और यह जो तुम बलराज गोगिया की तस्वीरें छापने की बात कर रहे हो—इसके लिये उसकी तस्वीर भी तो चाहिये—वह कहां से लोगे?"

"हमारे पास इश्तिहार है जिसमें पंजाब सरकार द्वारा उसे पकड़ने की अपील की गई है—इश्तिहार में उसकी तस्वीर भी है।"

"लेकिन उसमें तो उसकी कैदी वाली-फोटो है जिसमें उसने कैदियों की वर्दी पहन रखी है तथा उसकी दाड़ी-मूंछें भी बढ़ी हुई हैं।"

"आर्टिस्ट उसकी दाढ़ी-मूंछें हटाकर उसे क्लीनशेव बना देगा।"

"क्या उससे उसका चेहरा बदल नहीं जाएगा?"

"बिल्कुल नहीं सर...बिल्कुल ऐसा लगेगा जैसे तस्वीर वाले बलराज ने शेव करवा ली हो—तथा पीछे से उसका असली चेहरा निकल आया हो।"

"ठीक है—कितना वक्त लग जायेगा इस काम में?"

"पूरा दिन तो आर्टिस्ट ही खा जाएगा—फिर उसके इश्तिहार छपेंगे—एक दिन उस पर लग जाएगा।"

"यानि परसों शाम तक इश्तिहार गंगानगर की दीवारों पर चिपक जाएंगे।"

'यस सर।"

"ओ०के०—।" एक लम्बी सांस छोड़ी कमिश्नर ने और बोले—"अब जाओ—और कोशिश करो कि इश्तिहार छपने से पहले-पहले बलराज गोगिया को पकड़ लो—यूं समझ लो कि तुम्हारे कंधे के स्टार हटकर बुत का रूप तभी ले सकते हैं जब तुम बलराज को पकड़ लो।"

"मैं अपनी जान लगा दूंगा सर!" कहते हुए रावत की आंखें चमकने लगी थीं।

कमिश्नर ने उसे डी०एस०पी० बनाने का वायदा कर दिया था—अब तो उसे और जीजान से बलराज की तलाश में जुट जाना था।

❑❑❑

शाम को जो आदमी बलराज गोगिया को लेने के लिए आया वह एकदम से काला-कलूटा गैंडे जैसे आकार का था।

आंखों पर नजर का चश्मा चढ़ा होने की वजह से उसकी शक्ल और भी भद्दी नजर आ रही थी।

"मेरा नाम विपिन हांडा है।" बलराज गोगिया के सामने

पहुंचते ही वह बोला—"बॉस ने आपको लाने के लिए मुझे भेजा है—बाहर कार खड़ी है—आप उसमें बैठ जाएं।"

बलराज गोगिया ने अपने पास खड़ी मिनी को देखा जो कि हांडा को लेकर आई थी।

"अपना आदमी है—।" तुरंत ही बोली मिनी।

बलराज गोगिया खड़ा हो गया। उसके साथ-साथ राघव भी खड़ा हो गया।

राघव बलराज गोगिया के पहलू से होकर मिनी के पास पहुंचा और आंख मारकर मुस्कुराया—

"यार जा रहा है—विदा नहीं करोगी।"

पहले तो झेंप गई मिनी—फिर मुस्कराकर झुकी और अपने होंठ राघव के होठों के पास ले आई।

राघव के होठों तक अपने होंठ ले जाने के लिए उसे बहुत ज्यादा झुकना पड़ा था—जिसके कारण उसे अपने हाथ घुटनों पर रखने पड़ गए थे।

राघव ने तुरंत ही अपनी बांहें ऊपर उठाकर मिनी के गले में डालीं और अपने होठों से मिनी के होंठों को जकड़ते हुए लगभग झूल ही गया उसकी गर्दन से।

काफी लम्बा लिया उसने विदाई चुम्बन—और जब वह मिनी से अलग हुआ तो मिनी के होठों पर सूजन-सी आ गई थी—लेकिन आंखों में खुमार उमड़ने लगा था जैसे कॉफी नशा कर लिया हो उसने।

अपने होठों पर जिव्हा फेरी मिनी ने और मुस्कराकर राघव को देखने लगी।

"अच्छा डार्लिंग—!" राघव मुस्कुराते हुए बोला—"जिन्दा रहे और जिन्दगी की किसी राह पर मुलाकात हुई तो अपने सपनों को फिर से रंगीन करेंगे।"

"मैं तुम्हें याद रखूंगी।" मिनी भी मुस्कुराई।

राघव ने हांडा की तरफ देखा जो मिनी को ललचाई नजरों से देख रहा था। देखकर राघव मुस्कुराया और उसे टोकते हुए बोला—"यह रसमलाई तेरे मतलब की नहीं—किसी टुनटुन को ढूंढ।"

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए चौंक उठा हांडा। फिर खा जाने वाली निगाहों से राघव को देखने लगा।

"चलो हांडा—!" तभी बलराज गोगिया मुस्कुराते हुए बोल पड़ा—"इसे तो बक-बक करने की आदत है।"

राघव मुस्कुरा पड़ा—साथ ही उसने हांडा को आंख मार दी।

ताव तो बहुत आया हांडा को। कहरभरी निगाहों से देखा उसने उसे, जैसे आंखों ही आंखों में भस्म कर देगा वह उसे—लेकिन राठौर

का हुक्म था कि दोनों को बड़े सम्मान से लाया जाए—सो अपना गुस्सा पीना पड़ रहा था उसे—वर्ना अगर उसके वश में होता तो वह अभी उसे चींटी की तरह मसल देता।

किसी प्रकार स्वयं पर काबू पाकर वह पलटा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

पीछे-पीछे चलते हुए बलराज गोगिया और राघव बाहर निकल आए—ड्राईव-वे पर एक फियेट खड़ी थी, जिसके शीशे काले रंग के थे। बाहर से अन्दर की कोई भी वस्तु नजर नहीं आ रही थी।

हांडा कार के समीप पहुंचा और पिछला दरवाजा खोल दिया।

दोनों अन्दर प्रवेश कर गए और पिछली सीट पर बैठ गए।

हांडा ने दरवाजा बन्द किया और फिर ड्राईविंग डोर खोलकर स्टेयरिंग सम्भाल लिया।

कुछ ही देर में कार भगतसिंह चौक पार कर नेहरू चौक की तरफ बढ़ रही थी।

लगभग पद्रंह मिनट बाद कार न्यू हाऊसिंग बोर्ड में एक सौ दस नम्बर के थ्री रूम फ्लैट के सामने रुकी।

फ्लैट अभी ज्यों का त्यों बना हुआ था जैसा कि हाऊसिंग बोर्ड ने बनवाकर दिया था—आस-पास बने फ्लैट भी बिल्कुल उस फ्लैट जैसे थे।

हांडा कार से बाहर निकला और मेन गेट खोलकर पुनः कार में आ बैठा।

कार को गेट पार कराकर उसने इंजन बंद किया—उतरा और गेट बन्द करके वापिस कार के पास आ गया।

पिछला दरवाजा खोला उसने और बोला—"आईए!"

बलराज गोगिया और राघव दोनों कार से बाहर आ गए।

हांडा दोनों को लेकर फ्लैट में प्रवेश कर गया।

फ्लैट बाहर से जितना साधारण नजर आ रहा था अन्दर से उससे कई गुणा खूबसूरत और सजा हुआ था।

ड्राइंगरूम पार करके स्टोर के नजदीक से होता हुआ हांडा दोनों को पिछले कमरे में लाया।

उस कमरे में राठौर के साथ मनोहर और जुनेजा भी बैठे थे।

"आओ बलराज गोगिया!" राठौर स्वागत करने वाले अंदाज में बोला—"बैठो।"

बलराज गोगिया दाईं तरफ पड़े खाली सौफे पर बैठ गया—राघव भी उसके साथ उसके पहलू में बैठ गया।

दोनों जुनेजा और मनोहर बलराज गोगिया को इस प्रकार देख रहे थे जैसे वह कोई दूसरे ग्रह से उतरा हुआ प्राणी हो।

जबकि बलराज राठौर की तरफ देख रहा था—

"तुम तो कह रहे थे कि माहौल काफी ठण्डा हो गया है।" उसने कहा—"लेकिन मुझे तो माहौल में अभी पूरी गर्मी नजर आ रही है—रास्ते में पुलिस की कई जिप्सियां मैंने इधर-से-उधर भागती देखीं।"

राठौर मुस्कुराया—"अगर दो दिन पहले देख लेते तो अवश्य मेरे बाल का अनुमोदन करते।"

"क्यों दो दिन पहले क्या पूरे राजस्थान की पुलिस यहां आ गई थी।"

"कर्फ्यू का माहौल बना हुआ था दो दिन तक—जिधर देखो पुलिस ही पुलिस—आदमी तो नजर ही नहीं आता था।"

"पुलिस तो अभी भी काफी है।"

"दो दिन पहले की बनिस्पत आधी भी नहीं।" राठौर बोला—"उस हिसाब से तो माहौल ठण्डा ही माना जाना था।"

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—गर्दन घुमाकर मनोहर व जुनेजा को देखने लगा।

"यह रामलाल जुनेजा है— ।" राठौर ने जुनेजा की तरफ हाथ किया—"और यह मनोहर लाल है।" उसने मनोहर की तरफ हाथ घुमाते हुए दोनों का परिचय दिया।

दोनों ने बारी-बारी से बड़ी गर्मजोशी से बलराज से हाथ मिलाया।

"और यह राघव—बलराज गोगिया का दोस्त।" राठौर ने राघव का दोनों से परिचय कराया।

दोनों के चेहरों पर हल्का-सा व्यंग तैर गया—हाथी की बगल में लंगूर बैठा नजर आ रहा था राघव।

चूंकि वह बलराज गोगिया का दोस्त था—इसलिए उन्हें उससे भी हाथ मिलाना पड़ा।

लेकिन हाथ मिलाते वक्त ही उन्हें राघव की बेपनाह ताकत का अंदाजा हो गया—इसलिए उनके चेहरों पर हल्की-सी बौखलाहट नजर आने लगी थी।

राठौर ने वहां खड़े हांडा को वहां से जाने को कहा।

राघव को खा जाने वाली निगाहों से घूरता हांडा वहां से चला गया।

तत्पश्चात् राठौर ने बारी-बारी से मनोहर और जुनेजा को देखा और बोला—

"बलराज गोगिया को मैंने बता दिया है कि इन्हें क्या चोरी करना है—लेकिन मेरी जानकारी शुरुआती थी—तफसील से तुम लोग

ही बताओगे—और जो-जो बलराज जानना चाहता है—उसकी पूरी जानकारी दोगे तुम।"

"ठीक है।" सिर हिलाते हुए बोला मनोहर।

"तो फिर करो शुरू?"

मनोहर ने जुनेजा की तरफ देखा—शायद बलराज गोगिया को सामने देख वह कुछ नर्वस हो गया था—सो वह जुनेजा से बोला—"जुनेजा तू ही बात कर बीच-बीच में जहां जरूरत होगी मैं बोल दिया करूंगा।"

जुनेजा ने खंखारकर गला साफ किया और बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए कहने लगा—

"यह तो राठौर साहब ने आपको बता दिया है कि हमें चोरी क्या करना है?"

बलराज ने जुनेजा को घूरा—"चोरी में तुम लोग भी हमारा साथ दोगे?"

"नहीं...।" हड़बड़ाया जुनेजा—"च—चोरी तो आपको करनी है।"

"तो फिर 'हम' को क्यों यूज कर रहे हो? हम में तो तुम लोग भी आ जाते हो।"

"च—चोरी के माल में हिस्सेदार तो हम भी हैं—सो हम भी तो चोर हुए।"—मनोहर बोल पड़ा। लेकिन उसकी आवाज में घबराहट साफ महसूस हो रही थी।

"मगर चोरी तो मुझे ही करनी है। इसलिए 'हम' की बजाए केवल 'तुम' यूज करो।"

"ठ...ठीक है 'आप' ही सही।" जुनेजा हकबकाया।

"आगे बोलो?"

"लॉटरी के पच्चीस करोड़ जो कि हमने परसों सुबह जयपुर को रवाना कर देने हैं वो लूटने हैं आपको।" जुनेजा कहने लगा—लेकिन लगता था वो बात को ठीक ढंग से कह नहीं पा रहा था।

तभी तो बलराज गोगिया ने राठौर की तरफ देखा और बोला—"व्हिस्की पड़ी है?"

"हां है।"—राठौर हैरानी से बोला—"लेकिन उसका क्या करना है?"

"इन दोनों पार्टनरों को पिलाओ—पता नहीं किस बात से खौफजदा हो रहे हैं ये दोनों—व्हिस्की पीकर थोड़ी दिलेरी आ जाएगी इनमें—तब ये बात ठीक ढंग से कह सकेंगे।"

व्हिस्की लाने के लिए राठौर स्वयं उठा—आलमारी से बोतल

निकाली और साथ में दो गिलास भी उठा लिये।

वापिस आकर उसने दोनों को पटियाला पैग बनाकर दिये और बोला--"एक ही सांस में खाली कर जाओ।"

लगता था व्हिस्की की जरूरत वे दोनों भी महसूस कर रहे थे—तुरंत ही उन्होंने गिलास पकड़े और गटागट पी गए।

पेट में पहुंचते ही व्हिस्की ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया।

दोनों के चेहरों से घबराहट दूर होने लगी थी।

"अब बोलो—क्या कहना चाहते हो तुम?" बलराज गोगिया दोनों के चेहरों को देख मुस्कुराते हुए बोला।

"इतना तो राठौर साहब ने आपको बता ही दिया होगा कि राजस्थान सरकार से जो लॉटरी हम खरीदते हैं उसकी पेमेंट एक महीने बाद करते हैं—सिर्फ राजस्थान ही नहीं, बल्कि दिल्ली और हरियाणा की लॉटरियों की पेमेंट भी एक माह बाद ही करते हैं। इन तीनों राज्यों की लॉटरियों की बिक्री पच्चीस करोड़ के करीब होती है—जिसमें से हमारी कमीशन अलग होती है।"

"तुम्हें कितनी कमीशन मिलती है?" बलराज ने बातों में दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

"एक-चौथाई प्रतिशत यानि सौ रुपये के पीछे पच्चीस पैसे।"

"उस हिसाब से भी तुम्हें लाखों रुपये की कमाई होती होगी?"

"ह...हां!" थोड़ा झिझकते हुए बोला जुनेजा—"लॉटरी एक ऐसा जुआ है जिसमें सिर्फ सरकार या हम और आगे हमारे ऐजेंट ही कमा सकते हैं—या फिर वो जिसकी किस्मत के सितारे बुलंद हों—वर्ना इसकी लत पड़ते ही आदमी की बर्बादी शुरू हो जाती है—यहां तक कि लॉटरी बेचने वालों में भी कई बर्बाद हो जाते हैं—और फिर इसका नतीजा यह होता है कि या तो आदमी आत्महत्या कर लेता है या मुजरिम बन जाता है।"

"यह लॉटरी बेचने वाले नुकसान में कैसे रहते हैं?"

"जो लॉटरी स्टॉल लगाने वाले हमसे खरीदते हैं उसमें से अगर बच जाए तो वह उसे नुकसान ही हुआ—क्योंकि एक बार बिक चुकी लॉटरी वापिस नहीं होती—और लॉटरी की कीमत ग्यारह, बाईस और तैंतीस रुपये तक है। स्टॉल लगाने वालों को पैंतालीस पैसे प्रति सौ रुपये सौ रुपये के पीछे कमीशन मिलती है—यानि अगर वे सौ रुपये की लॉटरी बेचते हैं तो उन्हें पैंतालीस पैसे की बचत होती है—और मान लो अगर वह बीस हजार की लॉटरी लगाता है और उसमें से डेढ़-दो हजार की लॉटरी बच जाती है तो उसे अपनी कमीशन के साथ-साथ बाकी का घाटा भी उठाना पड़ेगा—ऊपर से ज्यादातर लॉटरी बेचने वाले खुद भी लॉटरी खेलने वाले होते हैं—ऐसे में उनके

घाटे में रहने की उम्मीद और भी ज्यादा हो जाती है।"

'ओह!" बलराज के मुख से निकला—"इस तरह तो लॉटरी घरों को बर्बाद करने का एक जरिया है।"

"बिल्कुल।"—जुनेजा बोला—"जिस प्रकार स्मैक, चरस या किसी भी नशे की आदत आसानी से नहीं छूटती ठीक उसी प्रकार लॉटरी का भी एक नशा होता है—जो एक बार सिर चढ़ जाये तो आसानी से नहीं उतरता। जब भी उतरता है तो या तो घर को बर्बाद करके उतरता है या फिर लॉटरी खेलने वालों की जान लेकर उतरता है—एक तरह से यह नशा तो दूसरे नशों से भी बुरा है।"

"तो फिर सरकार इसे चलाती ही क्यों है?" राघव ने पूछा।

"करोड़ों कमा हरी है सरकार लॉटरी के धंधे से...ऐसे में वह इसे बंद कैसे कर पायेगी—यूं भी अब यह धंधा बंद होने वाला नहीं। अब तो सरकार की यह हालत हो गई है कि सरकार इसे बंद करना चाह कर भी बंद नहीं कर सकती—यानि अगर वह कम्बल को छोड़ना भी चाहे तो कम्बल उसे नहीं छोड़ेगा।"

"वो कैसे?"

"लॉटरी का जहर तो लोगों की नस-नस में फैल चुका है—क्या बूढ़ा और क्या स्कूली बच्चा—यहां तक कि कई लड़कियां भी इस नशे का शिकार हो रही हैं—स्कूल के बच्चे घर से स्कूल जाते है तो मिलने वाले जेबखर्च से लॉटरी खरीद लेते हैं—ताकि शाम को अधिक पैसों से आनन्द लें।" जुनेजा कह रहा था—"उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस बुराई को महसूस किया—और उसने ऐलान कर दिया कि यू०पी० में लॉटरी नहीं खेली जायगी—वहां लॉटरी का धंधा बन्द कर दिया—लेकिन....।"

"लेकिन क्या?" राघव ने पूछा।

जुनेजा ने एक लम्बी सांस छाड़ी और बोला—

"लॉटरी का नशा तो लोगों की नसों में फैल ही चुका था—इसका फायदा बड़े-बड़े सट्टेबाजों ने उठाया और दूसरे राज्य की किसी लॉटरी का नम्बर बुक कर लोगों से जुबानी पैसे लेने लगे—जैसे उन्होंने हरियाणा की एक लॉटरी को फिक्स कर दिया कि फलां लॉटरी का नम्बर मंजूर किया जायेगा—लोग जाकर उनके पास नम्बर बुक करने लगे—और इस प्रकार लॉटरी तो नहीं बिक रही थी मगर जुआ बदस्तूर चल रहा था।"

"एक तरह से यह तो मटके वाला धंधा हो गया।" बलराज गोगिया ने कहा।

"हां...और जो पैसा सरकार के पास जाना चाहिए था—वह उन सट्टेबाजों की जेबों में जाने लगा।" आखिर मजबूर होकर सरकार

को पुनः लॉटरी का धंधा शुरू करना पड़ा—और आज हालत यह है कि यू०पी० में सैकड़ों की संख्या में प्राइवेट लॉटरियां चल रही हैं।"

"ओह!"

"लेकिन प्राइवेट लॉटरी के धंधे में ग्राहक का पैसा डूबने का डर रहता है—जबकि सरकारी लॉटरी में ईनाम मिलने की पूरी गारंटी होती है—सो राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली की सरकारों ने प्राइवेट धंधों को पनपने ही नहीं दिया और अपनी तरफ से धंधा शुरू कर दिया।"

"खैर...!" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज गोगिया—"आगे बढ़ो।"

जुनेजा ने अपने लिए स्वयं ही एक पैग बनाया—और उसे एक ही सांस में आधा खाली करके पैग को अपने ही हाथ में पकड़े रहकर बलराज की तरफ देखते हुए बोला—

"सरकार की तरफ से हमें महीना भर की लॉटरी एक साथ मिल जाती है—और फिर एक महीना बेचने के पश्चात् हमें सरकार को उसकी पेमेण्ट करनी पड़ती है—हम हर रोज जितनी भी लॉटरी बेचते हैं—उसे उसी दिन बैंक में जमा करा देते हैं—और इस प्रकार रकम बैंक में जमा होती रहती है—महीना पूरा होते ही यानि महीने की पहली तारीख को सरकार की तरफ से एक वैगन आती है—हमारे दस्तखत होने पर बैंक रुपया गिनकर वैगन में रखता है और वैगन वापिस चली जाती है। उसी शाम को एक और वैगन आती है जो कि बैंक की बजाय हमारे पास आती है जिसमें लॉटरियों के महीने भर के टिकट होते हैं।"

"यानि सरकार पहले महीने भर की पिछली पेमेण्ट लेकर तब अगली लॉटरी देती है।"

"हां।"

"और बाकी की दो दिल्ली और हरियाणा की सरकारों की पेमेण्ट कैसे करते हो?"

"वैगन तीनों स्टेटों की पेमेण्ट एक साथ ले जाती है।"

"फिर तो टिकटें आती भी इकट्ठी होंगी।"

"हां।"

"हूं—।" बलराज गोगिया ने एक हुंकार भरी—और फर्श पर पड़ी बोतल उठाकर मनोहर का खाली पड़ा गिलास भरने लगा।

पैग बनाकर उसने अपने मुंह से लगाया और खाली करके ही हटाया।

फिर जुनेजा की तरफ देखते हुए बोला—

"अब जरा वैगन के बारे में—बैंक के बारे में—वैगन की बैंक

की सुरक्षा के बारे में भी बता दो—आखिर पच्चीस करोड़ की नकद राशि गंगानगर से जयपुर तक जाती है—रास्ते में लुटने का भी डर होगा—सरकार ने उसकी सुरक्षा के लिए भी कुछ सोचा होगा।"

"बिल्कुल।"

"तो बताओ।"

"वैगन की सुरक्षा के लिए सरकार ने वैगन को बनाया ही इस तरह से है कि कोई लाख कोशिशों के बावजूद भी उसे लूट न पाये—बिल्कुल बन्द डिब्बे की तरह बनी वैगन की चादर ठोस इस्पात से बनी हुई है जिसे लोहा काटने की मशीन से भी अगर काटा जाये तो महीना भर लग जायेगा। उसमें प्रवेश करने के लिए वैगन का एकमात्र दरवाजा जो कि पिछली तरफ ही खुलता है टाईम्ड लॉक है जो वक्त फिक्स किया जाता है उससे पहले उसके खुलने का सवाल ही पैदा नहीं होता—चाहे दुनियां का बड़े-से-बड़ा ताला चाबी वाला भी कोशिश कर ले कामयाब नहीं हो पायेगा—वक्त पूरा होने के पश्चात् दो चाबियों के द्वारा ही उसे खोला जा सकता है—जिसमें से एक चाबी तो बाहर से लगती है तथा दूसरी चाबी वैगन के अन्दर से लगती है।"

"अन्दर से कौन लगाता है चाबी?"

"वैगन के अन्दर मौजूद दो गार्डों में से एक अन्दर से चाबी लगाता है।" जुनेजा बोला—"सुबह साढ़े चार बजे जब वैगन जयपुर से रवाना होती है तो उसमें वैगन के ड्राईवर व क्लीनर के अलावा दो गार्ड और होते हैं जो कि वैगन के अन्दर होते हैं—वहां से रवाना होने से पूर्व अधिकारी शाम के सात बजे का वक्त फिक्स करते हैं। वैगन वहां से चल पड़ती है और करीब पांच बजे यहां पहुंच जाती है। उस वक्त तक बैंक बन्द होने का भी वक्त हो चुका होता है—वैगन बैंक में प्रवेश कर जाती है और सीधा बेसमेंट में जाकर ही खड़ी होती है—वैगन के बैंक में प्रवेश करते ही बैंक का मेन गेट बन्द हो जाता है—और साथ ही बैंक अधिकारी पुलिस को भी वैगन के आ जाने की सूचना दे देते हैं।

साढ़े पांच बजे तक बैंक चारों तरफ से पुलिस से घिर जाता है। इधर अन्दर बेसमेंट में पुलिस का घेरा पड़ चुकने के पश्चात् स्ट्रांग रूम जो कि सिर्फ हमारे लिए ही स्पेशल बनाया हुआ है, का दरवाजा खोलकर वह बैंक अधिकारी नोटों की गड्डियों को बाहर रखना शुरू कर देते हैं। यह काम दस बैंक अधिकारियों के साथ-साथ मैं, मनोहर और ड्राईवर तथा क्लीनर करते हैं।

सात बजे तक गड्डियां वैगन के दरवाजे के सामने लग जाती हैं।

सात बजे बैंक मैनेजर स्वयं वैगन के दरवाज़े के की-होल में चावी लगाता है—और उसे घुमा देता है। चाबी के घूमते ही वैगन के अन्दर लगा एक अलार्म बज उठता है। अलार्म बजते ही अन्दर बैठे गार्ड भी अन्दर से चाबी लगा देते हैं और फिर दरवाजा खोलकर बाहर आ जाते हैं।

तत्पश्चात् नोटों की गड्डियां अन्दर रखनी शुरू की जाती हैं—और रात के ठीक ग्यारह बजे वैगन जब बैंक से बाहर निकलती है तो उसके लॉक का वक्त सुबह के बारह बजे का फिक्स किया होता है। वैगन के बाहर निकलने से पहले ड्राईवर और क्लीनर भी बदल जाते है—यानि वैगन के अन्दर वाले गार्ड ड्राईवर और क्लीनर की जगह ले लेते हैं और ड्राईवर और क्लीनर गार्डों की जगह ले लेते हैं—ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि ड्राईवर और क्लीनर वैगन के अन्दर लेटकर सोकर अपनी नींद पूरी कर लें—जबकि पहले वाले गार्ड तो अपनी नींद पूरी कर ही चुके होते हैं—सो ड्राईविंग करते वक्त वे ताजादम होते हैं।"

"वैगन के अन्दर अलार्म क्यों लगा होता है?" जुनेजा के चुप करते ही राघव ने पूछा।

"इसलिए कि अगर वैगन के अन्दर मौजूद गार्ड सो रहे हों तो वे जाग जाएं—अलार्म बजते ही गार्ड अपनी घड़ी में वक्त देखेंगे—अगर वक्त पूरा हो चुका होगा तो वे चाबी की-होल में डाल देंगे—वर्ना वक्त पूरा होने का इंतजार करेंगे।" जुनेजा ने ज़वाब दिया।

"अगर कोई वैन को रास्ते में ही रोक ले?"—बलराज गोगिया ने कहा—"मेरे कहने का मतलब है अगर कुछ लोग हथियारों की मदद से या किसी भी तरीके से वैगन का रास्ता रोककर उसे रुकने को मजबूर कर दे और वक्त पूरा होने तक रोके रखे, तो क्या वैगन लुट नहीं सकती—क्योंकि वैगन के अन्दर मौजूद गार्डों को तो मालूम नहीं पड़ेगा कि वैगन घिर चुकी है—ऐसे में वक्त पूरा होने के पश्चात् वे अन्दर से ताला खोलेंगे ही?"

"ऐसा नहीं हो सकता।" इस बार मनोहर बोला—"क्योंकि वैगन के ड्राईवर के पास ट्रांसमीटर होता है—जयपुर वापिस जाते वक्त वह जिस-जिस शहर में भी प्रवेश करता है वहां की पुलिस को अपने आने की सूचना देता रहता है—पुलिस अगले शहर की पुलिस को सूचित कर देती है—और वक्त के हिसाब से अगले शहर की पुलिस को वैगन के ड्राईवर से शहर में प्रवेश करने की सूचना नहीं मिलती तो फौरन उसकी खोज में पुलिस की जिप्सियां दौड़ने लगती हैं और कुछ ही देर में वैगन तक जा पहुंचती है—।"

"अगर बाईचांस वैगन में कोई खराबी आ जाए और उसे

पांच-छः घण्टे तक ठीक होने में लग जाएं तो?"

"ऐसा भी नहीं हो सकता, क्योंकि वैगन में एक नहीं दो इंजन लगे हुए हैं—अगर एक इंजन में जरा भी खराबी आ जाती है तो फौरन दूसरा इंजन चालू हो जाता है।"

"यानि वैगन कहीं रुक नहीं सकती?"

"नहीं।" मनोहर ने इन्कार में सिर हिलाया।

"अगर उसका कहीं टायर पंचर हो जाए तो?"

"नामुमकिन—।" मनोहर बोला—"चूंकि वैगन ठोस इस्पात की मोटी चादर की बनी हुई है—इसलिए जाहिर है कि उसका वजन भी काफी होगा—इसलिए वैगन के पहिये—पिछले पहिये दो की जगह चार लगे हैं—जैसे मिलिट्री के ट्रकों के होते हैं—चार पहिये दाईं तरफ, चार बाईं तरफ तथा दो-दो पहिये आगे—और टायरों को नुकसान न हो—इसलिए वे पहिये ज्यादा बेहतर रबड़ के बने हुए हैं—टायर ब्रस्ट होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"ओह!" राघव के मुंह से निकल गया—साथ ही उसका चेहरा भी उतर गया।

"ड्राईवर के केबिन के बारे में कुछ बताओ—उसकी सुरक्षा के लिए भी तो सरकार ने कोई इंतजाम किया होगा—क्योंकि लुटेरा ड्राईवर को गोली मारकर घायल कर सकता है—या रिवॉल्वर के जोर से रुकने पर मजबूर कर सकता है?"

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ते हुए पूछा।

"ड्राईवर का केबिन भी वैगन से कम मजबूत नहीं—।" मनोहर के मुंह खोलने से पहले ही जुनेजा बोल पड़ा—"ड्राईवर केबिन का सिर्फ एक ही दरवाजा है जो कि स्टेयरिंग की तरफ से न खुलकर उल्टी तरफ से खुलता है—बैंक में जब वैन चलने को तैयार हो जाती है तो पहले ड्राईवर दरवाजा खोलकर उसमें प्रवेश करता है—और ड्राईविंग सीट सम्भाल लेता है—उसके पीछे-पीछे क्लीनर जो कि क्लीनर नहीं बल्कि दूसरा ड्राईवर होता है केबिन में प्रवेश करके दरवाजा बन्द कर देता है और साथ ही अन्दर से लॉक लगा देता है। विण्ड स्क्रीन बुलेटप्रूफ शीशे की बनी है—सो उस पर गोली वगैरह का कोई असर नहीं हो सकता—यानि जब तक ड्राईवर या उसका साथी न चाहें कोई उनके पास फटक भी नहीं सकता।"

"यानि बैंक से निकलकर वैगन सीधा जयपुर जाकर ही रुकती है।"

"हां।"

"दस घण्टे के इस सफर में ड्राईवर, गार्ड वगैरह कुछ भी खाते-पीते नहीं?"

"खाने-पीने का सामान उनके पास होता है—रास्ते में जब खाने का वक्त होता है, तो पहले क्लीनर खाता है—खाना खाकर वह ड्राईविंग सीट सम्भाल लेता है और ड्राईवर खाने बैठ जाता है।"

"यानि सिर्फ सीट बदलने के दौरान ही वैगन रुकती है।"

"नहीं—सीट बदलने के दौरान भी वैगन चलती रहती है।"

"कमाल है!" मन्त्रमुग्ध भाव से बोला बलराज गोगिया।

"अब एक सवाल मैं भी पूछूं?" तभी राठौर बीच में बोल पड़ा।

मनोहर—जुनेजा—बलराज गोगिया तथा राघव की निगाहें राठौर की तरफ घूम गईं।

"पूछिये।" मनोहर बोला।

"अभी-अभी तुमने कहा कि वैगन रास्ते में कहीं नहीं रुकती—और न ही उसे रोका जा सकता है—ड्राईवर का केबिन बुलेटप्रूफ है—उसकी बॉडी भी ठोस इस्पात की बनी है—वैगन के टायर ब्रस्ट नहीं हो सकते—उसका इंजन नहीं रुक सकता।"

"हां...कहा था।"

"लेकिन इस सबके बावजूद भी अगर कोई वैगन को रुकने पर मजबूर कर दे तो?"

"कैसे?"

"कैसे भी—मसलन सड़क पर कोई पेड़ गिरा दे—या कोई दीवार खड़ी कर दी जाए—तारकोल के ड्रम रख दिये जायें—ऐसे और भी कई तरीके हैं जिससे वैगन को रुकने पर मजबूर किया जा सकता है।"

"फिर भी लुटेरा वैगन लूटने में कामयाब नहीं हो पायेगा।" मनोहर बोला।

"वो कैसे?"

"वैगन के आगे रुकावट देख ड्राईवर फौरन निकटतम शहर की पुलिस को सूचित कर देगा।"

"लेकिन पुलिस को यहां पहुंचने में कुछ देर तो लगेगी ही।"

"फिर भी वह कुछ नहीं कर पायेगा—क्योंकि ड्राईवर पर कब्जा करने के लिए उसे पहले केबिन का दरवाजा खोलना पड़ेगा जो कि अन्दर से लॉक होगा—विण्ड स्क्रीन भी वह तोड़ नहीं पायेगा—ऐसे में वह वैगन पर कब्जा करेगा तो कैसे करेगा?"

राठौर मायूसी ओढ़कर चुप कर गया और बलराज की तरफ देखने लगा।

अपनी तरफ देखने पर बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—"बस या और कुछ?"

"बस।" मनोहर बोला।

मनोहर के चुप होते ही कमरे में खामोशी व्याप्त हो गई—सभी

मुंह झुकाये सोचों में डूब गए।

थोड़ी देर की खामोशी के उपरांत आखिर बलराज ने खामोशी को भंग करते हुए जुनेजा से पूछा—

"दोनों ड्राईवरों और गार्डों के बारे में बताओ।"

"क्या?" जुनेजा ने पूछा।

"यही कि हर बार वही चारों रुपया लेने आते हैं या हर बार बदलते रहते हैं?"

"सिर्फ चार ही लोगों की ड्यूटी इस काम पर लगी होती है—हर बार वही चारों ही रुपया लेने आते हैं—अगर खुदा न खास्ता उनमें से किसी की हालत खराब हो जाती है—या कोई मर-खप जाए तब सरकार उसकी जगह दूसरा भेजती है लेकिन वैन के बैंक पहुंचने से पहले बैंक मैनेजर को सूचित कर दिया जाता है कि फलां गार्ड या ड्राईवर बदला हुआ है और उसका नाम फलां है। साथ ही उसका हुलिया भी बता दिया जाता है ताकि मैनेजर पूरी तसल्ली कर ले।"

"वैगन की कोई तस्वीर है तुम्हारे पास?"

"हां।" कहते हुए उसने मनोहर की तरफ देखा।

मनोहर ने तुरंत ही अपनी जेब से कुछ तस्वीरें निकालीं और बलराज गोगिया की तरफ बढ़ा दीं।

बलराज गोगिया ने तस्वीरें लीं और बड़े गौर से उन्हें एक-एक करके देखने लगा। तस्वीरें वैगन के विभिन्न कोणों की खींची हुई थीं और साफ नजर आ रहा था कि तस्वीरें काफी दूरी से जूम लैंस से खींची गई हैं।

बलराज ने तस्वीरें वापिस की और राठौर की तरफ देखने लगा।

"कोई स्कीम आई दिमाग में?" अपनी तरफ देखते पा पूछा राठौर ने।

"तुम बोलो—तुम्हारे विचार में उन पच्चीस करोड़ रुपयों को कैसे प्राप्त किया जा सकता है?"

"मेरा दिमाग तो वैगन की सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी सुनकर ही सुन्न हो गया है—कोई भी ऐसा रास्ता नजर नहीं आ रहा जिस पर चलकर हम रुपयों को प्राप्त कर सकें—वैगन हम लूट नहीं सकते—क्योंकि उसे लूटने के लिए वैगन का रुकना जरूरी है—और वैगन के रुकते ही कुछ ही देर में पुलिस वहां पहुंच चुकी होगी—अगर पुलिस न भी पहुंचे तो भी वैगन लुटने से रही—क्योंकि वैगन को खोलने का वक्त कम से कम सात-आठ घण्टे बाद मिलेगा—इतने वक्त में हम वैगन को कितनी दूर ले जा पायेंगे—मेरे ख्याल से ज्यादा से ज्यादा सौ किलोमीटर—क्योंकि तब तक चारों

तरफ से वैगन की व्यापक खोजबीन शुरू हो चुकी होगी।"

"यह भी नहीं हो सकता।" राघव बोल पड़ा—"क्योंकि वैगन को भगाने के लिए पहले हमें ड्राईवर तथा उसके साथी पर कब्जा करना होगा—जो कि नामुमकिन है।"

"हां—।" राठौर ने उसकी बात का समर्थन किया—"ऐसा भी नहीं हो सकता—यानि वैगन को लूटने की तो सोची भी नहीं जा सकती—और बैंक में प्रवेश करना सिवाये बेवकूफी के और कुछ नहीं होगा।"

"वो कैसे?" बलराज गोगिया मुस्कुराया।

"मान लो हम किसी तरह बैंक में प्रवेश कर भी लेते हैं। मैनेजर पर दबाव डालकर स्ट्रांग रूम खुलवा लेते हैं तो भी पच्चीस करोड़ की राशि नहीं लूटी जा सकती—उसको लूटने के लिए हमें अलग से एक वैगन का इंतजाम करना पड़ेगा—साथ ही आठ-दस मजदूरों को भी लगाना पड़ेगा जो कि रुपयों की गड्डियां टोकरों में भरकर बैंक से बाहर खड़ी वैगन में फेंकेंगे—फिर भी इस काम के लिए कम से कम एक घण्टा लगेगा—और एक घण्टे में तो पूरे राजस्थान की पुलिस वहां पहुंच जाएगी।"

"यानि बैंक भी नहीं लूटा जा सकता।"

"बिल्कुल।"

"और कोई रास्ता?"

"कोई नहीं।"

बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा। राघव ने निचला होठ बाहर निकालकर इन्कार में सिर हिला दिया।

बलराज ने दोनों पार्टनरों की तरफ देखा—"तुम्हारे दिमाग में कोई आईडिया हो?"

"अगर होता तो हम खुद ही न लूट लेते।"—जुनेजा बोला—"आपकी सेवायें लेने की जरूरत ही क्या थी?"

मुस्करा पड़ा बलराज और बारी-बारी से चारों पर निगाह डालते हुए बोला—"मेरे दिमाग में वैगन लूटने का एक आईडिया है।"

"वैगन लूटने का!"—आश्चर्य से उछल पड़ा राठौर।

"हां वैगन लूटने का।"—बलराज गोगिया की मुस्कान तेज हो गई—"उस वैगन को लूटने का जिसे लूटने की कोई सोच भी नहीं सकता।"

"क्या...क्या आईडिया है?" आंखें फाड़े वह उसे घूरने लगा।

"लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"उसे लूटने के लिए मुझे बिल्कुल वैसी ही एक वैगन

चाहिए—जैसा रुपया लेने आती है—उन्नीस-बीस का भी फर्क न हो उसमें—हां...इस्पात की चादर बेशक हल्की हो जाए। लॉक का टाईमर बेशक न हो वह चलेगा—लेकिन उसे देखकर कोई यह न कहे कि यह वो वैगन नहीं जो कि पहले यहां आती थी।"

कहकर उसने राठौर की तरफ देखा और बोला—

"अगर वैगन का इंतजाम कर सकते हो तो आगे बताऊं—वर्ना बताने की कोई जरूरत नहीं—क्योंकि लूट के लिए वैसी ही एक वैगन का होना जरूरी है।"

राठौर कुछ सोचता रहा—फिर सिर हिलाते हुए बोला—"मिल जाएगी।"

"बिल्कुल वैसी ही वैगन चाहिए मुझे।"

"बिल्कुल वैसी ही मिलेगी—लेकिन जितना भी खर्चा उस पर आयेगा—वह मैं तुमसे... ।"—उसने मनोहर और जुनेजा की तरफ देखा—"लूंगा।"

दोनों पहले तो हड़बड़ाये—फिर उन्होंने हांमी भर दी।

"अब बोलो—क्या स्कीम है तुम्हारी?" राठौर पुनः बलराज की तरफ देखते हुए बोला।

"पच्चीस करोड़ की नकद राशि को लूटने के लिए मुझे चार आदमियों की जरूरत पड़ेगी—जिनमें से एक मैं खुद ही हूंगा—बाकी तीन का इंतजाम तुम करोगे—और जो भी आदमी तुम इस काम में लगाओगे वे कम से कम बैंक अधिकारियों के लिए अनभिज्ञ होने चाहिएं।"

"हो जाएंगे।" तुरंत ही बोला राठौर।

"इसके अलावा एक खूबसूरत और जवान लड़की की जरूरत होगी ऐसी कि देखते ही लार टपकने लगे।"

"मिनी चलेगी?"

"ड्रामा कर लेगी वह?"

"कर तो लेगी।"

"देख लो पच्चीस करोड़ का मामला है—कहीं ऐसा न हो कि वक्त पर उसकी हालत खराब हो जाए और सब कुछ किया-धरा रह जाए।"

"मैं किसी और लड़की का बंदोबस्त कर लूंगा।" बोला राठौर—"इस मामले में मिनी पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"अब सुनो!" कहकर बलराज गोगिया ने अपना गला साफ किया और आगे बोला—"हम उस वैगन को बैंक तक पहुंचने ही नहीं देंगे।"

बुरी तरह से उछल पड़े सभी।

"ए–ऐसा कैसे हो सकता है?" मनोहर और जुनेजा हैरानी से एक साथ बोल पड़े।

"पहले स्कीम सुन लो।"–बलराज गोगिया मुस्कराते हुए बोला–"फिर बाद में जो पूछना हो बेखटके पूछना।"

मनोहर और जुनेजा एक-दूसरे की तरफ देखने लगे–जबकि बलराज अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला–

"जुनेजा के कहने के मुताबिक वैगन जब रुपया लेकर वापिस जयपुर के लिए रवाना होती है तो रास्ते में पड़ने वाले हर शहर की पुलिस को अपने आगमन की सूचना देती है–ऐसा ही कहा था न तुमने?"

बलराज ने दोनों की तरफ देखा।

"हां–बिल्कुल ऐसा कहा था।" जुनेजा बोल पड़ा।

"लेकिन जब वैगन खाली होती है–यानि जब जयपुर से गंगानगर के लिए रवाना होती है तो किसी पुलिस स्टेशन को सूचित नहीं करती।"

"करती है।" बोला मनोहर–"गंगानगर आती दफा भी वैगन का ड्राईवर पुलिस को सूचित करता हुआ आता है।"

"कोई बात नहीं।"–कुछ सोचकर बोला बलराज गोगिया–"पहले मैंने यही सोचा था कि आती दफा वैगन पुलिस को सूचित नहीं करती–इसलिए मैंने स्कीम को मूल रूप देने के लिए थोड़ी दूरी का स्थान सोचा था–लेकिन अब हमें जो करना होगा गंगानगर की सीमा के आस-पास ही करना होगा।"

कहकर बलराज गोगिया ने अपने लिए एक पैग बनाया और उसे पीकर आस्तीन से होठों को पोंछते हुए कहने लगा–

"यह तो सच है कि वैगन गंगानगर की सीमा में प्रवेश करने से कुछ पहले ही पुलिस को अपने आगमन की सूचना दे देगी–और पुलिस आगे फोन द्वारा बैंक मैनेजर को सूचना दे देगी कि वैगन आ रही है। उस हिसाब से वैगन को लगभग बीस मिनट तक बैंक में पहुंचने में लगेंगे। गंगानगर की सीमा के बाहर करीब एक किलोमीटर दूर जब वैगन पुलिस को अपने प्रवेश करने की सूचना दे चुकी होगी तभी वैगन के ड्राईवर को सड़क के बीचों-बीच एक लड़की नजर आयेगी जिसके कपड़े इस कदर फट चुके होंगे कि उसके वक्ष साफ नजर आ रहे होंगे–उसके जिस्म पर कई जगह दांतों से काटने के निशान पड़े होंगे–उसकी हालत बिल्कुल ऐसी होगी जैसे कई दरिंदों ने अस्मत लूट कर उसे मरने के लिए सड़क पर फैंक दिया हो। चूंकि लड़की बेहोशी की हालत में होगी–इसलिए ड्राईवर उसे देखते ही तुरंत वैगन रोकने को मजबूर हो जाएगा। चूंकि उस वक्त

वैगन रुपयों से नहीं भरी होगी—सो वैगन के लुटने का कोई खौफ भी नहीं होगा उसे—और न ही वह सपने में सोच पायेगा कि कोई खाली वैगन को भी लूट सकता है।

मानवीय भावना कह लो या उस लड़की के फटे हुए वस्त्रों के पीछे से झांकते उसके अंगों का आकर्षण, ड्राईवर केबिन का दरवाजा खोलकर जरूर नीचे उतरेगा—साथ ही उसका साथी भी लड़की को नजदीक से देखने के लिए नीचे उतरेगा और वैगन से नीचे उतरना ही उनके लिए खतरनाक सिद्ध होगा—जैसे ही दोनों लड़की की तरफ बढ़ेंगे—चारों तरफ से उन पर गोलियां बरस पड़ेंगी—वे गोलियां तुम!"—बलराज ने राठौर की तरफ देखा—"चलाओगे—अपने साथ तुम दो-चार आदमी भी ले जाना ताकि उन्हें खत्म करने में तुम्हें दिक्कत न हो—।

वैगन के अन्दर मौजूद गार्ड उस वक्त भी वैगन के अन्दर होंगे—बाहर निकलने की लाख कोशिशों के बावजूद भी बाहर नहीं निकल पायेंगे वे—यूं भी जब तक बाहर की चाबी नहीं लगेगी तब तक वे अन्दर से चाबी नहीं लगा पायेंगे—सुरक्षा के लिहाज में रखे गए गार्ड उसी वैगन में ही कैद होकर रह जायेंगे।

तत्पश्चात् तुम फौरन वैगन को स्टार्ट करके किसी निर्जन स्थान पर ले जाकर छुपा दोगे—और साथ ही उन लाशों को भी ठिकाने लगा दोगे।"

बलराज गोगिया रुका—उसने चारों पर नजरें डालीं—सभी ध्यानपूर्वक उसकी बात सुन रहे थे—बलराज के चुप होने के बावजूद भी कोई नहीं बोला था। सो बात को आगे बढ़ाते हुए वह बोला—

"इधर मैं उस नई वैगन में जो कि तुम मुझे दोगे अपने तीन साथियों के साथ बैठकर ठीक वहां से रवाना होऊंगा जहां पर कि तुम वैगन रुकवाओगे। ठीक वक्त पर मैं बैंक पहुंचूंगा और फिर रात के ग्यारह बजे रुपया लेकर निकल आऊंगा—किसी को पता भी नहीं चलेगा कि बैंक में प्रवेश करने वाली वैगन सरकार की नहीं बल्कि लुटेरों की है और हां—।"

कुछ याद आते ही वह बोला—"एक सबसे अहम बात बताना भूल गया मैं।"

सभी उसकी तरफ पहले से ही देख रहे थे।

"हमारे वहां पहुंचने से पहले तुम्हें फोन करना होगा और बैंक मैनेजर को कहना होगा कि तुम जयपुर से बोल रहे हो—और फिर बताओगे कि रुपया लाने के लिए चारों ही व्यक्ति नये हैं, पुराने वाले किसी और काम पर लगा दिए गए हैं। इस प्रकार मैनेजर हमें ज्यादा गौर से भी नहीं देखेगा।"

"लेकिन रुपया लेकर–।" जुनेजा उसके चुप होते ही बोल पड़ा–"हमें एक बार गंगानगर से बाहर जरूर निकलना होगा, ताकि यहां कि पुलिस अगले शहर की पुलिस को वैगन की सही रवानगी की सूचना दे सके।"

"बिल्कुल।"–बोला बलराज गोगिया–"लेकिन सीमा से बाहर निकलते ही वैगन किसी ऐसे स्थान पर छुपा दी जाएगी जहां पर कम से कम आठ-दस घण्टे किसी की नजर न पड़ सके–क्योंकि रुपया निकालने के लिए इतना वक्त तो लग ही जाएगा।"

"उस जगह का इंतजाम मैं कर दूंगा।"–राठौर बोला।

बलराज गोगिया ने मनोहर की तरफ देखा–"ड्राईवर और अन्यों के पास कोई हथियार भी होता है?"

"इसका पता नहीं हमें।"–बोला मनोहर–"क्योंकि हमने जब भी उन्हें देखा खाली हाथ देखा।"

"उनकी कोई ड्रैस?"

"नीले रंग की जीन्स की वर्दी है उन चारों की–और वही वर्दी वे हर बार पहनकर आते हैं।"

"राठौर को समझा देना कि वर्दी कैसी बनवानी है।"–बलराज गोगिया बोला–फिर राठौर की तरफ देखा–"कल शाम तक चारों वर्दियां तैयार हो जाएं।"

"हां जाएंगी।" राठौर बोला।

"अब!"–बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ते हुए कहा–"किसी को कुछ पूछना हो तो पूछ सकता है–मैं कोई ऐसा जादूगर नहीं कि मेरी स्कीम कामयाब होकर ही रहेगी–उसमें कई गलतियां भी रह सकती हैं–उन गलतियों को ढूंढो–ताकि वक्त रहते उन्हें दूर किया जा सके।"

कोई कुछ नहीं बोला।

❑❑❑

रावत ने बलराज गोगिया की उस तस्वीर को देखा जो कि पुलिस के आर्टिस्ट ने तैयार की थी। फिर तस्वीर को आर्टिस्ट के सामने रखते हुए तस्वीर में आई कमियां समझाने लगा।

आर्टिस्ट सिर हिलाते हुए उसकी बात को अपने भेजे में डाल रहा था।

अच्छी तरह समझाकर रावत खड़ा हो गया–"मैं सुबह आऊंगा।" वह बोला–"उम्मीद है सुबह तक तस्वीर पूरी हो जाएगी।"

"बिल्कुल हो जाएगी।" आर्टिस्ट अपने ऑफिसर के सम्मान में खड़ा होते हुए बोला।

रावत वहां से निकला और सीधा कोतवाली पहुंचा।

कोतवाली में सब-इंस्पेक्टर राणा उसके ऑफिस में बैठा उसका इंतजार करते मिला—रावत अपनी कुर्सी पर बैठ गया और संतरी को बुलाकर चाय लाने का आदेश देकर राणा की तरफ देखते हुए बोला—

"कुछ पता चला बलराज गोगिया का?"

"नो सर!"—राणा ने जवाब दिया—"शहर से बाहर निकलने वाली हर गाड़ी को अच्छी तरह चैक किया जा रहा है—साथ ही मुनादी भी करवा दी गई है—लेकिन अभी तक कोई परिणाम सामने नहीं आया।"

"ओह शिट—!" हथेली पर मुक्का मारते हुए खुंदकभरे स्वर में बोला रावत—"हरामजादा पता नहीं किस बिल में छुप गया है?"

"सर—आज सुबह से ही मेरे दिमाग में एक बात कौंध रही है।"

"क्या?" रावत उसे गौर से देखते हुए बोला।

"मेरे दिमाग में सबसे पहला सवाल यह आया है सर कि बलराज गोगिया गंगानगर में आया क्यों?"

"सीधी-सी बात है—विदेश भागने के लिए उसे गंगानगर का रास्ता उपयुक्त लगा।"

"अगर ऐसा था तो उसने भाटिया से दो लाख क्यों ठगे—वह चुपचाप यहां पहुंच गया था—और चुपचाप यहां से भाग सकता था—और हमें पता भी न चलता—फिर उसे भाटिया पर हाथ डालने की क्या जरूरत थी—क्यों उसने भाटिया से दो लाख लिये?"

"विदेश भागने के लिए उसे ज्यादा रुपयों की जरूरत होगी—इसलिए उसने ऐसा किया।"

"नहीं सर—अगर उसने गंगानगर में विदेश जाने के लिए ही पैर रखा था तो उसे पहले से ही रुपयों का इंतज़ाम करके आना चाहिए था—कम से कम इतने रुपयों का तो जरूर इंतजाम करके आना चाहिए था कि वह सरहद पार कर सके।"

रावत उसे घूरने लगा—"तुम कहना क्या चाहते हो? क्या बलराज गोगिया किसी और उद्देश्य से गंगानगर में प्रविष्ट हुआ है?"

"यस सर।"—गर्दन थोड़ी ऊंची करते हुए बोला राणा—"मैं यही कहना चाहता हूं।"

"क्या उद्देश्य हो सकता है?"

राणा एक पल के लिए हिचकिचाया—फिर बोला—"मुझे तो लगता है सर कि बलराज गोगिया पच्चीस करोड़ के लिए गंगानगर में आया है।"

"क्या बकते हो–।" गुर्रा उठा रावत–"किन पच्चीस करोड़ की बात कर रहे हो?"

"अ...आप भूल रहे हैं शायद–कल पहली तारीख है–और पहली तारीख को गंगानगर में बिकी लॉटरी के टिकटों का पच्चीस करोड़ जयपुर के लिए रवाना होता है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा रावत और आंखें फाड़कर राणा की तरफ देखने लगा।

"हां!"–हैरानी से उसके मुख से निकला–"ऐसा हो सकता है–हो सकता क्या है–बिल्कुल यही है–वह हरामजादा अवश्य ही पच्चीस करोड़ का डाका डालने के लिए यहां आया है। अवश्य ही यहां के किसी अण्डरवर्ल्ड के दादा ने उसे डाका डालने का न्यौता भेजा होगा–और वह यहां खिंचा चला आया।"–रावत के दिमाग के जैसे सभी खिड़की-दरवाजे खुलते चले गए।

"यहां आकर उन्होंने उन रुपयों को लूटने का प्लान बनाया होगा–प्लान को क्रियान्वित करने के लिए उन्हें मोटी रकम दरकार थी–जो कि बलराज गोगिया ने भाटिया से लेकर पूरी की–और अब–अब वे पच्चीस करोड़ का डाका डालेंगे।"

"यस सर।" सीना फुलाते हुए बोला राणा–जैसे रावत को सही दिशा का ज्ञान कराया हो उसने।

"कौन हो सकता है वह गैंगस्टर या अण्डरवर्ल्ड का दादा जो पच्चीस करोड़ की रकम पचाने की ताकत रखता हो–और जिसने बलराज गोगिया को अपने साथ काम करने का न्यौता दिया?"

"ऐसा तो केवल एक ही दादा है–राठौर।" राणा ने राठौर का नाम सुझाया।

"राठौर।"–निकला रावत के होंठों से–फिर कुछ सोचकर वह बोला–"बन्ने भी तो राठौर का ही आदमी था जिसे राघव ने मेरी आंखों के सामने मार डाला था।"

"जी हां...।"

"लेकिन राठौर ने बन्ने सिंह को अपना आदमी मानने से इन्कार कर दिया था–साथ ही उसने यह भी कहा था कि उसने गलत धंधों से किनारा कर लिया है।"

"जुर्म की दुनिया में पैर जमा लेने के पश्चात् अगर कोई कहता है कि उसने जुर्म से निजात पा ली है, तो यह कहने वाले की बेवकूफी है–सुनने वाला कभी भी उसकी बात पर विश्वास नहीं करेगा।"

"राठौर के मकान की तलाशी किसने ली थी?"

"सब-इंस्पैक्टर नेगी ने–उसके साथ तीन सिपाही थे।"

"नेगी कहां है–उसे बुलाओ।"

"यस सर!" कहकर तुरंत खड़ा हो गया राणा।

नेगी उस वक्त आराम करने के लिए बैरक में लेटा हुआ था जब राणा उसके पास पहुंचा।

"साहब बुला रहे हैं तुम्हें नेगी।"

सुनकर नेगी बुरी तरह से सकपकाया—"क्या कहना चाहते हैं साहब?"

"मालूम नहीं।" बुरा-सा मुंह बनाते हुए बोला राणा और बैरक के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

चोर की दाढ़ी में तिनका—यही बात नेगी पर साबित हो रही थी—उसे लगा कि रावत को उस पर शक हो गया है लेकिन जाना तो था ही—अफसर का बुलावा था।

सो उठकर वर्दी पहनी उसने और बैरक से निकलकर उधर बढ़ गया जिधर कि रावत का ऑफिस था।

रावत चाय पी रहा था उस वक्त जिस वक्त नेगी वहां पहुंचा।

"बैठो।" चाय का घूंट भरते हुए उसे बैठने का इशारा किया रावत ने।

नेगी एक कुर्सी पर बैठ गया।

"चाय पीओगे?"

"नो सर।"

रावत आराम से चाय पीने लगा—जबकि रावत को चुप देख नेगी बार-बार पहलू बदल रहा था।

चाय पीकर राघव ने कप को एक तरफ सरकाया और नेगी की आंखों में झांकते हुए दोनों कोहनियां मेज पर टिका दीं।

"राठौर की तलाशी तुमने ही ली थी न नेगी?"

सुनकर नेगी का दिल जोरों से उछला—"य...यस सर!"

"कुछ मिला?"

"न...नहीं सर!"

"क्यों नहीं मिला?"

"म...मैंने तो तलाशी लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी सर—कुछ भी नहीं मिला।"

"कहीं ऐसा तो नहीं उसने अपना गैरकानूनी सामान इधर-उधर खिसका दिया हो?"

"म...मैं क्या कह सकता हूं सर!"—नेगी थूक निगलते हुए बोला—"बलराज गोगिया की तलाश में मैंने राठौर के घर का चप्पा-चप्पा छान मारा था।"

"उसका कोई और गोदाम—कोई ठिकाना भी पूछा था तुमने राठौर से?"

"पूछा था सर—लेकिन उसने कहा कि अब उसने गलत धंधे छोड़ दिये हैं।"

"जानते हो नेगी, बिल्ली जब आंखें बन्द करके बैठती है तो वह किसी वड़े शिकार के लिए तैयार होती है—नेगी का गुनाहों से तौबा करना ही इस बात का सबूत है कि वह कोई बड़ा कांड करने जा रहा है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा नेगी—"म...मैं कुछ समझा नहीं सर।"

रावत ने अपनी निगाहें एक्सरे की तरह उसके चेहरे पर फिक्स की और आवाज में गुर्राहट लाते हुए बोला—"सच-सच बताओ नेगी, कितना रुपया दिया था राठौर ने तुझे?"

जबरदस्त झटका लगा नेगी को—चेहरे की रंगत एकदम से स्याह पड़ गई—आंखों में खौफ के साये मंडराने लगे—जिस्म के तमाम मसामों से एक साथ पसीने की धारायें फूट निकलीं।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं सर!"

"मैं जो पूछ रहा हूं उसका जवाब दो।"—कहरभरे अंदाज में दहाड़ा रावत।

"अ...आप मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं।" नेगी हिम्मत दिखाते हुए बोला—लेकिन अन्दर-ही-अन्दर वह बुरी तरह से डरा हुआ था।

"अच्छा!"—व्यंग से मुस्कुराया रावत—"मैं तुझ पर इल्जाम लगा रहा हूं—वर्ना तुम तो डिपार्टमेंट के सबसे होनहार और ईमानदार ऑफिसर हो।"

नेगी के गले की घण्टी उछली।

"बन्ने सिंह राठौर का आदमी था—यह साबित हो चुका है—ऐसे आदमी के साथ बलराज के साथी का पकड़ा जाना क्या यह साबित करता है कि राठौर ने गलत कामों से तौबा कर ली है?"

"बन्ने उसका आदमी जरूर था—ल...लेकिन राठौर ने अपने सभी आदमियों को छोड़ दिया है।"

मुस्करा पड़ा रावत—"तुम तो राठौर की वकालत करने बैठ गये।"

बुरी तरह से हड़बड़ा गया नेगी।

"नेगी!" गुर्राहट उभरी रावत के होठों से—"राठौर जैसा शख्स गुनाह से तौबा कर ले तो उसे मौत ही गले लगाती है—जब तक वह जिन्दा है—गुनाहों का और उसका चोली-दामन का साथ रहेगा।"

नेगी होठों पर जीभ फेरकर रह गया।

एकाएक ही रावत खड़ा हो गया।

हड़बड़ाकर नेगी उसकी तरफ देखने लगा—साथ ही हड़बड़ाहट में वह खड़ा भी हो गया।

"आओ मेरे साथ।" ऑफिस से बाहर की तरफ कदम बढ़ाते हुए गुर्राया रावत।

"क...किधर सर?"

"राठौर के घर।" दरवाजा पार करते हुए बोला रावत—"उसके घर की तलाशी लेनी है—और तलाशी के दौरान तुम मेरे साथ रहोगे।"

मन-ही-मन कांप उठा नेगी—'आज नहीं बचूंगा।' मन-ही-मन बुदबुदा उठा वह।

लेकिन ऑफिस से बाहर निकलते ही उसकी आंखों में एक अनोखी चमक उभर आई—बाहर उसका साथी हवलदार रत्न सिंह खड़ा था जो कि उसी की तरह एक करप्ट पुलिसिया था।

आंखों ही आंखों में उसने रत्नसिंह को इशारा किया कि वह किधर जा रहा है—और जब वह समझ गया कि रत्नसिंह उसका इशारा समझ रहा है तो उसके चेहरे पर सन्तुष्टि के भाव उभर आये तथा होठों पर एक कमीनी मुस्कान नाचने लगी।

❑❑❑

फोन की की घण्टी घनघनाते ही विपिन हांडा ने फोन उठाया और माऊथ पीस में बोला—"हैलो।"

"कौन बोल रहा है?" उधर से आवाज आई—"मैं राठौर साहब से बात करना चाहता हूं।"

"मैं विपिन हांडा बोल रहा हूं—क्या कहना है?"

"राठौर साहब कहां हैं?"

"तुमने जो कहना है कह दो—मैं बॉस से कह दूंगा।"

"रावत राठौर साहब के घर रैड डालने आ रहा है—साथ में नेगी साहब भी हैं—रावत को नेगी पर शक हो गया है। लगता है कि वह राठौर साहब से मिला है।"

उछल पड़ा हांडा—"क...कब आ रहा है रावत?"

"यहां से चल पड़ा है।" उधर से रत्न सिंह की आवाज आई—"अब आगे तुम राठौर साहब को कैसे सूचित करते हो यह तुम्हारा काम है—मैंने सूचित करना था सो कर दिया।"

उसी के साथ उधर से फोन कट गया।

हांडा ने तुरंत ही रिसीवर क्रेडिल पर रखा और गोली की तरह दूसरे कमरे में जा पहुंचा जिसमें राठौर बैठा हुआ किसी आदमी से बात कर रहा था।

"बॉस!" राठौर के नजदीक पहुंचकर वह फुसफुसाया।

हांडा की उड़ी हुई रंगत देखकर ही राठौर समझ गया कि कोई

गम्भीर बात हो गई है—सो उसने सामने बैठे आदमी की तरफ देखा और बोला—"कल शाम तक काम हो जाना चाहिए।"

"हो जाएगा बॉस।"

कहकर वह आदमी खड़ा हो गया और वहां से चला गया।

"क्या है?" उसके जाते ही राठौर ने हांडा की तरफ देखा—"घबराया हुआ क्यों है?"

"रतन सिंह का फोन आया था बॉस।"

"उस हवलदार का?"

"हां।"

"क्या कह रहा था?"

हांडा ने उसे बता दिया।

बुरी तरह से चौंक उठा राठौर—साथ ही सोफे से खड़ा हो गया।

"फौरन जितना भी गलत सामान है उसे मेरी कार में डाल दो—और फौरन यहां से दफा हो जाओ।" हड़बड़ाहट में बोला राठौर—"और सीधा हाऊसिंह बोर्ड वाले फ्लैट में पहुंचना—वहां बलराज से बात करना।"

तुरंत ही हांडा अंदर की तरफ भागा।

पंद्रह मिनट में ही वह कार की डिग्गी में ब्राऊन शुगर की दो पेटियां रखकर कार को स्टार्ट कर रहा था।

अभी हांडा को वहां से गए दो मिनट भी नहीं बीते थे कि एक साथ तीन जिप्सियां कोठी के खुले गेट में दाखिल हुईं।

बाहर लॉन में कुर्सी पर बैठे राठौर के चेहरे पर ज़रा भी घबराहट नहीं आई—क्योंकि अपने घर में मौजूद गैरकानूनी चीज तो उसने वहां से निकाल दी थी। हां—चौंकने के भाव वह जरूर ले आया था चेहरे पर। कुर्सी से उठकर वह सबसे अगली जिप्सी में बैठे रावत और नेगी की तरफ बढ़ा।

"कैसे आना हुआ इंस्पैक्टर?" नजदीक आते ही बोला राठौर।

रावत ने राठौर के चेहरे पर नजर डाली—उसका चेहरा देखकर ही वह समझ गया था कि या तो राठौर इस कोठी में कुछ रखता ही नहीं—या उसके आने की पूर्व सूचना उसे मिल चुकी है और उसने वक्त रहते अपना गैरकानूनी सामान इधर-उधर कर दिया है।

आराम से उतरा वह जिप्सी से और राठौर की आंखों में झांकते हुए बोला—"बन्ने सिंह तुम्हारा ही आदमी था न?"

"पहले था।" राठौर बोला—"जब मैं गलत धंधा करता था—उस वक्त बन्ने सिंह मेरे लिए काम करता था—लेकिन मेरे द्वारा काम छोड़ देने के पश्चात् उसने अपने तौर पर धंधा जारी रखा।" फिर रावत की तरफ गौर से देखते हुए बोला—"सुना है कि बलराज

के आदमी ने उसे तुम्हारी मौजूदगी में गला घोंट कर मार डाला था और तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाये थे।"

हड़बड़ा गया रावत—लेकिन तुरंत ही उसने स्वयं को संयत किया और बोला—

"शहर के सबसे बड़े दादा रह चुके हो—काफी पैसा पीटा होगा—जायदाद भी काफी बनाई होगी।"

"बिल्कुल बनाई है।" मुस्कराया राठौर—"दिल्ली में एक होटल है—दो होटल यहां भी हैं—तीन कोठियां और भी हैं, कुछ फ्लैट भी खरीद रखे हैं—दो वर्कशॉप हैं।"

"इन सब स्थानों में से बलराज गोगिया को कहां छिपा रखा है?"

सुनकर इतनी बुरी तरह से बौखलाया राठौर कि रावत के होंठों पर जहरीली मुस्कान थिरक उठी।

"तुम यह क्या कह रहे हो?" किसी प्रकार स्वयं पर काबू पाते हुए दहाड़ उठा राठौर—"तुम क्या समझते हो बलराज गोगिया को मैंने छुपा रखा है?"

"मैं समझता नहीं बल्कि मुझे पूरा विश्वास है कि बलराज गोगिया तुम्हारी ही पनाह में है।"

"तो जाओ ढूंढ़ो उसे—और जब बलराज गोगिया मिल जाए तो आकर मुझे गिरफ्तार कर लेना।" गर्जा राठौर।

"राठौर!" गुर्राया रावत—"शेर अगर शिकार करना छोड़ दे तो इसका मतलब यह नहीं होता कि वह शाकाहारी हो गया है—क्योंकि मांस ही उसका भोजन है।"

"त...तुम मुझ पर बेजा इल्जाम लगा रहे हो इंस्पैक्टर—इसका परिणाम जानते हो?"

"मैं जानता हूं—तुम्हारी पहुंच बहुत ऊपर तक है—कई भ्रष्ट मंत्रियों से भी तुम्हारी सांठ-गांठ है—चौबीस घण्टों के भीतर-भीतर तुम मेरा तबादला करवा सकते हो—लेकिन इतना याद रखना राठौर!" सहसा ही उसका लहजा बेहद क्रूर हो गया—"रावत किसी पर कच्चा हाथ नहीं डालता—और जब डालता है तो मुजरिम चाहे कितनी भी पहुंच वाला क्यों न हो कुछ नहीं कर पाता—क्योंकि रावत उसे हर तरफ से घेरकर ही उसकी गर्दन दबोचता है।"

"तो जाकर पहले सबूत ढूंढ़ो, तब आकर मेरी गर्दन पर हाथ डालने की जुर्रत करना।" गुस्से से तमतमाता हुआ दहाड़ा राठौर।

"फिलहाल तो मैं जा रहा हूं—आया तो मैं तुम्हारे घर की तलाशी लेने था—लेकिन लगता है मेरे अपने ही डिपार्टमेंट के किसी गद्दार ने तुम्हें हमारे आने की खबर कर दी थी—वर्ना इस वक्त जो

सीना तुम मेरे सामने फुलाए खड़े हो तब ऐसा न होता।"

कहते हुए उसने खा जाने वाली निगाहों से अपने बगल में खड़े नेगी को देखा—फिर तेज कदमों से चलता हुआ जिप्सी में बैठ गया। उसके पीछे चलता हुआ नेगी भी उसकी बगल में आकर बैठ गया।

"मैं जा रहा हूं राठौर!" जीप में बैठते ही वह गुर्राया—"लेकिन यह मत समझना कि मैंने तुम्हें बख्श दिया है—अब से तुम्हारा उठाया गया हर कदम—तुम्हारा एक-एक पल मेरी निगाह में होगा। इसलिए अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी जान बख्शी जाए तो शराफत से बलराज गोगिया को मेरे हवाले कर देना।"

कहकर रावत ने जीप स्टार्ट की और बैक गियर लगा दिया।

उसकी बगल में बैठे नेगी के होठों पर एक कमीनी मुस्कान थिरक उठी—जिसकी तरफ अगर रावत ध्यान देता तो अवश्य ही उसका संदेह विश्वास में बदल जाता।

❑❑❑

'ट्रिर्न...ट्रिन।'

फोन की घण्टी बजते ही बलराज के पास बैठा हांडा उठा और फोन की तरफ बढ़ गया।

"हैलो!" रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोला वह।

उधर से कोई आवाज सुनकर हांडा ने बलराज गोगिया की तरफ कदम बढ़ाते हुए उससे कहा—"तुम्हारा फोन है।"

बलराज गोगिया ने फोन लिया—और माऊथ पीस में बोला—"हैलो।"

"मैं राठौर बोल रहा हूं।" उधर से आवाज आई।

"कहो क्या बात है?" बलराज गोगिया बोला।

"पुलिस को मुझ पर शक हो गया है कि तुम मेरे यहां छुपे हुए हो।"

"ओह!"

"मुझे लगता है कि पुलिस ने मेरी निगरानी भी शुरू कर दी है—इसलिए फिलहाल मैं तुम्हें नहीं मिल सकता—तुम हांडा से कह देना—वह तुम्हें वैगन उपलब्ध करवा देगा—बिल्कुल वैसी ही—मैंने अपने आदमी से वैसी वैगन तैयार करने को कह दिया है। और साथ ही जो कुछ तुम्हें चाहिए—वह तुम हांडा से बोल देना।"

"ठीक है—मैं बोल दूंगा—लेकिन कल शाम को।"

"मैं वक्त पर तुम्हारे बताये स्थान पर पहुंच जाऊंगा।" राठौर की आवाज आई—"तुम हांडा को वह जगह समझा देना।"

"और वह जगह!" बलराज गोगिया ने पूछा—"जहां वैगन को छुपाना है?"

"उसके बारे में मैं कल सुबह फिर फोन पर ही सूचना दे दूंगा।"

"ठीक है—अपना ख्याल रखना।"

"फोन हांडा को दो—मैं उसे सब कुछ समझा देता हूं।"

बलराज गोगिया ने फोन हांडा की तरफ बढ़ाया और बोला—"राठौर तुझसे बात करना चाहता है।"

हांडा ने फोन पकड़कर कान से लगा लिया।

"कुछ देर हूं—हां—यस बास!" इतना कहने के पश्चात् उसने फोन वापिस क्रेडिल पर रख दिया और बलराज की तरफ देखते हुए बोला—"बॉस ने....।"

"मुझे मालूम है।" उसकी बात शुरू करते ही बोल पड़ा बलराज गोगिया—"तुम किसी ऐसे शख्स को ला सकते हो जो मेकअप करने में इतना माहिर हो कि चेहरा ही बदल डाले?"

"मेकअप किसका करना है।" हांडा ने पूछा।

"मेरा।"

"कल सुबह ही ले आऊंगा।"

"ठीक है—अब तुम जाओ—और हां।" कुछ याद आते ही बोला बलराज गोगिया—"वैगन के दरवाजे का की-होल ऐसा हो कि बैंक मैनेजर की चाबी उसमें इस तरह घूमे कि उसे जरा भी शक न हो कि वह किसी और ताले में कोई और चाबी लगा रहा है—इसके लिए तुम जुनेजा और मनोहर से बात कर लेना—वे तुम्हें अच्छी तरह समझा देंगे।"

"बेहतर।" हांडा बोला—"मैं उनसे मिल लूंगा।"

"और जरा राघव को साथ वाले कमरे से उठा देना—दो घण्टे से घोड़े बेचकर सो रहा है।"

राघव का नाम सुनते ही हांडा का मुंह बिगड़ गया—वह बलराज के और निकट आया और भेदभरे स्वर में बोला—"एक बात कहना चाहता हूं बलराज गोगिया।"

मुस्करा पड़ा बलराज गोगिया—जैसे वह जान गया हो कि हांडा क्या कहना चाहता है—फिर भी वह बोला—"कहो—क्या कहना चाहते हो?"

"वो ठिंगू।" उसका इशारा सरासर राघव की तरफ था—"आपका दोस्त है—आपके लिए उसने वन्ने सिंह का कत्ल कर दिया।"

"तो?"

"वन्ने सिंह जो एक मरियल कुत्ते से ज्यादा ताकतवर नहीं

था—उसे कत्ल किया उसने लेकिन उस एक कत्ल से वह अपने आप को जारे खाक समझने लगा है—जिस प्रकार उसने मुझे आपके सामने तंग किया—सच कहता हूं अगर आपकी शर्म न होती तो।"

"तो तुम उसे जमीन में गाड़ देते।" उसे चुप होते देख बलराज गोगिया ने उसकी बात को पूरा किया।

"हां।" थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला हांडा।

"सचमुच तुम्हारा विशाल आकार और उभरे हुए मसल्ज देखकर तो ऐसा ही लगता है कि तुम राघव को आसानी से धूल चटा सकते हो—तुम ऐसा करो।" कुछ सोचते हुए बोला बलराज—"अपने जैसे एक और आदमी को जो कि तुम्हारी ही तरह पहलवान हो कल सुबह अपने साथ ले आना।"

"एक और आदमी।" चौंकने के साथ हड़बड़ाया हांडा—"क—क्यों?"

"दरअसल राघव को एक आदमी से लड़ते हुए मजा नहीं आता—कल तुम एक और को साथ ले आना और बेशक राघव को जान से मार देना—मैं तुम्हें कोई उलाहना नहीं दूंगा।"

सुनकर पहले तो हड़बड़ा गया हांडा—फिर बलराज गोगिया को घूरते हुए बोला—"कहीं आप यह तो नहीं समझ रहे कि राघव हम दोनों को धूल चटा देगा?"

"वह अगर तुम दोनों को मार भी डाले तो कोई बड़ी बात नहीं।" मुस्कराया बलराज—"बर्खुरदार! राघव के कद-बुत को देखा तूने—उसके अन्दर छिपी असीम ताकत को तुमने नहीं देखा—तभी उसे आसानी से मसल देने की बात कह रहे हो। वैसे भी राघव से यह इल्तजा करूंगा कि अगर तुम हार जाओ तो तुम्हें जान से न मारे।"

बलराज गोगिया की बातें हांडा के लिए सरासर अपमान थीं—तभी तो उसका चेहरा भभक उठा था।

"मैं कल सुबह अपने एक और साथी को लेकर आऊंगा।" भेड़िए की सी गुर्राहट निकली उसके मुख से।

बलराज गोगिया कुछ नहीं बोला—बस उसके होठों पर एक ऐसी मुस्कान नाचने लगी जैसे हांडा की जवानी पर तरस आ रहा हो।

हांडा राघव के कमरे की तरफ जाने लगा तो बलराज गोगिया ने उसे रोक दिया—

"रहने दो—उसे मैं उठा लूंगा—तुम जाओ—दण्ड बैठकें पेलनी शुरू कर दो।"

यह हांडा के लिए और भी अपमान की बात थी—आंखें जल

उठीं उसकी और वह बलराज की आंखों में अपनी जलती हुई आंखों को डालते हुए गुर्राया—

"हांडा को दण्ड पेलने की जरूरत नहीं—वह हर वक्त तैयार रहता है—मैं तो अब भी उससे दो-दो हाथ करने को तैयार हूं—लेकिन तुम यह कहते हो कि उसे दो आदमियों से लड़ने में मजा आता है।"

"यानि तुम अकेले ही उसे धूल चटा सकते हो?"

"हां।"

"ठीक है।" बलराज गोगिया ने कंधे उचकाये—"तो जाकर राघव को सोते हुए में ही थप्पड़ मार दो। यूं भी कल का सारा दिन व्यस्तता से भरा होगा—अगर तुम्हारी कोई हड्डी-पसली टूट गई तो मुश्किल पड़ जाएगी।"

हांडा तप तो रहा ही था—बलराज गोगिया की आज्ञा मिलते ही वह तेजी से उस कमरे की तरफ बढ़ा जिधर कि राघव सोया पड़ा था।

वह अभी सो रहा था।

उत्तेजना से भरा हुआ हांडा उसके पलंग के करीब पहुंचा और झन्नाटेदार थप्पड़ राघव के चेहरे पर रसीद कर दिया—।

'तड़ाक' की आवाज के साथ ही राघव का जिस्म खिलौने की तरह उछलकर पलंग से नीचे आ गिरा।

उसी के साथ ही आंखें खुल गईं राघव की। हाथ अपने आप ही अपने गाल पर चला गया।

जैसे ही उसकी निगाहें हांडा पर पड़ीं, उसकी निगाहों में कहर बरसने लगा।

"तूने मुझे मारा?" स्वर में हल्की-सी गुर्राहट उभर आई थी उसके।

"बलराज गोगिया ने तो मुझे तेरे को खत्म करने को कह दिया है।" हांडा जहरीली मुस्कान के साथ बोला।

सुनकर पहले तो चौंका राघव—फिर उसके होठों पर एक जहरीली मुस्कान थिरक उठी।

वह समझ गया कि बलराज गोगिया क्या चाहता है?

"ठीक है।" दोनों हाथों को विपरीत दिशा में फैलाते हुए कंधे उचकाये उसने—"अगर मेरा यार चाहता है तो आओ खत्म कर दो मुझे।"

कहने के साथ ही वह उछला और बिस्तर पर खड़ा हो गया।

हांडा खतरनाक भाव लिए उसकी तरफ बढ़ा—लेकिन तभी राघव अपने हाथ आगे कर उसे रोकते हुए बोला—"जरा ठहर गैंडे भाई।"

गैंडे के नाम ने ही हांडा का पारा और ज्यादा बढ़ा दिया और उसने उसकी बात सुने बिना ही राघव पर छलांग लगा दी।

शुक्र था कि राघव बिस्तर पर खड़ा था—वर्ना वह फर्श पर खड़ा होता तो अवश्य ही हांडा की ठुड्डी टूट जानी थी—मुंह के बल बिस्तर पर गिरा था वह और राघव छलांग मारकर नीचे फर्श पर पहुंच चुका था।

"देखा—खा गया न खता।" फर्श पर पहुंचते ही बोला वह—"मैंने तुझे कहा भी था कि पहले मेरी बात सुन ले—मगर तेरे को तो जैसे मुझे खत्म करने की जल्दी पड़ी हुई थी।"

राघव के व्यंग ने हांडा का क्रोध एक साथ कई गुणा बढ़ा दिया—झटके से वह सीधा हुआ और टक्कर मारने वाले अंदाज में भैंसे की तरह सिर आगे को किये राघव की तरफ दौड़ा।

'धड़ाक' की तेज आवाज हुई और उसका सिर सीधा दीवार से जा टकराया—लाल-पीले तारे नाचने लगे हांडा की आंखों के सामने।

सिर को झटका देकर उसने अपने होशो-हवास पर काबू पाया और सीधा होकर घूम गया।

राघव उसके पीछे खड़ा मुस्करा रहा था।

"तू सारी उम्र भी मुझे पकड़ने की कोशिश करता रहे—तो भी मुझे छू नहीं पायेगा।" राघव व्यंगभरे अंदाज में बोला—"अगर विश्वास नहीं तो कोशिश करके देख ले।"

बुरी तरह से ताव खाया हांडा—उसकी तरफ लपका—लेकिन राघव उसकी टांगों के नीचे से होकर उसके पीछे पहुंच गया—और हांडा पुनः सामने वाली दीवार से टकराया।

लगभग दस मिनट तक वह उसे पकड़ने में ही भागदौड़ करता रहा—और इस भागदौड़ में उसका सिर फट चुका था। नाक से भी खून बहने लगा था। जबकि राघव ने अभी उसे हाथ भी नहीं लगाया था।

इस वक्त हांडा पलंग के समीप खड़ा उसे खा जाने वाली निगाहों से देखता भैंसे की तरह हांफ रहा था।

"एक बार हाथ आ जा बच्चू।" हांफते हुए ही फुंफकारा हांडा—"कीमा बनाकर रख दूंगा।"

राघव मुस्कुराया—मन-ही-मन उसने इस भागदौड़ को खत्म करने का निश्चय कर लिया और फिर अगले ही पल उसका जिस्म अपने स्थान पर सीधा पलंग पर जा पड़ा।

"ले मेरे भाई!" उसके सामने खड़ा होते हुए बोला राघव—"अपनी यह हसरत भी पूरी कर ले।"

हांडा तुरंत ही उस पर झपटा—लेकिन इस बार राघव ने बचाव की कोई कोशिश न की—वह पूर्ववतः ही खड़ा रहा। हांडा ने उसे खिलौने की तरह उठा लिया और आंखों में खूनी चमक लिए गुर्राया—"अब बोल हरामजादे—कौन-सी मौत मारूं तुझे?"

"जैसी तू पसंद करे।" राघव बोला। लेकिन इतना याद रख ले—अगर तूने मेरा कीमा नहीं बनाया तो मैं तेरा मुरब्बा जरूर बना दूंगा।"

"ऐसी नौबत नहीं आयेगी।" खूनी अंदाज में फुंफकारा हांडा और फिर अपने हाथों में ही उसे खत्म कर देने के लिए हाथों से भींचने लगा। लगता था उसे अपनी उंगलियों पर कुछ ज्यादा ही भरोसा था।

लेकिन फौलाद का बना था राघव भी—उसे पीसना आसान नहीं था।

हांडा के चेहरे पर पसीने की बूंदें नाचने लगीं—लेकिन राघव के चेहरे से कहीं से भी ऐसा अहसास नहीं हो रहा था कि उसे कहीं से कोई तकलीफ हो रही है।

आखिर जब हांडा अपनी इस कोशिश में नाकाम रहा तो उसने राघव को इस प्रकार उल्टा किया कि राघव का सिर फर्श की तरफ हो गया और टांगें ऊपर छत की तरफ—और फिर पूरी ताकत से उसे जमीन पर पटक दिया।

हांडा को उम्मीद थी कि जमीन से टकराते ही राघव का सिर तरबूज की भांति बिखर जाएगा—लेकिन उस वक्त उसकी आंखें आश्चर्य से भर गईं जब उसने राघव को मुस्कुराते हुए कमर पर हाथ रखे अपनी तरफ देखते हुये एकदम सही-सलामत देखा।

राघव का सिर फर्श से टकराया भी था 'भड़ाक' की आवाज भी हुई थी—लेकिन उसके सिर को कुछ नहीं हुआ था—हां, फर्श का वह भाग जरूर थोड़ा उखड़ गया था जहां पर राघव का सिर टकराया था।

पहली बार हांडा की आंखों में हल्की-सी दहशत के भाव उभरे।

"गैंडे...!" राघव का लहजा हल्का-सा गुर्राहटभरा था—"मैंने तुझसे कहा था कि कि अगर तू मेरा कीमा नहीं बना पाया तो मैं तेरा मुरब्बा बना दूंगा—तू तो मेरा कीमा नहीं बना पाया—अब देख मैं तेरा मुरब्बा कैसे बनाता हूं।"

उसी के साथ ही रबड़ के बबुए की तहर उछला राघव का जिस्म और उसका सिर हांडा के विशाल सीने से टकराया।

भैंसे की तरह ड़कराता हुआ हांडा उछलकर पीछे को जा गिरा—ऐसा महसूस हुआ जैसे सीने की पांच-सात हड्डियां टूट गई हों।

आंखों में दहशत के भाव उभर आये थे—चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं। फटी-फटी आंखों से वह अपने से दूर खड़े राघव को देख रहा था कि जिसका कद तो चने के बराबर था—मगर ताकत तरबूज से भी ज्यादा थी।

इससे पहले कि राघव उस पर दूसरा वार करता—कमरे में बलराज ने प्रवेश किया।

"हटो राघव...!" राघव को उस पर छलांग लगाने को तत्पर देख बलराज उसे रोकते हुए बोला—"मेरा ख्याल है हांडा के लिए इतना सबक काफी है।"

राघव का उड़ान भरने को तैयार जिस्म वहीं थम गया।

बलराज़ गोगिया हांडा के करीब पहुंचा और हाथ आगे बढ़ा दिया।

चेहरे पर पीड़ा के भाव लिए हांडा ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया। बलराज़ ने खींचकर उसे खड़ा किया और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—

"अगर चाहो तो कल अपने साथी को साथ ला सकते हो—लेकिन इतना याद रखना उस वक्त मैं राघव को पूरी छूट दे दूंगा कि वह तुम्हें जान से मार दे।"

हांडा का पूरा जिस्म फुरफुरी लेकर रह गया। राघव से अब उसे खौफ लगने लगा था।

उसके चेहरे पर नाच रहे खौफ को देखकर बलराज गोगिया मुस्कुराया—"आदमी का कद छोटा होने का यह मतलब नहीं होता कि उसमें ताकत की कमी है—राघव तुम जैसे चार पहाड़ों को अकेला धूल चटा सकता है—उसने तुमसे थोड़ा-सा मजाक क्या कर लिया तुम उसे हिमाकत से देखने लगे—जैसे राघव कुछ है ही नहीं।"

हांडा ने बड़े जोरों से थूक निगली। उसके साथ ही उसकी निगाहें भी झुक गईं।

"अ...आई एम सॉरी।" बड़ी मुश्किल से बोल पाया वह।

बलराज गोगिया ने उसका कंधा थपथपाया और बोला—"राघव को तुमसे कोई वैर नहीं—बस उसकी मजाक करने की थोड़ी आदत है—दोस्त बनकर रहोगे तो उसका किया मजाक तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।"

हांडा कुछ नहीं बोला—बस राघव की तरफ देखने लगा।

अपनी तरफ देखते पा राघव मुस्कुरा पड़ा—साथ ही उसने अपनी बाईं आंख दबा दी।

बौखलाकर हांडा ने मुंह परे फेर लिया।

❑❑❑

शाम को तीन बजे विपिन हांडा जब बलराज गोगिया के सामने आया तो उसके साथ तीन आदमी और थे तथा साथ में एक खूबसूरत लड़की थी।

लड़की की उम्र करीब अट्ठारह-उन्नीस वर्ष थी—चेहरा भोला-भाला—रंग गोरा-चिट्टा—पहाड़ों की चोटियों की तरह तने उरोज।

कुल मिलाकर उस लड़की में हर वह शै थी जो कि बलराज चाहता था।

"इसका नाम बिजली है।" हांडा लड़की की तरफ इशारा करते हुए बोला—"बॉस ने भेजा है इसे।"

बिजली मुस्कुराई।

प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया भी मुस्कराया—और फिर नज़दीक बैठें राघव की तरफ देखा—

"लड़कियां परखने का तो तुझे बहुत पुराना तजुर्बा है राघव—कैसी रहेगी यह?"

राघव ने लड़की की तरफ देखा—मुस्कराया—"खेली-खाई लगती है।" वह बोला।

बलराज गोगिया ने हांडा के साथ आये तीनों आदमियों की तरफ देखा।

तीनों ही शक्लो-सूरत से एकदम सतर्क नजर आ रहे थे—आंखों में एक अनोखी ही चमक थी।

"यह चमनसिंह है।"—हांडा तीनों का परिचय देते हुए बोला—"यह उदय सिंह और यह भैरो सिंह।"

"तीनों को इनका काम समझा दिया?" बलराज गोगिया ने पूछा।

"हां।"—हांडा बोला—"लेकिन एक बार अगर आप समझा दें तो ज्यादा बेहतर होगा।"

बलराज उन्हें उनका काम समझाने लगा—तीनों समझने वाले अंदाज में सिर हिलाने लगे।

"काम खतरनाक है।"—बात खत्म कर तीनों से बोला—"जान भी जा सकती है—इसलिए अगर चाहो तो अभी भी अपने पैर वापिस खींच सकते हो।"

"आप इत्मीनान रखिये—हमारी तरफ से कोई शिकायत नहीं होगी आपको।" भैरो सिंह तसल्ली देने वाले अंदाज में बोला।

"ड्राईविंग जानते हो?"

"तीनों ही जानते हैं।" किसी के बोलने से पहले ही हांडा बोल पड़ा था।

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और अपनी गर्दन बिजली की तरफ घुमा दी।

"राघव की पारखी नजरें कह रही हैं कि तुम खेली-खाई लड़की हो।"—बिजली की आंखों में झांकते हुए बोला वह—"लेकिन तुमने मर्दों के साथ सिर्फ बंद कमरों में ही कुश्ती खेली होगी—कई मर्दों को चित भी किया होगा--मगर।"—कहकर वह मुस्कराया और आगे बोला—"जो काम तुम्हें करना है उसमें तुम्हें बीच सड़क पर नंगा होना पड़ेगा—कर सकोगी ऐसा?"

बिजली सहमति के भाव में हौले से हँसी।

तत्पश्चात् बलराज गोगिया बिजली को उसका काम समझाने लगा कि उसे क्या करना है?

"एक सलाह मैं भी दूं।" बलराज गोगिया के चुप होते ही बिजली बोली।

बलराज गोगिया के साथ-साथ हांडा और राघव भी चौंक कर उसकी तरफ देखने लगे।

"क्या कहना चाहती हो?"

"तुमने यह कहा कि!"—बिजली किसी के भी घूरने की परवाह किये बिना बोली—"मुझे सड़क पर अपने कपड़े फाड़कर लेट जाना है—ताकि वैगन के ड्राईवर को लगे कि मुझसे बलात्कार हुआ है और मैं बेहोश पड़ी हूं। लेकिन इससे ड्राईवर यह भी तो सोच सकता है कि लड़की का इस प्रकार सड़क पर बेहोश पड़े होना किसी षड्यन्त्र का हिस्सा भी तो हो सकता है।"

बलराज गोगिया की आंखें सिकुड़ गईं—"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"यही कि अगर वैगन के आने से पहले ही सड़क पर मुझसे सचमुच का बलात्कार शुरू हो जाए जो कि वैगन के आने तक जारी रहे तो ड्रामे का रंग कुछ ज्यादा ही चढ़ेगा—इसके अलावा नजदीक ही कोई कार वगैरह खड़ी कर ली जाए, ताकि ड्राईवर यह समझे कि चार-पांच युवक एक युवती का अपहरण करके कार द्वारा वहां तक लाये—और उससे बलात्कार करने लगे।"

बलराज गोगिया के होंठ फैल गए—"आइडिया अच्छा है।"

"थैंक्यू!" बिजली की गर्दन अकड़ गई।

बलराज गोगिया ने बिजली पर से निगाहें हटाईं और हांडा की तरफ देखने लगा—"वैगन तैयार हो गई?"

"जी हां।" तत्परता से बोला हांडा—"बस ताला लगाना रह गया है—वैगन वर्कशॉप में खड़ी है—चाहें तो देख सकते हैं।"

"मनोहर और जुनेजा से मिले थे?"

"हां—उन्होंने चाबी के बारे में हमारे मिस्त्री को समझा दिया था।"

"चलो।" खड़ा होते हुए बोला बलराज गोगिया—"चलकर वैगन देख ली जाए।"

बलराज गोगिया के साथ-साथ राघव भी खड़ा हो गया।

"तुम यहीं रहोगे।"—बलराज गोगिया ने तीनों चमन सिंह, भैरो सिंह, उदय सिंह की तरफ देखा—"और तुम भी।"—उसने बिजली से कहा—"चाहो तो अपनी बदन की ताकत इन तीनों द्वारा आजमा सकती हो।"

मुस्करा पड़ी बिजली, उसके साथ ही उसकी निगाहें तीनों की तरफ घूम गईं।

तीनों के चेहरे पर एक अनोखी चमक नाचने लगी थी बलराज गोगिया की बात सुनकर।

बाहर काले शीशों वाली फीयेट खड़ी थी—बलराज और राघव पिछली सीट पर बैठ गये, जबकि हांडा ने ड्राइविंग सीट सम्भाल ली।

❑❑❑

मन-ही-मन तारीफ किये बिना नहीं रह सका बलराज गोगिया राठौर की जिसने इतने कम वक्त में हू-ब-हू वैसी ही वैगन तैयार करवा दी थी। जिस वक्त बलराज गोगिया वर्कशॉप में पहुंचा उस वक्त वैगन पूरी तरह से तैयार हो चुकी थी।

पिछला दरवाजा खोलकर बलराज गोगिया ने वैगन के अन्दर झांका—अन्दर दाईं तरफ एक छोटा-सा केबिन बना हुआ था।

"यह केबिन!"—तभी पीछे से हांडा बोल पड़ा—"टायलेट है—उस वैगन में भी ऐसा ही एक केबिन बना हुआ है—बिल्कुल इसी कम्पनी का पंखा लगा हुआ है—मॉडल भी वही है जो कि असली वैगन में है।"

"जुनेजा या मनोहर ने बताया होगा यह सब?" गर्दन वापिस बाहर निकालकर वह हांडा की तरफ देखते हुए बोला।

"जी हां।"

वैगन से पूरी तरह आश्वस्त नजर आ रहा बलराज गोगिया, सो वह ड्राईविंग केबिन की तरफ बढ़ गया। ड्राईविंग केबिन का बाहर से—अन्दर से अच्छी तरह से जायजा लेकर उसने संतुष्टि से सिर हिलाया और फिर अपने पीछे खड़े हांडा की तरफ देखते हुए बोला—

"राठौर का कोई मैसेज मिला?"

"नहीं—अभी तक बॉस की तरफ से कोई मैसेज नहीं मिला।" इन्कार में सिर हिलाते हुए कहा हांडा ने।

बलराज गोगिया चुप हो गया।

❑❑❑

अगले दिन सुबह दस बजे ही रावत को कमिश्नर का बुलावा आ गया। रावत जब कमिश्नर के ऑफिस के सामने पहुंचा तो वहां पहले से कई और पुलिस जिप्सियां और कारें खड़ी थीं और कई अभी आ रही थीं।

उन कारों-जिप्सियों को देखकर रावत समझ गया कि कमिश्नर ने सभी को क्यों बुलाया है?

आज बैंक से पच्चीस करोड़ की रकम निकलनी थी जो कि सरकारी वैन द्वारा जयपुर के लिए रवाना होनी थी उसी के लिए मीटिंग बुलाई थी कमिश्नर ने। ऐसी मीटिंग हर महीने की पहली तारीख को होती थी।

लेकिन हर बार हुई मीटिंग में एक फॉरमैलिटी होती थी कि बैंक में डाका न पड़ने पाये—इसलिए बैंक को चारों तरफ से घेर लिया जाए।

मगर इस बार होने वाली मीटिंग महत्वपूर्ण थी। कारण रावत जानता था।

रावत अपनी जिप्सी से उतरा और कमिश्नर के ऑफिस की बगल में बने उस बडे हॉल की तरफ बढ़ गया जो कि सिर्फ पुलिस मीटिंग के लिए ही प्रयोग होता था।

हॉल में करीब डेढ़ सौ पड़ी कुर्सियों में से आधी से अधिक कुर्सियां पुलिस अफसरों से भरी हुई थीं—रावत चलता हुआ पीछे वाली कुर्सियों में से एक पर बैठ गया।

करीब पंद्रह मिनट बाद कमिश्नर ने हॉल में प्रवेश किया—और दाईं तरफ लगी स्टेज पर चढ़कर उस पर रखी ऊंची पुश्त वाली कुर्सी पर विराजमान हो गए।

उनके हॉल में प्रवेश करते ही आपस में बातें कर रहे पुलिस ऑफिसर चुप हो उनकी तरफ देखने लगे थे।

कमिश्नर ने एक निगाह हॉल में मौजूद अपने मातहतों पर डाली—फिर धीर-गम्भीर आवाज में कहने लगे—"ऑफिसर्स! ऐसी मीटिंग आज पहली बार नहीं हो रही—इससे पहले भी महीने की हर पहली तारीख को मीटिंग होती रही है—और आगे भी होती रहेगी—मीटिंग बुलाने का उद्देश्य भी यही होगा कि बैंक से निकलने वाली पच्चीस करोड़ की धनराशि की सुरक्षा कैसे की जाए?"

कहकर एक लम्बी सांस छोड़ी उन्होंने—कुछ क्षण रुकी फिर आगे कहने लगे—

"मगर आज होने वाली यह मीटिंग बेहद महत्वपूर्ण है—बेशक मीटिंग उन पच्चीस करोड़ की सुरक्षा के लिए की जा रही है—लेकिन

फिर भी मीटिंग महत्वपूर्ण है—और इसका कारण है बलराज गोगिया। एक ऐसा दिमागदार अपराधी जिसने अपने पहले ही कारनामे से पूरी पुलिस का ध्यान अपनी तरफ करने पर मजबूर कर दिया—चण्डीगढ़ में जिस ढंग से उसने मूर्ति चुराई—वह उसके दिमाग का ही कारनामा था—उसके पश्चात् उसने गंगानगर में पैर रखा और यहां आते ही अपना रंग दिखा दिया।"

कहते हुए कमिश्नर की आवाज में हल्का-सा कम्पन आ गया था—अपने मुंह से तो वे नहीं बोल पाये कि उसने उनकी पत्नी को बंधक बना लिया था—लेकिन वहां मौजूद हर पुलिसिया समझ रहा था।

"वही बलराज गोगिया।"—कमिश्नर आगे बोले—"अभी भी गंगानगर में है—हो सकता है वह शहर छोड़ गया हो, क्योंकि पिछले दो दिनों से उसने कोई ऐसी हरकत नहीं की जिससे कि उसकी गंगानगर में उपस्थिति का आभास हो—मगर यह खामोशी आने वाले तूफान का सूचक भी हो सकती है। बलराज गोगिया का गंगानगर में आना इस तरफ साफ इशारा करता है कि उसके इरादे खतरनाक है—वह बैंक का पच्चीस करोड़ रुपया लूटने के लिए ही आया है—और हमें उसके इरादों को न केवल असफल करना है बल्कि उसे गिरफ्तार भी करना है—अगर वह गिरफ्तार नहीं होता तो उसके जिस्म में इतना बारूद भर दो कि उसके जिस्म पर मांस का लोथड़ा तक न बचे।"

कमिश्नर चुप हुए—सामने एक छोटी मेज पर रखे पानी के गिलास को उठा कर दो घूंट भरे और गिलास पुनः मेज पर रखकर रूमाल निकालकर होठों को साफ करके रुमाल जेब में वापिस रखते हुए बोले—"आज की मीटिंग के दो उद्देय है—पहला पच्चीस करोड़ की रकम की सुरक्षा कैसे की जाए—बलराज गोगिया ने उसे कैसे बचाया जाए—और दूसरा उद्देश्य बलराज गोगिया को गिरफ्तार कैसे किया जाए। अगर हमारी सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होगी तो बलराज गोगिया कभी भी अपने उद्देश्य में कामयाब नहीं हो पायेगा—उस वक्त या तो वह पीछे हट जायेगा या हमारे रचे गए चक्रव्यूह में जानबूझकर मरने के लिए कूद जा ा।"

"सो...आप सभी अपने—सुझाव देने के लिए आमन्त्रित हैं—ताकि पच्चीस करोड़ की सुरक्षा के लिए इंतजाम अधिक से अधिक सुदृढ़ किये जा सकें।"

अपनी बात पूरी कर कमिश्नर चुप हो गए और वहां मौजूद ऑफिसरों पर नजरें डालने लगे।

"सर...!" तभी एस०पी० रैंक का एक ऑफिसर खड़ा हुआ।

कमिश्नर के साथ-साथ सभी की निगाहें उसकी तरफ उठ गईं। सभी का ध्यान अपनी तरफ देख एस०पी० कहने लगा—

"हमेशा की तरह इस बार भी बैंक को चारों तरफ से घेरा जाएगा—क्योंकि डाका पड़ने की सबसे प्रबल सम्भावना तभी होती है जब रुपया स्ट्रांग रूम से निकालकर वैगन में शिफ्ट किया जा रहा होता है केवल वही वक्त है जब बलराज गोगिया बैंक पर हमला बोलकर रुपया लूटने की कोशिश कर सकता है—एक बार वैगन का दरवाजा लॉक हो जाने के उपरांत बलराज गोगिया लाख यत्नों के पश्चात् भी उसे नहीं खोल पायेगा—चूंकि वैगन का ड्राईविंग केबिन भी बुलेटप्रूफ है—इसलिए यह भी मुमकिन नहीं कि बलराज गोगिया रास्ते में कहीं वैगन को जबरदस्ती रुकवाकर लूट ले। डाका डालने का उसके पास वही वक्त होगा जब वैगन में रुपया रखा जा रहा होगा।"

"इसलिए मेरा सुझाव यह है कि हमेशा की तरह इस बार भी बैंक के चारों तरफ साधारण तौर पर घेरा डाला जाए ताकि बलराज गोगिया को सपने में भी शक न हो कि पुलिस उसके इरादे को जान चुकी है। बलराज गोगिया धड़ल्ले से या किसी और तरीके से बैंक में प्रवेश करेगा—बस बैंक में प्रवेश करना ही उसके लिए मौत के चक्रव्यूह में फंसने के बराबर होगा—बाहर से हमारा पहरा जितना साधारण होगा अन्दर से उतना ही सख्त—बलराज गोगिया की बाट में कई पुलिस कर्मी हाथों में गनें लिए वैन के अन्दर छिने होंगे और जैसे ही बलराज गोगिया बैंक में प्रवेश करेगा उस पर चारों तरफ से गोलियों की बरसात शुरू हो जाएगी—इस प्रकार उसका अभियान शुरू होने से पहले ही वह मौत के आगोश में समा जाएगा।"

एस०पी० की बात पूरी होते ही सबने तालियां बजाकर उसके सुझाव का समर्थन किया।

एस०पी० मुस्कराते हुए अपनी सीट पर बैठ गया।

कमिश्नर ने हाथ उठाकर शांत होने का इशारा किया—फौरन तालियों की गड़गड़ाहट खत्म हो गई और हॉल में पुनः शान्ति छा गई।

"आप सभी की तालियों से यह जाहिर होता है कि सबने एस०पी० के सुझाव को पसंद किया। मुझे भी यह सुझाव पसंद आया—कोई और ऑफिसर—जो एस०पी० की बताई सुरक्षा व्यवस्था में और ज्यादा सुधार लाना चाहता हो—बेखटके बोल सकता है ताकि सुरक्षा व्यवस्था को अधिक से अधिक सुदृढ़ किया जा सके।"

"सर!"—तभी रावत अपने स्थान पर खड़ा होते हुए बोला—"एक छोटा-सा सुझाव देने की आज्ञा चाहता हूं।"

"बोलो—क्या कहना चाहते हो?" कमिश्नर बोले।

"अगर बैंक में प्रवेश करने के तमाम रास्तों पर जैसे बैंक की छत-खिड़कियों—या जो कोई भी ऐसा रास्ता है जिसमें से बलराज गोगिया के बैंक में प्रवेश करने की सम्भावना हो सकती है उन तमाम रास्तों में ऐसे सर्किट फिट कर दिये जाएं कि जैसे ही बलराज गोगिया या उसका कोई भी साथी उस रास्ते से बैंक में प्रवेश करने की कोशिश करे तो बैंक के अन्दर फौरन सायरन बज उठे—उससे बैंक में मौजूद हमारे सिपाही पूरी तरह से सतर्क हो जाएंगे—और साथ ही बाहर घेरा डाले पुलिसकर्मी भी सतर्क हो जाएंगे—फिर बलराज गोगिया को वापिस भागने का भी मौका नहीं मिल जायेगा—उससे पहले ही मौत उसे अपनी आगोश में ले लेगी।"

"लेकिन ऐसे सर्किट फिट करने में काफी वक्त लग जाएगा—जबकि वैगन आज शाम चार बजे बैंक में पहुंच जाएगी।"

"यह काम चार बजे से पहले हो जाएगा।"

"ठीक है।" बोले कमिश्नर—"फौरन बैंक में प्रवेश करने के सभी रास्तों पर सर्किट फिट करवा दो।"

"यस सर...।"

"और राठौर का क्या हुआ इंस्पेक्टर?"

"अभी तक तो वह अपने घर से बाहर नहीं निकला सर—वैसे उसकी निगरानी हो रही है।"

"तुम क्या समझते हो—राठौर ने बलराज़ को पनाह दी होगी?"

"बन्ने सिंह के कारण सारा संदेह राठौर पर ही जाता है सर।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि राठौर सच कह रहा हो—उसने जुर्म से तौबा कर ली हो?"

"ऐसा लगता तो नहीं सर—क्योंकि जुर्म का नशा जिसके दिलो-दिमाग पर चढ़ जाता है वह आसानी से नहीं उतरता—और राठौर तो जुर्म करने का आदी हो चुका था।"

"लेकिन उसका अभी तक अपने घर में हीं होना क्या इस और संकेत करता है कि बलराज गोगिया के साथ उसका कोई सम्बंध नहीं है—अगर होता तो वह इस वक्त भाग दौड़ में लगा होता बलराज गोगिया के साथ मीटिंग कर रहा होता।"

"यह भी हो सकता है सर कि बलराज का पच्चीस करोड़ लूटने का इरादा ही न हो—या उसे इसकी जानकारी ही न हो।"

"क...क्या?" बुरी तरह से चौंक पड़े कमिश्नर।

सिर्फ कमिश्नर ही क्यों, हॉल में मौजूद हर ऑफिसर हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा था।

"यस सर!"—रावत अपने धड़कते दिल को किसी प्रकार काबू में लाने की कोशिश करते हुए बोला—

"पच्चीस करोड़ रुपया बलराज गोगिया लूट सकता है—या उसके इरादे हो सकते हैं बैंक लूटने के—ऐसी केवल सम्भावना है हमारे दिमाग में—हमारे किसी मुखबिर ने हमें यह सूचना नहीं दी कि बलराज पच्चीस करोड़ लूटने का प्लान बना रहा है और न ही किसी अन्य सोर्सिस से हमें पता चला है।"

रावत कह रहा था—

"जबकि बन्ने सिंह के राठौर के साथी होने की हमें जानकारी थी—और बन्ने सिंह के साथ राघव जो कि बलराज गोगिया का जोड़ीदार है, भी गिरफ्तार हुआ था—इस कारण राठौर पर संदेह हो जाता है कि बलराज गोगिया का राठौर के साथ सम्बंध हो सकता है।"

रावत की बात्त सटीक थी—सो कमिश्नर कुछ न बोले।

पुनः हॉल में मौजूद अफसरों पर नजर डाली और फिर उन्हें आदेश देने लगे—साथ ही उनके साथ सुझाव भी ले रहे थे वे।

❑❑❑

विपिन हांडा जब कमरे में प्रविष्ट हुआ जो उसके साथ एक और आदमी था। पतला-सा मरियल-सा वह आदमी हाथ में एक बैग लटकाये हुए था।

"यह मोनी है।"—हांडा ने अपने साथ आए आदमी का परिचय बलराज से कराते हुए कहा—"मेकअप करने में पूरे राजस्थान में इसका कोई सानी नहीं।"

"अच्छा!" बलराज गोगिया ने आश्चर्य जताया।

मोनी बलराज गोगिया के सामने आ खड़ा हुआ और बलराज गोगिया के भरे-भरे चेहरे पर हाथ फेरते हुए बोला—"आप अगर सरदार बन जाए तो कोई भी आपको पहचान नहीं पायेगा साहब।"

"तो बना दे सरदार।" बलराज गोगिया बोला।

"इधर कुर्सी पर बैठ जाएं आप।" मोनी दाईं तरफ पड़ी कुर्सी को अपनी तरफ खिसकाते हुए बोला।

बलराज गोगिया कुर्सी पर बैठ गया।

और फिर मोनी अपना वैग खोलकर उसमें से नकली दाढ़ी-मूंछ निकालकर उसके चेहरे पर फिक्स करने लगा। राघव, चमन सिंह, उदय सिंह, भैरो सिंह तया विजली बड़े ध्यान से मोनी की कारीगरी को देख रहे थे।

करीब आधा घण्टा वाद जब मोनी फारिग हुआ तो बलराज गोगिया का चेहरा एकदम से बदल चुका था—सिर्फ पगड़ी बांधने

की जरूरत रह गई थी—वर्ना हर तरफ से वह सरदार ही नजर आ रहा था।

मोनी ने बैग में से बंधी-बंधाई पगड़ी निकाली और बलराज गोगिया के सिर पर रख दी और फिर बलराज की बांह पकड़कर उसे खड़ा करके दाईं तरफ दीवार के पास रखी ड्रैसिंग टेबल के सामने ले आया।

आदमकद आईने में अपने स्थान पर किसी सरदार को देखकर पहले तो बलराज गोगिया चौंका—फिर उसके होंठों पर मुस्कान रेंग गई।

मोनी का मेकअप वाकई बेमिसाल था।

बलराज गोगिया वापिस मुड़ा—मोनी की तारीफ में कुछ शब्द कहे और फिर उसे वहां से रवाना कर दिया।

तत्पश्चात् वह अपनी कुर्सी पर आकर बैठते हुए हांडा से बोला—

"वैगन का क्या किया?"

हांडा बोला—"मैंने उसे सुबह ही उस स्थान पर पहुंचा दिया था जहां कि असली वैगन को रोकने का कार्यक्रम रखा गया है।"

"वैगन छुपाकर खड़ी की है न?"

"जी हां।"

"और हथियार?"

"दो स्टेनगनें वैगन के अन्दर हैं तथा दो ड्राईविंग केबिन में रख दी गई हैं—इसके अलावा आप दोनों के लिए यह।"—उसने अपनी जेबों में से दो रिवॉल्वर निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिये—"रिवॉल्वर भी हैं—ताकि वक्त पड़ने पर आप को कोई परेशानी न हो।"

बलराज गोगिया ने दोनों रिवॉल्वर उससे लेकर एक रिवॉल्वर राघव की तरफ बढ़ा दिया।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही राघव के चेहरे पर एक शैतानी चमक उभर आई—उसे ऐसा लग रहा था जैसे बहुत वर्षो बाद वह रिवॉल्वर को हाथ में पकड़ रहा है।

बलराज गोगिया ने रिवॉल्वर जेब में डाला और पुन: हांडा की तरफ देखते हुए पूछा—"वर्दियों का क्या बना?"

"वर्दियां भी तैयार हो चुकी हैं—और वैगन में पड़ी हैं।"

"यानि हर सामान गन्तव्य स्थान पर पहुंचा दिया है।"

"जी हां।"

"गुड।"—मुस्कुराया बलराज गोगिया।

और फिर राघव की तरफ देखते हुए बोला—"मेरा हुलिया तो

बदल चुका है राघव—लेकिन तुम्हारा हुलिया बदले जाने के बावजूद भी तुम अपने कद के कारण पहचान लिये जाते—इसलिए मैंने जानबूझकर तुम्हारा मेकअप नहीं कराया।"

"वो तो ठीक है—लेकिन अब करना क्या है?" राघव रिवॉल्वर को अपनी उंगलियों में नचाते हुए बोला।

बलराज गोगिया ने हांडा की तरफ देखा और फिर बोला—"बिजली का बलात्कार करने वाले मुस्टन्डे वक्त पर पहुंच जाएंगे न?"

"खुद बॉस उन्हें लेकर वहां पहुंच जायेंगे—बॉस ने इस बारे में मुझे सूचित कर दिया है।"

"ओ०के०—अब मेरी बात ध्यान से सुनो!" बलराज गोगिया सभी पर बारी-बारी से निगाहें मारते हुए बोला—"यहां से हम एक-एक करके निकलेंगे—और हम सभी को पुलिस की निगाहों से बचकर गंगानगर से बाहर निकलना है—क्योंकि पुलिस की निगाह में आने से हो सकता है वही पुलिसकर्मी बैंक में हमें ड्राईवर या गार्ड के रूप में पहचान लें—और तुम।" उसने राघव की तरफ देखा—"हांडा के साथ कार में बैठकर वहां पहुंचोगे—अगर रास्ते में या गंगानगर से बाहर निकलते वक्त कार की तलाशी होती है तो तुम सीट के नीचे छिप जाना।"

"मेरी फिक्र मत करो—मैं पहुंच जाऊंगा।"

"और तुम।" बलराज गोगिया ने बिजली की तरफ गर्दन घुमाई—"तैयार हो न?"

"मैं तो यहां ही तैयार हूं।" कहते हुए बिजली ने आंख मार दी।

सकपका गया बलराज गोगिया लेकिन तुरंत ही सामान्य होते हुए बोला—"ऐसी हरकत वहां मत कर बैठना—वहां तुम्हें एक शरीफ और दुःखियारी लड़की का रोल अदा करना है।"

"मैं अपना काम समझती हूं।" इस बार गम्भीर थी बिजली।

"तो फिर चलें?"

बलराज गोगिया के ऐसा कहते ही सभी अपने-अपने स्थानों से खड़े हो गए।

सबसे पहले बलराज गोगिया ने भैरो सिंह को वहां से रवाना किया—फिर पांच-पांच मिनट के अन्तराल के पश्चात् वह सभी को वहां से निकालता रहा।

अन्त में वह स्वयं, राघव और हांडा रह गए कमरे में।

बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा और मुस्कराते हुए बोला—"अपना ख्याल रखना।"

बदले में राघव भी मुस्कराया—"तुम भी अपना ख्याल रखना।"

और फिर बलराज गोगिया भी कमरे से बाहर निकल गया।

❑❑❑

राठौर की कोठी की निगरानी कर रहे तीन पुलिसिये उस वक्त चौंके जब उन्होंने दो एम्बेसडर कारों को राठौर की कोठी में प्रवेश करते देखा।

कारों में सूट पहने हुए चेहरों से ही रोबीले नजर आ रहे आदमी बैठे थे।

"ये कौन हैं?" एक सिपाही ने अपने साथी से पूछा।

"मुझे क्या मालूम?" दूसरा बोला—"होंगे कोई राठौर के सगे वाले।"

'कहीं इनमें से कोई बलराज गोगिया न हो।"

"तूने देखा है उसे?"

"नहीं।"

"मैंने देखा है—उस वक्त मैं कमिश्नर की कोठी में था जब बलराज कमिश्नर की बीवी के गले में बांहें डाले कमरे से बाहर निकला था—और फिर कमिश्नर को भी अपने साथ ले गया था।"

—"मैं तो उस वक्त कोठी के बाहर घेरा डाले खड़ा था।" पहले वाला बोला—"कैसा है वो?"

"शक्ल से किसी हीरो से कम नहीं लगता—चौड़ा सीना, लम्बा कद—गोरा रंग—मैं तो उसे देखकर ही हैरान रह गया—एक बार तो मैं यही समझ बैठा कि यह विनोद खन्ना बलराज गोगिया कैसे बन गया।"

"छोड़ो इसे।" मन-ही-मन कुढ़ते हुए बोला पहला सिपाही जैसे उसे बलराज के दर्शन न होने का बेहद अफसोस लग रहा हो—"यह बताओ—अब क्या करना है?"

"करना क्या है—साहब को सूचना भेज देते हैं। आगे जो वह कहेंगे—वही करना पड़ेगा हमें।"

फौरन कुछ दूर खड़ी जिप्सी की तरफ बढ़ा पहले वाला सिपाही और जिप्सी में लगे वायरलैस के जरिये रावत को सूचना देने लगा।

शीघ्र ही वह वापिस लौट आया और अपने साथी से बोला—"साहब ने कहा है कि अगर राठौर कोठी से बाहर निकलता है तो उसका पीछा किया जाए—वर्ना कोठी पर नजर जारी रहे।"

"पता नहीं किस कारण साहब राठौर के पीछे पड़े हुए हैं।" तीसरा सिपाही पहली बार बोला था।

"बलराज गोगिया के कारण।"

"पता नहीं बलराज गोगिया के साथ राठौर का लिंक है भी या नहीं।"

"हमें उससे क्या लेना-देना—हमें तो जो हुक्म मिला है उसे पूरा करना हमारा फर्ज है।"

करीब दस मिनट बाद ही उन्होंने उन कारों को वापिस बाहर निकलते देखा।

तीनों की नजरें कारों में बैठे आदमियों पर थीं—और वे उनमें से राठौर को देख रहे थे।

मगर राठौर उन्हें दोनों में से किसी कार में नजर नहीं आया।

"लगता है राठौर से केवल मिलने आये थे ये लोग।"

पहले वाला सिपाही कारों को जाते देखता हुआ बोला।

"यह भी तो हो सकता है कि राठौर इनमें से किसी कार में छुपा हुआ हो—हमने नजदीक से तो देखा नहीं—इस प्रकार वह हमारी निगाहों से बचकर निकल जाना चाहता हो।"

सुनकर शेष दोनों सिपाहियों के चेहरों पर चिंता नाचने लगी।

"अब क्या करें?" पहले वाला बोला।

"साहब को सूचित करो।" तीसरे ने काफी दूर निकल चुकी कारों की तरफ देखते हुए चिंताभरे लहजे में कहा।

फौरन पुनः सम्पर्क किया उन्होंने रावत से—रावत ने वायरलैस पर ही आज्ञा दे दी कि कारों की तलाशी लो।

अगले ही क्षण तीनों जिप्सी में बैठ गए और फिर जिप्सी पूरी रफ्तार से उधर बढ़ने लगी जिधर कि कारें गई थीं।

करीब तीन किलोमीटर जाने के उपरांत उन्हें कारें नजर आईं। ड्राईविंग सीट सम्भाले सिपाही ने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव और ज्यादा बढ़ा दिया और शीघ्र ही कारों को ओवर टेक करता हुआ जिप्सी को कारों के आगे खड़ा कर दिया।

मजबूरन कारों को भी रुकना पड़ा।

तुरंत ही तीनों सिपाही अगली कार के पास पहुंचे और इससे पहले कि कोई उनसे कुछ पूछता एक सिपाही बोल पड़ा—"हमें खेद है कि बलराज गोगिया के कारण हर कार की तलाशी ली जा रही है—इसलिए आप भी तलाशी देने में कोई ऐतराज नहीं करेंगे।"

कार में बैठे व्यक्ति मुस्करा पड़े—

"आप अपना फर्ज पूरा कीजिए।" ड्राईविंग सीट पर बैठा व्यक्ति बोला।

दोनों कारों की तलाशी ली गई—लेकिन राठौर या बलराज दोनों में से कोई कार में नहीं था। चेहरे पर निराशा के भाव लिए वही सिपाही बोला—

"सॉरी...आपको तकलीफ उठानी पड़ी—इसके लिए हमें खेद है।"

"अब हम जा सकते हैं?" ड्राईवर बोला।

"ओह...श्योर...।"

और दोनों कारें आगे बढ़ गईं।

करीब आधा किलोमीटर चलकर दोनों कारें एक चौक पर आकर रुक गईं।

पांच मिनट पश्चात् एक टैक्सी उनके करीब आकर रुकी और उसमें से राठौर होठों पर मुस्कान लिए बाहर निकलकर पिछली कार में बैठ गया।

कार के गति पकड़ने के साथ ही राठौर के होठों से ठहाका उबल पड़ा।

"हा...हा...हा—राठौर की निगरानी कर रहे थे पुलिसिये—मैं जानता था कि कारों का पीछा अवश्य किया जाएगा—और तलाशी भी ली जा सकती है—इसलिए मैं काफी पहले ही कार से उतर गया था ताकि अगर पुलिस कार की तलाशी ले भी तो उसे मैं नजर न आऊं—कार से उतरकर मैंने टैक्सी की और दूसरे लम्बे रास्ते से होता हुआ यहां आ गया। अब पुलिस यही समझ रही है कि मैं अभी अपनी कोठी में हूं—जबकि मैं यहां इस कार में बैठा हूं—हा...हा....।"

दोनों कारें तेजी से गंगानगर की सीमा की तरफ बढ़ रही थीं।

❑❑❑

गंगानगर से बाहर निकलने में बलराज गोगिया को कोई परेशानी नहीं हुई—उसका सरदार का मेकअप उसके लिए काफी फायदेमंद रहा था—जगह-जगह नाकाबंदी के कारण उसकी टैक्सी को कई स्थानों पर रुकना पड़ा था—पुलिसियों ने उसकी टैक्सी में झांक कर भी देखा था—मगर किसी ने उस पर गौर नहीं किया था।

करीब साढ़े तीन बजे बलराज निश्चित किये गए स्थान से काफी पहले ही टैक्सी से उतर गया था और फिर पैदल चलता हुआ वहां पहुंच गया जहां पर कि चमन, उदय, भैरो तथा बिजली के अलावा राघव हांडा और राठौर उसका इंतजार कर रहे थे।

राठौर को देखकर बलराज गोगिया मुस्कराया और उसके करीब आकर बोला—

"तुम तो पुलिस की नजरों में थे—हांडा ने बताया था कि तुम्हारे घर की निगरानी हो रही है।"

"हां।" राठौर भी मुस्कराया—"हांडा ने सही कहा था—और यह निगरानी सिर्फ तुम्हारे कारण हो रही है—पुलिस को संदेह है कि

तुम मेरे यहां छुप हुए हो—और यह संदेह पुलिस को
कारण हुआ।"

"लेकिन पुलिस की निगाहों से बचकर यहां कैसे पहुंच गए तुम?"

राठौर ने बताया।

बलराज गोगिया ने तारीफी निगाह से उसे देखा—फिर बोला—"अगर पीछे से पुलिस ने तुम्हारी कोठी के अन्दर झांक लिया तो?"

"तो क्या हुआ—पुलिस को कुछ भी नहीं मिलने वाला वहां से।"

"लेकिन तुम्हारी गैर-मौजूदगी पुलिस को संदेह में डाल सकती है।"

"शीघ्र ही मैं वापिस पहुच जाऊंगा—और पुलिस का सारा संदेह जाता रहेगा—यहां का काम निपटाकर मुझे वापिस कोठी ही तो पहुंचना है।"

"हां...ठीक कह रहे हो।" मुस्कराया बलराज गोगिया फिर आगे बोला—"बैंक में फोन कर दिया था?"

"हां—कोठी से चलने से पहले ही कर दिया था।" राठौर ने जवाब दिया।

"क्या कहा?"

"यही कि वैगन के चारों गार्ड और ड्राईवर नये हैं—साथ ही उन्हें तुम्हारा हुलिया भी समझा दिया था।"

"मेरा यही सरदार वाला हुलिया ही बताया था।"

"हां—हांडा ने तुम्हारे बदले रूप की बाबत मुझे बता दिया था—वर्ना मैं तो तुम्हें अब देखकर पहचान ही नहीं रहा था।"

उससे गर्दन फेरकर बलराज ने हांडा की तरफ देखा—"वैगन कहां है?" उसने पूछा।

"उधर।" हांडा ने सड़क के नीचे कुछ दूर झाड़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

बलराज गोगिया ने अपने कदम उधर बढ़ा दिये—उसके कदम बढ़ाते ही शेष सब भी उसके साथ-साथ चलने लगे।

दूर से देखने पर वैगन बिल्कुल भी नजर नहीं आ रही थी—लेकिन नजदीक पहुंचते ही वह ऊंची झाड़ियों के पीछे खड़ी नजर आने लगी।

वैगन के करीब पहुंचकर उसने राघव की तरफ देखा—"राघव!" वह बोला—"तू ड्राईविंग केबिन में ड्राईवर की सीट के नीचे छुपकर देखा—पूरा आ पाएगा कि नहीं?"

तुरंत ही राघव ड्राईविंग केबिन की तरफ बढ़ गया—जबकि बलराज गोगिया वैगन का दरवाजा खोल उसमें प्रवेश कर गया।

अन्दर एक कोने में दो स्टेनगनों के साथ चार जोड़े नीली वर्दी के पड़े थे।

बलराज गोगिया ने एक जोड़ा उठाते हुए चमन, उदय तथा भैरो को आवाज लगा दी।

फौरन तीनों अन्दर आ गए।

"जल्दी से ड्रैस चेंज कर लो—वक्त होने वाला है।" अपनी पैंट उतारते हुए बोला बलराज।

तीनों अपने कपड़े उतारकर नीली वर्दी पहनने लगे।

ड्रैस पहनकर जब वे नीचे उतरे तो राघव बलराज के पास आ गया।

"जगह एकदम से फर्स्टक्लास है—मैं आराम से पूरा आ जाऊंगा।" वह बोला।

"छः-सात घण्टे वहीं दुबके रहना पड़ेगा।" बलराज गोगिया बोला।

"रह लूंगा।" मुस्कराया राघव।

प्रत्युत्तर में बलराज गोगिया भी मुस्कराया और फिर राठौर की तरफ देखते हुए बोला—"अपने आदमियों को पोजीशन लेने के लिए कह दो।"

राठौर ने फौरन चार आदमियों को आदेश देते हुए कहा—

"ऐसे स्थानों पर छुपना जहां से तुम्हारा निशाना चूकने न पाये—और इतना ध्यान जरूर रखना कि उनका बच जाना तुम्हारे लिए मौत बन सकता है।" कहते-कहते राठौर का स्वर हिंसक हो गया था।

चारों फौरन कार की तरफ बढ़े और कार में रखी स्टेनगनें उठाकर अलग-अलग दिशाओं में चले गए।

बलराज ने घड़ी देखी—चार बजने में दस मिनट शेष थे।

उसने गर्दन उठाकर शेष चारों की तरफ देखा—फिर बिजली की तरफ देखा।

"मैं तैयार हूं।"

"तो फिर हो जाओ शुरू।" बलराज ने चारों की तरफ देख मुस्कराते हुए कहा।

आज्ञा मिलते ही चारो के चेहरों पर शैतानियत नाचने लगी—आंखों में लाल-लाल डोरे नाचने लगे।

भूखे भेड़ियों की तरह से वे बिजली की तरफ झपटे—मगर

बिजली उनकी पकड़ में आने से पहले ही सड़क की तरफ भाग खड़ी हुई।

"लड़की समझदार है।" बलराज गोगिया मुस्कराते हुए राठौर से बोला।

"हां।" राठौर भी मुस्कराया।

"तुम।" उसने राठौर से कहा—"एक कार को सड़क के किनारे खड़ी कर दो—ताकि वैगन का ड्राईवर यही समझे कि लड़की का अपहरण कर उसे यहां लाया गया है।"

राठौर तुरंत ही कार की तरफ बढ़ गया—कार के नजदीक पहुंचकर उसने ड्राईविंग डोर खोला और ड्राईविंग सीट सम्भाल ली। कार को स्टार्ट कर उसने गियर में डाला और आगे बढ़कर सड़क के किनारे खड़ी करके वापिस बलराज के पास लौट आया।

"आओ।" उसके पास आते ही बलराज गोगिया वैगन की तरफ कदम बढ़ाते हुए बोला—"यहां खड़े रहना खतरे का सबब बन सकता है।"

राठौर के साथ-साथ चमन, उदय और भैरो भी उसके साथ झाड़ियों के पीछे खड़ी वैगन के निकट आ खड़े हुए।

राघव बार-बार गर्दन मोड़कर सड़क की तरफ देख रहा था। उसके साथ ही उसकी सांसों में गर्मी भी भरती जा रही थी।

राघव की उखड़ी सांसों को देख बलराज मुस्कराये बिना नहीं रह सका—

"लगता है—रेप में शामिल होने का तेरा भी मन कर रहा है।" वह कहे बिना न रह सका।

हड़बड़ाकर राघव बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"न...हीं तो...।"

"तो फिर बार-बार उधर क्या देख रहे हो?"

"म...मैं तो यह देख रहा था कि वे रेप ढंग से कर रहे हैं या ऊपर-ऊपर से ही।"

ठहाका मारकर हँस पड़ा बलराज।

राघव झेंपी-झेंपी मुस्कान मुस्करा दिया।

"खैर!"—वह बोला—"अब हमें अपनी-अपनी जगह ले लेनी चाहिए—वैगन किसी भी वक्त यहां पहुंच सकती है।" कहकर बलराज गोगिया ने चमन तथा उदय की तरफ देखा—

"तुम दोनों!"—वह बोला—"वैगन में चले जाओ और दरवाजा बन्द करके अन्दर से ताला लगाकर बैठ जाओ—मैं और भैरो ड्राईविंग केबिन में जाते हैं।"

चमन और उदयसिंह फौरन वैगन में प्रवेश कर गए।

"और तुम।"—बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा।

"मैं तुम्हारे नीचे बैठा रहूंगा।" उससे पहले ही राघव मुस्कराते हुए बोल पड़ा।

राघव ने एक नजर सड़क पर हो रहे बलात्कार की तरफ देखा फिर ड्राईविंग केबिन की तरफ बढ़ गया।

पीछे-पीछे बलराज और भैरो सिंह भी केबिन में प्रवेश कर गए।

ड्राईविंग सीट बलराज गोगिया ने सम्भाल ली—जबकि भैरो क्लीनर के रूप में उसके निकट बैठ गया।

राघव बलराज गोगिया के ऐन नीचे सीट के नीचे दुबक गया था।

"अन्दर से ताला लगा दिया न?" बलराज ने भैरो की तरफ देखते हुए पूछा।

"हां—लगा दिया है।" चाबी दिखाते हुए बोला भैरो।

राठौर अकेला बाहर ही खड़ा रह गया था।

इस वक्त उसकी निगाहें सड़क पर हो रहे बलात्कार की तरफ जमी हुई थीं।

लेकिन उसका ध्यान इस वक्त हो रहे बलात्कार को देखने में नहीं बल्कि भगवान से यह प्रार्थना करने में लगा हुआ था कि आने वाली वैगन उस दृश्य को देखकर रुक जाए—उसका दरवाजा खुले और ड्राईवर तथा क्लीनर बाहर निकल आयें।

तभी दूर से आती वैगन को देखकर उसका कलेजा एकदम से इतनी जोरों से धड़का कि उसे डर लगने लगा कि कहीं कलेजा सीना फाड़कर बाहर न आ गिरे।

❑❑❑

बिजली के फटे हुए वस्त्रों के चीथड़े सड़क पर यहां—वहां बिखरे पड़े थे। इस वक्त उसके बदन पर केवल पेटीकोट और ब्रा ही शेष बचीं थी।

चारों आदमी नरपिशाच बने उसे दबोचे हुए थे—साथ ही अट्टहास लगा रहे थे।

बिजली जोर-जोर से मदद के लिए चिल्ला रही थी। आंखों में खौफ के भाव लिए वह स्वयं को उन चारों से छुड़ाने का यत्न कर रही थी।

तभी एक ने उसकी ब्रा की बैल्ट में हाथ डाला और पूरे जोर से उसे झटका दिया।

झटका लगते ही ब्रा के हुक टूट गए और उसी के साथ ही बिजली के उन्नत उरोज उजागर हो गए।

बिजली और जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

लेकिन अन्दर ही अन्दर एक ऐसी आग भड़क उठी थी कि उसे बुझाने के लिए लालायित हो उठी थी वह।

"अरे नामर्दों!"—फुसफुसाई वह—"यह बलात्कार कर रहे हो या खेल कर रहे हो—कुछ करोगे भी या यूं ही हा-हा-हा-हू-हू करते रहोगे?"

बिजली की बातें पूरी हुई ही थीं कि एक ने उसे पकड़कर वहीं सड़क के बीचो-बीच पटक दिया—दो ने उसकी बांहों को पकड़ लिया जबकि तीसरे ने उसकी टांगों को चौड़ा करके दबोच लिया।

और फिर शुरू हुआ बिजली के साथ बलात्कार का सिलसिला।

पहला-दूसरा-तीसरा-चौथा—चारों ने उसके साथ भरपूर आनंद लिया—खुद बिजली पर भी मदहोशी छाने लगी थी—आंखों में एक अजीब-सा नशा नाचने लगा था।

अब से पहले तो वह केवल बिस्तर पर ही कुश्तियां खेलती थी—नंगी सड़क पर यह उसका पहला मौका था—शायद इसी कारण उसका आनन्द कुछ ज्यादा ही बढ़ रहा था—ऊपर से बलात्कार का भी उसका पहला तजुर्बा था।

मीठा-मीठा संगीत उसकी धमनियों में धमक पैदा कर रहा था—स्वरलहरियां चारों तरफ गूंज रही थीं—और उसी के साथ-साथ ठहाके भी गूंज रहे थे उन चारों के।

बिजली का दिल तो यही कर रहा था कि यह हफ्ता दस दिन यहीं सड़क पर पड़ी रहे और उससे इसी तरह बलात्कार होता रहे।

सिसकारियां निकल रही थीं उसके मुख से—मुंह इस प्रकार खुल गया था जैसे गले में कोई गोला आकर अटक गया हो।

तभी एक आदमी की नजर दूर से आ रही वैगन पर पड़ी—

"वैगन आ रही है।"—वह चीखा।

वैगन के आने की बात सुनते ही बिज़ली जोर-जोर से चीखने लगी—जबकि वे चारों उसे बुरी तरह से नोचने-खसोटने लगे थे।

इस नोच-खसोट में बिजली का जिस्म कई स्थानों से कट-फट भी गया था जिसमें से खून रिसना शुरू हो गया था।

ड्रामे को हरकत का रूप मिलने लगा था।

वैगन पल-पल उनके नजदीक आती जा रही थी—उसी के साथ ही उनके द्वारा किये जा रहे बलात्कार में भी तेजी आती जा रही थी।

❑❑❑

वैगन की ड्राइविंग सीट पर बैठा ड्राईवर जिसका नाम श्यामलाल था, बुरी तरह से चौंक पड़ा।

"जाकिर!"—उसने विण्ड स्क्रीन पर नजरें स्थिर किये ही अपने

साथी से कहा—"सड़क पर बलात्कार हो रहा है—किसी मासूम की इज्जत लूटी जा रही है।"

"हां।"—ड्राईवर का साथी जाकिर बोला—"लगता है लड़की का अपहरण करके यहां ले आये हैं वे उसे या—यहीं आकर लड़की कार से कूद पड़ी हो—और उन लोगों ने उसे...।"

वैगन काफी करीब पहुंच चुकी थी उनके।

तभी जैसे बलात्कारियों को वैगन के वहां पहुंचने का आभास हुआ हो—चौंक कर उन्होंने वैगन की तरफ देखा और फिर चारों एक साथ अपनी कार की तरफ भागे।

आनन-फानन में ही कार तोप से छूटे गोले की तरह उनकी वैगन के पहलू से होकर विपरीत दिशा की तरफ भाग खड़ी हुई।

श्यामलाल तथा जाकिर की निगाहें बिजली की तरफ उठ गईं जो कि निर्वस्त्र अवस्था में लड़खड़ाती हुई दोनों हाथ फैलाये उनकी वैगन की तरफ बढ़ रही थी, जैसे वैगन को रुकने का इशारा कर रही हो। और फिर वह बड़े जोरों से त्यौराकर वहीं सड़क के बीचो-बीच बेहोश होकर गिर पड़ी।

"अरे—य—यह तो बेहोश हो गई!" जाकिर चौंकते हुए बोला।

उसी के साथ ही श्यामलाल का पैर अपने आप ही एक्सीलेटर से हट करके ब्रेक के पैडिल पर जम गया।

वैगन धीमी होती हुई बिजली से थोड़ी दूरी पर आकर रुक गई।

वैगन को रोक कर श्यामलाल ने जाकिर की तरफ देखा—"क्या कहते हो?" उसने कहा।

जाकिर तो आंखें फाड़े बिजली के सांचे में ढले जिस्म को देख रहा था, जिसमें से कई स्थानों से खून निकल रहा था।

मगर विण्ड स्क्रीन में से वह वह नजारा नहीं ले पा रहा था जो कि नजदीक से लिया सकता था—सो बिजली की तरफ देखते हुए ही वह बोला—

"नीचे उतरकर देखते हैं—हो सकता है होश में आ जाए।"

मुस्करा पड़ा श्यामलाल—"यह क्यों नहीं कहता कि छोकरी के मोटे-मोटे वक्ष तुझे पागल कर रहे हैं।"

प्रत्युत्तर में जाकिर भी मुस्करा पड़ा—"तू भी तो उन वक्षों को छूने के लिए मरा जा रहा है।"

"तो फिर खोल दरवाजा—अगर लड़की मर गई हुई तो घसीट कर एक तरफ कर देंगे—नहीं तो उठाकर वैगन में रख लेंगे—बैंक पहुंचने तक मजा लेंगे—फिर वहां से अस्पताल भिजवा देंगे—इस प्रकार मजा भी पूरा हो जाएगा और परोपकार भी।"

सहसा ही चौंक उठा जाकिर--"कहीं यह किसी षड्यन्त्र का हिस्सा तो नहीं यार?"

मुस्कराया श्यामलाल—"अगर वैगन में रुपया होता तो निश्चित रूप से मैं भी यही सोचता—मगर अभी तो वैगन खाली पड़ी है—लुटेरे लूटेंगे क्या—धनिया।"

श्यामलाल की बात सुनकर जाकिर के चेहरे पर निश्चिंतता नाचने लगी।

तुरंत ही उसने जेब से चाबी निकाली और अपनी तरफ वाले एक मात्र दरवाजे का लॉक खोलकर दरवाजा खोल दिया—और साथ ही बाहर सड़क पर छलांग लगा दी।

वैगन को रुकते देख झाड़ियों के पीछे छिपे राठौर का कलेजा जोरों से धड़क उठा--उसने अपने सीने पर इस तरह हाथ रख लिया जैसे उसे डर हो कि दिल उछलकर बाहर ही न आ गिरे।

और जब उसने ड्राइविंग केबिन का दरवाजा खुलने और उसमें से क्लीनर के पीछे-पीछे ड्राईवर को भी बाहर छलांग मारते देखा तो उसके होठों पर विषैली मुस्कान नृत्य करने लगी--आंखों में एक क्रूर चमक ने जैसे डेरा जमा लिया।

"फंसा।" हौले से बड़बड़ा उठा वह।

दोनों ड्राईवर तथा क्लीनर होठों पर जीभ फिराते बिजली की तरफ बढ़ने लगे जो सड़क पर बेसुध की सी हालत में पड़ी थी। उसके तने हुए उरोज पहाड़ों की ऊंचाइयों की तरह उठे हुए थे—जिस्म पर कपड़ों के नाम पर रेशा भी नहीं था उसके।

पूर्णतया निर्वस्त्र अवस्था में वह पीठ के बल बांहें फैलाये पड़ी थी—टांगें भी बांहों के अनुपात में फैली हुई थीं।

कदम बढ़ाते हुए अभी वे बिजली के पास भी नहीं पहुंच पाये थे कि तभी—

'रेट...रेट...रेट।'

शांत वातावरण गोलियों की आवाजों से गूंज उठा—और उसी के साथ ही दोनों ड्राईवर और क्लीनर बिजली को स्पर्श करने—मजा लेने की हसरत दिल में ही लिये स्वर्ग की तरफ प्रस्थान कर गए।

गोलियों से छलनी उनकी लाशें सड़क पर औंधे मुंह पड़ी थीं।

गोलियां चलने की आवाज सुनकर बिजली तड़प कर सड़क पर खड़ी हो गई और तेजी से सड़क पर खड़ी कार की तरफ भागी।

आती दफा वह अपने लिए एक जोड़ा कपड़े साथ ले आई थी जो कि उसने राठौर वाली कार की पिछली सीट पर रख दिये थे।

जल्दी से कार को पिछली सीट से उसने अपने कपड़े उठाये और उन्हें पहनने लगी।

उधर दोनों के सड़क पर गिरते ही चारों आदमी जो कि उन्हें खत्म करने के लिए राठौर द्वारा नियुक्त किये गए थे, अपने-अपने स्थानों से निकलकर उनकी तरफ लपके।

नजदीक पहुंचकर उन्होंने तसल्ली की कि वे पूर्णतया खत्म हो चुके हैं—फिर तुरंत ही एक वैगन की तरफ मुड़ा, जबकि शेष तीन लाशों को पकड़कर उन्हें घसीट कर सड़क के नीचे उतारने लगे।

इधर चौथे ने वैगन स्टार्ट की और उसे सड़क के नीचे उतार दिया।

इधर वैगन सड़क के नीचे उतरी—उधर बलराज ने अपनी वैगन स्टार्ट कर झाड़ियों के पीछे से बाहर निकाल ली।

कुछ ही क्षणों में असली वैगन झाड़ियों के पीछे खड़ी थी और नकली वैगन गंगानगर की तरफ जा रही थी।

"गुड लक।" हौले से बड़बड़ाया राठौर और फिर बिजली की तरफ देखते हुए मुस्कराया—"तूने वाकई अपना काम बाखूबी निभाया है बिजली।"

"थैंक्यू बॉस!" बिजली मुस्कराते हुए बोली।

और फिर कुछ ही देर में दोनों कारें वापिस गंगानगर की तरफ बढ़ रही थीं।

बिजली राठौर की कार में राठौर के निकट बैठी हुई थी।

❑❑❑

अपनी कोठी के मेन गेट के पास रावत को देखकर राठौर के होंठों पर रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी।

उस वक्त वह एक टैक्सी में था—कार को उसने रास्ते में ही छोड़ दिया था—और सभी को अपने-अपने स्थान पर चले जाने का हुक्म सुना दिया था।

गेट के पास आकर टैक्सी रुकी—राठौर बाहर निकला—टैक्सी का भाड़ा चुकाकर वह रावत के पास आ गया और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"क्या कोई सबूत हाथ लग गया है इंस्पेक्टर जो मुझे गिरफ्तार करने आये हो—या फिर पहले की तरह डराने आये हो मुझे।"

"कहां गये थे?" उसकी बात का जवाब न देते हुए गुर्राया रावत।

"क्या तुम्हारे प्रश्न का जवाब देना मेरे लिए जरूरी है?"

हड़बड़ा गया रावत—उसे ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

"म...मैंने तो रूटीन के तौर पर पूछा है।"

"क्यों, क्या मैं कोई अपराधी हूं जो तुम मुझसे पूछताछ कर रहे हो—क्या मुझ पर कोई चार्ज लगा हुआ है—अगर ऐसा है तो मुझे गिरफ्तार करो—फिर मुझसे पूछताछ करो।"

"त...तुम मेरे सिपाहियों को धोखा देकर कोठी से बाहर निकले।"

सुनकर राठौर जलती निगाहों से रावत को देखने लगा—"तो मेरे घर की निगरानी करा रहे थे तुम—क्यों? क्या किया है मैंने—और फिर मैं जब चाहूं आऊं, तुम कौन होते हो मुझे रोकने वाले—क्या तुमने मुझे मेरे ही घर में नजरबंद कर रखा था—या फिर मैं कोई दस नम्बरी हूं जो कहीं भी जाने से पहले आज्ञा ले और वापिस आकर तुम्हें हाजिरी दे?"

रावत का चेहरा उतर गया—बड़ी खरी-खोटी सुना रहा था राठौर उसे—अपमानित कर रहा था वह उसे। और वह था कि वह उसका कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा था—बिगाड़ सकता भी तो नहीं था—कोई सबूत होता तो वह अभी उसके मुंह पर तमाचा पड़ने की भी ताकत रखता था—उसे हथकड़ी लगाकर बाजारों में घुमाता हुआ हवालात में भी बन्द कर सकता था।

मगर अफसोस—उसके पास राठौर के खिलाफ कोई सबूत नहीं था।

मन मसोसकर रह गया वह—अपमानित तो वह पहले भी हो चुका था।

उसकी हालत देखकर मन-ही-मन ठहाके लगाने लगा राठौर—लेकिन ऊपर से गुस्सा आने वाले अंदाज में वह गुर्राया—"तुम्हारा बहुत लिहाज कर चुका हूं मैं इंस्पेक्टर—बहुत बर्दाश्त कर चुका हूं मैं तुझे—मगर अब नहीं बख्शूंगा मैं आज ही मन्त्रीजी का फोन करूंगा—और सुबह तक तुम्हें तबादले के ऑर्डर मिल जाएंगे।"

कहकर वह तेजी से उसकी पहलू से होते हुए गेट में प्रवेश कर गया।

रावत ने खा जाने वाली निगाहों से उसकी पीठ की तरफ देखा और मन-ही-मन बड़बड़ाया—"तेरा पुलिस की निगाहों से छुपकर कोठी से बाहर निकलना ही इस बात की ओर इंगित करता है कि तू कोई खिचड़ी पका रहा है—वर्ना तुझे छुप कर निकलने की क्या जरूरत थी। और तू क्या खिचड़ी पका रहा है—वह पता किये बिना मैं चैन से नहीं बैठूंगा।"

बड़बड़ाते हुए—गुस्से से भुनभुनाते हुए वह कुछ दूर खड़ी अपनी जिप्सी में सवार हुआ और कन्ट्रोल रूम वायरलैस करने लगा।

सम्पर्क होते ही उसने वैगन की बावत बात की।

"वैगन सकुशल गंगानगर में आ चुकी है और बैंक की तरफ बढ़ रही है। उधर से आवाज आई।

रावत ने ट्रांसमीटर का सम्पर्क काट दिया।

"इसका मतलब तो यही निकलता है कि राठौर का बलराज के साथ कोई सम्बंध नहीं—अगर सम्बंध होता और उन्होंने बैंक लूटना होता तो राठौर इस वक्त भागदौड़ में लगा होता।" स्वयं में ही बड़बड़ाया वह।

"लेकिन यह भी तो हो सकता है कि डाका बलराज डाले—और राठौर यहां पुलिस की निगाहों के सामने बैठा रहे।" अपनी ही सोच पर वह चौंका—"इसका मतलब है बलराज गोगिया बैंक में किसी भी वक्त पहुंच सकता है।"

यह सोचते ही उसके जेहन को एक झटका लगा—तुरंत ही वह सीधा हुआ और जिप्सी को स्टार्ट कर आगे बढ़ा दिया।

❑❑❑

इस वक्त बलराज गोगिया का कलेजा धाड़-धाड़ उसकी पसलियों से टकरा रहा था—पेशानी पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें चमक रही थीं। लेकिन घबराहट के बावजूद भी उसे अपने दिमाग पर कंट्रोल था—अपनी चेतना को उसने बेकाबू नहीं होने दिया था।

वह जानता था कि वह उस पिंजरे की तरफ बढ़ रहा है जिसमें कि मांस का टुकड़ा पड़ा है—पिंजरे की हिफाजत के लिए कई शिकारी कुत्ते पिंजरे के आस-पास ऊपर नीचे खड़े पहरा दे रहे होंगे—और उसे उन सबकी निगाहों से बचकर मांस का टुकड़ा चुराकर वापिस पिंजरे से बाहर निकलना है—अगर किसी को उसकी भनक भी लग गई तो पल भर में ही सभी कुत्ते उस पर टूट पड़ेंगे और से चीर कर रख देंगे। यही सोच कर ही उसका कलेजा धड़क रहा था।

उसने अपने पास बैठे भैरो की तरफ देखा—उसकी हालत अभी से खस्ता होने लगी थी।

"तुझे क्या हुआ भैरो?"

चिहुंक उठा भैरो और बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"क...कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं हुआ तो चेहरे पर फटकार क्यों बरस रही है तेरे—अगर यही सूरत लेकर तू वहां गया तो कुछ करने से पहले ही हम वेमौत मारे जाएंगे—हौसला रख—और अपने चेहरे पर बरस रही फटकार को दूर कर—तेरे चेहरे से आभास भी नहीं होना चाहिए कि हम वो नहीं जो वो समझ रहे हैं।"

बलराज गोगिया की बातों से उसने मुस्कराने की चेष्टा

की—साथ ही लम्बी-लम्बी सांसें छोड़कर स्वयं पर काबू पाने की कोशिश करने लगा।

"हां...अब कुछ ठीक है।"—एक नजर उसके चेहरे पर मार कर पुनः विण्ड स्क्रीन में देखते हुए बोला बलराज।

वैगन गंगानगर की विभिन्न सड़कों-चौराहों पर से होती हुई बैंक के काफी निकट पहुंच चुकी थी।

बैंक के बाहर पुलिस वालों को देखकर एक बार फिर कलेजा धड़कने लगा बलराज का—लेकिन उसने अपनी घबराहट को चेहरे पर उजागर नहीं होने दिया।

"बैंक आ गया राघव।" वह बड़बड़ाया।

"डोंट वरी।"—सीट के नीचे से आवाज आई—"मैं फर्स्ट-क्लास बैठा हूं।"

बलराज गोगिया आश्वस्त हुआ—और बैंक के ऊपर चमक रहे न्यून बोर्ड को पढ़ने लगा—

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था।

जैसे ही वैगन बैंक के नजदीक पहुंची—बैंक का बड़ा गेट पूरा-का-पूरा खुल गया—बलराज वैगन को गेट के अन्दर ले आया—अन्दर आते ही वैगन को दाईं तरफ मोड़ा और सामने बेसमेंट में जाती ढलान की तरफ बढ़ा दिया वैगन को।

बैंक की बेसमेंट में जाने का रास्ता मनोहर तथा जुनेजा ने उसे अच्छी तरह से समझा दिया था—इसलिए उसे बेसमेंट में पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

बेसमेंट में पहुंचकर उसने वैगन को बाईं तरफ मोड़ दिया—सामने स्ट्रांग रूम था—उसने वैगन को बैक किया और वैगन का पिछला दरवाजा स्ट्रांग रूम के सामने करके वैगन रोक दी। इन्जन बंद कर दिया।

तब तक भैरो दरवाजे के लॉक में चाबी लगा चुका था।

वैगन के रुकते ही उसने दरवाजा खोला और बाहर आ गया।

उसके पीछे-पीछे बलराज भी बाहर आ गया—नीचे उतरते ही उसने दरवाजा बन्द कर दिया—इस डर से कि कहीं किसी की नजर सीट के नीचे बैठे राघव पर न पड़ जाए।

बाहर स्ट्रांग रूम के पास बैंक का मैनेजर—मनोहर तथा जुनेजा के अलावा चार आदमी और बैठे थे।

बलराज ने एक उड़ती निगाह मनोहर और जुनेजा पर डाली फिर एक तरफ पड़ी कुर्सी पर बैठ गया—भैरो भी उसके साथ पड़ी खाली कुर्सी पर बैठकर अंगड़ाई तोड़ने लगा।

बैंक मैनेजर ने पहले दोनों को देखकर अच्छी तरह तसल्ली की—फिर उसके चेहरे पर आश्वासन के भाव उभर आये।

उसके चेहरे को देखकर मन-ही-मन बलराज गोगिया ने चैन की लम्बी सांस छोड़ी और भगवान का शुक्र करने लगा कि मैनेजर को उस पर शक नहीं हुआ।

तत्पश्चात् बैंक मैनेजर ने मनोहर तथा जुनेजा से दो अलग-अलग कागजों पर दस्तखत करवाये और फिर स्ट्रांग रूम के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

स्ट्रांग रूम का दरवाजा नम्बर सिस्टम से खुलने वाला था—उसने उस पर अंकित कुछ नम्बर पुश किये फिर जेब से चाबियां निकालकर स्ट्रांग रूम के दरवाजे में लगा विभिन्न की-होलों में फंसा कर घुमाने लगा।

करीब दस मिनट बाद जाकर उसने अपने पीछे खड़े चारों आदमियों की तरफ देखा और बोला—"दरवाजा खोलो।"

सचमुच दरवाजा इतना भारी था कि अकेले आदमी का उसे खोलना असम्भव था—चारों को मिलकर जोर लगाना पड़ा था उसे खोलने के लिए।

दरवाजा खुलते ही कलेजा हलक में आ अटका बलराज का—बिल्कुल यही हाल भैरो सिंह का भी था।

दोनों आंखें फाड़े अन्दर नोटों को गड्डियों के विशाल भण्डार को देख रहे थे।

मैनेजर ने चारों को हुक्म दिया कि नोटों को स्ट्रांग रूम से बाहर निकल लाएं।

तुरंत ही चारों नोटों की गड्डियां स्ट्रांग रूम में ही पड़े चार बड़े-बड़े टोकरों में रखकर बाहर वैगन के पिछले दरवाजे के पास फेंकने लगे।

गड्डियों का ढेर लगने लगा—और बलराज गोगिया तथा भैरो की आंखें भी उसी अनुपात में फैल रहीं थीं।

आंखें फाड़े-फाड़े बलराज गोगिया ने मनोहर तथा जुनेजा की तरफ देखा जो कि उसी की तरफ ही देख रहे थे।

नजरें मिलते ही मनोहर ने आंखों से उसे कोई इशारा किया।

बलराज समझ गया कि वह उससे पूछ रहा है कि वह कुशलता से पहुंच गया है न?

मुस्कराया बलराज गोगिया और मुंह दूसरी तरफ कर लिया।

पौने सात बजे तक नोटों का ढेर वैगन के बाहर लगता रहा। नोटों को ढो रहे—चारों मजदूर भी बुरी तरह से हांफ रहे नजर आ रहे थे।

सारे नोट बाहर निकालकर चारों मजदूर एक तरफ बैठकर सांस लेने लगे--जबकि मैनेजर ने आगे बढ़कर स्ट्रांग रूम के दरवाजे में धक्का लगाकर बंद कर दिया।

दरवाजा बंद करने में ही उसे दांतों तले पसीना आ गया था।

उसने दरवाजा लॉक किया–फिर घड़ी में वक्त देखने लगा।

सात बजने में अभी पांच मिनट बाकी थे–सो वह एक तरफ पड़ी कुर्सी पर बैठकर सांस लेने लगा–दरवाजा बन्द करने के दौरान ही उसकी सांस बुरी तरह से फूल गई थी।

ठीक सात बजे वह कुर्सी से उठा और वैगन के पिछले दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

बलराज गोगिया का कलेजा धाड़-धाड़ बजने लगा–चाबी ठीक-ठाक लग जाये--यही दुआ मांग रहा था वह।

मैनेजर ने चाबी की-होल में डाली और उसे दाईं तरफ घुमा दिया। फिर चाबी वापिस बाहर निकालकर एक तरफ खड़ा हो गया।

ठीक एक मिनट बाद वैगन का पिछला दरवाजा खुला और उदय तथा चमन उसमें से नमूदार हुए–और फिर वैगन से बाहर छलांग लगा दी।

मैनेजर ने उन्हें भी अच्छी तरह से देखा फिर मजदूरों की तरफ देखते हुए बोला–"नोट वैगन में रखो।

मजदूर खड़े हुए और नोटों को तेजी से वैगन के अन्दर फेंकने लगे।

साढ़े नौ बजे तक वैगन नोटों से भरकर चलने को तैयार खड़ी थी।

मैनेजर ने मनोहर तथा जुनेजा को अपने पास बुलाया।

दोनों उसके पास आ गए।

मैनेजर ने दो कागज उनकी तरफ बढ़ाये और बोला–"वैगन की रवानगी पर दस्तखत कर दीजिये।"

दोनों ने बिना किसी हुज्जत के साईन कर दिये।

वैगन चलने में अभी देर थी सो बलराज गोगिया तथा उसके साथी अपने स्थानों पर ही बैठे रहे।

ठीक दस बजकर पच्चीस मिनट पर मैनेजर ने दरवाजे के अन्दर लगी एक घड़ी पर बारह बजे का वक्त फिक्स किया और बलराज तथा भैरो की तरफ देखने लगा।

तुरंत ही भैरो और उदय उठे और वैगन में प्रवेश कर गए।

मैनेजर ने दरवाजा बन्द करके बाहर से चाबी लगा दी।

ड्राईविंग केबिन में चमन तथा बलराज गोगिया सवार हो चुके थे। ड्राईविंग सीट उदय ने सम्भाल रखी थी।

ठीक साढ़े दस बजे नोटों से भरी वैगन पच्चीस करोड़ के नोटों से भरी वैंक से बाहर निकली और पुलिस तथा उसके बेशुमार सुरक्षा प्रबंधों को धता बताती हुई आगे बढ़ाती चली गई।

"फतह!" बलराज गोगिया ने नारा लगाया।

उसके नारे की आवाज के साथ ही राघव सीट के नीचे से बाहर निकल आया और उसके समीप बैठ गया। उसके सीट पर बैठे होने के बावजूद भी बाहर से वह किसी को नजर नहीं आ रहा था।

"बधाई हो बलराज!" राघव खुशी से झूमते हुए बोला—"वाकई कमाल कर दिया तूने।"

कुछ कहने के बजाय बलराज गोगिया के होंठों पर मुस्कान थिरक उठी—उसी के साथ ही उसने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

जिस पुलिस का वह वांटिड था उसी की निगरानी में वह गंगानगर की सीमा के बाहर बढ़ रहा था।

बाहर निकलते ही उसने वैगन की रफ्तार एकदम से कई गुणा तेज कर दी। वैगन बन्दूक से छूटी गोली की तरह सड़क पर भागने लगी।

करीब दो किलोमीटर चलने के पश्चात् बलराज गोगिया ने वैगन को बाईं तरफ जा रही सड़क पर मोड़ दिया। उसी सड़क पर कुछ दूर हांडा सड़क के बीचो-बीच खड़ा दिखाई दिया उसे। वैगन की हैडलाईट में उसका काला शरीर जगमगा रहा था।

बलराज गोगिया ने वैगन को उसके नजदीक ले जाकर रोक दिया—तुरंत ही चमन सिंह ने दरवाजा खोला—और हांडा उछलकर अंदर आ गया।

बलराज गोगिया ने वैगन आगे बढ़ा दी।

"मुबारक हो बलराज गोगिया साहब—आज तो आपने असम्भव को सम्भव बना दिया।" हांडा उसकी तारीफ करते हुए बोला।

"गाड़ी किधर ले जानी है?" उसकी बात को नजरअंदाज करते हुए पूछा बलराज ने।

"आधा किलोमीटर आगे बाईं तरफ कच्ची सड़क जा रही है—उधर कुछ दूरी पर शैड बना है—गाड़ी उसी में ले जानी है।"

बलराज गोगिया ने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

तीस-चालीस मिनट तो सुकून से बीत गए—वैगन के रवाना होने के पश्चात् सभी ने चैन की सांस ली—वैगन शहर से बाहर सकुशलता से निकल गई।

रावत ने थाने में ही उपस्थित एस०पी० की तरफ देखा और बोला—"सर—बलराज गोगिया के बारे में हमारी धारणा निर्मूल ही निकली—अगर बलराज गोगिया का इरादा होता तो वह अवश्य ही रुपया लूटने की कोई-न-कोई कोशिश जरूर करता।"

"हो सकता है पहले उसका इरादा डाका डालने का हो—लेकिन जब उसने पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था को देखा हो तो उसे अपना इरादा बदलने को मजबूर होना पड़ गया हो।" एस०पी० बोला।

"हां।"—तुरंत ही हां में हां मिलाई रावत ने—"जरूर ऐसा ही होगा—बलराज गोगिया जायजा लेने जरूर आया होगा—मगर पुलिस को देखकर वापिस लौटने को मजबूर हो गया होगा।"

"जो भी हो—रुपया कुशलता से गंगानगर से बाहर निकल गया है।"

"सर...ऐसा भी हो सकता है कि—।"—रावत कुछ सोचते हुए बोला—"बलराज गोगिया सचमुच ही गंगानगर को छोड़कर किसी दूसरे शहर में चला गया हो या सरहद पार कर गया हो।"

"हो सकता है—लेकिन फिर भी हमें उसकी तलाश जारी रखनी पड़ेगी।" एस०पी० बोला। और फिर कुछ याद आते ही पुनः बोला—"बलराज गोगिया के पोस्टरों का क्या हुआ?"

"वे तो मैंने शाम छः बजे ही शहर की गलियों—बाजारों में चिपकाने के लिए रवाना कर दिये थे।"

"गुड!" मुस्कराया एस०पी०—"काफी तेज जा रहे हो।"

"थैंक्यू सर!" आदर से बोला रावत—"काफी मंगवाऊं सर?"

"हां।" एस०पी० बोला—"मंगवा लो—थकान से बदन टूट रहा है।" कहते हुए वह अपनी कलाई घड़ी में देखने लगा।

साढ़े ग्यारह बज रहे थे।

रावत स्वयं उठकर ऑफिस से बाहर निकला—बाहर खड़े संतरी को कॉफी बनाने के लिए कहा और वापिस अन्दर आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

अभी वह कुर्सी पर बैठा ही था कि तभी वायरलैस ऑपरेटर प्रविष्ट हुआ ऑफिस में।

उसकी उड़ी हुई रंगत देखकर रावत के साथ-साथ एस०पी० भी चौंक पड़ा।

"कोई खास मैसेज है?" एस०पी० उसके घबराये चेहरे की तरफ देखते हुए बोला।

"वैगन गायब है सर!"

"क्या?"

इतनी बुरी तरह से उछले दोनों कि उनकी कुर्सियां पीछे जा

गिरीं। हड़बड़ाहट में वायरलैस ऑपरेटर आगे बढ़ा और कुर्सियां सीधी करने लगा।

"क...कहां से आया है मैसेज?" रावत बड़ी मुश्किल से पूछ पाया।

"साथ वाले शहर से।"

"लेकिन वैगन यहां से तो पूरी कुशलता से निकल चुकी थी।"

"म...मैंने भी यही कहा था—मगर वैगन अभी तक शहर में प्रविष्ट नहीं हुई और न ही वैगन की तरफ से वहां की पुलिस को कोई मैसेज मिला है।"

"ओह नो।" एस०पी० की आंखें आश्चर्य से फैल गईं।

फटी-फटी आंखों से वह रावत की तरफ देखने लगा—"यह...यह क्या हो गया रावत—वैगन गायब कैसे हो गई?"

"लगता है बलराज गोगिया अपनी चाल चल गया—अवश्य ही उसने कोई ऐसी युक्ति भिड़ाई होगी जो हमारी समझ से दूर होगी—और वह कामयाब हो गया।"

"फौरन साथ वाले शहर की तरफ कूच करो।" एस०पी० चीखा—फिर वायरलैस ऑपरेटर की तरफ देखते हुए बोला—"कन्ट्रोल रूम में संदेश दे दो—वैगन की खोज में चारों तरफ पुलिस भेज दी जाए।"

"यस सर!" कहकर वायरलैस ऑपरेटर झटके से मुड़ा और बाहर की तरफ भागा।

उसके पीछे-पीछे एस०पी० और रावत तेजी से बाहर की तरफ निकले और लगभग भागते हुए जिप्सी की तरफ बढ़े।

आनन-फानन में रावत ने जिप्सी स्टार्ट की और कोतवाली के दरवाजे की तरफ भगा दी।

❑❑❑

दो घण्टे की अथक भाग-दौड़ के बाद जाकर वैगन का पता चल पाया—वह भी एक पुलिस जिप्सी के ड्राईवर ने हैडलाईट में सड़क पर खून बिखरा देख लिया था और इधर-उधर फैले कुछ फटे हुए कपड़े नजर आ गए थे उसे।

उसके पास उस वक्त डी०एस०पी० रैंक का ऑफिसर बैठा था।

फौरन उसने डी०एस०पी० को खून के बारे में बताया।

"गाड़ी रोको।" डी०एस०पी० बोला।

ड्राईवर ने गाड़ी रोक दी।

डी०एस०पी० नीचे उतरा और सड़क पर पड़े खून के धब्बों को देखने लगा—कुछ देर इधर-उधर देखने के पश्चात् जिप्सी में बैठे

दो बॉडीगार्डों को बुलाया और बोला—"आस-पास का इलाका देखो—हो सकता है यहीं कुछ मिल जाए।"

दोनों हवलदार अलग-अलग दिशाओं में सड़क के नीचे उतर गए।

शीघ्र ही दाईं तरफ वाले हवलदार की तेज चीख गूंज उठी वहां। साथ ही वह वापिस भागकर आता नजर आया।

"क्या हुआ?" ऊंचे स्वर में डी०एस०पी० चिल्लाया—"चीखें क्यों?"

"ल...लाश!" निकट आते हुए वह हकलाया।

"लाश!" बुरी तरह से चौंका डी०एस०पी०—और फौरन ड्राईवर से बोला—"गाड़ी उधर करो।"

ड्राईवर ने फौरन जिप्सी का रुख उस तरफ कर दिया। उसी के साथ ही पूरा इलाका प्रकाश से नहा गया।

"आओ!" डी०एस०पी० ड्राईवर से बोला—"दिखाओ कहां है लाश?"

हवलदार वापिस उधर बढ़ा जिधर उसने नीम अंधेरे में लाशें देखी थीं।

निकट पहुंचते ही वह जोरों से चीखा—"द...दो लाशें हैं सर!"

डी०एस०पी० नजदीक आया और लाशों की नीली वर्दी देखते ही उछल पड़ा—"य...यह तो वैगन के ड्राईवरों की ड्रैस पहने हैं।" कहते हुए वह और भी जोरों से चौंका—"बाकी के दो कहां गए?"

बड़बड़ाया वह—और फिर आदेश देते हुए बोला—"दो लाशें और भी होनी चाहिए—ढूंढो उन्हें।"

कहते हुए उसका कलेजा जोरों से धड़क रहा था।

लाशें तो नहीं मिली अलबत्ता वैगन जरूर मिल गई उन्हें। वैगन की झाड़ियों के पीछे खड़े देख हैरान रह गया डी०एस०पी०।

फौरन वह जिप्सी की तरफ भागा—वायरलेस द्वारा खोज कर रहीं सभी गाड़ियों को सूचित कर दिया कि वैगन मिल गई है।

और करीब आधे घण्टे के भीतर-भीतर वह पूरा इलाका पुलिस से घिर गया।

और करीब आधे घण्टे के भीतर-भीतर वह पूरा इलाका पुलिस से घिर गया।

एस०पी० और रावत भी वहां पहुंच चुके थे—खुद कमिश्नर भी वहां पहुंच चुके थे।

"य...यह क्या है इंस्पेक्टर?"—कमिश्नर रावत को फटकारते हुए दहाड़े—"वैगन अगले शहर में जाने की बजाय यहां कैसे पहुंच गई?"

"म...मैं खुद हैरान हूं सर—वैगन का ड्राईविंग केबिन भी खुला है—और ये लाशें—समझ में नहीं आता कैसे हो गया यह सब?"

बुरी तरह से बौखलाया हुआ था रावत।

कमिश्नर वैगन के पिछले हिस्से के करीब पहुंचे—दरवाजे का हैंडिल पकड़कर उसे अपनी तरफ खींचा—मगर दरवाजा खुला नहीं।

हैंडिल को छोड़कर उन्होंने एस०पी० की तरफ देखा—"लगता है लुटेरे अभी वैगन का दरवाजा खोलने में कामयाब नहीं हुए—बैंक मैनेजर को बुलाओ—वही चाबी लगाकर बता सकता है कि वैगन का दरवाजा खुल चुका है या नहीं।"

एस०पी० ने रावत की तरफ देखा—"बैंक मैनेजर को बुलाओ।" कमिश्नर का आदेश उसकी तरफ ट्रांसफर कर दिया उसने।

रावत तुरंत ही वहां से हटा और कुछ दूर खड़े सब-इंस्पैक्टर राणा को मैनेजर को बुला लाने का हुक्म दे दिया—साथ ही उसे यह आदेश भी दिया कि वह खुद मैनेज़र को बुलाने जाए किसी और को न भेजे।

राणा के जाने के पश्चात् वह वापिस वैगन के पास लौट आया।

"मैंने राणा को भेज दिया है सर।" एस०पी० को अपनी तरफ देखते पाकर रावत तत्परता से बोला।

❑❑❑

दोनों लाशों को देखते ही चीख उठा बैंक मैनेजर—"य...यह तो वो नहीं हैं।"

कमिश्नर—एस०पी० के साथ-साथ रावत भी बुरी तरह से उछल पड़े।

"कौन नहीं हैं ये?" कमिश्नर ने धड़कते दिल से पूछा।

"व...वो जो रुपया लेने आये थे।"

जबरदस्त झटका लगा सभी को। आंखें फटने के कगार तक पहुंच गईं।

"क्या कहते हो?" रावत हैरानी से मुंह फाड़े बोला—"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"मैं नहीं जानता—मगर ये वो नहीं जो रुपया लेने आये थे—रुपया लेने वाले सभी चारों-के-चारों कोई और थे।"

"कौन थे वो?" रावत का कलेजा धाड़-धाड़ उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

"मैं नहीं जानता।"

"इन्हें जानते हो?"

दो बॉडीगार्डों को बुलाया और बोला—"आस-पास का इलाका देखो—हो सकता है यहीं कुछ मिल जाए।"

दोनों हवलदार अलग-अलग दिशाओं में सड़क के नीचे उतर गए।

शीघ्र ही दाईं तरफ वाले हवलदार की तेज चीख गूंज उठी वहां। साथ ही वह वापिस भागकर आता नजर आया।

"क्या हुआ?" ऊंचे स्वर में डी०एस०पी० चिल्लाया—"चीखें क्यों?"

"ल...लाश!" निकट आते हुए वह हकलाया।

"लाश!" बुरी तरह से चौंका डी०एस०पी०—और फौरन ड्राईवर से बोला—"गाड़ी उधर करो।"

ड्राईवर ने फौरन जिप्सी का रुख उस तरफ कर दिया। उसी के साथ ही पूरा इलाका प्रकाश से नहा गया।

"आओ!" डी०एस०पी० ड्राईवर से बोला—"दिखाओ कहां है लाश?"

हवलदार वापिस उधर बढ़ा जिधर उसने नीम अंधेरे में लाशें देखी थीं।

निकट पहुंचते ही वह जोरों से चीखा—"द...दो लाशें हैं सर!"

डी०एस०पी० नजदीक आया और लाशों की नीली वर्दी देखते ही उछल पड़ा—"य...यह तो वैगन के ड्राईवरों की ड्रैस पहने हैं।" कहते हुए वह और भी जोरों से चौंका—"बाकी के दो कहां गए?"

बड़बड़ाया वह—और फिर आदेश देते हुए बोला—"दो लाशें और भी होनी चाहिए—ढूंढो उन्हें।"

कहते हुए उसका कलेजा जोरों से धड़क रहा था।

लाशें तो नहीं मिली अलबत्ता वैगन जरूर मिल गई उन्हें। वैगन की झाड़ियों के पीछे खड़े देख हैरान रह गया डी०एस०पी०।

फौरन वह जिप्सी की तरफ भागा—वायरलैस द्वारा खोज कर रहीं सभी गाड़ियों को सूचित कर दिया कि वैगन मिल गई है।

और करीब आधे घण्टे के भीतर-भीतर वह पूरा इलाका पुलिस से घिर गया।

और करीब आधे घण्टे के भीतर-भीतर वह पूरा इलाका पुलिस से घिर गया।

एस०पी० और रावत भी वहां पहुंच चुके थे—खुद कमिश्नर भी वहां पहुंच चुके थे।

"य...यह क्या है इंस्पेक्टर?"—कमिश्नर रावत को फटकारते हुए दहाड़े—"वैगन अगले शहर में जाने की बजाय यहां कैसे पहुंच गई?"

"म...मैं खुद हैरान हूं सर—वैगन का ड्राईविंग केबिन भी खुला है—और ये लाशें—समझ में नहीं आता कैसे हो गया यह सब?"

बुरी तरह से बौखलाया हुआ था रावत।

कमिश्नर वैगन के पिछले हिस्से के करीब पहुंचे—दरवाजे का हैंडिल पकड़कर उसे अपनी तरफ खींचा—मगर दरवाजा खुला नहीं।

हैंडिल को छोड़कर उन्होंने एस०पी० की तरफ देखा—"लगता है लुटेरे अभी वैगन का दरवाजा खोलने में कामयाब नहीं हुए—बैंक मैनेजर को बुलाओ—वही चाबी लगाकर बता सकता है कि वैगन का दरवाजा खुल चुका है या नहीं।"

एस०पी० ने रावत की तरफ देखा—"बैंक मैनेजर को बुलाओ।" कमिश्नर का आदेश उसकी तरफ ट्रांसफर कर दिया उसने।

रावत तुरंत ही वहां से हटा और कुछ दूर खड़े सब-इंस्पैक्टर राणा को मैनेजर को बुला लाने का हुक्म दे दिया—साथ ही उसे यह आदेश भी दिया कि वह खुद मैनेज़र को बुलाने जाए किसी और को न भेजे।

राणा के जाने के पश्चात् वह वापिस वैगन के पास लौट आया।

"मैंने राणा को भेज दिया है सर।" एस०पी० को अपनी तरफ देखते पाकर रावत तत्परता से बोला।

❑❑❑

दोनों लाशों को देखते ही चीख उठा बैंक मैनेजर—"य...यह तो वो नहीं हैं।"

कमिश्नर—एस०पी० के साथ-साथ रावत भी बुरी तरह से उछल पड़े।

"कौन नहीं हैं ये?" कमिश्नर ने धड़कते दिल से पूछा।

"व...वो जो रुपया लेने आये थे।"

जबरदस्त झटका लगा सभी को। आंखें फटने के कगार तक पहुंच गईं।

"क्या कहते हो?" रावत हैरानी से मुंह फाड़े बोला—"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"मैं नहीं जानता—मगर ये वो नहीं जो रुपया लेने आये थे—रुपया लेने वाले सभी चारों-के-चारों कोई और थे।"

"कौन थे वो?" रावत का कलेजा धाड़-धाड़ उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

"मैं नहीं जानता।"

"इन्हें जानते हो?"

"हां...पहले यही दोनों रुपया लेने आते थे—इनके दो साथी और भी हैं।"

'ओह गॉड—यह...यह कैसे हो गया?" हैरानी से आंखों का दायरा पल-प्रति पल बढ़ने लगा था उसका।

"मेरे ख्याल से तो लुटेरों ने पहले किसी तरह वैगन को रुकवाया—ड्राईवर और उसके साथी को किसी भी ढंग से मजबूर करके उन्होंने बाहर निकला और उन्हें खत्म करके यहां फेंक दिया। फिर!"—एस०पी० अपने विचार व्यक्त करते हुए बोला—"लुटेरे वैगन लेकर बैंक पहुंचे और सारा रुपया निकालकर वैगन लेकर यहां आ गए। यहां से उन्होंने वैगन से रुपया निकाला और फरार हो गए।"

"ऐसा नहीं हो सकता।"—बैंक मैनेजर चींख उठा।

सभी उसकी तरफ देखने लगे।

"क्यों नहीं हो सकता?" एस०पी० ने उसे घूरकर पूछा।

"क्योंकि वैगन के अन्दर भी दो गार्ड होते हैं—और वैगन का लॉक वक्त से पहले किसी हालत में नहीं खुल सकता।"

"ओह!"

"मैनेजर!"—तभी कमिश्नर बोले—"तुम वैगन के लॉक को चाबी लगाकर देखो।"

तुरंत ही मैनेजर आगे बढ़ा—जेब से चाबी निकालकर वैगन के की-होल में डाली और घुमा दी।

एक मिनट भी नहीं बीता कि वैगन का दरवाजा खुला और अन्दर मौजूद दोनों गार्ड बाहर आ गए।

बाहर खड़ी बेशुमार पुलिस को देखकर और वैगन को और किसी स्थान पर खड़ी देखकर बुरी तरह से उछल पड़े दोनों गार्ड—और जब उनकी नजरें अपने साथियों की लाशों पर पड़ीं तो उनका रोयां-रोयां कांप उठा।

"य...यह सब क्या है?" एक गार्ड कांपते स्वर में बोला।

"यही हम तुमसे पूछ रहे हैं कि यह क्या है?" एस०पी० ने पूछा।

बुरी तरह से हड़बड़ाया वह गार्ड—"ह...हमें क्या मालूम साहब—हम तो सुबह से ही वैगन में बन्द हैं—करीब चार बजे वैगन खड़ी हो गई—थोड़ी देर बाद फिर चल पड़ी—और थोड़ा-सा चलने के पश्चात् फिर खड़ी हो गई—वैगन का दरवाजा लॉक था—इसलिए हम बाहर भी नहीं निकल सकते थे कि हमें पता चल पाता कि वैगन रुकी क्यों—हम तो यही समझ रहे थे कि वैगन में कोई खराबी आ गई है।"

"और तभी से वैगन यहीं मौजूद है—हिली भी नहीं यह?" रावत ने पूछा।

"नहीं साहब!"

रावत का दिल किया कि जोर-जोर से अपना माथा पीटने लगे—चेहरे पर इस कदर फटकार बरसने लगी मानो अभी दहाड़ें मार कर रोने लगेगा।

"बलराज गोगिया।" वह कमिश्नर की तरफ देखते हुए हकलाते स्वर में बोला—"अपना काम कर गया साहब।"

"वो तो हमें भी मालूम है—लेकिन यह हो कैसे गया?"

"बलराज गोगिया यह असली वैगन लेकर नहीं बल्कि बिल्कुल ऐसी ही नकली वैगन लेकर बैंक पहुंचा और रुपया लेकर आराम से चलता बना—जो पुलिस फोर्स उसे गिरफ्तार करने के लिए तैनात की गई थी उसकी पुलिस की निगरानी में वह हरामजादा शान से चलता हुआ फरार हो गया।"

"ल...लेकिन उसने यह वैगन रुकवा कैसे ली?" एस०पी० बोला।

"जो दिमाग पच्चीस करोड़ लूटने की इतनी बड़ी योजना बना सकता है—उसने वैगन रोकने के लिए भी कोई कारगार योजना बनाई होगी।"—रावत बोला—"सड़क से मिले फटे हुए जनाना कपड़े तो यही कह रहे हैं कि इस काम में उसने किसी लड़की का सहारा लिया होगा।"

"ओह!" एस०पी० का चेहरा लटक गया।

रावत ने मैनेजर की तरफ गर्दन घुमाई—"तुम उन चारों के हुलिये बयान कर सकते हो जो रुपया लेने पहुंचे थे?"

"हां।" कहकर मैनेजर चारों के हुलिये बताने लगा।

"तुम्हें किसी पर संदेह नहीं हुआ?" उसकी बात खत्म होते ही रावत ने अगला सवाल किया—"कि वे असली न होकर नकली गार्ड हो सकते हैं?"

"संदेह उस हालत में होता—अगर मेरे पास उनके आने का फोन न आया होता—जयपुर से आये फोन द्वारा मुझे पहले ही सूचित कर दिया गया था कि इस बार चारों गार्ड नये आ रहे हैं।"

"ओह!"—रावत के मुंह से निकला—"क्या पहले भी ऐसे फोन द्वारा सूचित किया जाता है तुम्हें?"

"बिल्कुल किया जाता है—जब भी कोई गार्ड नया आता है तो मुझे पहले ही सूचना दी जाती है।"

रावत चुप कर गया।

"इसका मतलब है।"—रावत के चुप करते ही कमिश्नर बोल

पड़े—"कि ऐसी ही एक और वैगन है जिसके द्वारा बलराज ने पच्चीस करोड़ का डाका डाला है।"

"यस सर।" बोला रावत।

"तो ढूंढो उस वैगन को—आस-पास का सारा इलाका छान मारो—कन्ट्रोल रूम से आस-पास के हर शहर में सूचना भेज दो कि उस वैगन की तलाश की जाए।"

"य...यस सर।"

कहते हुए रावत की आंखों के सामने बलराज का चेहरा नाचने लगा था।

❑❑❑

रावत को रात के वक्त अपनी कोठी में देखकर राठौर के चेहरे पर पहले तो आश्चर्य उमड़ आया—लेकिन अगले ही क्षण उसके होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान आकर गायब हो गई।

रावत का रात के इस वक्त उसे उठाना यह जाहिर कर रहा था कि बलराज गोगिया ऑपरेशन में कामयाब हो गया है—पच्चीस करोड़ रुपया लूट चुका है वह। उसका दिल किया कि वह खुशी से नाचने लगे।

मगर ऐसा कर नहीं सकता था वह—रावत जैसे इंस्पेक्टर को पहले ही उस पर शक था—उसकी इस हरकत से उसका संदेह विश्वास में बदल सकता था—सो अपने चेहरे पर कठोरता लाते हुए वह गुस्सेभरे स्वर में गुर्राया—"रात के इस वक्त यहां आने का मतलब—आखिर क्यों पड़े हो मेरे पीछे?"

रावत के होठों पर क्रूर मुस्कान फैल गई—"बधाई हो"—वह बोला—"तुम्हारा दोस्त पच्चीस करोड़ पर हाथ साफ करने में सफल हो गया है।"

"पच्चीस करोड़—दोस्त—क्या कह रहे हो तुम—मेरी समझ में कुछ नहीं आं रहा।"

"अन्जान बनने की कोशिश मत कर राठौर।"—एकदम से स्वर हिंसक हो गया रावत का—आंखों से कहर बरसने लगा—"बलराज गोगिया ने तेरी शह पर ही इस शहर में पैर रखा और पच्चीस करोड़ रुपया लूटकर फरार हो गया—रुपया लेकर वह कहां गया है—इसका पता केवल तू ही जानता है।"

"शटअप!" दहाड़ उठा राठौर—"तुम मुझ पर बेवजह इल्जाम लगा रहे हो इंस्पेक्टर! मेरा न तो बलराज गोगिया से सम्बंध है और न ही मैंने उसको बुलाया है—और न ही मुझे कोई डाका पड़ने का पता है—डाके की खबर तो मैं तुम्हारे मुंह से सुन रहा हूं।"

"मैं जानता हूं तू ऐसा ही कहेगा राठौर—लेकिन इस वार मैं

अपने हाथ पक्के करके आया हूं—ताकि तेरी गर्दन आसानी से पकड़ सकूं।"

कहकर उसने कमिश्नर द्वारा प्राप्त आज्ञा-पत्र निकालकर उसकी आंखों के सामने किया और बोला—"इस कागज में इतना दम है राठौर कि मैं अभी तेरे मुंह पर थप्पड़ मार दूं तो भी तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा।"

राठौर का चेहरा मानो लाल पड़ गया हो—आंखें अपमान से सुलग उठी थीं।

"तू अपनी औकात से बहुत आगे बढ़ रहा है इंस्पेक्टर।"

"मैं यहां तुझे अपनी औकात बताने नहीं आया राठौर, अगर अपनी औकात बताने लगूं तो पता नहीं क्या कुछ कर गुजरूं—मैं तुमसे यह जानने आया हूं कि गंगानगर और उसके बाहर तेरी जायदाद किस-किस जगह है?"

"क्यों?" हड़बड़ाया राठौर।

"यह भी बता दूंगा—पहले बोल तेरी वर्कशॉप कहां हैं—तेरे होटल कहां हैं—फार्म कहां हैं?"

राठौर का कलेजा धड़कने लगा।

"जल्दी बोल—और सच बोल।"—गुर्राया रावत—"अगर एक भी जगह कम बोली तो समझ ले डाके का सीधा इल्जाम तुम्हीं पर जाएगा।"

राठौर कुछ देर सोचता रहा—फिर रावत को बताने लगा।

तुरंत ही रावत ने कन्ट्रोल रूम द्वारा सभी गश्ती गाड़ियों को उक्त स्थानों की तलाशी लेने का हुक्म सुना दिया और फिर राठौर की तरफ देखते हुए बोला—"जब तक मैं न चाहूं—तुम अपने घर से बाहर नहीं निकल सकते।"

कहकर वह झटके से मुड़ा और बाहर निकल गया—उसके ऑर्डर की राठौर पर क्या प्रतिक्रिया हुई—यह देखने की कोशिश भी नहीं की उसने।

❑❑❑

रावत के जाते ही राठौर तेजी से अपने कमरे में पहुंचा और फोन उठाकर नम्बर डायल करने लगा।

लेकिन फिर वह सोच कर कि हो सकता है उसका फोन टेप किया जा रहा हो, उसने फोन वापिस क्रेडिल पर रख दिया और अपने कमरे में चहलकदमी करता रहा।

उसके चेहरे पर इस वक्त बेचैनी नाच रही थी। हालांकि रावत को उसने अपने उस शैड का पता नहीं बताया था जिसमें उसने वैगन रखने के लिए हांडा से कहा था—मगर फिर भी वह बेचैन था—कारण

था जब तक वैगन रहेगी—तब तक उसके पकड़े जाने की भी सम्भावना बनी रहेगी—वह हांडा से कहकर जल्द-से-जल्द वैगन को नष्ट कर देने के लिए हुक्म देना चाहता था।

कुछ सोचकर वह बाहर निकला और लॉन में टहलने लगा—बीच-बीच में वह उछल कर बाऊंड्री के बाहर भी झांक लेता था।

कोठी के सामने चार पुलिसिये नजर आ रहे थे उसे, जिनकी नजरें कोठी की तरफ ही टिकी हुई थीं।

टहलता हुआ राठौर पीछे वाली दीवार के करीब पहुंच गया।

वहां भी उचक कर देखा उसने—कोई भी नजर नहीं आया।

तुरंत ही उसने दीवार पकड़ी और ऊपर चढ़कर बाहर कूद गया।

बाहर सड़क पर आते ही राठौर तेज कदमों से एक तरफ चलने लगा।

शीघ्र ही उसे एक खाली टैक्सी आती नजर आई—राठौर ने हाथ देकर उसे रुकवाया और उसमें सवार हो गया।

टैक्सी तेजी से आगे बढ़ने लगी—राठौर ड्राईवर को समझाता जा रहा था कि उसे किधर मुड़ना है?

गंगानगर की सीमा पार कर उसने करीब दो किलोमीटर आगे टैक्सी रुकवाई और बाहर निकल आया।

भाड़ा चुकाकर उसने टैक्सी को वहां से रवाना किया और फिर एक तरफ पैदल ही चल पड़ा—।

❑❑❑

जिप्सी को राठौर की वर्कशॉप के वंद दरवाजे के सामने रोका रावत ने और नीचे उतरकर गेट के पास आ गया।

लोहे के विशाल फाटक पर काफी बड़ा ताला झूल रहा था।

रावत ने ताले को पकड़कर देखा—फिर एक लम्बी सांस छोड़ उसे छोड़ दिया और आस-पास नजरें दौड़ाने लगा।

वर्कशॉप करीब सौ फीट चौड़ी थी—उसका फाटक बिल्कुल बीच में बना हुआ था।

रावत ने वहीं खड़े-खड़े ही दोनों तरफ की दीवारों का जायजा लिया—मगर दीवारें इतनी ऊंची थीं कि उन पर चढ़ पाना मुश्किल ही नहीं असम्भव लगता था।

लेकिन उसका वर्कशॉप में प्रवेश करना भी लाजिमी था।

पहले तो उसका दिल किया कि गोली मारकर ताला तोड़ दे—मगर ऐसा करने से अगर वर्कशॉप में से कुछ नहीं मिलता तो

वह खुद बुरी तरह से फंस सकता था। इस कारण ताला तोड़ने का इरादा त्यागना पड़ा उसे।

लेकिन वर्कशॉप में प्रविष्ट होना भी लाजिमी था उसके लिए।

तभी उसकी आंखें अपनी जिप्सी पर पड़ीं—अगले ही क्षण उसकी आंखों में चमक उभर आई—वर्कशॉप में प्रवेश करने का तरीका मिल गया था उसे।

फौरन वह जिप्सी में सवार हुआ उसे स्टार्ट किया और बैक करके दीवार के बराबर में खड़ी करके इंजन बन्द कर दिया।

तत्पश्चात् वह सीट पर ही खड़ा हो गया—और वहीं से हल्का-सा जायजा लेकर जिप्सी की छत पर खड़ा हो गया।

हाथ ऊंचे करके उसने दीवार के दूसरी तरफ लटक रहा था—हाथ ऊपर मुंडेर को पकड़े हुए थे।

रावत ने नीचे देखा—फिर हाथ छोड़ दिया।

'धप्प' की आवाज के साथ उसके पंजे नीचे जमीन से टकराये—साथ ही घुटने मुड़ गए।

लेकिन रावत ने तुरंत ही स्वयं को सम्भाल लिया और सीधा होकर वर्कशॉप की तरफ बढ़ने लगा।

लोहे की चादरों की छत थी उस वर्कशॉप में चार मारुति कारों के अलावा दो ट्रक तथा एक बस जो कि टूटी-फूटी अवस्था में खड़ी थी। इसके अलावा खुले हुए इंजन, स्पेयर पार्ट्स वगैरह इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

रावत एक-एक चीज को चेक करने लगा—वह किसी ऐसी वस्तु को ढूंढने में लगा हुआ था जिसके द्वारा वह राठौर पर सीधा हाथ डाल सके।

आधा घण्टा बीत गया—लेकिन उसे ऐसी कोई चीज नजर नहीं आई जो उसके लिए सहायक बन सकती।

रावत के चेहरे पर निराशा नाचने लगी—आंखों में उदासी के लक्षण उभर आये।

निराशा से भरा हुआ वह वापिस पलटा और दीवार की तरफ बढ़ने लगा।

लेकिन तभी एकाएक ही वह पलटा और वापिस मुड़कर बस की तरफ बढ़ने लगा।

बस के निकट पहुंचकर उसने उसे देखा तो उसकी आंखों में एक गहरी चमक नाच उठी।

बस की केवल बॉडी खड़ी थी वहां—नीचे की चेसिस और इंजन वाला हिस्सा वहां मौजूद नहीं था।

आशापूर्ण नेत्रों से उसने वहां मौजूद ट्रकों के पहियों पर नजर

मारी—एक ट्रक के पिछले चारों पहिये गायब थे।

और इस वक्त वह जैक पर खड़ा था।

रावत उन पहियों को या उनके रिमों को ढूंढने लगा।

मगर पहिये नहीं मिले।

वह ट्रक के करीब पहुंचा और ध्यानपूर्वक उस स्थान को देखने लगा जहां पर कि पहिये फिट थे।

ताजा ग्रीस लगी हुई थी वहां—यानि पहिये हाल ही में उतरे थे—अगर पहिये उतरे कुछ दिन हो गए होते तो ग्रीस पर धूल जम जाती—जबकि ग्रीस अभी ज्यों-की-त्यों थी।

रावत को विश्वास हो गया कि ट्रक के पहिये हाल में ही उतरे हैं।

वह बस के करीब पहुंचा और उसकी बॉडी के निचले हिस्से को अच्छी तरह से परखने लगा।

चेसिस के साथ फिट करने के लिए बॉडी के जिन स्थानों पर नट-बोल्ट लगते हैं—उन स्थानों पर पूरी चमक थी—जिनका मतलब साफ था कि नट-बोल्ट भी हाल में ही खोले गए हैं।

रावत की आंखों में सफलता की चमक नाचने लगी—वह जान गया कि राठौर द्वारा तैयार कराई वैगन उसकी वर्कशॉप में तैयार की गई है।

अब तो वह पूरी मजबूती से राठौर पर हाथ डाल सकता था।

सोचते हुए दीवार की तरफ बढ़ा—दीवार के नजदीक पहुंचकर उसने पास ही पड़े लोहे के ऊंचे स्टैण्ड को खिसकाकर दीवार के पास किया और स्टैण्ड पर चढ़कर दीवार फांदकर जिप्सी की छत पर आ गया।

अपनी सीट पर बैठकर उसने जिप्सी स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

कुछ ही क्षणों में उसकी जिप्सी पूरी रफ्तार से राठौर की कोठी की तरफ जा रही थी।

रावत के चेहरे पर छाई उत्तेजना देखकर साफ महसूस किया जा सकता था कि वह राठौर के पास पहुंचने के लिए किस कदर उतावला है।

❑❑❑

बलराज गोगिया ने वैगन में पड़े पच्चीस करोड़ रुपयों पर नजर डाली—फिर हांडा की तरफ देखते हुए बोला—"राठौर का काम कर दिया है मैंने—इसमें से ढाई करोड़ निकालकर हमें दो—ताकि हम फौरन यहां से दफा हो जाएं। इस शहर में अब और अधिक देर रुकना हमारे लिए खतरनाक हो सकता है।"

कहकर उसने राघव की तरफ देखा—"मैं ठीक कह रहा हूं न राघव?"

"बिल्कुल।"—बोला राघव—"गंगानगर में तो अब तुम्हें इस प्रकार खोजा जाएगा जैसे भुस के ढेर में कोई सुई गिर गई हो—गंगानगर से अब तुम्हारा सरहद पार करना नामुमकिन हो गया है।"

"मैं जानता हूं।"—गम्भीर आवाज में बोला बलराज गोगिया—"पता नहीं कब तक हिन्दुस्तान का दाना-पानी और नसीब में लिखा है—सरहद पार करना नसीब में है भी या नहीं।"

"हिम्मत क्यों हार रहा है यार—तू कामयाब होगा—जरूर होगा—देख लेना बहुत जल्द तू किसी विदेश में ऐश की जिन्दगी जी रहा होगा।"

"तेरे मुंह में घी-शक्कर।" मुस्कराया बलराज गोगिया। फिर हांडा की तरफ देखते हुए बोला—"निकालो भाई—अढ़ाई करोड़ गिनकर एक तरफ रख दो।" उसने उदय सिंह—चमन सिंह तथा भैरो सिंह की तरफ देखा—"तुम भी इस काम में हांडा का हाथ बंटाओ।"

"बड़ी जल्दी हो रही है आपको बलराज गोगिया साहब।" हांडा मुस्कुराते हुए बोला।

"हां—मैं चाहता हूं कि पुलिस को डाके का पता चलने से पहले-पहले हम यहां से जितना ज्यादा हो सके दूर निकल जाएं। इसमें राठौर का भी फायदा है—और हमारा भी।"

"मगर अढ़ाई करोड़ की धनराशि ले किसमें जाएंगे आप?"—बोला हांडा—"इतने नोटों के लिए तो लोहे की चादर की बड़ी पेटी की जरूरत पड़ेगी।"

"ओह!" बलराज गोगिया के चेहरे पर मायूसी नाच उठी। रुपया उसके सामने पड़ा था—लेकिन वह उसे उठा नहीं सकता था—उसने राघव की तरफ देखा।

उसकी आंखों का मतलब समझते हुए राघव ने हांडा से कहा—"तुम्हारे पास कोई बिस्तरबंद तो होगा।"

"सुबह से पहले वह भी नहीं मिल पायेगा।" हांडा बोला।

"क्यों? अभी क्यों नहीं?"

"काफी दूर जाना पड़ेगा—और हमारे पास सिवाय इस वैगन के कोई कन्वैंस भी नहीं।"

राघव ने कोने में खड़ी मोटरसाइकिल की तरफ इशारा किया—"उस मोटरसाइकिल पर बैठकर आओ।"

"मोटरसाइकिल खराब है।"

राघव ने घूरकर उसकी तरफ देखा—"कहीं तेरी नीयत तो खराब नहीं हो रही?"

बौखलाया हांडा—"न...हीं—मेरी नीयत भला क्यों खराब होने लगी—विश्वास न हो तो चैक कर लो।"

राघव ने बलराज की तरफ देखा।

"मैं देखता हूं।" कहते हुए बलराज गोगिया मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ने लगा।

मोटरसाइकिल के नजदीक पहुंचकर उसने उसे अच्छी तरह से चैक किया—कहीं कोई खराबी नजर नहीं आई।

एक्सीलेटर हाथ में पकड़ उसने किक मारी।

फिर तो बलराज गोगिया किक पर पिल पड़ा—मगर मोटरसाइकिल ने भी जैसे जिद पकड़ ली कि वह स्टार्ट नहीं होगी।

कुछ देर किक मारने के उपरांत बलराज गोगिया बुरी तरह से हांफता हुआ पुनः मोटरसाइकिल पर झुक गया और उसे अच्छी तरह से चैक करने लगा। पैट्रोल की टंकी में भी झांका—वह भी भरी हुई थी।

तभी अचानक बलराज गोगिया की नजर हैड के नीचे झांक रही एक तार पर पड़ी।

उसने तार को पकड़ा और अपनी तरफ खींचा—तार थोड़ी-सी बाहर आ गई—साथ ही एक और तार भी नजर आने लगी।

बलराज गोगिया ने दोनों तारों का इंसूलेशन उतारा और उन्हें आपस में ज्वॉइंट कर दिया।

वह पुनः खड़ा हुआ—किक पर पैर रखा और किक को नीचे धकेला।

पहली ही किक में मोटरसाइकिल का इंजन दहाड़ उठा।

बलराज गोगिया के चेहरे पर चमक नाच उठी—उसने हांडा की तरफ देखा और मुस्कुराते हुए बोला—

"अकेला जा सकता है न तू?"

"ह...हां...जा सकता हूं।"

"तो जा—और जल्दी से एक बड़ा बिस्तरबंद ले आ।"

हांडा ने मोटरसाइकिल स्टैण्ड से उतारी और उस पर सवार हो गया।

"शैड का गेट खोल भैरो।"

तुरंत ही भैरो आगे बढ़ा और शैड का गेट खोल दिया।

हांडा मोटरसाइकिल पर बैठा—गड़गड़ाता हुआ गेट से बाहर निकल गया।

उसके जाने के उपरांत बलराज ने उदयसिंह को हुक्म देने वाले

अन्दाज में कहा—"वैगन से अढ़ाई करोड़ रुपया बाहर निकालकर ढेर लगा दे।"

उदयसिंह पहले तो हिचकिचाया—फिर वैगन में प्रवेश कर गया।

"तू बाहर खड़ा रह—गड्डियां थाम।" राघव ने चमन को कहा।

और फिर गड्डियां वैगन से उतारकर नीचे जमीन पर रखी जाने लगीं।

बलराज गोगिया और राघव एक तरफ फर्श पर ही बैठ गए और हथेलियां पीछे करके फर्श पर टिका दीं।

❑❑❑

विपिन हांडा अभी कुछ ही दूर जा पाया था कि सामने आते शख्स को देखकर चौंक उठा।

"बॉ...स!" उसके मुख से अस्फुट-सा स्वर निकला।

सामने से राठौर तेज कदमों से चलता हुआ आ रहा था।

हांडा ने मोटरसाइकिल धीमी की और राठौर के निकट आकर रोक दी।

"बॉस आप।"—हांडा मोटरसाइकिल स्टैण्ड पर लगाते हुए राठौर से मुखातिब हुआ।

मोटरसाइकिल की हैडलाईट की वजह से राठौर उसका चेहरा नहीं देख पाया था—मगर उसने हांडा की आवाज सुनी, तो चौंक उठा वह।

"हांडा तुम—मोटरसाइकिल पर कहां जा रहे हो?"

"बलराज ने भेजा है बॉस।" जवाब दिया हांडा ने।

"कहां?"

"बिस्तरबंद लाने।" हांडा बोला—"बलराज गोगिया अपने हिस्से के अढ़ाई करोड़ लेकर फौरन यहां से चला जाना चाहता है—चूंकि अढ़ाई करोड़ के लिए काफी जगह चाहिए—इसलिए उसने बिस्तरबंद मंगवाया है।"

"और तू लेने चल दिया?"

"म...मैं क्या करता बॉस?" हड़बड़ाया हांडा।

"वापिस चल—मैं खुद बलराज गोगिया से बात करता हूं।"

बिना किसी हील-हुज्जत के हांडा ने मोटरसाइकिल स्टैण्ड से उतारी और वापस मोड़ दी। राठौर उचक कर उसके पीछे बैठ गया।

हांडा ने मोटरसाइकिल वापिस शैड की तरफ भगा दी।

❑❑❑

मनोहर लाल और रामलाल जुनेजा उस वक्त मेज पर पड़े एक यन्त्र पर झुके हुए थे—यन्त्र गोल था तथा उसके बीचो-बीच एक

सुई दाईं तरफ मुड़ी हुई हल्की-हल्की कांप रही थी।

वह दिशासूचक यन्त्र था।

रामलाल जुनेजा ने गर्दन उठाकर मनोहर लाल की आंखों में झांका—"एक घण्टे से सुई एक ही जगह पर स्थिर है—अपने स्थान से हिल भी नहीं रही।"

"मतलब यही है कि वैगन एक घण्टे से एक ही स्थान पर खड़ी है।"—मनोहर बोला—"मतलब वैगन ने जहां पहुंचना था पहुंच चुकी है।"

"तो फिर?"

"फिर क्या अटैक कर दो।" कहते हुए होठों पर क्रूर मुस्कान उभरने लगी।

दब्बू किस्म का मरियल-सा मनोहर उस वक्त बड़ा ही भयानक किस्म का आदमी नजर आ रहा था।

"बेचारा राठौर—च-च-च!"—जुनेजा तरस खाने वाले अंदाज में हँसा—"कह रहा था दस करोड़ लूंगा—बेवकूफ को हम दस रुपये भी नहीं लेने देंगे।"

"उससे बड़ा बेवकूफ तो बलराज गोगिया माना जाएगा जिसने हमारे लिए इतना बड़ा डाका डाला—अगर थोड़ा-सा भी दिमाग से काम लेता तो या तो डाका डालने से इन्कार कर देता—या फिर डाका डालकर सारा रुपया ही ले उड़ता।"

"बेवकूफ अगर यह सोचता कि इतनी धनराशि में हमारी कमीशन भी तो होगी—तो हमसे जरूर पूछता कि हम अपनी कमीशन काट कर बैंक में रुपया जमा करते हैं या लॉटरी की पूरी कीमत जमा करते हैं?"

"वह पूछ भी लेता तो क्या होता—हम कह देते कि कमीशन काटकर रुपया जमा करते हैं।" मनोहर बोला।

"अब सारा-का-सारा पच्चीस करोड़ सिर्फ हमारा होगा—ऊपर से सरकार द्वारा मिलने वाली कमीशन भी हमें मिलेगी—क्योंकि रुपयों की डिस्पैच पर मैनेजर ने हमसे दस्तखत कराये थे—हा...हा...हा।"

जुनेजा का ठहाका बड़ा वीभत्स था।

"छोड़ो इसे।"—मनोहर बोला—"अभी रुपया अपने पास नहीं बल्कि राठौर और बलराज के पास है। जब तक रुपया हमारे पास न पहुंच जाए तब तक हम हँस भी नहीं सकते।"

"अब मुश्किल ही क्या रह गई है?" जहरीली मुस्कान मुस्कराते हुए बोला जुनेजा।

"हां।"—मनोहर भी मुस्करा पड़ा—"मुश्किल तो अब वाकई नहीं रह गई—तूने वैगन के नीचे ट्रांसमीटर लगा दिया था, जिसका

सम्बंध इस यन्त्र से है।"—उसने मेज पर रखे दिशासूचक यन्त्र की तरफ इशारा किया—"अब हमें यह पता लगाने में कोई देर नहीं लगेगी कि वैगन कहां छुपा रखी है उन्होंने?"

"यही तो स्कीम थी हमारी।"

"पकाये कोई—खाये कोई।"

"हा...हा...हा।" दोनों का संयुक्त ठहाका गूंजा।

तभी मनोहर उठ खड़ा हुआ।

उसके साथ-साथ जुनेजा भी खड़ा हो गया।

"आदमी तैयार हैं न?"

"बिल्कुल।"—मुस्कुराते हुए बोला जुनेजा—"मैंने तो उन्हें रात ग्यारह बजे ही यहां बुला लिया था।"

"अच्छा! कहां है?"

"आओ मेरे साथ।" बोला जुनेजा।

और फिर जुनेजा मनोहर को साथ लिए कमरे से बाहर निकलकर अपनी कोठी के पिछले हिस्से में आ गया।

बाऊंड्री वाल के पास काफी बड़ा एक कमरा बना हुआ था—वह कमरा उसने अपनी उन दो नौकरानियों के लिए बनवा रखा था जिन्हें कभी-कभाक यूज करने के लिए ही रखा हुआ था उसने—वर्ना नौकरानियों का यहां कोई काम नहीं था—खाना वह होटल में खाता था—कोई बीवी नहीं थी...बच्चा नहीं था—केवल कोठी की सफाई का ही काम था उनका—इसके अलावा जुनेजा का बिस्तर गर्म करना होता था उन्हें।

लेकिन छः महीने पहले उसने दोनों की छुट्टी कर दी थी—तब से यह कमरा खाली पड़ा था।

जुनेजा मनोहर को लिए उस कमरे में आ गया।

कमरे में छः हट्टे-कट्टे गैंडे जैसे आकार के शक्लों से ही दरिंदे नजर आने वाले आदमी लेटे हुए थे।

पास ही उनके स्टेनगनें थीं।

शक्ल से ही वे पेशेवर हत्यारे नजर आ रहे थे।

दोनों को कमरे में प्रवेश करते देख सभी उनकी तरफ प्रश्नात्मक निगाहों से देखने लगे।

"उठो।" जुनेजा उनमें से सबसे दाईं तरफ लेटे आदमी से बोला—"अब तुम्हारा काम शुरू होना है।"

वह आदमी खड़ा हो गया और दोनों के सामने आकर अपनी खूनी आंखों से उन्हें घूरने लगा।

"मजदूरी याद है भाड़?" उसके मुख से किसी हिंसक पशु जैसा स्वर निकला।

"ह...हां—याद है—पूरे पांच लाख मिलेंगे तुम्हें।" जुनेजा थोड़े हड़बड़ाये स्वर में हकलाया।

हत्यारे ने गर्दन मोड़कर अपने साथियों को देखा—इशारा समझ फौरन सभी खड़े हो गए—।

"काम पूरी सावधानी से पूरा करना है भाई।"—मनोहर डरे हुए लहजे में बोला—"खास कर बलराज और राठौर का काम होना तो बहुत जरूरी है—अगर वे जिन्दा बच गए तो हम नहीं बचेंगे।"

हत्यारे ने मनोहर के कंधे पर हाथ मारा तो वह एक तरफ ही झुक गया—चेहरे पर दर्द की रेखाएं उभर आईं।

"घबरा नहीं भाइ।"—क्रूर मुस्कान फैंकते हुए बोला वह—"दिलावर ने आज तक जिस काम को भी हाथ में लिया है उसे पूरा करके ही दम लिया है उसने।"

"ही...ही...ही...त—तभी तो हमने तुम्हें बुक किया है दिलावर भाई।" मनोहर दांत दिखाने लगा।

"शिकार कहां है?" दिलावर ने पूछा।

"ह—हम तुम्हें वहां पहुंचा देते हैं।"

"तो चल।"

वे सभी कोठी के फ्रंट में आ गए—ड्राईव-वे पर दो कारें खड़ी थीं।

एक में मनोहर—जुनेजा और दिलावर बैठ गए—तथा दूसरी दिलावर के साथियों ने सम्भाल ली।

दोनों गाड़ियां बाहर निकलीं और एक तरफ चल पड़ीं।

लेकिन किसी की निगाह दाईं तरफ खड़े बैंक मैनेजर पर नहीं पड़ीं जो कि हैरानी से कारों को जाते देख रहा था।

पुलिस द्वारा छुट्टी मिलने के उपरांत वह सीधा अपने घर आया था—लेकिन उसके मन में उस वक्त बेचैनी फैली हुई थी—इतना बड़ा काण्ड हो गया था—उसे नींद कैसे आ सकती थी!

और फिर पच्चीस करोड़ का सम्बंध मनोहर तथा जुनेजा से भी था—सो उन्हें इस डाके की खबर मिलनी जरूरी थी। पता नहीं पुलिस कब खबर देगी उन्हें।

यही सोचकर उसने स्वयं ही उन्हें खबर देने का फैसला कर लिया।

अपना स्कूटर उठाया और घर से बाहर निकलकर उनके घर की तरफ बढ़ने लगा।

मगर यहां पहुंचकर जब उसने एक साथ दो कारें बाहर निकलती देखीं, तो बुरी तरह से चौंक उठा वह।

और जब उसकी निगाह अगली कार की पिछली सीट पर बैठे

एक खूंखार व्यक्ति पर पड़ी और साथ ही उसे किसी गन की नाल छत की तरफ उठी नजर आई, तो संदेह के कीड़े उसके दिमाग में डंक मारने लगे।

कुछ पल वहीं सकते की सी स्थिति में खड़ा रहा वह—फिर तेजी से एक तरफ खड़े स्कूटर की तरफ लपका।

फौरन स्कूटर स्टार्ट किया उसने और पूरी रफ्तार से उधर भागने लगा जिधर कि कारें गई थीं।

जिप्सी के राठौर की कोठी के सामने रुकते ही आस-पास फैले चारों सिपाही दौड़कर जिप्सी के पास आ खड़े हुए और जोरदार सैल्यूट ठोक दिया।

"राठौर अन्दर ही है न?"

"यस सर।" तत्परता से एक सिपाही बोला।

"कहीं गया तो नहीं था?"

"नो सर।"

"तुम सोये तो नहीं?"

"न—हीं सर...ह—हम पूरी तरह चाक-चौबंद कोठी की निगरानी करते रहे।" हड़बड़ा गया था वह सिपाही।

मुस्कुरा पड़ा रावत—जिप्सी से नीचे उतरकर वह कोठी के मेन गेट के पास आ खड़ा हुआ।

चारों सिपाही उसके पीछे खड़े थे।

"घण्टी बजाओ।"

फौरन एक सिपाही ने कॉलबैल का पुश दबा दिया।

पांच मिनट बीत गए—मगर कोई बाहर नहीं निकला।

सिपाही ने पुनः पुश को दबाया।

मगर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

रावत ने घूर कर चारों की तरफ देखा—"राठौर अन्दर ही है न?" हल्की-सी गुर्राहट छुपी हुई थी उसकी आवाज में।

"ह...हमने तो उसे बाहर निकलते नहीं देखा सर।" सहमे अंदाज में एक दूसरा सिपाही बोला।

रावत कुछ देर सोचपूर्ण मुद्रा में खड़ा रहा—फिर कुछ सोचकर उसने एक सिपाही की तरफ देखा—"दीवार फांदकर अन्दर जा तू—और हरामजादे को गर्दन से पकड़कर ला।"

"य...यस सर।"

"तू भी इसके साथ जा।"—एकदूसरे को भी ऑर्डर दिया उसने।

दोनों सिपाही दीवार फांदकर कोठी में प्रवेश कर गए।

रावत बाहर शेष दो सिपाहियों के साथ खड़ा उनका इंतजार करने लगा।

करीब दस मिनट बाद जब दोनों सिपाही वापिस लौटे तो उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था—आंखों में आश्चर्य के साथ-साथ खौफ भी नजर आ रहा था।

उनके चेहरे देखकर ही रावत का माथा ठनक गया।

"चूना लगा गया न वह तुम सभी को।" गुस्से तथा व्यंग से गुर्राया रावत।

दोनों के होठ कांप कर रह गए।

"अब बकते क्यों नहीं—बको—तुम्हारा बाप कैसे भाग गया?"

"ह—हम सच कहते हैं सर—ह—हमने ड्यूटी पूरी तरह निभाई है।"—रो देने वाले अंदाज में एक सिपाही बोला—"ह—हमें क्या मालूम था कि वह पीछे से भाग जाएगा।"

"भाग गया न वह।"

"य—यस सर।"

रावत का दिल किया कि वह अपने बाल नोचने लगे—लेकिन स्वयं पर काबू रखा उसने।

चारों पर कहरभरी निगाह डाली उसने और गुर्राया—"यहीं पर पहरा दोगे तुम लोग—दो पिछली तरफ चले जाओ और दो यहीं पर रहोगे—अगर वह हरामजादा वापिस आये तो उसका रुतबा नहीं देखना, रौब नहीं खाना उससे—हरामी को घसीटते हुए कोतवाली ले आना है—ज्यादा चीं-चपड़ करे तो बिना पूछे जूता परेड शुरू कर देना उसकी।"

"यस सर।"

चारों एक साथ बोले।

राठौर ने उनकी नाक कटवाकर रख दी थी—उसी के कारण उन्हें अपने ऑफिसर से खरी-खौटी सुननी पड़ रही थी—इस कारण राठौर पर उन्हें अत्यधिक गुस्सा आ रहा था—और वे अपना सारा गुस्सा उसी पर उतारने को व्याकुल हो रहे थे।

"अगर मैं!"—रावत आगे बोला—"कोतवाली में न होऊं तो हरामजादे को लॉकअप में बंद कर देना—बेशक वह चीख-चीखकर पूरी कोतवाली सिर पर उठा ले—तुम्हें उसकी एक नहीं सुननी।"

"यस सर।"

रावत अपनी जिप्सी में सवार हुआ और आगे बढ़ गया।

राठौर का इस तरह गायब होना रावत के संदेह को और भी पुख्ता कर रहा था। उसकी वर्कशॉप में से बस की चैसिस और इंजन गायब होना—ट्रक के आठ पहिये गायब होना और अब राठौर का

अपनी कोठी से चोरी से गायब होना।

—ये सब सबूत—सब क्लू चीख-चीखकर कह रहे थे कि पच्चीस करोड़ के डाके में राठौर का हाथ था। अब रावत यह भी समझ चुका था कि वह पुलिस की निगाहों से बचकर दिन के साढ़े तीन बजे कहां गया था।

बेशक राठौर इस बात से मुकर सकता था कि वह कहीं और गया था लेकिन राठौर जानता था कि साढ़े तीन बजे वह उस स्थान पर गया था जहां पर कि वैगन रुकवाकर उसने ड्राईवर तथा क्लीनर को मारा था।

उसका काम यही था बस—उसके पश्चात् बलराज उसकी वर्कशॉप में बनी वैगन में राठौर के आदमियों के साथ बैठकर बैंक की तरफ रवाना हो गया और राठौर अपनी कोठी में आ गया ताकि वह पुलिस के सामने सीना ठोंक कर कह सके कि वह तो हरदम पुलिस की निगाहों में था?

और फिर अब फिर उसका पुलिस की निगाहों से बचकर अपनी कोठी से भागना इंगित करता था कि वह उस स्थान पर गया है जहां कि पच्चीस करोड़ की वैगन पहुंचाने के लिए उसने बलराज को कहा था।

रावत ने अपनी घड़ी पर नजर डाली।

सुबह के साढ़े चार बजने वाले थे।

उसने जिप्सी का रुख कोतवाली की तरफ कर दिया।

❑❑❑

अभी चमन अढ़ाई करोड़ रुपया नीचे सजाकर एक तरफ हटा ही था कि मोटरसाइकिल की आवाज गूंज उठी।

बुरी तरह से चौंक उठा बलराज गोगिया—राघव भी उछले बिना नहीं रह पाया।

''हांडा वापिस भी लौट आया।'' वह हैरानी से बलराज गोगिया की तरफ देखते हुए बोला।

''मालूम नहीं—हो सकता है कोई और हो।'' बलराज गोगिया बोला।

इसके साथ ही उसने वैगन के अन्दर की तरफ छलांग लगा दी।

बलराज गोगिया भी उसके पीछे-पीछे वैगन के अन्दर पहुंच गया।

तुरंत ही जब दोनों बाहर निकले तो दोनों के हाथों में स्टेनगनें तनी हुई थीं।

हालांकि हांडा के दिये रिवॉल्वर अभी भी उनकी जेबों में थे

मगर उन्होंने स्टेनगनों पर ही कब्जा करना ठीक समझा।

"भैरो!" बलराज गोगिया स्टेनगन की नाल भैरो की तरफ करते हुए हिंसक स्वर में बोला—"दरवाजा खोल।"

भैरो आगे बढ़ा और दरवाजे के निकट पहुंच गया।

राघव और बलराज वैगन की ओट लिए हुए सावधान खड़े दरवाजे की तरफ देख रहे थे। उनके हाथों में थमी स्टेनगनें किसी भी क्षण आग उगलने को तैयार थीं।

तभी दरवाजे पर थाप पड़ी।

मगर तब तक भैरो दरवाजे का कुन्डा खोल चुका था।

उसने दरवाजे के बायें पल्ले की हत्थी को पकड़ा और दरवाजे के पीछे रहते हुए ही पीछे हटता चला गया।

उसी के साथ ही दरवाजा खुलता चला गया।

सामने राठौर और हांडा खड़े थे।

राठौर को हांडा के साथ देखकर बलराज ने अपना बदन ढीला छोड़ दिया।

इधर दोनों के हाथों में स्टेनगनें देख राठौर एक बार तो सहम गया—लेकिन बलराज के चेहरे पर मुस्कान बिखरती देख उसकी सांस में सांस आई।

"तूने तो डरा ही दिया था मुझे।" वह बोला।

"मैं समझा था कि कोई हांडा को कवर करके अन्दर प्रवेश करना चाहता है सो सावधानीवश मैंने स्टेनगने तान ली—वर्ना ट्रेगर दबाने का कोई इरादा नहीं था मेरा।" मुस्कुराते हुए कहा बलराज गोगिया ने और राठौर के सामने आ खड़ा हुआ।

"सफलता मुबारक हो।" राठौर नोटों से भरी वैगन देखते हुए बोला।

मुस्कुराया बलराज गोगिया—"तुम्हारे नोट वैगन में पड़े हुए हैं—मैंने अपना हिस्सा निकाल लिया है—"उसने स्टेनगन की नाल का रुख जमीन पर पड़ी गड्डियों की तरफ किया—"गिन लो अढ़ाई करोड़ हैं।"

राठौर ने नोटों की गड्डियों के ढेर की तरफ देखा—फिर गर्दन उठाकर बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा—"तुम तो बहुत उतावले नजर आ रहे हो।"

"तुम्हारा काम हो गया—मेरा वायदा भी पूरा हो गया—अब तुम अपने घर, मैं अपने घर।"

"सो तो ठीक है मगर क्या अभी जाओगे?"

"यहां ठहरकर करूंगा भी क्या?"

"जानते हो पुलिस को डाके की खबर मालूम हो चुकी है।"

"वो तो होना ही था–।" एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला बलराज।

"मगर पुलिस को तुम्हारी तलाश है–वह यही समझ रही है कि इतना बड़ा डाका सिवाय बलराज के और कोई नहीं डाल सकता।"

हँस पड़ा बलराज गोगिया राठौर की बात सुनकर–"इतना मशहूर हो चुका हूं मैं–लोगों को वर्षों बीत जाते हैं नाम कमाने में–और मैंने अभी सिर्फ दो ही कारनामे दिखाये हैं–और चारों तरफ बलराज का नाम गूंज गया।"

"तूने जो दो कारनामे दिखाए हैं–वे दोनों ही दिलात से लबालब भरे हैं–पिछली बार चण्डीगढ़ में मूर्ति चुराई तो सरकार की पूरी सुरक्षा व्यवस्था को नकारा कर दिया–और अब तो पुलिस की निगरानी में ही तुम बैंक पहुंचे–बैंक कर्मचारियों ने नोट वैगन में भरे–और फिर पुलिस की निगरानी में ही तुम बाहर निकले पच्चीस करोड़ रुपयों के साथ–किसी को कानोकान पता नहीं चला कि बैंक से पच्चीस करोड़ लूटकर बलराज गोगिया जा रहा है।"

बलराज गोगिया ने एक ठण्डी सांस छोड़ी और गाली-गुप्तार करते हुए बोला–"यह सब ऊपरवाले की मेहरबानी है–जब तक ऊपर वाले की नज़रें सही रहेंगी बलराज का कोई बाल भी बांका नहीं कर पायेगा–और जब वह हम से रूठ जायेगा, तो दुनिया की कोई भी ताकत मुझे बचा नहीं पायेगी।"

"खैर–!" बात का रुख बदलते हुए पूछा राठौर ने–"अब क्या इरादा है?"

"इरादा क्या है–अरे भाई यहां से दफा होना है।" बलराज गोगिया बोला।

"इन अढाई करोड़ रुपयों के साथ।" राघव रुपयों के ढेर की तरफ इशारा करते हुये मुस्कुराया।

"लेकिन पुलिस चारों तरफ पूरे जोर-शोर से तुम्हारी तलाश कर रही है। तुम्हारे पकड़े जाने का डर है।"

"हम शहर में प्रवेश करेंगे ही नहीं।" राघव बोला।

"तो किधर जाओगे?"

"यह तो नहीं मालूम।" बलराज गोगिया बोला–मगर गंगा नगर में प्रवेश नहीं करेंगे।"

"मगर कोई कन्वैंस–कोई गाड़ी तो तुम्हें सुबह ही मिल सकती है।"

"तुम्हारी मोटरसाइकिल किस काम आएगी।" बलराज गोगिया उनके पीछे खड़ी मोटरसाइकिल की तरफ इशारा करते हुए

बोला—"जितनी दूर सम्भव हो सका हम मोटरसाइकिल पर सफर करेंगे—फिर इसे वहीं छोड़ आगे के लिए निकल पड़ेंगे।"

"मोटरसाइकिल मेरी नहीं है, चोरी की है।"

"यह तो और भी अच्छी बात है—तुम पर कोई आंच नहीं आयेगी।" राघव बोल पड़ा।

"म...मगर।"

"छोड़ो इस अगर-मगर को—हांडा को भेजो—वह कोई बिस्तरबंद ले आयेगा।"

"मगर बाहर पुलिस है—हांडा का यूं चोरी की मोटरसाइकिल पर जाना हम सबको खतरे में डाल सकता है।"

बलराज ने घूरकर राठौर की तरफ देखा—"तेरी नीयत तो साफ है न राठौर?"

बौखला उठा राठौर—"क्यों...क्यों नीयत को क्या हुआ?"

"कहीं तेरा इरादा हमें कुछ भी न देने का हो।"

"कैसी बातें करता है।" भड़क उठा राठौर—"मैंने कहा है तुमसे कि मैं तुझे तेरा हिस्सा नहीं देता?"

"तो फिर...?"

"मैं अपने किसी आदमी को बाहर नहीं भेजूंगा—तू क्या जाने पुलिस से छुपकर...उससे चोरी से मैं यहां पहुंचा हूं—पुलिस को मुझ पर शक हो गया है कि मैं इस चोरी में तेरे साथ हूं।"

"वो तो है।"

"मगर पुलिस को भी पता लग चुका है। अगर मेरा कोई आदमी पुलिस के हत्थे चढ़ गया और उसने बक दिया तो मेरी बाकी की सांसें जेल में ही पूरी होंगी और मैं ऐसा कोई रिस्क नहीं लेना चाहता—।"

"लेकिन—।"

"तुम्हें जल्दी है तो तुम मोटरसाइकिल ले जाओ और बिस्तरबंद ले आओ।" कोरा जवाब था राठौर का—"मैं अपना कोई आदमी नहीं भेजूंगा।"

बलराज गोगिया को ताव तो बहुत आया—दिल किया कि अभी उठाकर पटक दे उसे या स्टेनगन की सारी गोलियां उसके सीने में उतार दे।

लेकिन अपने ताव को उसने अपने अंदर ही दबाया और हांडा की तरफ देखते हुए बोला—

"कहां से लेने जा रहा था तू बिस्तरबंद?"

"क्यों?" चौंका हांडा। साथ ही साथ राठौर भी चौंक कर उसे देखने लगा।

"अरे बतायेगा नहीं तो लाऊंगा कहां से।"

राठौर के चेहरे पर हैरानी उभर आई—"या...नि तू बिस्तरबंद लाने जाएगा।"

"हां...क्यों...तुम्हें कोई ऐतराज है?" बलराज गोगिया ने पूछा उससे।

"पुलिस कुत्ते की तरह तुम्हें तलाश कर रही है।"

"करने दो।"

"तू पकड़ा गया तो...?"

"घबरा नहीं राठौर—बलराज गोगिया आसानी से मुंह खोलने वालों में से नहीं। मेरा मुंह नहीं खुलेगा और फिर ऊपर से मेरा यह सरदार का रूप पुलिस को धोखे में डाल देगा।"

"तू क्या समझता है पुलिस तेरे इस रूप से वाकिफ नहीं...अब तक तो छोटे-छोटे कांस्टेबल को भी पता गया होगा कि तू सरदार के वेश में बैंक में घुसा था।"

"फिर भी मैं जाऊंगा।"—बलराज गोगिया भी जैसे जिद पर अड़ गया था।

"बड़ा जिद्दी है तू।"

"तू कुछ भी समझ—मगर मैंने जल्द-से-जल्द यह नगर छोड़ने का फैसला कर लिया है।"

बलराज दृढ़ स्वर में बोला।

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी राठौर ने—"तू नहीं मानता तो जा। मगर अगर पकड़ा गया तो मेरा नाम मत लेना।"

"नहीं लूंगा।"

कहते हुए बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा और बोला—"तू यहीं रहना राघव! मैं जल्दी ही बिस्तरबंद लेकर आ रहा हूं।"

"मैं भी तेरे साथ चलता हूं।"

"लेकिन—।"

"घबरा नहीं—पीछे से ये लोग भाग नहीं जाएंगे।" कहकर उसने राठौर की तरफ देखा—"ठीक कह रहा हूं न मैं?"

पहले तो बौखलाया राठौर फिर हां में सिर हिलाते हुए बोला—"राठौर इतना कमीना नहीं है कि यारमारी करे।"

राघव मुस्कराकर बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा।

बलराज गोगिया के लिए राघव को वहां रोकने का कोई और कारण नहीं था—सो उसने हांडा की तरफ चेहरा करके उससे पूछा—

"बता—कहां से मिलेगा बिस्तरबंद?"

"नेहरू चौक के पास ही एक बड़ी दुकान है—ऊपर दुकानदार

बोला—"जितनी दूर सम्भव हो सका हम मोटरसाइकिल पर सफर करेंगे—फिर इसे वहीं छोड़ आगे के लिए निकल पड़ेंगे।"

"मोटरसाइकिल मेरी नहीं हैं, चोरी की है।"

"यह तो और भी अच्छी बात है—तुम पर कोई आंच नहीं आयेगी।" राघव बोल पड़ा।

"म...मगर।"

"छोड़ो इस अगर-मगर को—हांडा को भेजो—वह कोई बिस्तरबंद ले आयेगा।"

"मगर बाहर पुलिस है—हांडा का यूं चोरी की मोटरसाइकिल पर जाना हम सबको खतरे में डाल सकता है।"

बलराज़ ने घूरकर राठौर की तरफ देखा—"तेरी नीयत तो साफ है न राठौर?"

बौखला उठा राठौर—"क्यों...क्यों नीयत को क्या हुआ?"

"कहीं तेरा इरादा हमें कुछ भी न देने का हो।"

"कैसी बातें करता है।" भड़क उठा राठौर—"मैंने कहा है तुमसे कि मैं तुझे तेरा हिस्सा नहीं देता?"

"तो फिर...?"

"मैं अपने किसी आदमी को बाहर नहीं भेजूंगा—तू क्या जाने पुलिस से छुपकर...उससे चोरी से मैं यहां पहुंचा हूं—पुलिस को मुझ पर शक हो गया है कि मैं इस चोरी में तेरे साथ हूं।"

"वो तो है।"

"मगर पुलिस को भी पता लग चुका है। अगर मेरा कोई आदमी पुलिस के हत्थे चढ़ गया और उसने बक दिया तो मेरी बाकी की सांसें जेल में ही पूरी होंगी और मैं ऐसा कोई रिस्क नहीं लेना चाहता—।"

"लेकिन—।"

"तुम्हें जल्दी है तो तुम मोटरसाइकिल ले जाओ और बिस्तरबंद ले आओ।" कोरा जवाब था राठौर का—"मैं अपना कोई आदमी नहीं भेजूंगा।"

बलराज गोगिया को ताव तो बहुत आया—दिल किया कि अभी उठाकर पटक दे उसे या स्टेनगन की सारी गोलियां उसके सीने में उतार दे।

लेकिन अपने ताव को उसने अपने अंदर ही दबाया और हांडा की तरफ देखते हुए बोला—

"कहां से लेने जा रहा था तू बिस्तरबंद?"

"क्यों?" चौंका हांडा। साथ ही साथ राठौर भी चौंक कर उसे देखने लगा।

"अरे बतायेगा नहीं तो लाऊंगा कहां से।"

राठौर के चेहरे पर हैरानी उभर आई—"या...नि तू बिस्तरबंद लाने जाएगा।"

"हां...क्यों...तुम्हें कोई ऐतराज है?" बलराज गोगिया ने पूछा उससे।

"पुलिस कुत्ते की तरह तुम्हें तलाश कर रही है।"

"करने दो।"

"तू पकड़ा गया तो...?"

"घबरा नहीं राठौर—बलराज गोगिया आसानी से मुंह खोलने वालों में से नहीं। मेरा मुंह नहीं खुलेगा और फिर ऊपर से मेरा यह सरदार का रूप पुलिस को धोखे में डाल देगा।"

"तू क्या समझता है पुलिस तेरे इस रूप से वाकिफ नहीं...अब तक तो छोटे-छोटे कांस्टेबल को भी पता गया होगा कि तू सरदार के वेश में बैंक में घुसा था।"

"फिर भी मैं जाऊंगा।"—बलराज गोगिया भी जैसे जिद पर अड़ गया था।

"बड़ा जिद्दी है तू।"

"तू कुछ भी समझ—मगर मैंने जल्द-से-जल्द यह नगर छोड़ने का फैसला कर लिया है।"

बलराज दृढ़ स्वर में बोला।

"ठीक है।" एक लम्बी सांस छोड़ी राठौर ने—"तू नहीं मानता तो जा। मगर अगर पकड़ा गया तो मेरा नाम मत लेना।"

"नहीं लूंगा।"

कहते हुए बलराज गोगिया ने राघव की तरफ देखा और बोला—"तू यहीं रहना राघव! मैं जल्दी ही बिस्तरबंद लेकर आ रहा हूं।"

"मैं भी तेरे साथ चलता हूं।"

"लेकिन—।"

"घबरा नहीं—पीछे से ये लोग भाग नहीं जाएंगे।" कहकर उसने राठौर की तरफ देखा—"ठीक कह रहा हूं न मैं?"

पहले तो बौखलाया राठौर फिर हां में सिर हिलाते हुए बोला—"राठौर इतना कमीना नहीं है कि यारमारी करे।"

राघव मुस्कराकर बलराज गोगिया की तरफ देखने लगा।

बलराज गोगिया के लिए राघव को वहां रोकने का कोई और कारण नहीं था—सो उसने हांडा की तरफ चेहरा करके उससे पूछा—

"बता—कहां से मिलेगा बिस्तरबंद?"

"नेहरू चौक के पास ही एक बड़ी दुकान है—ऊपर दुकानदार

का मकान है। दुकान की बगल में ही ऊपर को सीढ़ियां जा रही हैं—घण्टी बजाकर उसे उठा लेना।''

''दुकान का नाम?''

''जगपाल जनरल स्टोर।'' हांडा ने दुकान का नाम बताया।

बलराज गोगिया ने राघव की तरफ गर्दन मोड़ी—''चलो राघव।''

कहकर वह मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ गया—स्टेनगन को नीचे रखकर वह मोटरसाइकिल पर बैठा और किक मारकर उसे स्टार्ट कर दिया।

राघव ने भी अपनी स्टेनगन नीचे रखी और उछलकर मोटरसाइकिल पर बलराज के पीछे बैठ गया।

लेकिन फौरन ही कुछ सोचकर उसने बलराज गोगिया की पीठ थपकी—''एक मिनट रुकना।''

''क्या हुआ?''

राघव कुछ नहीं बोला—मोटरसाइकिल से छलांग मारकर नीचे उतरा और गड्डियों के ढेर से दो गड्डियां उठकर जेब में डालकर वापिस आया और छलांग मारकर पुनः बलराज की पीठ से चिपक गया।

''अब चल।''

''इनका क्या करना—?'' बलराज गोगिया ने गर्दन मोड़कर पूछा।

''अरे यार—बिस्तरबंद खरीदना है—रास्ते में कोई पुलिसिया घेर ले, जो हो सकता है रिश्वतखोर हो—अब और मत पूछ, चल।''

बलराज गोगिया ने एक लम्बी सांस छोड़ी और मोटरसाइकिल आगे बढ़ा दी।

भैरो दरवाजे के निकट ही खड़ा था सो उसने पहले ही दरवाजा खोल दिया था—खुले दरवाजे में से होता हुआ बलराज गोगिया बाहर कच्ची सड़क पर आया—कुछ दूर कच्ची सड़क पर चलकर उसने बाईं तरफ जाती लम्बी सड़क पर मोटरसाइकिल चढ़ा दी और एक्सीलेटर पूरा-का-पूरा घूमा दिया।

मोटरसाइकिल हवा से बातें करती हुई गंगानगर की तरफ बढ़ने लगी।

❑❑❑

''गाड़ी बाईं तरफ मोड़।'' दिशासूचक यंत्र पर निगाहें गड़ाये हुए मनोहर ड्राईविंग कर रहे जुनेजा से बोला।

जुनेजा ने स्टेयरिंग बाईं तरफ करा और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

अभी उसकी गाड़ी कुछ ही दूर आगे बढ़ी थी कि जुनेजा बुरी तरह से चौंक उठा।

सामने से एक मोटरसाइकिल आ रही थी—मोटरसाइकिल की हैडलाईट उसकी आंखों को चुंधिया रही थी—मगर कार की हैडलाईट मोटरसाइकिल की हैडलाईट से काफी तेज थी इसी कारण मोटरसाइकिल का हैंडिल बाईं तरफ डोलते देखा।

बस इतनी-सी देर के लिए मोटरसाइकिल की हैडलाईट कार से परे पड़ी और जुनेजा को मोटरसाइकिल चलाता बलराज गोगिया नजर आ गया।

जोरों से चीख उठा वह—"मनोहर, बलराज गोगिया।"

पिछली सीट पर बैठा मनोहर जो कि उस वक्त दिशासूचक यंत्र पर निगाहें गड़ाये हुए था—बलराज का नाम सुनकर बुरी तरह से उछल पड़ा।

"क...कहां है?"

"मोटरसाइकिल पर।" जुनेजा की आवाज उत्तेजित थी।

मनोहर की नजरें विन्ड स्क्रीन में से झांकने लगीं—सामने मोटरसाइकिल पर उसे एक सरदार बैठा नजर आ रहा था।

"दिलावर!" तभी जुनेजा चीखा—"मार डाल इसे।"

दिलावर फौरन स्टेनगन सीधी करने लगा।

मगर उससे पहले ही मनोहर चीख उठा—"नहीं गोली मत चलाना दिलावर—गोली की आवाज से इसके साथी सतर्क हो जाएंगे—दिशासूचक यंत्र बता रहा है कि वे वैगन के नजदीक ही हैं।"

"लेकिन इस तरह तो यह बच जायेगा।"

"तू इसे कार से कुचल दे—गोली चलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।"

तब तक बलराज गोगिया की मोटरसाइकिल काफी नजदीक पहुंच गयी थी।

एकाएक ही जुनेजा के चेहरे पर सख्ती के भाव उभर आये—आंखों में दरिंदगी नाचने लगी।

दांतों पर दांत जमाते हुए उसने मोटरसाइकिल की तरफ स्टेयरिंग काटा और एक्सीलेटर को पूरा-का-पूरा दबा दिया।

कार तोप से छूटे गोले की तरह मोटरसाइकिल की तरफ लपकी।

❑❑❑

कार को खतरनाक रफ्तार से अपनी तरफ आते देख बुरी तरह से चौंका बलराज गोगिया। वह समझ गया कि कार उसे कुचलने के लिए उसकी तरफ बढ़ रही है।

"बचो बलराज!" तभी पीछे से राघव जोरों से चींखा।

बलराज गोगिया तो जैसे रुकने की अवस्था में हो गया था—राघव की आवाज ने उसे चौंकाया और उसी के साथ ही उसने खतरनाक अंदाज में स्टेयरिंग बाईं तरफ मोड़ दिया।

कार उसके पहलू से होती हुई तीर की तरह सीधी आगे निकल गई।

बलराज मोटरसाइकिल सड़क के नीचे उतार चुका था—नीचे छोटे-बड़े गड्ढ़ों में उछलता हुआ वह कुछ आगे बढ़ा और फिर उलट गया।

ठीक उसी क्षण जिस क्षण बलराज गोगिया और राघव मोटरसाइकिल से गिरे—कार में से गोलियों की बौछार निकलकर उनकी तरफ लपकी।

गोलियों की आवाजों से पूरा इलाका गूंज उठा।

"राघव भागो।" बोला बलराज गोगिया—और फिर लेटे-लेटे ही दोनों सामने बने पेड़ों के झुरमुट की तरफ बढ़ने लगे।

जब तक पिछली कार वहां पहुंचती—बलराज गोगिया और राघव एक घने पेड़ की ओट में छिप चुके थे।

❑❑❑

"अब क्या करना है?"

"करना क्या है!" बोला मनोहर—"उधर बढ़ो जिधर वैगन खड़ी है—क्या हुआ जो बलराज गोगिया बच गया—हमें तो रुपयों से मतलब है—और रुपया वैगन में पड़ा है।"

"लेकिन कल को बलराज गोगिया हमसे बदला लेने पहुंच सकता है।" जुनेजा ने आशंका व्यक्त की।

"उसे क्या मालूम उस पर हमला हमने किया है—कार के अन्दर अंधेरा है—हमें कहां देख पायेगा वह।"

"फिर गाड़ी आगे बढ़ाऊं?"

"हां—थोड़ा आगे जाकर दाईं तरफ मोड़ लेना—दिशासूचक दाईं तरफ इशारा कर रहा है।"

जुनेजा ने कार आगे बढ़ा दी।

"एक बात मेरी भी सुन ले भाड़ू।" कार के चलते ही दिलावर गुर्रा पड़ा।

मनोहर उसकी तरफ देखने लगा—जुनेजा ने भी गर्दन मोड़कर उसकी तरफ देखा फिर पुनः सामने देखने लगा।

"चाहे बलराज गोगिया बच गया है—लेकिन मैं अपने रुपयों में एक पैसा भी कम नहीं करूंगा।"

"फिक्र मत कर दिलावर—तुझे पूरे पांच लाख मिलेंगे—बस

तू वहां मौजूद बाकी लोगों को मार डालना—ऐसा तो करेगा न तू—या वहां भी किसी के बच जाने की उम्मीद है।"

दिलावर कहरभरी निगाहों से उसे घूरने लगा।

बौखला गया मनोहर—"म...मैं तो मजाक कर रहा था भाई!"

"दिलावर मजाक पसंद नहीं करता।" भेड़िये की तरह गुर्राया दिलावर।

"हां-हां समझ गया दिलावर भाई—अ—आईन्दा मज़ाक नहीं करूंगा।" गिड़गिड़ाने वाले अन्दाज में बोला मनोहर।

दिलावर ने उसके चेहरे से नजरें हटाईं और सामने देखने लगा।

❑❑❑

जब दोनों कारें काफी दूर निकल गईं, तो बलराज गोगिया और राघव पेड़ की ओट से बाहर निकले।

मोटरसाइकिल के पास पहुंचकर बलराज गोगिया ने उसे सीधा किया और राघव से बोला—"धक्का लगा।"

राघव पीछे से धक्का मारने लगा।

दोनों मोटरसाइकिल को धकेलते हुए सड़क पर आये।

बलराज ने मोटरसाइकिल को किक मारी।

फौरन गड़गड़ करती हुई मोटरसाइकिल स्टार्ट हो गई।

बलराज गोगिया ने गाड़ी सम्भाली और राघव पीछे बैठ गया।

गियर में डालकर बलराज गोगिया ने एक्सीलेटर घुमा दिया—और मोटरसाइकिल पूरी रफ्तार से आगे बढ़ने लगी।

"कौन थे ये लोग?" सामने सड़क पर निगाहें जमाये हुए पूछा राघव ने।

"मालूम नहीं मगर पुलिस नहीं थी।" बलराज गोगिया बोला—"अगर पुलिस होती तो हमें यूं छोड़कर न चली जाती।"

"तो फिर राठौर के आदमी होंगे।"

"हो सकता है, मगर मुझे नहीं लगता कि वे राठौर के आदमी हैं।"

"क्यों?"

"राठौर को क्या सपना आया था कि मैं मोटरसाइकिल पर बिस्तरबंद लेने जाऊंगा और उसने रास्ते में मुझे मारने के लिए अपने आदमियों को खड़ा कर दिया।"

"हो सकता है ऐसा ही हो।" राघव ने कहा—"हांडा का वापिस आना क्या इस बात का सबूत नहीं कि वह तुम्हें भेजना चाहता हो?"

"अगर उसने मुझे मारना ही होता तो वही शैड में ही तभी मार सकता था जब वह मोटरसाइकिल पर थे—उस वक्त तो स्टेनगन भी नहीं थी हमारे पास।"

बात सही थी बलराज गोगिया की।

"फिर कौन थे वे?" राघव ने पूछा—"राठौर के आदमी तुम मान नहीं रहे—उसके अलावा और कौन जानता है यह जगह?"

"मुझे तो ये चोरों पर चोर लगते हैं।"

"यानि वैगन लूटने आये हैं?" आश्चर्य से बोला राघव।

"लगता तो ऐसा ही है—दो कारें इधर ही गई हैं जिधर कि वैगन है। जाहिर है कि दोनों कारों में हथियारबंद लोग होंगे।"

"अगर ऐसा है तो हमारे अढ़ाई करोड़ गए।"

मुस्कुरा पड़ा बलराज गोगिया—"हमारे अढ़ाई करोड़ नहीं जाने वाले—गोलियों की आवाजों ने राठौर को सतर्क कर दिया—"ऐसी हालत में वह पच्चीस करोड़ के नोटों पर कोबरा की तरह फन फैलाकर बैठ जाएगा।"

"फिर तो वहां काफी लाशें गिर सकती हैं।"

"अपने बाप का क्या जाता है—पर मुझे इतना विश्वास जरूर है कि हमारे अढ़ाई करोड़ कहीं नहीं जाएंगे उन रुपयों की हिफाजत के लिए राठौर लाशें बिछवाने में एक पल भी नहीं लगाएगा और फिर उसके साथ उसके चार आदमी हैं—स्टेनगन भी हैं।"

"क्या पता कारों वाले ही उनकी लाशें बिछा दें?"

"तब भी रुपया वहीं रहेगा, रुपयों को वहां से हटाने के लिए उसी वैगन की जरूरत पड़ेगी और वैगन को बाहर निकालने का रिस्क कार वाले किसी भी हालत में नहीं उठायेंगे।"

"लेकिन इस हालत में हमें अपना रुपया लेने में अच्छी-खासी दिक्कत हो जाएगी।"

"वक्त पर माहौल देखकर ही कहा जा सकेगा कि क्या किया जाए—फिलहाल तो हमें बिस्तरबंद लाना है।"

करीब पन्द्रह मिनट में ही वे गंगानगर की सीमा के करीब पहुंच चुके थे।

□□□

गोलियां चलने की आवाज सुनकर ही बैंक मैनेजर का कलेजा दहल गया।

स्कूटर का हैंडिल बुरी तरह से लड़खड़ा गया—अगर वह तुरन्त ही नहीं सम्भाल लेता, तो अवश्य ही वह स्कूटर समेत औंधे मुंह सड़क पर जा गिरता।

लेकिन स्कूटर सम्भालते-सम्भालते भी वह सड़क के नीचे उतर गया था।

वह वहीं थम गया और धाड़-धाड़ बजते कलेजे के साथ सामने देखने लगा। कुछ दूरी पर आती कार में चिंगारियां छूट रही थीं।

बैंक मैनेजर के चेहरे पर पसीने की बूंदें चमक उठीं—हीरो बनने की चाह ने उसे खुद फंसाकर 'रख' दिया था।

आंखों में खौफ के भाव लिये वह सामने देख रहा था।

फिर जिस तरह गोलियां चलनी शुरू हुई थीं उसी तरह बंद भी हो गईं और दोनों कारें पुनः आगे बढ़ गईं मगर बैंक मैनेजर में अब इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उनका पीछा करने की सोच भी सकता। मौत के भय ने उसे वापिस लौटने को मजबूर कर दिया था।

"अब तो पुलिस ही करेगी कुछ।" बड़बड़ाया वह और स्कूटर स्टार्ट करने के लिए किक पर पैर रख दिया।

लेकिन इससे पहले कि वह स्कूटर स्टार्ट करता कि बुरी तरह से खौफजदा हो गया वह।

उस स्थान पर जहां कि गोलियां चली थीं मोटरसाइकिल की हैडलाईट चमकने के साथ इंजन का शोर भी गूंज उठा था।

और फिर उसने मोटरसाइकिल को अपनी तरफ बढ़ते देखा।

मैनेजर के हाथों के तोते उड़ गये। जाहिर है कि जिन पर गोलियां चली थीं वे भी कोई अच्छे लोग नहीं थे—अगर उन्होंने उसे देख लिया तो उसका तो राम नाम सत्य होने से कोई नहीं रोक सकता था।

जिन्दगी के मोड़ ने उसे वहीं रुकने को मजबूर कर दिया।

फौरन उसने स्कूटर नीचे गिरा दी तथा स्वयं भी एक खड्ढे में छुप गया।

'धाड़-धाड़' करता इंजन का शोर पास आ रहा था—और उसी रफ्तार से मैनेजर का कलेजा जोर-जोर से बज रहा था।

खड्ढों में से सिर को निकालकर वह मोटरसाइकिल की तरफ देखने लगा—साथ ही साथ वह हनुमान चालीसा भी पढ़ रहा था।

'धाड़-धाड़' करती मोटरसाइकिल उसके करीब से होती हुई आगे गुजर गई—और ठीक उसी पल मैनेजर बुरी तरह से चौंक उठा। साथ ही खड़ा होकर जाती हुई मोटरसाइकिल को देख रहा था।

बलराज गोगिया के जिस्म पर पड़ी नीली वर्दी और उसके सरदार के रूप में वह उसे फौरन पहचान गया।

'य...यह तो वही है जो वैगन का ड्राईवर बनकर गया था।'

और फिर एकाएक ही जैसे उसमें बिजली का करेंट प्रवाहित हो गया।

बेहद फुर्ती के साथ उसने स्कूटर खड़ी की और उसे स्टार्ट करने लगा।

मगर स्कूटर एक साईड में गिर पड़ी थी—इसलिए शीघ्र स्टार्ट

नहीं हुई—और जब तक स्कूटर स्टार्ट नहीं होती—तब तक मोटरसाइकिल नजरों से ओझल हो चुकी थी।

मगर मैनेजर ने हिम्मत नहीं हारी और पूरी रफ्तार से स्कूटर को उधर दौड़ा दिया जिधर कि मोटरसाइकिल जा रही थी।

मगर मोटरसाइकिल उसे नजर नहीं आई।

हारकर उसने स्कूटर का रुख कोतवाली की तरफ कर दिया।

अपने ऑफिस में आकर रावत अभी ठीक-ठाक से बैठा नहीं था कि संतरी ने आकर मैनेजर के आने की सूचना उसके कानों में डाल दी।

मैनेजर के इस वक्त वहां आने की खबर सुनकर बुरी तरह चौंका रावत। फिर कुछ सोचकर उसने संतरी को उसे ले आने को कह दिया।

मैनेजर के ऑफिस में प्रवेश करते ही रावत ने उसकी उड़ी हुई रंगत को देखा—कपड़ों पर गंदगी लगी देखी तो वह हैरान रह गया।

"कहां से आ रहे हो?" उसने पूछा।

"डाकुओं का पता चल गया है इंस्पेक्टर!" उसका जवाब देने की बजाए चीख उठा मैनेजर। उसकी आवाज में उत्तेजना की भरमार थी।

रावत इस तरह उछला जैसे कुर्सी पर कांटे उग गये हों।

"तुम...होश में तो हो? तुम्हें तो घर होना चाहिये था—और कपड़ों पर यह गंदगी कहां से लगाकर आ रहे हो?"

"मैं घर में गया था।" मैनेजर बोला—"लेकिन घर पहुंचते ही मुझे ध्यान आया कि डाके कि खबर मनोहर लाल और जुनेजा को भी दे देनी चाहिए—सो मैंने अपना स्कूटर निकाला और जुनेजा की कोठी की तरफ चल पड़ा।"

और फिर सब कुछ बताता चला गया मैनेजर।

रावत आंखें फाड़े उसकी बात सुनता रहा—उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि एक साधारण नागरिक भी इस कदर दिलेरी दिखा सकता है।

मगर मैनेजर का उजड़ा हाल...उसके कपड़ों पर लगी गदंगी चीख-चीख कर कह रही थी कि वह हकीकत बयान कर रही है।

"और फिर!"—अपनी बात जारी रखते हुए कह रहा था मैनेजर—"उससे आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई—मैंने वापिसी के लिए अभी अपनी स्कूटर स्टार्ट भी नहीं की थी कि तभी मैंने मोटरसाइकिल को आते देखा, जिस पर कि कार में से गोलियां चली

थीं—सो उस मोटरसाइकिल सवार को देखने की गर्ज से मैं वहीं एक खड्ढे में छिप गया।"

"तूने देखा मोटरसाइकिल पर बैठे आदमी को?" उत्तेजना से पूछा रावत ने।

"देखा भी और पहचाना भी।"

"अच्छा!"

"हां।"

"कौन था वह?"

"वह सरदार था—नीली वर्दी पहने था और वही सरदार वैगन का ड्राईवर बनकर गया था।"

रावत ने तेजी से कुछ सोचा और फिर बलराज गोगिया की तस्वीर निकालकर मैनेजर के सामने करते हुए बोला—"कहीं यह तो नहीं था वह?"

मैनेजर ने फोटो को देखा—फिर कंधे उचकाते हुए बोला—"कह नहीं सकता, हो सकता है यही हो। फोटो में तो यह क्लीनशेव है जबकि उसका रूप सरदार का है।"

"उसके साथ कोई ठिगना-सा आदमी था—बिल्कुल ठिगना।"

"मैंने नहीं देखा—हो सकता है वह ठिगना सरदार के पीछे बैठा हो—मेरी नजर तो सिर्फ सरदार पर थी।"

"और वह पक्के तौर पर वही था जो वैगन का ड्राईवर बनकर गया था?"

"हां।"

"वह जगह जहां गोलियां चली थीं," रावत ने आगे पूछा—"कहां है?"

"मैं नहीं जानता—मगर गंगानगर से बाहर है—मैं दिखा सकता हूं।" मैनेजर ने जवाब दिया।

तुरन्त ही रावत कुर्सी से उठा और मैनेजर की तरफ देखते हुए बोला—"तुम यहीं बैठो मैं अभी आया।"

कहकर वह तेजी से बाहर निकला और वायरलैस रूम की तरफ भागा।

फौरन उसने गंगानगर में गश्त कर रही सभी जिप्सियों को कोतवाली पहुंचने का आदेश दिया—फिर एस०पी० तथा कमिश्नर से भी बात की और उन्हें सारी बात कह सुनाई।

तब उसने कंट्रोल रूम में आदेश प्रसारित किया कि फौरन गंगानगर में एक सरदार जो कि मोटरसाइकिल पर है, को तलाश किया जाए—वह अभी कुछ ही देर पहले गंगानगर में प्रविष्ट हुआ है।

नहीं हुई—और जब तक स्कूटर स्टार्ट नहीं होती—तब तक मोटरसाइकिल नजरों से ओझल हो चुकी थी।

मगर मैनेजर ने हिम्मत नहीं हारी और पूरी रफ्तार से स्कूटर को उधर दौड़ा दिया जिधर कि मोटरसाइकिल जा रही थी।

मगर मोटरसाइकिल उसे नजर नहीं आई।

हारकर उसने स्कूटर का रुख कोतवाली की तरफ कर दिया।

अपने ऑफिस में आकर रावत अभी ठीक-ठाक से बैठा नहीं था कि संतरी ने आकर मैनेजर के आने की सूचना उसके कानों में डाल दी।

मैनेजर के इस वक्त वहां आने की खबर सुनकर बुरी तरह चौंका रावत। फिर कुछ सोचकर उसने संतरी को उसे ले आने को कह दिया।

मैनेजर के ऑफिस में प्रवेश करते ही रावत ने उसकी उड़ी हुई रंगत को देखा—कपड़ों पर गंदगी लगी देखी तो वह हैरान रह गया।

"कहां से आ रहे हो?" उसने पूछा।

"डाकुओं का पता चल गया है इंस्पैक्टर!" उसका जवाब देने की बजाए चीख उठा मैनेजर। उसकी आवाज में उत्तेजना की भरमार थी।

रावत इस तरह उछला जैसे कुर्सी पर कांटे उग गये हों।

"तुम...होश में तो हो? तुम्हें तो घर होना चाहिये था—और कपड़ों पर यह गंदगी कहां से लगाकर आ रहे हो?"

"मैं घर में गया था।" मैनेजर बोला—"लेकिन घर पहुंचते ही मुझे ध्यान आया कि डाके कि खबर मनोहर लाल और जुनेजा को भी दे देनी चाहिए—सो मैंने अपना स्कूटर निकाला और जुनेजा की कोठी की तरफ चल पड़ा।"

और फिर सब कुछ बताता चला गया मैनेजर।

रावत आंखें फाड़े उसकी बात सुनता रहा—उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि एक साधारण नागरिक भी इस कदर दिलेरी दिखा सकता है।

मगर मैनेजर का उजड़ा हाल...उसके कपड़ों पर लगी गदंगी चीख-चीख कर कह रही थी कि वह हकीकत बयान कर रही है।

"और फिर!"—अपनी बात जारी रखते हुए कह रहा था मैनेजर—"उससे आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई—मैंने वापिसी के लिए अभी अपनी स्कूटर स्टार्ट भी नहीं की थी कि तभी मैंने मोटरसाइकिल को आते देखा, जिस पर कि कार में से गोलियां चली

थीं—सो उस मोटरसाइकिल सवार को देखने की गर्ज से मैं वहीं एक खड्ढे में छिप गया।''

''तूने देखा मोटरसाइकिल पर बैठे आदमी को?'' उत्तेजना से पूछा रावत ने।

''देखा भी और पहचाना भी।''

''अच्छा!''

''हां।''

''कौन था वह?''

''वह सरदार था—नीली वर्दी पहने था और वही सरदार वैगन का ड्राईवर बनकर गया था।''

रावत ने तेजी से कुछ सोचा और फिर बलराज गोगिया की तस्वीर निकालकर मैनेजर के सामने करते हुए बोला—''कहीं यह तो नहीं था वह?''

मैनेजर ने फोटो को देखा—फिर कंधे उचकाते हुए बोला—''कह नहीं सकता, हो सकता है यही हो। फोटो में तो यह क्लीनशेव है जबकि उसका रूप सरदार का है।''

''उसके साथ कोई ठिगना-सा आदमी था—बिल्कुल ठिगना।''

''मैंने नहीं देखा—हो सकता है वह ठिगना सरदार के पीछे बैठा हो—मेरी नजर तो सिर्फ सरदार पर थी।''

''और वह पक्के तौर पर वही था जो वैगन का ड्राईवर बनकर गया था?''

''हां।''

''वह जगह जहां गोलियां चली थीं,'' रावत ने आगे पूछा—''कहां है?''

''मैं नहीं जानता—मगर गंगानगर से बाहर है—मैं दिखा सकता हूं।'' मैनेजर ने जवाब दिया।

तुरन्त ही रावत कुर्सी से उठा और मैनेजर की तरफ देखते हुए बोला—''तुम यहीं बैठो मैं अभी आया।''

कहकर वह तेजी से बाहर निकला और वायरलैस रूम की तरफ भागा।

फौरन उसने गंगानगर में गश्त कर रही सभी जिप्सियों को कोतवाली पहुंचने का आदेश दिया—फिर एस०पी० तथा कमिश्नर से भी बात की और उन्हें सारी बात कह सुनाई।

तब उसने कंट्रोल रूम में आदेश प्रसारित किया कि फौरन गंगानगर में एक सरदार जो कि मोटरसाइकिल पर है, को तलाश किया जाए—वह अभी कुछ ही देर पहले गंगानगर में प्रविष्ट हुआ है।

आदेश प्रसारित कर वह फौरन वापिस पलटा और ऑफिस में आ गया।

अपनी कुर्सी पर बैठकर उसने मैनेजर की तरफ देखा—

"क्या नाम है तुम्हारा?" उसने पूछा।

"राजेन्द्र।"—मैनेजर ने अपना नाम बताया—"राजेन्द्र सिंह सैनी।"

"देखो राजेन्द्र—जिस सरदार को तूने देखा है उसके बारे में यह सम्भावना कम की जा रही है कि वह बलराज गोगिया हो सकता है—अगर वह बलराज गोगिया हुआ और पुलिस के हाथों पकड़ा गया या मारा गया तो उस पर निर्धारित इनाम के हक़दार तुम होंगे।"

मैनेजर का चेहरा खिल उठा उसके चेहरे पर छाये थकान के चिन्ह इनाम का नाम सुनते ही गायब हो गए।

रावत ने बलराज गोगिया की फोटो पुनः उसके आगे की और बोला—"अब जरा गौर से देखो इस फोटो को यह बलराज गोगिया की क्लीनशेव फोटो है—कल्पना में इसे देखो अगर यह सरदार होता तो क्या उस सरदार जैसा लगता जिसे तुमने बैंक में फिर मोटरसाइकिल पर देखा था?"

राजेन्द्र फोटो को मेज पर रखकर उसे गौर से देखने लगा।

इनाम की चाहत में उसने अपने दिमाग को पूरा-का-पूरा उसके चेहरे पर कन्ट्रोल कर दिया।

कुछ देर देखने के उपरान्त उसने रावत की तरफ गर्दन घुमाई और हाथ आगे करता हुआ बोला—"जरा अपना पैन दीजिये।"

रावत ने जेब से पेन निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।

राजेन्द्र ने पेन लिया और उससे फोटो वाले बलराज के चेहरे पर दाढ़ी बनाने लगा।

हालांकि उसके हाथ में इतनी सफाई नहीं थी—फिर भी वह अच्छी दाढ़ी बना रहा था।

दाढ़ी बनाकर उसने फोटो के सिर पर पेन से ही पगड़ी बनाई। और फिर एकदम से चीख पड़ा—"यही है वह सरदार हन्ड्रेड परसैंट यही है।" कहते हुए उसकी आंखों में हजारों वाट का प्रकाश चमक रहा था।

रावत ने फोटो उसके हाथ से ली और उसे देखने लगा—फिर राजेन्द्र की तरफ देखते हुए पूछा—"बिल्कुल पक्का है न यही?"

"बिल्कुल यही है—बलराज गोगिया।"

राजेन्द्र अपनी उंगली से उसके हाथ में पकड़ी फोटो की तरफ इशारा करते हुए चीखा।

उत्तेजना से उसका चेहरा आग की तरह दहक रहा था।

रावत के होठों पर एक सफलताभरी मुस्कान थिरक उठी—आंखों में एक अनोखी चमक नाचने लगी।

"अब तू नहीं बचेगा बलराज गोगिया।" हौले से बड़बड़ा उठा वह।

□□□

गोलियों की आवाज शैड के भीतर भी सुनी गई—तभी तो राठौर तथा उसके प्यादे हांडा—चमन—भैरो तथा उदय बुरी तरह से उछल पड़े थे।

"य...यह तो गोलियों की आवाजें हैं।" सहमे अंदाज में बोला उदय।

"लगता है बलराज पुलिस के चंगुल में फंस गया है—राठौर गम्भीर स्वर में बोला—मैंने उसे समझाया भी था कि पुलिस तेरी तलाश में कुत्ते की तरह भाग रही है—मगर नहीं माना—अपने साथ-साथ हमें भी फंसाने के चांस करा दिये हरामजादे ने। पुलिस उसे खत्म तो करेगी ही—मगर उस जगह के आस-पास का सारा इलाका छान मारेगी।"

"इस प्रकार तो यहां की तलाशी होगी बॉस!"

"सो तो होगी ही।" बोला राठौर—"जल्दी से नोटों की गड्डियां अन्दर फेंको और वैगन का ताला लगा दो।"

फौरन उदय और चमन बाहर पड़े अढाई करोड़ रुपयों की गड्डियां अन्दर फेंकने लगे।

"भैरो!" राठौर ने भैरो की तरफ देखा—"स्टेनगन उठा और छत पर पहुंच जा—अगर पुलिस वाले गिनती के हों तो ऊपर से ही उन्हें गोलियों से भून दे—वर्ना फौरन नीचे आ जाना।"

भैरो ने तुरन्त ही स्टेनगन उठाई और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

लगता था राठौर को अपनी कही बात ठीक नहीं लगी थी—तभी तो उसने हांडा को भी भैरो के साथ जाने का हुक्म सुना दिया—"तू भी ऊपर जा और ऊपर से पुलिस पर हमला करना, हम नीचे खड़े हैं, अगर पुलिस दरवाजा तोड़ने में कामयाब हुई तो अन्दर प्रवेश करते ही हम उन पर मौत बरसा देंगे।"

हांडा ने भी स्टेनगन उठाई और भैरो के पीछे-पीछे ऊपर चला गया।

उसके ऊपर जाते ही राठौर तेजी से वैगन के ड्राईविंग केबिन की तरफ बढ़ा और केबिन में पड़ी दो स्टेनगनें उठा लीं।

तब तक उदय और चमन नोटों की गड्डियां अन्दर फेंक चुके थे।

आदेश प्रसारित कर वह फौरन वापिस पलटा और ऑफिस में आ गया।

अपनी कुर्सी पर बैठकर उसने मैनेजर की तरफ देखा–

"क्या नाम है तुम्हारा?" उसने पूछा।

"राजेन्द्र।"–मैनेजर ने अपना नाम बताया–"राजेन्द्र सिंह सैनी।"

"देखो राजेन्द्र–जिस सरदार को तूने देखा है उसके बारे में यह सम्भावना कम की जा रही है कि वह बलराज गोगिया हो सकता है–अगर वह बलराज गोगिया हुआ और पुलिस के हाथों पकड़ा गया या मारा गया तो उस पर निर्धारित इनाम के हक़दार तुम होंगे।"

मैनेजर का चेहरा खिल उठा उसके चेहरे पर छाये थकान के चिन्ह इनाम का नाम सुनते ही गायब हो गए।

रावत ने बलराज गोगिया की फोटो पुनः उसके आगे की और बोला–"अब जरा गौर से देखो इस फोटो को यह बलराज गोगिया की क्लीनशेव फोटो है–कल्पना में इसे देखो अगर यह सरदार होता तो क्या उस सरदार जैसा लगता जिसे तुमने बैंक में फिर मोटरसाइकिल पर देखा था?"

राजेन्द्र फोटो को मेज पर रखकर उसे गौर से देखने लगा।

इनाम की चाहत में उसने अपने दिमाग को पूरा-का-पूरा उसके चेहरे पर कन्ट्रोल कर दिया।

कुछ देर देखने के उपरान्त उसने रावत की तरफ गर्दन घुमाई और हाथ आगे करता हुआ बोला–"जरा अपना पैन दीजिये।"

रावत ने जेब से पेन निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।

राजेन्द्र ने पेन लिया और उससे फोटो वाले बलराज के चेहरे पर दाढ़ी बनाने लगा।

हालांकि उसके हाथ में इतनी सफाई नहीं थी–फिर भी वह अच्छी दाढ़ी बना रहा था।

दाढ़ी बनाकर उसने फोटो के सिर पर पेन से ही पगड़ी बनाई। और फिर एकदम से चीख पड़ा–"यही है वह सरदार हन्ड्रेड परसैंट यही है।" कहते हुए उसकी आंखों में हजारों वाट का प्रकाश चमक रहा था।

रावत ने फोटो उसके हाथ से ली और उसे देखने लगा–फिर राजेन्द्र की तरफ देखते हुए पूछा–"बिल्कुल पक्का है न यही?"

"बिल्कुल यही है–बलराज गोगिया।"

राजेन्द्र अपनी उंगली से उसके हाथ में पकड़ी फोटो की तरफ इशारा करते हुए चीखा।

उत्तेजना से उसका चेहरा आग की तरह दहक रहा था।

रावत के होंठों पर एक सफलताभरी मुस्कान थिरक उठी—आंखों में एक अनोखी चमक नाचने लगी।

"अब तू नहीं बचेगा बलराज गोगिया।" हौले से बड़बड़ा उठा वह।

❑❑❑

गोलियों की आवाज शैड के भीतर भी सुनी गई—तभी तो राठौर तथा उसके प्यादे हांडा—चमन—भैरो तथा उदय बुरी तरह से उछल पड़े थे।

"य...यह तो गोलियों की आवाजें हैं।" सहमे अंदाज में बोला उदय।

"लगता है बलराज पुलिस के चंगुल में फंस गया है—राठौर गम्भीर स्वर में बोला—मैंने उसे समझाया भी था कि पुलिस तेरी तलाश में कुत्ते की तरह भाग रही है—मगर नहीं माना—अपने साथ-साथ हमें भी फंसाने के चांस करा दिये हरामजादे ने। पुलिस उसे खत्म तो करेगी ही—मगर उस जगह के आस-पास का सारा इलाका छान मारेगी।"

"इस प्रकार तो यहां की तलाशी होगी बॉस!"

"सो तो होगी ही।" बोला राठौर—"जल्दी से नोटों की गड्डियां अन्दर फैंको और वैगन का ताला लगा दो।"

फौरन उदय और चमन बाहर पड़े अढाई करोड़ रुपयों की गड्डियां अन्दर फैंकने लगे।

"भैरो!" राठौर ने भैरो की तरफ देखा—"स्टेनगन उठा और छत पर पहुंच जा—अगर पुलिस वाले गिनती के हों तो ऊपर से ही उन्हें गोलियों से भून दे—वर्ना फौरन नीचे आ जाना।"

भैरो ने तुरन्त ही स्टेनगन उठाई और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

लगता था राठौर को अपनी कही बात ठीक नहीं लगी थी—तभी तो उसने हांडा को भी भैरो के साथ जाने का हुक्म सुना दिया—"तू भी ऊपर जा और ऊपर से पुलिस पर हमला करना, हम नीचे खड़े हैं, अगर पुलिस दरवाजा तोड़ने में कामयाब हुई तो अन्दर प्रवेश करते ही हम उन पर मौत बरसा देंगे।"

हांडा ने भी स्टेनगन उठाई और भैरो के पीछे-पीछे ऊपर चला गया।

उसके ऊपर जाते ही राठौर तेजी से वैगन के ड्राईविंग केबिन की तरफ बढ़ा और केबिन में पड़ी दो स्टेनगनें उठा लीं।

तब तक उदय और चमन नोटों की गड्डियां अन्दर फैंक चुके थे।

वैगन का दरवाजा बन्दकर उसे ताला लगाकर उदय सिंह ने चाबी राठौर को दे दी।

राठौर ने उदय सिंह को एक स्टेनगन पकड़ाई और बोला—

"वैगन की ओट में घुस जाना—मैं भी तुम्हारा साथ दूंगा जैसे ही दरवाजा टूटे—फौरन ट्रेगर दबा देना।"

उदय ने हां में सिर हिला दिया।

"और तुम।" उसने चमन की तरफ देखा—"ऊपर जाकर बाहर का नजारा देखकर आओगे और मुझे खबर देते रहोगे ताकि हालात के मुताबिक लड़ाई लड़ी जा सके।"

चमन ने भी हां में सिर हिला दिया।

करीब दस मिनट बाद शैड के सामने इन्जन का शोर उभरा और फिर बन्द हो गया।

एकदम सतर्क हो उठा राठौर—उसी के साथ ही वह वैगन के इंजन की तरफ भागा।

उदय भी उधर भागा।

और दोनों वैगन की ओट लेकर खड़े हो गये।

तभी एकाएक ही—

'रेट...रेट...रेट।' की आवाजों से पूरा शैड कांप उठा।

❑❑❑

शैड के सामने पहुंचते ही दिशासूचक यंत्र 'पिक-पिक' की आवाजें निकालने लगा।

"गाड़ी रोको।" तुरंत ही चीखा मनोहर। जुनेजा का पैर फौरन ब्रेक पर आ पड़ा और कार के पहिये वहीं पर जाम हो गये।

पीछे आती दूसरी कार भी अगली कार को रुकते देख खड़ी हो गई।

"वैगन यहीं है—इसी शैड में।"

कार के रुकते ही मनोहर चीखा—और फिर दिलावर की तरफ देखते हुये बोला—

"तो इसी दरवाजे के पीछे वैगन खड़ी है—दरवाजा तोड़कर अन्दर जितने भी आदमी हैं उन्हें खत्म कर दो।"

दिलावर ने दरवाजा खोला और बाहर आ गया—स्टेनगन उसके हाथ में थी।

अपने लीडर को निकलते हुए देख उसके पांचों साथी भी बाहर आ गए।

मनोहर और जुनेजा कार में ही बैठे रहे—बाहर निकलकर वे किसी किस्म का खतरा नहीं उठाना चाहते थे।

दिलावर और उसके साथी अभी दरवाजे के निकट भी नहीं पहुंच पाये थे कि–

'रेट...रेट...रेट।'

ऊपर से मौत बरस पड़ी उन पर।

दिलावर क्या किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि दुश्मन इन्हीं की ताक में बैठा होगा।

पहले ही दौर में दिलावर के तीन साथी अल्लाह को प्यारे हो गए।

"पोजीशन लो।" चिल्लाया दिलावर–साथ ही वह दीवार के साथ लगकर लेट गया।

शेष बचे दोनों भी शैड की दीवार की ओट में हो गए और अपनी स्टेनगनों का रुख ऊपर कर गोलियां दागने लगे।

अन्दर कार में बैठे मनोहर और जुनेजा की सांस सूखने लगी–दुश्मन पहले से ही तैयार बैठा होगा–इसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। ऊपर से दिलावर के तीन साथियों का मारा जाना उनके दिलों में भय भर गया।

दहशत से उनकी आंखें भरने लगी थीं।

"ज...जुनेजा!" मनोहर कांपते स्वर में बोला–"लगता है पच्चीस करोड़ अपनी किस्मत में नहीं हैं।"

"म...मुझे भी यही लगता है–हरामजादों ने पूरी तैयारी कर रखी है।" जुनेजा कांपते हुए बोला।

तभी एक साथ कई गोलियां कार की बॉडी से टकराईं।

बुरी तरह से दहल उठे दोनों।

"भाग जुनेजा–वर्ना जान नहीं बचेगी।" चीख उठा मनोहर।

जुनेजा ने फौरन इग्निशन में लगी चाबी घुमा दी।

इधर कार का इंजन स्टार्ट हुआ उधर एक साथ कई गोलियां कार के पिछले टायर में आ घुसीं।

एक तेज आवाज के साथ कार का पिछला पहिया बैठ गया, साथ ही दिलावर की दहाड़ उनके कानों से टकराई–"हरामजादे भागने की कोशिश कर रहे थे।"

दोनों की ऊपर की सांस ऊपर नीचे की सांस नीचे रह गई–आंखों में मौत बरसने लगी।

ऊपर छत पर लेटे उदय सिंह और भैरो स्टेनगनों द्वारा नीचे गोलियां बरसा रहे थे–

मगर उनकी गोलियां किसी को भी नहीं लग रही थीं कारण था दुश्मनों का दीवार के साथ सटा होना।

जब काफी देर तक केवल खाली गोलियां ही चलती रहीं तो भैरो सिंह झुंझला उठा–

"इस प्रकार तो सारी रात भी गोलियां चलाते रहेंगे—तो भी कुछ नहीं कर पायेंगे।" बड़बड़ाया वह और रेंगकर छत की मुंडेर से सिर निकालकर नीचे झांकने लगा—ताकि निशाना लगाकर गोली चलाई जा सके।

बस यहीं मात खा गया वह।

इधर उसका सिर बाहर निकला उधर नीचे से गोलियों की कतार उसके भेजे में समाती चली गई। पल भर में खोपड़ी के चिथड़े उड़ गए उसकी—और वह धड़ाम से नीचे आ गिरा।

उधर उदय सिंह की मौत होते देख चमन नीचे भागा और जाकर राठौर को सूचना दी।

भैरो सिंह मारा गया है।"

"ओह!" राठौर के मुख से निकला—"कितनी पुलिस है?" उसने आगे पूछा।

"पुलिस नहीं है।" चमन बोला।

"क्या?" चौंका राठौर।

"मनोहर लाल और जुनेजा।"

चमन कहने लगा राठौर को।

"क्या बकता है—तूने देखा भी है उन्हें?"

"बैंक में देखा था।"—चमन बोला—"और अब फिर उन्हें कार में बैठा देखा है।"

राठौर की नसें फटने लगीं।

"हरामजादे—पिल्ले शेर के मुंह में से मांस खींचना चाहते हैं—शक्ल से तो ऐसे लग रहे थे जैसे जिन्दगी में कभी मक्खी भी न मारी हो—जिगर तो देखो हरामजादों का।

फौरन वह सीढ़ियों की तरफ भागा और छत पर चढ़ गया और मुंडेर से कुछ पीछे हटकर नीचे देखा, कार सड़क के बीचो-बीच खड़ी थी और कार में दोनों नजर आ रहे थे उसे।

दांतों पर दांत जमाकर राठौर ने स्टेनगन का रुख उनकी तरफ किया और ट्रेगर दबा दिया—

'रेट...रेट...रेट' की आवाजों के साथ पहले कार की विंड स्क्रीन टूटी—खिड़की के शीशे टूटे फिर गोलियां दोनों के जिस्मों में जा समाईं।

चीखते हुए दोनों सीटों पर तड़पने लगे।

"हरामजादे।" गुर्राया राठौर और फिर वापिस पलटकर नीचे भागा।

काश कि नीचे जाने से पहले वह कच्ची सड़क के छोर पर नजर डाल पाता तो वह वहां से ही भागने की कोशिश में जुट जाता।

पुलिस की कई जिप्सियां-जीपें लाईन में उधर ही बढ़ी चली आ रही थीं।

ऊपर छत पर लेटे हांडा की नजर पुलिस पर पड़ी, तो वह चौंक उठा।

गर्दन मोड़कर उसने चमन को देखा और चीखा—"पुलिस!"

चमन फौरन नीचे भागा और जाकर राठौर को पुलिस के आगमन की खबर सुनाई।

पुलिस का नाम सुनते ही राठौर के चेहरे पर निराशा की रेखायें उभर आईं। फिर भी उसने मुकाबला करने की ठान ली।

"उदय!" उसने उदय सिंह की तरफ देखा—"छत पर चलो, अब तो लड़ाई इस पार या उस पार होगी।"

फौरन उदयसिंह ओट से बाहर निकला और फिर वे छत पर पहुंच गए।

मगर जब उनकी नजरें पुलिस की बेशुमार जीपों पर पड़ीं तो उनके हौसले वहीं पस्त हो गए।

"बॉस!"—चमन बोल पड़ा—"इतनी पुलिस फोर्स के साथ उलझना बेवकूफी होगी—जान गंवाने से पांच-दस साल की सजा बेहतर होगी—मेरी तो यही सलाह है कि सरेण्डर कर दिया जाए।"

राठौर के होंठों पर पराजयभरी मुस्कान उभर आई।

जीती हुई बाजी हार चुका था वह।

"ठीक कह रहा है तू।" उसने भरे हुए लहजे में कहा—फिर हांडा से बोला—"खड़े हो जाओ हांडा—चलो नीचे चलते हैं।"

हांडा खड़ा हो गया।

तीनों नीचे आये और जब तक वे दरवाजा खोलकर बाहर आते पुलिस दिलावर और उसके दोनों साथियों को गिरफ्तार कर चुकी थी।

पच्चीस करोड़ की वैगन पुलिस को वापिस मिल गई थी।

जिसमें से कम थे तो सिर्फ बीस हजार कम थे जो कि राघव अपने साथ ले गया था।

नेहरू चौक पहुंचकर बलराज गोगिया ने मोटरसाइकिल रोकी और इधर-उधर दुकानों पर लगे बोर्ड देखने लगा।

उस वक्त दिन का हल्का-हल्का उजाला फैल चुका था।

"वो रही दुकान।" तभी पीछे बैठा राघव दाईं तरफ वाली एक दुकान की तरफ उंगली करते हुए बोला।

बलराज गोगिया ने उधर देखा—

'जगपाल जनरल स्टोर' लिखा था बोर्ड पर।

उसने मोटरसाइकिल आगे बढ़ाई और दुकान के सामने आकर ब्रेक लगा दी।

"घण्टी बजा।" बलराज गोगिया ने सीट पर बैठे-बैठे ही राघव से कहा।

राघव नीचे उतरा और दुकान के बराबर में बने दरवाजे की तरफ बढ़ा।

लेकिन इससे पहले कि वह दरवाजे तक पहुंच पाता–

"राघव पुलिस!"

बलराज गोगिया चीखा।

राघव फौरन वापिस पलटा और मोटरसाइकिल की तरफ दौड़ा।

साथ ही उसकी नजर चौक की तरफ मुड़ गई।

पुलिस की तीन जिप्सियां खड़ी थीं वहां और एक सिपाही उसकी तरफ इशारा करते चीख रहा था–"वह रहा बलराज गोगिया।"

छलांग लगाई राघव ने और बलराज गोगिया की पीठ से चिपक गया।

राघव के बैठते ही बलराज गोगिया ने मोटरसाइकिल को पूरी गति दे दी–गोली की तरह छूट निकली मोटरसाइकिल।

पुलिस की जिप्सियां उसकी तरफ भागीं।

"और तेज!" चीखा राघव।

दांतों पर दांत जमाये बलराज गोगिया ने पूरा एक्सीलेटर घुमा दिया।

लेकिन पुलिस अब उसे नजरों से ओझल न होने देने की कसम खा चुकी थी।

शहर से बाहर की तरफ भागो बलराज गोगिया–वर्ना हम चूहे की तरह फंस जाएंगे।" राघव चीखा।

बलराज ने मोटरसाइकिल शहर से बाहर की तरफ भगा दी।

गंगानगर की सीमा के करीब ही हनुमानगढ़ की तरफ मोटरसाइकिल इन्दिरा नहर के करीब पहुंच चुकी थी।

राघव ने गर्दन मोड़कर देखा।

एक-दो नहीं दस-बारह जिप्सियां उनके पीछे लगी थीं।

अभी बलराज गोगिया नहर के पुल पर ही पहुंचा था कि एकदम से उसका पैर ब्रेक पर जम गया।

'चीऽऽऽ!' की आवाज करते मोटरसाइकिल के टायर सड़क पर घिसटते चले गए।

"क्या हुआ?"

"पुलिस!" बलराज गोगिया सामने देखते हुए बोला।

राघव की नजरें सामने पड़ीं—पुलिस की कई गाड़ियां उनकी तरफ बढ़ रही थीं।

दोनों तरफ से घिर चुके थे वे।

"अब—?" राघव की आवाज में पराजय के लक्षण नजर आ रहे थे।

"पुलिस के हाथ पड़ने का एक ही नतीजा होगा—मौत।" बलराज गोगिया बड़बड़ाया।

और फिर वह फौरन मोटरसाइकिल से उतरकर पुल की रेलिंग की तरफ भागा।

राघव तो उसकी मोटरसाइकिल से उतरने से पहले ही उतर चुका था।

और फिर!

दोनों पुल की रेलिंग पर चढ़ गए।

"कूद जाओ।" बलराज गोगिया चिल्लाया। उसी के साथ ही उसने नहर में छलांग लगा दी।

उनके पानी में प्रवेश करते ही कई गोलियां उनकी तरफ लपकीं—मगर पानी के तेज बहाव में वे तब तक वहां से काफी दूर पहुंच चुके थे।

काफी दूर जाकर बलराज गोगिया ने अपनी गर्दन बाहर निकाली और पीछे की तरफ देखा—

पुल से काफी दूर निकल चुका था वह।

फिर उसने राघव की तलाश में गर्दन इधर-उधर घुमाई।

"बलराज!"

तभी राघव का स्वर उसके कानों से टकराया।

बलराज गोगिया ने आवाज की दिशा में देखा—राघव उससे काफी आगे पानी से गर्दन निकाले उसकी तरफ देख रहा था।

बलराज गोगिया के होठों पर एक फीकी मुस्कान उभर आई।

पच्चीस करोड़ की कामयाब डकैती डालकर भी वह खाली हाथ गंगानगर से निकल रहा था।

—समाप्त—

यह उपन्यास आपको कैसा लगा? अपनी अमूल्य राय से मुझे अवगत करायें।

अनिल सलूजा

कुटनी रोड, कबूल बाग,

निकट गंदा नाला

पानीपत (हरियाणा)

पर ग्रह "तौर" पर अग्निपुत्र के संग-मस्तियों के रंग

शिकारी मल्लिका

के बाद

अग्निपुत्र सीरीज की आगामी

नवीनतम् पेशकश

तौर के लुटेरे

गुलामों के सौदागर सामोस की जुगलबन्दी मे अग्निपुत्र यानि कि तौर ग्रह के कप्तान बोस्क की जीवनगाथा के वो खूनी अध्याय–जो आपको सनसनी, रोमांच व रोमांस की एक नई दुनिया में ले जायेंगे।

नृतिका सांद्रा और सुन्दरी लूमा के यौवन की तपिश पे परवान चढ़ती एक खून–अलूदा दास्तान।

करिश्मासाज लेखक

राजभारती

की कलम से निकली एक ऐसी रचना जिसमें तौर ग्रह के अजूबे भी हैं और हर पल रंग बदलते किरदारों का जमावड़ा भी

तौर के लुटेरे

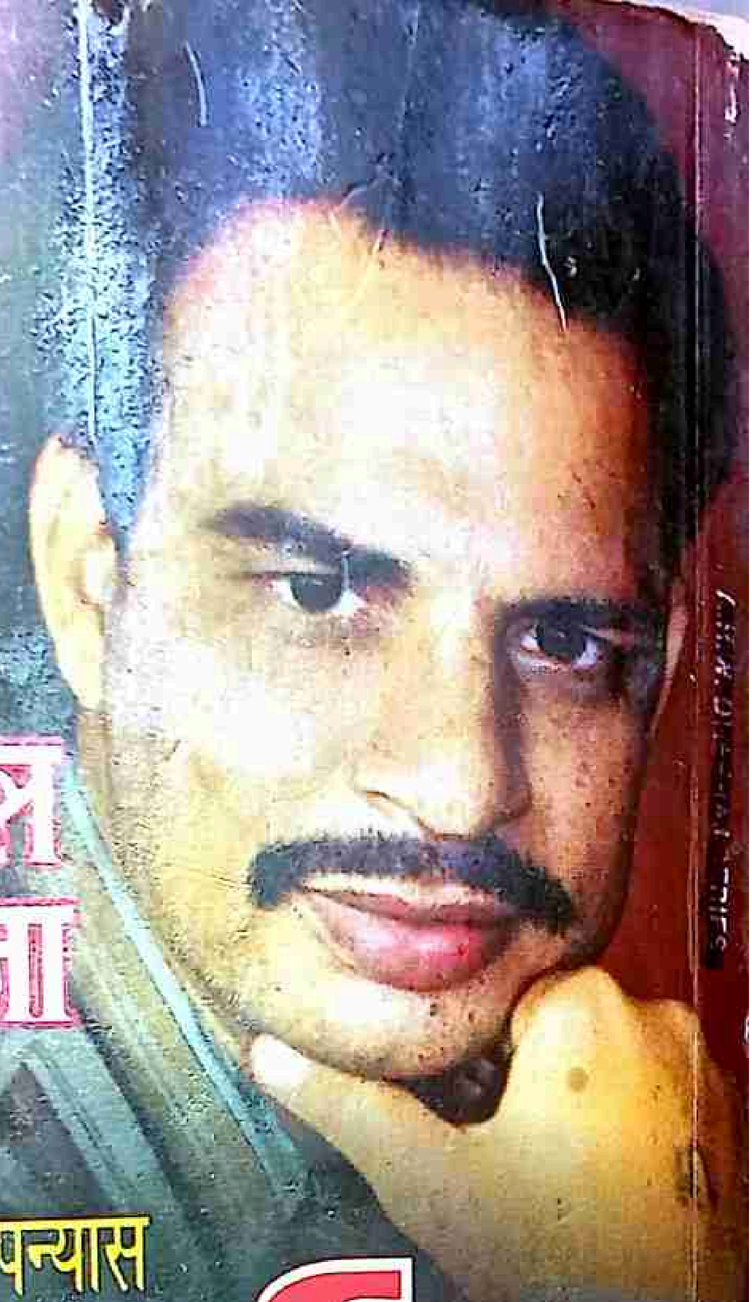
● नई कहानी ● नई सनसनी ● नया रोमांच

धीरज पॉकेट बुक्स की गौरवशाली भेंट।

अनिल सलूजा

का आगामी
नवीनतम् उपन्यास

गर्जना



दिमाग के जादूगर केशव पण्डित
का 105 वाँ नया उपन्यास

वो लाश खाने वाला

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

धीरज पॉकेट बुक्स